



3-डोर 250 लीटर



2-डोर 250 लीटर



2-डोर 185 लीटर

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मई द्वितीय

भारत के उत्थान में नेहरूगांधी परिवार के योगदान के विषय में आप के विचार पढ़े. आप ने सही प्रश्न उठाया है कि नेहरू खानदान, जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने भारत को क्या दिया? यह देश के लिए विडंबना है कि इस विषय में अनेक मिथक व भ्रम फैलाए गए हैं जिन के कारण इन के विषय में कुछ भी कहना कुछ समय पूर्व तक अपराध माना जाता था.

जब भी मैं ने अपने लेखों द्वारा इन मिथकों को तोड़ने का प्रयास किया पाठकों ने मुझे बहुत बुराभला कहा. यहां तक कि कुछ लोगों ने नेहरूवाद को राष्ट्रवाद से जोड़ दिया. परंतु आज देश का साधारण व्यक्ति भी यह सोचने को विवश है कि हम से गलती कहां हुई जो आजादी के 50 वर्षों बाद भी हम विश्वभर में भीख का कटोरा लिए घूम रहे हैं. जबकि जरमनी व जापान जैसे देश द्वितीय विश्वयुद्ध में पूर्णतः नष्ट हो जाने के बाद भी अब विश्व के समृद्ध देश माने जाते हैं.

जवाहरलाल नेहरू की मुख्य देन है जनतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता. समाजवाद ने तो सब को कामचोर व भ्रष्ट बनाया है और जनतंत्र का अर्थ येन केन प्रकारेण सत्ता हथियाना भर रह गया है.

जहां तक नेहरू के रूस प्रेम व अमेरिकी द्वेष का प्रश्न है, वह उन के समाजवादी विचारों के कारण था. परंतु 1962 में चीन से पराजय के बाद उन्हें उसी के पास सहायता के लिए जाना पड़ा.

इन सब से बड़ा खेद का विषय तो यह है कि आज भी कांग्रेसी नेता 10 जनपथ की 'देवी' के आगे सिर झुकाने में गर्व का अनुभव करते हैं.

–विद्या सागर

*

नेहरू व उन के परिवार के विषय में आप के विचार पढ़े तो ऐसा लगा मानो संपादक के बजाय किसी ऐसे व्यक्ति के विचार पढ़ रहे हैं जो सड़क की भाषा जानता है.

दुश्मनों से लड़ती तो हमेशा फौज है लेकिन नाम होता है सेनापति का. यह सच है कि आजादी की लड़ाई में हम जैसे लाखों लोगों ने हिस्सा लिया, जेल गए व शहीद हुए परंतु इस का अर्थ यह तो नहीं कि हम गांधी व नेहरू को भूल जाएं.

इतना ही नहीं, आप ने जिन शब्दों में नेहरू व लेडी माउंटबेटन की चर्चा की है वह भी शर्मनाक है. माना कि नेहरू या कोई भी अन्य प्रधानमंत्री गलती कर सकता है लेकिन इस का मतलब यह तो नहीं कि उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए देश को ही गिरवी रख दिया. शास्त्रीजी की चर्चा करते हुए आप ने जरूर संयम से काम लिया है लेकिन शास्त्रीजी ने भी तो ताशकंद में भूल की थी जो अंततः उन की मौत का कारण बनी.

इंदिरा गांधी व राजीव गांधी के विषय में आप के विचार कुछ हद तक ठीक हैं. परंतु आप यह क्यों भूल जाते हैं कि इंदिरा गांधी ने बंगलादेश बना कर पाकिस्तान के मुंह पर ऐसा तमाचा लगाया था जो वह कभी नहीं भूल सकता.

–देवदत्त राकेश

*

कांग्रेसी दिग्गजों के विषय में आप की बेबाक टिप्पणी सटीक लगी. नेहरू खानदान के तीनों प्रधानमंत्रियों ने देश को खुशहाल बनाने के बजाय गड्ढे में धकेला है. जवाहरलाल नेहरू ने अदूरदर्शी नीति के कारण और इंदिरा, राजीव गांधी ने अपनी कुरसी के चक्कर में राष्ट्र को गरीब देशों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है. देश की जनता के सामने इन तथाकथित 'राष्ट्र निर्माताओं' की असलियत उजागर करने के लिए साधुवाद.

–सत्यव्रत भारत

*

इस में संदेह नहीं कि नेहरूगांधी परिवार ने देश को अपनी जागीर समझ रखा था. भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद, नायकवाद के साथसाथ उन्होंने सामंतवाद को भी बढ़ावा दिया, जिस के कारण हमारे देश की राजनीति में सिद्धांतों के बजाय अवसरवाद पैर फैलाने लगा. इसी अवसरवाद का एक ताजा उदाहरण अभी देश के राजनीतिक माहौल में देखने को मिला.

13 क्षेत्रीय दलों का एकीकरण केवल एक ही मुद्दे पर हुआ और वह है भारतीय जनता पार्टी को किसी भी कीमत पर सत्ता में आने से रोकना

देखते ही देखते ये सब दल धर्मनिरपेक्ष भी बन गए. एकदूसरे से विपरीत विचारधाराओं के होते हुए व जातीय समीकरणों में उलझे हुए ये सभी दल खुद अपनेआप को धर्मनिरपेक्ष का प्रमाणपत्र दे बैठे.

प्रधानमंत्री देवगौड़ा ने ऐसी सरकार का गठन किया है जो पूरे भारत का प्रतिनिधित्व ही नहीं करती. इस भानुमति के कुनबे के सभी दलों ने एकदूसरे की विपरीत विचारधाराओं पर मतदाता से वोट मांगे थे और कांग्रेस को भ्रष्ट करार दिया था. आज इन्होंने मतदाता की उपेक्षा ही नहीं की अपितु भ्रष्ट कांग्रेस का सहयोग भी स्वीकार किया है. कुरसी हथियाने के लिए सभी सिद्धांतों को तिलांजलि दे दी गई है.

देवगौड़ा मंत्रिमंडल में मुलायम सिंह रक्षा मंत्री बने हैं. उन के लिए पाकिस्तान समर्थक मुसलिम भाइयों का दिल जीतना अहम है. बंगलादेशियों की घुसपैठ उन के लिए सौहार्द का वातावरण बनाने की प्रक्रिया है. वह पाकिस्तान को पुनः भारत में मिलाना चाहते हैं. अब पाकिस्तान की हमारे विरुद्ध अप्रत्यक्ष लड़ाई का हल उन की जेब में ही होगा. इस से हमारी सेनाओं का कितना मनोबल बढ़ेगा, इस का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है. –बालकृष्ण चौधरी

नेहरू खानदान व कांग्रेस की औद्योगिक व विदेश नीति पर आप की टिप्पणी बिलकुल सही लगी. आज भारत के किसी भी देश से संबंध मधुर नहीं हैं. जो देश मित्रता का दम भरते भी हैं वे भी केवल दिखावा करते हैं. अपने पड़ोसी देशों के साथ तो संबंध और भी खराब हैं. सभी भारत से दुश्मनी रखते हैं. वह तो भारत की सैन्य शक्ति के आगे ये खुद को लाचार पाते हैं वरना मौका पड़ने पर ये पाकिस्तान से कम नहीं हैं.

–कुमकुम भौमिक

*

आजादी से बरबादी तक यानी आज तक नेहरू खानदान की कारगुजारियों पर आप की सटीक टिप्पणी पढ़ी. भ्रष्टाचार व घोटालों के अंबार के अलावा इंदिरा गांधी व राजीव गांधी ने देश को कौन से आदर्श दिए हैं. गरीबी हटाओ का नारा दे कर लोगों को बेवकूफ बनाया व अपनी गद्दी बचाने के लिए आतंकवाद को बढ़ावा दिया. आप से इसी प्रकार के विचारों की उम्मीद थी. धन्यवाद! –पूरन मर्दा

*

सस्ते चुनावों पर आप के विचार पसंद आए. भारत जैसे गरीब देश में चुनावों पर राजनीतिबाज करोड़ों रुपए खर्च कर देते थे. इस

से चुनावों के बाद देश में महंगाई बढ़ती थी और आम आदमी का जीवन और मुशकिल हो जाता था. इन राजनीतिबाजों की मनमानियों पर रोक लगा कर मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने प्रशंसनीय कार्य किया है. इस के लिए उन्हें 'भारतरत्न' से सम्मानित किया जाना चाहिए.

—हीरालाल खेराजानी

*

हाल ही में संपन्न हुए चुनावों के लिए टी.एन. शेषन बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इन्हें स्वतंत्र, निष्पक्ष व शांतिपूर्वक संपन्न कराने की हर संभव कोशिश की. पहले हमेशा चुनावों में पैसा व पेट्रोल पानी की तरह बहाया जाता था. इसे रोकने के लिए ही चुनाव आयोग ने खर्च सीमा निर्धारित की व उम्मीदवारों को इस का कड़ाई से पालन करने के निर्देश जारी किए.

ऐसा पहली बार हुआ है कि उम्मीदवार मतदाताओं के द्वार पर पैदल चल कर वोट मांगने गए और मतदाता ने भी बगैर किसी दबाव से अपनी इच्छा से अपनी पसंद के उम्मीदवार को वोट दिया.

—कैलाश नाथ पाठक

*

अपनेअपने ढंग का सैक्यूलरवाद

भारत में 11वीं लोकसभा के गठन के समाचार यहां (लीड्स, इंगलैंड) भी पहुंच रहे है अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के प्रति विश्वास प्रस्ताव पर बहस से यह प्रतीत हो रह था कि भारतीय राजनीतिबाज अवसरवादिता के सभी कीर्तिमान तोड़ चुके हैं.

सभी दल अपनीअपनी डफली व अपनाअपना राग अलापने में लगे थे. कोई ब्राह्मण विरोधी था तो किसी को मनुवाद से परहेज था किसी को हिंदुत्व से विरोध था. सब का अपनेअपने ढंग का सैक्यूलरवाद नजर आ रहा था.

मेघालय के जार्ज स्वैल को भारत को गोरक्षा क्षेत्र घोषित करना बुरा लगा. उन का कहना था कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों के लिए गोमांस पौष्टिक भोजन है. यदि उन से यह छीन लिया गया तो वे राज्य पृथक हो जाएंगे. ऐसे राष्ट्रभक्तो का क्या किया जाए जो केवल गोमांस के लिए देश की अखंडता को चुनौती देने से भी नहीं हिचकते.

यहां इंगलैंड में इसाई वर्ग द्वारा भारतीय संस्कृति की अच्छाइयों को अपनाया जा रहा है संयुक्त परिवार व्यवस्था यहां सराही जाने लगी है योग आदि को अपनाया जा रहा है तथा मांसाहारी भोजन के बुरे परिणामों को देखते हुए यहा शाकाहारी भोजन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही

है. लेकिन हमारे देश के नेता ईसाई सभ्यता के नाम पर देश को तोड़ने की धमकी दे रहे हैं.

इंगलैंड में भारतीय राजनीतिबाजों की छवि मदारियों जैसी रह गई है. भारतीय मूल की युवा पीढ़ी जब यहां के हाउस आफ कामंस व लोकसभा की तुलना करती है तो उस का सिर शर्म से झुक जाता है.

–पुष्पा चौधरी

*

बेहद शर्मनाक

लेख 'आवास आवंटन घोटालाः शीला कौल का सुपर हवाला कांड' (मई/द्वितीय) पढ़ा. लगता है हमारे मंत्री लोग व उच्चपदस्थ अधिकारी धनलोलुपता का त्याग नहीं कर सकते. तत्कालीन आवास मंत्री शीला कौल द्वारा गैरकानूनी तरीकों से सरकारी आवासों का आवंटन बेहद शर्मनाक घटना है. लगता है हमारे भ्रष्ट नेता व अधिकारी उच्चतम न्यायालय द्वारा अपनाए जा रहे कड़े रुख से कोई सबक नहीं ले रहे हैं. आवास घोटाले में भी उच्चतम न्यायालय का आदेश प्रशंसा योग्य है.

–अरविंद गुप्त

*

अच्छे शेयरों की जानकारी दें

लेख 'नए शेयरः बिना पूंजी कारोबार' (मई/द्वितीय) पढ़ा. इस स्तंभ में सभी शेयरों को खराब ही बताया जाता है. हर इश्यू के अंत में लिखा होता है कि निवेश योग्य नहीं है. क्या सभी इश्यू वास्तव में निवेश योग्य नहीं होते अथवा आप कमजोर शेयरों के प्रति ही जनता को आगाह करते हैं. अगर ऐसा है तो अच्छे शेयरों की भी जानकारी दिया करें.

–स्वतंत्र गोयल

कठिनाई यह है कि हाल के महीनों में आ रहे सभी शेयरों के बारे में भारी संदेह है. कंपनियां निवेशकों को मूर्ख बनाने में ज्यादा उत्सुक लग रही हैं, मुनाफा कमा कर देने में कम. अच्छे शेयरों की प्रशंसा अवश्य की जाएगी.

–संपादक

*

प्रेरणादायक

लेख 'पाखंड पोल खोल अभियान' (मई/द्वितीय) बहुत ही प्रेरणादायक लगा. धार्मिक पाखंड एवं अंधविश्वास के कारण ही हमारा देश पिछड़ा हुआ है. तंत्रमंत्र के द्वारा मन की शांति की दलील देने वालों को पता होना चाहिए कि संसार में जितने भी महापुरुष, समाज सुधारक, लेखक व वैज्ञानिक हुए हैं, सभी ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, अच्छे चरित्र, नैतिकता व आत्मबल के सहारे यह मुकाम पाया है, तंत्रमंत्र के सहारे नहीं.

–छत्र प्रकाश बामनियर

*

कानून का दुरुपयोग

कहानी 'शिकार' (मई/द्वितीय) पढ़ी. वर्तमान कानून की धारा 498 ए के दुरुपयोग पर मन क्षोभ से भर उठा.

आजकल दहेज विरोधी धाराओं का नीच, लालजी व दुष्ट प्रवृत्ति के लोग खुल कर दुरुपयोग कर रहे हैं. ऐसे लोगों के आगे निर्दोष, निरीह व सुसंस्कृत लोग अपंग बन कर रह जाते हैं. उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से परेशान करने के अलावा आर्थिक रूप से भी प्रताड़ित किया जाता हैं.

आज हमारे वास्तविक समाज में भी कई शलभ, शीलादेवी व ऋचा जैसे पति, सास व ननदों को रेखा और छेदामल जैसे धूर्त, मक्कार एवं दुश्चरित्र लोग झूठी बदनामी व जलालत भुगतने को बाध्य कर रहे हैं.

इन हालात में दहेज विरोधी कानून में संशोधन किया जाना जरूरी हो गया है, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब विवाह जैसी पवित्र सामाजिक संस्था पर से लोगों का विश्वास उठ जाएगा और समाज नैतिक व चारित्रिक पतन की चरम अवस्था में होगा.

–कमलेश कुमारी सक्सेना

*

जनता की जिम्मेदार

सरिता का मई (द्वितीय) अंक बहुत ही आकर्षक लगा. यह हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने की प्रेरणा देता है.

हम भारतीयों में बहुत सीधापन है. अगर ऐसा न होता तो अंगरेज कभी हम पर शासन नहीं कर सकते थे. आज हमारा देश मझधार में फंसा है. इस के लिए भी केवल असामाजिक तत्त्व व नेता ही जिम्मेदार नहीं हैं, जनता भी काफी हद तक जिम्मेदार है. क्यों नहीं वह गलत लोगों का विरोध करती?

आज अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्ति को सत्ता छोड़नी पड़ी क्योंकि सभी विरोधी दल उन के विरुद्ध एकजुट हो गए थे. इस के लिए विरोधी दल दोषी नहीं है बल्कि यहां भी जनता ही जिम्मेदार है. क्योंकि उस ने सहयोग नहीं दिया. पूरे देश में केवल आधे लोगों ने ही मतदान किया. जनता की इसी उदासीनता के कारण आज देश में अनेक समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं.

–अनिल कुमार झा ●



सांझ ढले

गुलमोहर चटका
ये लगा तुम हो,
आसपास
कुछ अनमनी सी,
कुछ मुसकराती
कुछ उदासउदास.

सतरंगी किरणों के धागों में
मन की उमंगों के फूल,
चुनचुन के गूंथ ली
एक सपनों की माला,
जब चाहा समर्पित करना,
तुम हो गए,
मात्र एहसास.

सांझ के वक्त झुरमुटों में
शीतल चांदनी फैल गई,
मेरे मन के आंगन में
खनक उठी पदचाप,
खिड़की खोल कर देखा,
झर रहा था
बाहर पलाश.

—मंजु शर्मा

एकरोज़ • प्रश्नोत्तर

एकरोज़ प्रश्नोत्तर आपका अपना कॉलम है। इस कॉलम में आप भी अपने निजी सवाल भेज कर उनका जवाब पा सकते हैं। हर सवाल को बारीकी से समझ कर परिवार सेवा संस्था के विशेषज्ञ उनका हल/सुझाव देते हैं।

प्र०: मेरी उम्र 21 वर्ष है और अगले महीने मेरी शादी तय हुई है। मैं अभी और आगे पढ़ना चाहती हूँ, लेकिन घर पर दादीमां की बीमारी की वजह से मेरी शादी जल्दी की जा रही है। कृप्या बतायें मैं क्या करूँ?

उ०: आपकी आगे पढ़ने की इच्छा से हम बिल्कुल सहमत हैं। परन्तु अपने घर के हालात देखते हुये, यदि आप खुशी-खुशी इस शादी में भागीदारी बनें तो आपका आगन्तुक जीवन सुखमय रहेगा। आप अपने पति से आगे पढ़ने की इच्छा व्यक्त करें और विश्वास रखिये वो इस बात से सहमत होंगे। चूँकि पढ़ाई जारी रखने के लिये, आपको अपना माँ बनना कुछ देर विलम्बित करना पड़ेगा, आप ''एकरोज़'' का सेवन कर सकती हैं। ''एकरोज़'' गर्भनिरोधक गोलियाँ, एक आसान, सुरक्षित और विश्वसनीय गर्भनिरोधक उपाय है।



इन गोलियों में स्त्री हारमोन होते हैं जो डिम्ब की उत्पत्ति को रोकते हैं व गर्भाशय की अन्दरूनी सतह बदल देते हैं। ''एकरोज़'' नियमित रूप से लेनी होती हैं जिससे अनचाहे गर्भ से सुरक्षा मिलती है। यह यौन सम्पर्क से सम्बंधित नहीं है और जब भी आप बच्चा चाहें तब पैकेट के खत्म होने पर इस्तेमाल छोड़ सकती हैं। इसके अलावा ''एकरोज़'' के अन्य बहुत फायदे हैं जैसे कि यह मासिक धर्म को नियमित, दर्द रहित तथा हल्का बनाते हैं। और मासिक धर्म के कम होने से एनीमिया की संभावना भी कम हो जाती है। ''एकरोज़'' के प्रयोग से प्रजनन अंगों के संक्रमण, स्तनों के ट्यूमर, अण्डाशय व गर्भाशय के कैंसर का खतरा भी कम हो जाता है।

''एकरोज़'' सभी दवा की दुकानों पर आसानी और सस्ते दामों पर उपलब्ध है।

प्र०: मेरी उम्र 35 वर्ष है और मेरी बेटी की उम्र 11 वर्ष है। पिछले माह छ: दिन उसे मासिक धर्म जैसा खून आया। क्या यह मासिक धर्म की शुरुआत है। क्या इतनी छोटी उम्र में यह संभव है, या यह कोई संक्रमण है?

उ०: इस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरान नामक हारमोनों के स्तर में गिरावट के साथ ही स्त्रियों में मासिक चक्र शुरू होता है। शारीरिक परिपक्वता प्राप्त कर लेने के बाद लड़कियों को आमतौर पर 13 से 15 वर्ष की अवस्था के मध्य मासिक धर्म शुरू हो जाता है। कई बार स्त्री हारमोन में असंतुलन के कारण इसमें देर या जल्दी हो सकती है, जैसा कि आपकी बेटी के साथ हुआ है। इसमें घबराने या चिन्ता की कोई बात नहीं। यदि इस महीने दोबारा खून आये तो आप समझ सकती हैं, कि मासिक चक्र शुरू हो गया। ऐसे में आप अपनी बेटी को युवावस्था के लिये तैयार करें। और यदि ऐसा नहीं होता, तो तुरन्त डॉक्टरी जाँच करायें। स्त्री हारमोन को सन्तुलित करने के लिये, ''एकरोज़'' जैसी गर्भनिरोधक गोलियाँ डॉक्टरी सलाह से ली जा सकती हैं।

सुरक्षित प्यार का सरल उपाय एकरोज़ एक गोली, हर रोज़

गर्भनिरोधक सम्बंधित अपनी समस्याओं और एकरोज़ सलाह के लिये लिखें एकरोज़ प्रश्नोत्तर, परिवार सेवा संस्था 28, डिफेन्स कॉलोनी मार्किट, नई दिल्ली-24

बच्चों के मुख से

मेरे ससुरजी सेवानिवृत्त हो चुके हैं. घर के बाकी सारे सदस्य नौकरी करते हैं. अतः मैं अपनी 4 वर्षीय बेटी ईशा को उन के पास छोड़ कर जाती हूं. कभी वह घर पर नहीं रहते तो मैं उसे पड़ोस में छोड़ कर जाती हूं.

एक बार ईशा को बुखार था और वह मेरे साथ बाजार जाने की जिद कर रही थी. मैं ने उसे बहलाने के लिए कहा, "दादाजी, घर पर अकेले रह जाएंगे न, तुम यहीं रहो."

ईशा ने शांत भाव से कहा, "दादाजी को पड़ोस की आंटी के यहां छोड़ दीजिए." –सीमा तिलवनकर

*

19 जनवरी को टेलीफोन उठाते ही संदेश मिला, "अपने बच्चे को पल्स पोलियो की खुराक अवश्य दिलवाएं." यह सिलसिला 20 जनवरी तक जारी रहा.

मेरी चाचीजी जब भी डायल करतीं, यह संदेश सुनने को मिलता. एक बार वह झुंझला कर बोलीं, "कल से यह सुनतेसुनते बोर हो गई हूं."

यह सुन कर उन की 4 वर्षीय बेटी बिन्नी बोली, "मां, बारबार बोल रहा है तो एक बार पल्स पोलियो की खुराक ले लो न."

–निधि प्रसाद

*

एक दिन हमारी पड़ोसिन ने मेरी मां को बताया, "अगर किसी को घर किराए पर चाहिए हो तो बताइएगा. मेरा एक घर खाली है."

मेरा 7 वर्षीय भाई ध्यान से उन की बातचीत सुन रहा था. संयोगवश अगले ही दिन एक दूसरी पड़ोसिन ने बातचीत के दौरान मेरी मां से अपनी लड़की के लिए घरवर ढूंढ़ने की बात की.

यह सुन कर मेरे भाई ने कहा, "हां आंटी, नेहा आंटी का एक घर खाली है. आप सविता दीदी को वहीं घर दिलवा दीजिए."

–ऋषि चावला

*

मेरी 3 वर्षीय भतीजी हाजिरजवाब है. एक दिन मेरी भाभी उसे सुला कर कुछ सामान लेने के लिए गई. इसी बीच वह जाग गई और अपनी मां को न देख कर रोने लगी.

वह काफी देर रोती रही. मेरी मां ने कहा, "बेटा, अब बहुत रो ली, चुप हो जाओ."

उस ने कहा, "दादी, अभी रो लेती हूं. जब मां आ जाएगी तब चुप हो जाऊंगी."

–मीनाक्षी कुलश्रेष्ठ

*

मेरा 5 वर्षीय भाई पहली बार हमारे साथ होटल में खाना खाने गया. खाना खाने के पश्चात मेरे पिताजी ने बैरे से कहा, "अब बिल ले आओ."

यह सुनते ही मेरे भाई ने कहा, "नहीं, अब मैं बिलविल नहीं खाऊंगा. मेरा पेट बहुत भर गया है." –सीमा ओझा

*

मेरे देवर की शादी की बात चल रही थी. मेरा 5 वर्षीय बेटा नीशू पास ही बैठा था. बातों के क्रम में मैं ने कहा, "अगर मेरा बेटा कोर्ट में शादी कर ले तो मुझे कोई एतराज नहीं होगा."

नीशू ने सुनते ही कहा, "मैं कोट में नहीं जैकेट में शादी करूंगा. मुझे जैकेट बहुत अच्छी लगती है."

–ललिता अरु

*

मेरे भतीजे की परीक्षा में एक प्रश्न आया, 'तुम्हें घर प जरूरी काम है, तुम स्कूल नहीं आ सकते इसलिए अवकाश के लिए मुख्याध्यापिका को प्रार्थनापत्र लिखो.'

घर पर मैं ने पेपर देखते हुए इस के बारे में पूछा तो कहने लगा, "नहीं, मैं ने तो लिख दिया कि जब मैं स्कूल में पेपर दे रहा हूं तो मतलब साफ है कि मुझे अवकाश नहीं चाहिए." –शम्मी

*

हम ने अपने 5 वर्षीय भाई को घड़ी में समय देखना सिखाया. एक दिन वह देर से सो कर उठा तो देखा कि घड़ी में 8 बज रहे थे. वह स्कूल जाने से मना करने लगा.

मां ने कहा, "अब तुम्हें दे हो गई है तो हम क्या करें?"

उस ने कहा, "घड़ी की सु पीछे कर दीजिए." –सपना सोनी

*

कुछ मेहमान आने वाले थे. मैं ने घर में झाड़पोंछ कर बिस्तरों पर नई चादरें बिछाईं.

मेहमान आए और खाना वगैरह खा कर वापस जाने लगे तो मेरी 4 वर्षीया बेटी ने कहा, "आंटी अंदर देखिए न, मां ने आप के लिए नई चादरें बिछाई हैं."

–शिखा मिड्ढा

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

संपादकीय जुलाई (प्रथम) 1996

कला . क्रांति . कर्मण्यता

सरित प्रवाह

19 जुलाई से अमेरिका के अटलांटा शहर में ओलंपिक खेल शुरू होंगे. हर चौथे वर्ष होने वाले ये अंतर्राष्ट्रीय खेल सारे संसार की एकता और प्रतिस्पर्धा का एक अद्भुत प्रदर्शन हैं. छोटे से छोटे से ले कर बड़े से बड़े देश के खिलाड़ी यहां अपना कौशल, अपना बल दिखाने आते हैं. जीतने पर कोई विशेष रुपएपैसे की आमदनी नहीं होती. बस एकदो चांदीसोने के तमगे मिलते हैं. पर इन दिनों जो भाईबंदी के साथसाथ जोराजोरी और होड़ का प्रदर्शन होता है वह मानव की अभूतपूर्व उपलब्धि होती है.

कुछ देश बहुत सारे तमगे बटोर ले जाते हैं. कुछ मुंह लटकाए खाली हाथ आते हैं (इन में भारत प्रमुख है– दुनिया का दूसरा सब से ज्यादा आबादी वाला देश लगभग बैरंग लौट आता है) पर फिर भी कहावत के अनुसार खेल का मजा तो खेल ही में है, हारजीत में नहीं.

अब चूंकि टीवी लगभग हर पढ़ेलिखे व थोड़ी सी भी अच्छी आमदनी वाले घर में है, इसलिए इन दिनों लोग, विशेषकर युवकयुवतियां, टीवी से चिपके रहेंगे. वैसे भी यह समय छुट्टियों का होता है, पढ़ाई, परीक्षाओं का नहीं. इसलिए इस में कोई हर्ज भी नहीं है.

भारत सरकार हर वर्ष खेलकूद को बढ़ावा देने के लिए करोड़ों रुपए खर्च करती है पर नतीजा कुछ खास नहीं निकलता. जब तक कोई ऊपर वाला मंत्री, जो मुस्तकिल तौर पर विभाग में (और सरकार में) बना रहे और जीजान से इस में लिप्त हो और अधिकारियों से निपट सके, भारत में खेलों में प्रगति की कोई विशेष आशा नहीं की जा सकती.

हमारे यहां नीचे वाले छोटे या बड़े बाबू लोग बजाय कोई ठोस काम करने के फाइले खिसकाने में ज्यादा रुचि रखते हैं. अंतर्राष्ट्रीय खेल अब निजी कार्यकलाप न रह कर सरकारी मुहिम बन गए हैं. इसलिए यदि संसार के अन्य देशों से जूझना है तो वह सरकारी स्तर पर ही जूझा जा सकता है. कोई निजी संस्था तो यह काम कर नहीं सकती.

*

प्रधानमंत्री देवगौड़ा ने अपना पद संभालते ही जो एक उल्लेखनीय काम किया है वह है कर्नाटक में, और अब राष्ट्रीय क्षेत्र में भी, अपने प्रतिद्वंद्वी रामकृष्ण हेगड़े को जनता दल से बाहर निकालना. हमारे सत्तारूढ़ प्रधानमंत्रियों का यह एक मुख्य काम रहा है– जवाहरलाल नेहरू से ले कर नरसिंह राव तक. जहां किसी ने जरा सिर उठाया, विरोध प्रकट किया, उसे पार्टी से निकाल फेंका चाहे उस व्यक्ति ने पार्टी को बनाने और नई दिल्ली की रायसीना पहाड़ी तक पहुंचाने में बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया हो.

अब जिस व्यक्ति ने अपना सारा जीवन पार्टी को बनाने में लगा दिया हो और वह पार्टी से, बिना नोटिस या कारण, केवल गद्दी बचाने के लिए निकाल बाहर कर दिया जाए तो उस व्यक्ति के लिए यह तो संभव नहीं है कि वह दूसरी पार्टी तत्काल खड़ी कर ले. पैसे और कार्यकर्ता फौरन ही तो नहीं मिल जाते फिर इन दोनों का स्रोत तो काफी हद तक गद्दीनशीन पार्टी प्रमुख के पास होता है. और इस बेईमानी, दगा से झुंझलाते, रोष करते भी बहुत से लोग कुछ नहीं कर पाते.

अब देखना है कि रामकृष्ण हेगड़े कर्नाटक में देवगौड़ा के विरुद्ध कोई विद्रोह

खड़ा करने में सफल होते हैं या वीराने में भटकने पर मजबूर हो जाते हैं.

*

देवगौड़ा सरकार ने अपने कार्यक्रम में बीमा व्यवसाय को न केवल स्वदेशी नागरिक क्षेत्र के लिए खोलने का वादा किया है बल्कि विदेशी बीमा कंपनियों को भी देश में धंधा करने देने का एलान किया है.

अच्छा तो यह होता कि पहले भारतीय नागरिकों को ही यह छूट दी जाती, पर लगता है क्योंकि सरकार को विश्व बैंक और विदेशी धनवान देशों से उधार, कर्ज लेने की सख्त जरूरत होगी इसलिए विदेशी कंपनियों को भी छूट देने का फैसला किया है. विश्व बैंक व अन्य कर्ज देने वाले देश बैंक और बीमा व्यवसाय को सब के लिए खोलने पर बहुत दिनों से बहुत जोर दे रहे थे. विदेशी बैंक तो पहले ही से भारत में काम कर रहे हैं और दोतीन नए विदेशी बैंकों को भी छूट दी गई है. अब बीमा व्यवसाय सभी के लिए खोलने का वादा किया गया है.

क्योंकि सरकारी भारतीय जीवन बीमा निगम और साधारण बीमा निगम का, जिन की अब तक मोनोपोली थी, नागरिकीकरण नहीं किया जाएगा, इसलिए समाजवादी व कम्यूनिस्ट पार्टियों को इस छूट से कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए. मोनोपोली हर जगह खराब होती है. बीमा में जनसाधारण को अब तक इन दोनों सरकारी संस्थाओं की मनमानी सहनी पड़ती थी.

इन दोनों निगमों में क्या कुछ नाजायज होता रहा है यह तो जब नागरिक क्षेत्र की कंपनियां सामने आएंगी तभी पता चलेगा. पर इतना तो जरूर होगा कि बीमा कराने वालों को नई कंपनियों से क्लेम मिलने में सुविधा रहेगी और इन दोनों मोनोपोली वाले निगमों को चुस्त और ग्राहक पसंद होना पड़ेगा.

*

नरसिंह राव सरकार घोटालों के लिए कुख्यात रही है. शेयर, चीनी, टेलीफोन और अन्य घोटालों के साथ एक नए घोटाले का परदाफाश हुआ है– यूरिया खाद घोटाले का.

इस में भारतीय खाद निगम के 133 करोड़ रुपए तुर्की की एक कंपनी को विदेश से खाद भेजने के लिए, बिना किसी गारंटी या जमानत के, दे दिए गए और यह खाद आज तक देश में नहीं पहुंची है. इस में नरसिंह राव के पुत्र प्रभाकर राव का भी हाथ बताया जाता है. वह तो इस से इनकार करेगा ही पर उस के साथियों ने, कहा जा रहा है, रिश्वत की मोटी रकम प्राप्त करना स्वीकार कर लिया है.

अगर उच्चतम न्यायालय व दिल्ली उच्च न्यायालय इस मामले में पूरी रुचि नहीं लेंगे तो केंद्रीय जांच ब्यूरो इस मामले को फाइलों के ढेर में दबा देगा क्योंकि देवगौड़ा सरकार को कांग्रेस द्वारा समर्थन देने की शर्त यह भी है कि नरसिंह राव या उन के कुटुंबी पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए, अन्यथा दूसरे ही दिन देवगौड़ा की चाटमसाला सरकार गिर जाएगी.

*

हमारे राजनीतिबाज व उद्योगपति/ व्यापारी भी बड़ेबड़े ज्योतिषियों, मुनियों, स्वामियों इत्यादि के गुलाम बने रहते हैं. नरसिंह राव के 'गुरु' चंद्रास्वामी हैं. नए प्रधानमंत्री देवगौड़ा तमिलनाडु में नामक्कल नामक कसबे के निवासी सेतुपति मेतुपल्ली सुब्रामणि अय्यर के परम भक्त हैं, और बिना उन की सलाह के कोई राजनीतिक कदम नहीं उठाते.

अब जब देवगौड़ा स्वामीजी के आशीर्वाद और ज्योतिषों के कारण (या बिना कारण भी) प्रधानमंत्री बन गए हैं तो स्वामीजी की तो खूब बनेगी. उन के यहां भीड़ लगेगी. जिन हजारों लोगों को वह आशीर्वाद या सलाह देंगे, उन में से कुछ तो सफल होंगे ही– प्रकृति के औसत के कानून के अंतर्गत. तब वे उन के परम भक्त और उन का विज्ञापन करने, ढोल पीटने वाले बन जाएंगे. जो कुछ नहीं पा सकेंगे, वे अपने भाग्य को कोसेंगे, स्वामीजी को नहीं.

पर नरसिंह राव व चंद्रास्वामी की आजकल की दुर्गति से लोगों को सबक लेना चाहिए. नरसिंह राव भी तो बहुत बड़े अनुष्ठान, भजनकीर्तन, शुभ मुहूर्त ढूंढ़ कर चुनाव के मैदान में कूदे थे. पर आज उन पर बेईमानी, रिश्वत का मुकदमा चलने वाला है. गद्दी गई सो तो गई.

जिस प्रकार धर्म, मजहब, रिलिजन संसार का सब से बड़ा, सब से अधिक पैसे वाला और सब से अधिक संगठित उद्योग है, उसी प्रकार दूसरे नंबर पर यह ज्योतिष का कारोबार है. इस में चतुर लोग अन्य देशों/क्षेत्रों के चतुर लोगों को भी खूब चूना लगाते हैं और मजे करते हैं.

*

1 जून, 1996 को पुणे में हिंदू महासभा की महिला शाखा हिंदू महिला सभा ने महात्मा गांधी की हत्या में शामिल नाथूराम गोडसे के भाई गोपाल गोडसे को उस के जन्मदिवस पर एक सार्वजनिक समारोह कर के बधाई दी.

हिंदू समाज के सदस्यों का इस प्रकार गांधीजी के हत्यारे को चढ़ावा चढ़ाना एक बहुत गलत काम है जिस की पूरी तरह भर्त्सना होनी चाहिए. हो सकता है बहुत से लोग गांधीजी के हर काम/विचार से सहमत न हों. पर एक ऐसे व्यक्ति को जिस ने हिंदू समाज को विदेशी गुलामी से छुटकारा दिलाने में इतना महत्त्वपूर्ण काम किया हो, उस के मारने वालों की प्रशंसा एक देशद्रोह ही कही जाएगी.

इस प्रकार के प्रदर्शन से हिंदू महिला सभा का रुतबा कहीं नहीं बढ़ता बल्कि उस पर धब्बा भी लगता है.

हिंदू और हिंदुत्व को आप इस प्रकार हत्यारों की चापलूसी से कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकते. गांधीजी ने मुसलिम समुदाय की किसी जगह कभी हिमायत भी की तो उस में भी हिंदू समाज की दूर की भलाई ही छिपी थी. हिंदू धार्मिक संस्थाओं द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति का गुणगान किया जाता है. इसी संस्कृति ने हिंदुओं को 2,000 वर्ष तक गुलाम बनाए रखा और अगर हिंदू समाज इस से चिपटा रहा तो वह कभी भी संपन्न, सबल राष्ट्र नहीं बन पाएगा.

*

भूतपूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी की पिछले महीने मृत्यु हो गई. यद्यपि संजीव रेड्डी पहले कांग्रेस में थे पर इंदिरा गांधी ने इन्हें राष्ट्रपति नहीं बनने दिया था. मुकाबले में अपना उम्मीदवार वी.वी. गिरि को खड़ा कर के इन्हें हरा दिया था. बाद में जब जनता सरकार बनी तो इन्हें राष्ट्रपति चुन लिया गया.

जनता पार्टी की सरकार के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई थे. पर ये दोनों अपनेअपने अहं के कारण एकदूसरे को भाए नहीं.

जब जनता दल में फूट पड़ी और मोरारजी देसाई का प्रधानमंत्री पद विवाद का विषय बन गया तो नीलम संजीव रेड्डी ने अपना वार किया. मोरारजी ने अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए कुछ समय मांगा तो राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने समय देने से इनकार कर दिया. इस पर मोरारजी भाई की सरकार गिर गई, और चरणसिंह को नीलम संजीव रेड्डी ने प्रधानमंत्री बना दिया.

पर चरणसिंह एक दिन के लिए भी लोकसभा के सामने नहीं खड़े हो सके क्योंकि उन का कोई समर्थक ही नहीं था. वह 6 महीने प्रधानमंत्री बने रहे पर केवल नाममात्र के लिए. अंत में फिर लोकसभा चुनाव हुए और इंदिरा गांधी जोरशोर से जीत कर आ गई.

अगर नीलम संजीव रेड्डी ने मोरारजी को कुछ समय दे दिया होता तो जनता सरकार नहीं टूटती और इतिहास कुछ और होता. पर व्यक्तिगत बैर या नफरत राजनीति में भी अनेक बवंडर खड़े करती है.

गनीमत है इस बार एक भूतपूर्व राष्ट्रपति की मृत्यु पर भारत सरकार ने 2 दिन की छुट्टी की घोषणा नहीं की, जैसा कि उस ने मोरारजी देसाई के निधन पर किया था. केवल औपचारिक 7 दिन का शोक मनाया गया. सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय झंडा झुका दिया गया और सरकारी जश्न नहीं मनाए गए. आगे भी ऐसा ही होना चाहिए– किसी राजनीतिबाज की, चाहे वह कितने ही बड़े पद पर हो, मृत्यु के कारण देश का कामकाज ठप करना बहुत गलत है.

*

राजसी और शाही खानदान के लोगों में एक पत्नी से काम चलाने का कायदा बहुत कम ही दिखाई देता है. कुछ देशों में जहां एक पत्नी

रखने का कानून है वहां भी लुकेछिपे शाही मर्द दूसरी स्त्रियां पालते हैं और मामला गुप्त रखा जाता है.

अमेरिका और ब्रिटेन में एक पत्नी का कानून है. पर वहां भी विगत राष्ट्रपति जोन केनेडी के बारे में यद्यपि छपता नहीं था पर लगभग सभी ऊपर के लोग जानते थे कि किस प्रकार लगभग हर रोज एक नई लड़की उस के शयनकक्ष में लाई जाती थी–और उस की पत्नी जैक्युलीन सिवा जलनेभुनने के कुछ और नहीं कर सकती थी.

ब्रिटेन में आजकल सिंहासन के उत्तराधिकारी शहजादा चार्ल्स और उस की पत्नी डायना दोनों के विवाह के बाहर गैरकानूनी यौन संबंधों की चर्चा बड़े जोरशोर से होती है. चार्ल्स की प्रेमिका और डायना के प्रेमी एक फौजी अफसर के प्रेमालाप के किस्से समाचारपत्रों की बिक्री के बड़े साधन बने हुए हैं. इन गैरकानूनी संबंधों को ले कर अब तलाक की नौबत आ पहुंची है. और खबर है कि बहस इस बात पर हो रही है कि शहजादी डायना को कितना धन मुआवजे के लिए दिया जाए.

ऐसा ही कुछ किस्सा चार्ल्स के छोटे भाई ड्यूक आफ यार्क और उस की पत्नी 'फरजी' का है. वहां भी तलाक की नौबत आ गई है.

इन दोनों किस्सों से ब्रिटेन की साख को बहुत धक्का पहुंचा है. और लोग कहने लगे हैं कि क्या जनतांत्रिक देश के लिए शाही खानदान का होना और उस पर भारी खर्च करना आवश्यक है.

इन विवाह के बाहर यौन संबंधों से, जो लगभग हर समाज, देश और काल में रहे हैं और रहेंगे भी, सब से अधिक नुकसान बच्चों का होता है जो न इधर के रहते हैं न उधर के. पर इस कारण विवाह की संस्था को भी नहीं तोड़ा जा सकता–समाज की यह एक मजबूरी है जिस से लाभ अधिक, नुकसान कम होता है.

*

इसलाम मजहब में एक पुरुष 4 पत्नियां रख सकता है. इस के मूल महत्त्व में कोई भी सार्थकता रही हो, आज इस छूट का कोई औचित्य नहीं है.

हिंदुओं में भी, आजादी के बाद हिंदू विवाह कानून बनने के पहले, पत्नियों की संख्या पर कोई पाबंदी नहीं थी. अकसर लोग एक से अधिक पत्नियां रखते थे. पर आज यह गैरकानूनी है और इसी कारण हिंदुओं की ओर से मुसलमानों पर भी एक पत्नी के कानून की मांग उठती रहती है. पर अभी तक कोई सरकार ऐसा कानून नहीं बना पाई है, और शायद अल्पसंख्यकों पर 'जुल्म' और उन के मानव व धार्मिक अधिकारों पर चोट पहुंचाने की दुर्भावना के आरोप में यह कभी बन भी न पाए.

इस विषय में गैरइसलामी लोगों का यह कहना गलत है कि 4 बीवियां रखने से मुसलमानों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है. पुरुषों और स्त्रियों की संख्या लगभग बराबर होती है. इसलिए यदि कोई पैसे वाला 4 बीवियां रखता है तो इस के मायने यह है कि 3 अन्य कम पैसे वाले मुसलमान बिना बीवियों के रह जाएंगे और उन के बच्चे नहीं होंगे.

*

हमारे देश में पशु वैज्ञानिकों ने खोज कर के एक गाय या भैंस के एक ही वर्ष में एकसाथ 5/6 बछड़े पैदा करने की विधियां तैयार कर ली हैं. पर अभी तक मानव मादाओं पर यह प्रयोग नहीं हुआ है कि कोई स्त्री एकसाथ जब चाहे एक से अधिक 5/6 तक बच्चे जन सके. और अगर ऐसा हो भी गया तो शायद ही कोई ऐसा मुसलमान होगा जो 4 बीवियों से साल में 20 बच्चे पैदा कराने का इच्छुक हो. आजकल एक बच्चे के पालनपोषण पर ही इतना खर्च होता है कि साधारण व्यक्ति की तो चीं ही बोल जाती है.

हां, इतना जरूर है कि मुसलमानों के नेता और मजहब के ठेकेदार परिवार नियोजन के लगभग विरोधी रहते हैं, और मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या पर संतोष प्रकट करते हैं. पर यह सोच मुसलिम समाज को गरीबी में जमाए रखने का ही काम करेगा क्योंकि मुसलमान कभी भी हिंदू बहुमत को अल्पमत में नहीं बदल सकते. ●



यूरिया
चंगुल

लेख • विनोद श्रीवास्त

नरसिंह राव के 5 साल के शासन में बंदरबांट के कितने गुल खिले इस की काफी कुछ झलक तो उन के प्रधानमंत्री रहने के दौरान ही मिल चुकी थी. प्रतिभूति घोटाले के मुख्य अभियुक्त हर्षद मेहता ने तो सीधे तौर पर उन्हें 3 करोड़ रुपए रिश्वत के रूप में देने की बात कही ही, उन के एक बेटे का नाम भी इसी घोटाले के तहत गोल्डस्टार मामले में उछला. चीनी घोटाला, जब कुछ कांग्रेसी मंत्रियों पर कहर बरसा



रहा था, तब शक की निगाह नरसिंह राव की तरफ भी घूमी. 65 करोड़ रुपए के हवाला कांड में पैसे खाने वालों के रूप में नरसिंह राव की भी चर्चा हुई. इस के बावजूद वह ऐसे हर मामले में जांच के दायरे से दूर रह कर पाक साफ बने रहे.

पर जैसे ही लोकसभा चुनावों में कांग्रेस का बेड़ा गर्क हुआ, नरसिंह राव पर वक्त का शिकंजा असर दिखाने लगा. पहले झारखंड मुक्ति मोरचे के सांसदों को 3.50 करोड़ रुपए रिश्वत में देने का मामला तूफान

की तरह उठा और उस ने नरसिंह राव
लपेटे में ले कर एक आपराधिक प्रक्रिय
अभियुक्त बना दिया. आरोप है कि ज
1993 में अपनी सरकार के खिलाफ पेश
अविश्वास प्रस्ताव से उबरने के लिए न
राव ने भजन लाल, सतीश शर्मा, विद्या





नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के पूर्व कार्यकारी निदेशक डी.एस.कंवर (ऊपर), एन.एफ.एल. की बिल्डिंग (बाएं) तथा पूर्व प्रबंध निदेशक सी.के. रामकृष्णन (बीच में): सीबीआई की गिरफ्त में

घोटाला

फंसने लगा राव परिवार

शुक्ल और होटल व्यवसायी ललित सूरी की मदद से झारखंड मुक्ति मोरचे के सांसदों का समर्थन पैसे से खरीदा.

इसी शृंखला में दूसरा नया उछला मामला 'यूरिया कांड' के नाम से जाना जा रहा है. इस मामले में सीधे तौर पर नरसिंह राव के बजाय उन के लड़के पी.वी. प्रभाकर राव का नाम सामने आया है. राव मंत्रिमंडल में ही उर्वरक और रसायन मंत्री रह चुके रामलखन सिंह यादव के पुत्र प्रकाश चंद यादव भी इस कांड के संभावित आरोपियों में आ चुके हैं. कुल मिला कर मामला काफी संगीन मोड़ पर पहुंच चुका है, जिस में कई लोगों के दामन दागदार होने की संभावना उठ खड़ी हुई है.

इस कांड में सत्ता के प्रभाव का इस्तेमाल कर के किन ऊंचे लोगों ने कैसी भूमिका निभाई यह जानने से पहले, आइए देखें कि इस कांड का सूत्रपात कैसे हुआ.

1995 की 30 अक्तूबर को एक आश्चर्यजनक फैसले के तहत केंद्रीय उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय ने 2 लाख टन यूरिया आयात के लिए टेंडर खोला, जिस में 14 बड़ी कंपनियों ने टेंडर डाले. इन्हीं कंपनियों में एक नाम तुर्की की कंपनी 'करसन' का भी था. नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एन.एफ.एल.) के एक उच्च पदस्थ सूत्र के

नरसिंह राव के 5 वर्ष के शासनकाल में एक के बाद एक कई घोटाले उजागर हुए हैं. और इन में नरसिंह राव का नाम भी जुड़ता रहा है. अब इसी शृंखला में यूरिया घोटाला भी आ जुड़ा है. हालांकि इस में सीधे तौर पर वह शामिल नजर नहीं आते, लेकिन शक की सूई उन के बेटे प्रभाकर राव पर है. बेटे की यह कारगुजारी क्या नरसिंह राव के दामन पर एक और दाग साबित नहीं होगी?

मुताबिक 'अंतर्राष्ट्रीय टेंडर वाणिज्य मंत्रालय से अनुमति मिलने के बाद ही आमंत्रित किए गए थे.'

31 अक्तूबर को तकनीकी विशेषज्ञों ने टेंडरों की जांच के बाद प्राथमिक तौर पर यह कहते हुए 'करसन' का टेंडर रद्द कर दिया कि यह कंपनी यूरिया आपूर्ति में सक्षम नहीं लगती. पर आश्चर्यजनक तरीके से उसी दिन 'करसन' की तरफ से एक और संशोधित टेंडर प्रस्तुत किया गया और सब से कम संभव दर पर यूरिया आपूर्ति करने का उस का संशोधित टेंडर एन.एफ.एल. द्वारा स्वीकृत भी कर लिया गया. एन.एफ.एल. के प्रबंध निदेशक रामकृष्णन के मुताबिक, "करसन कंपनी ने अपनी निविदा में यूरिया आयात के लिए 190 डालर प्रति मीट्रिक टन की दर डाली थी, जबकि यूरिया का उस समय बाजार भाव 230 से 240 डालर प्रति मीट्रिक टन था. लिहाजा करसन का प्रस्ताव पास करना कोई गैरकानूनी काम नहीं था."

इस प्रकार 9 नवंबर को 2 लाख टन यूरिया आयात के लिए एन.एफ.एल. और करसन के बीच लिखित समझौता हो गया. 2 लाख टन यूरिया आयात का यह अनुबंध कुल 3,80,00,000 डालर का था.

यह टेंडर स्वीकृत होने के साथ ही करसन के नाम के साथ कुछ सवाल जुड़ने लगे. पहला सवाल यह उठा कि क्या इस कंपनी के पीछे किसी बड़े आदमी का हाथ है? इस सवाल का पहला जवाब 2 नवंबर को ही मिल गया, जब बगैर कोई औपचारिकता, अरनेस्ट मनी (बयाना) और गारंटी रकम के यूरिया आयात के लिए कंपनी को अग्रिम धन देने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई. आननफानन में लिए गए इस फैसले के तुरंत बाद कुल सौदे की 1 फीसदी रकम 3,80,000 डालर एन.एफ.एल. ने स्टेट बैंक आफ इंडिया की साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली शाखा में जमा करा दी, जो इसी बैंक की न्यूयार्क शाखा में विदेशी मुद्रा में हस्तांतरित होनी थी. बाद में इस रकम को अंकारा के एमक बैंक में जाना था.



रामलखन सिंह यादव के पुत्र प्रकाश चंद यादव : बच निकलना आसान नहीं होगा.

9 नवंबर के अनुबंध के एक सप्ताह के भीतर शेष 99 फीसदी रकम भी इसी तरीके से तुर्की पहुंचने के लिए बैंक में जमा कराई गई. पर कुछ ही समय बाद एन.एफ.एल. अधिकारियों के हाथों के तोते उड़ते नजर आने लगे, जब अंकारा के एमक बैंक ने पूरी रकम 'स्टेट बैंक आफ इंडिया' न्यूयार्क को लौटाते हुए लिखा कि हम इस रकम को अपने बैंक में नहीं रख सकते, क्योंकि बताई गई कंपनी 'करसन' का हमारे बैंक में कोई खाता नहीं है?



नरसिंह राव के पुत्र प्रभाकर राव : आरोपों के घेरे में.

स्टेट बैंक आफ इंडिया ने जब यह समस्या एन.एफ.एल. को बताई तो एन.एफ. एल. के अधिकारी भागेभागे एम. संभाशिव राव के पास पहुंचे. करसन कंपनी के परिचय में संभाशिव राव का नाम उस के भारतीय एजेंट के रूप में दर्ज था, जिस की फर्म का नाम 'साईं कृष्णा कंपनी' हैदराबाद है.

एन.एफ.एल. द्वारा संपर्क करने पर संभाशिव राव का कहना था अंकारा में एमक बैंक में कंपनी का खाता होना कोई परेशानी की बात नहीं है. उस ने एन.एफ.एल. से यह भी कहा कि वे इस रकम का अंकारा के एमक बैंक की जगह जेनेवा स्थित बैंक 'बैंकवा इंडो स्वेज' में भेज दें. पर इस बैंक में पहुंचने के बाद भी रकम की अदायगी करसन को नहीं हो सकी, क्योंकि इस बैंक ने रकम भेजने वाले बैंक को यही सूचना भेजी कि वे 'करसन' नामक किसी कंपनी को जानते तक नहीं. इस प्रकार रकम फिर न्यूयार्क वापस पहुंच गई.

दोदो बार के उलटफेर से स्टेट बैंक आफ इंडिया को जहां यह परेशानी थी कि इस रकम का आखिर क्या किया जाए, वहीं यह सवाल भी उठ रहा था कि करसन कहीं कोई बोगस कंपनी तो नहीं है. इस उठते सवाल को दबाने के लिए एन.एफ.एल. ने रकम को जेनेवा के एक दूसरे बैंक 'पिक्टेट बैंक' में स्थानांतरित करवा दिया. सूत्र कहते हैं कि पिक्टेट बैंक में रकम एक महीने तक पड़ी रही.

उधर सौदे के मुताबिक पैसे जमा होने के बाद यूरिया की खेप आनी शुरू हो जानी थी. पर जब मार्च 1996 तक यूरिया की कोई खेप भारत नहीं आई तो केंद्रीय उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय ने इस बाबत एन.एफ.एल. से पूछताछ शुरू कर दी. इस सिलसिले में एन.एफ.एल. ने करसन के भारतीय एजेंट संभाशिव राव से जवाब मांगा तो उस का कहना था कि कुछ तकनीकी दिक्कतों की वजह से हम यह अनुबंध पूरा नहीं कर पा रहे हैं. इस प्रकार अग्रिम भुगतान होने के बावजूद यूरिया भारत नहीं पहुंच पाया.

वास्तव में यह स्थिति एन.एफ.एल. को दिन में ही तारे नजर आने के समान लगी. लिहाजा उन्होंने कोशिश शुरू की कि यूरिया न सही, पैसे ही भारत लौट आएं. इसी कोशिश के तहत भारत के कैबिनेट सचिव सुरिंद्र सिंह की अध्यक्षता में कुछ बड़े अधिकारियों ने रकम वापसी के लिए जेनेवा के 'पिक्टेट बैंक' से पूछताछ और लिखापढ़ी की, पर बैंक का टका सा जवाब था, "रकम बैंक के 91923 खाते में जमा तो जरूर हुई



क्या राजनीतिबाजों के दखल के बावजूद सीबीआई निष्पक्ष जांच कर पाएगी?

थी, पर यह गई कहां, यह नहीं मालूम." खैर करसन का तो कुछ पता ही नहीं चला. इस प्रकार आयात का यह मामला जांच के लिए सीबीआई के पास भेज दिया गया.

जांच के जटिल कोण

सीबीआई ने जांच अपने हाथ में लेते ही 'भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम 1988 की धाराओं तथा भारतीय दंड संहिता की धारा 192 बी, 409 और 420 के तहत मामला दर्ज कर के करसन के भारतीय एजेंट एन. संभाशिव राव और एन.एफ.एल. के पूर्व प्रबंध निदेशक सी.के. रामकृष्णन तथा पूर्व कार्यकारी निदेशक डी.एस. कंवर को 1 जून को नई दिल्ली में गिरफ्तार कर लिया. 14 जून को एक अदालत में पेश कर सीबीआई ने जांच के लिए उन्हें न्यायिक हिरासत में ले लिया.

सीबीआई जांच से जुड़े उच्च पदस्थ

सूत्रों के मुताबिक, करसन कंपनी के भारतीय एजेंट संभाशिव राव ने पूछताछ के दौरान बताया कि 'पिक्टेट बैंक' से कमीशन की रकम निकाल कर रकम दुबई स्थित स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक के 'एडीबल फूड स्टफ्स' नामक कंपनी के खाते में जमा कराई गई. इस कंपनी का मालिक राजेंद्र बवानी है, जो आंध्र प्रदेश में हैदराबाद में हवाला का कारोबार करता है.

राजेंद्र बवानी के खाते से 2 लाख डालर की रकम 'ब्रदर्स' नामक कंपनी के खाते में भेजी गई. यह कंपनी पूर्व उर्वरक एवं रसायन मंत्री रामलखन सिंह यादव के बेटे प्रकाश चंद यादव की है. इसी खाते से 40 लाख डालर की रकम दुबई स्थित एक अन्य प्राइवेट कंपनी के खाते में भेजी गई.

सूत्रों का दावा है कि हवाला कारोबार के माध्यम से राजेंद्र बवानी ने हैदराबाद में नरसिंह राव के बेटे पी.वी. प्रभाकर राव और उन के साले संजीव राव को इसी रकम में से अदायगी की.

संभाशिव राव का यह भी कहना था कि करसन से कमीशन के रूप में उसे भी 2 लाख डालर की रकम मिली, जो उस ने हैदराबाद के ग्रिंडलेज बैंक के अपने खाते में जमा कराई. संभाशिव राव का कहना है कि उस ने इस पैसे में से प्रभाकर राव तथा संजीव राव के लिए हैदराबाद में जमीन भी खरीदी.

जांच ब्यूरो के अधिकारी संभाशिव राव के बयान के आधार पर नरसिंह राव के बेटे प्रभाकर राव और रामलखन सिंह

यादव के बेटे प्रकाश चंद से पूछताछ कर चुके हैं.

संभाशिव राव से ले कर प्रकाश चंद यादव और प्रभाकर राव तक कई पेंच छिपे हुए हैं.

असल में सारा मामला हैदराबाद के दलाल संभाशिव राव की कंपनी 'साईं कृष्णा इंपेक्स ट्रेडिंग कंपनी' से शुरू होता है. खास सूत्रों के मुताबिक, प्रभाकर राव साईं कृष्णा के डाइरेक्टरों में से एक है और उन्होंने ही यूरिया आयात के लिए तुर्की की करसन कंपनी के भारतीय एजेंट के रूप में संभाशिव राव का परिचय एन.एफ.एल. के बड़े अधिकारियों से कराया. बाद में करसन कंपनी से 2 लाख टन यूरिया आयात के अनुबंध के लिए संभाशिव राव ने ही हस्ताक्षर कराए थे.

इस प्रकार इस मामले में नरसिंह राव के बेटे के खिलाफ मामले की जांच निश्चित रूप से नरसिंह राव के राजनीतिक भविष्य के लिए खतरे की घंटी है. झारखंड मुक्ति मोरचे के सांसदों को रिश्वत देने के मामले में उन के नाम से एफ.आई.आर. दर्ज होने के बाद अब कांग्रेस में नेतृत्व परिवर्तन की गतिविधियां तेज हो गई हैं. ऊपर से यह मामला आने के बाद देश के करोड़ों रुपयों की वापसी के लिए विपक्ष की तरफ से देवगौड़ा सरकार पर दबाव भी पड़ रहा है. कहना न होगा कि यह मामला देवगौड़ा के लिए किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं होगा. पर जब उन की सरकार पर विश्वसनीयता का संकट आएगा तो देवगौड़ा के लिए राव और उन के परिवार की मदद करना कठिन होगा. ध्यान रहे कि सुरक्षा की शर्त पर ही राव ने देवगौड़ा सरकार को कांग्रेस का समर्थन दिया है.

बहरहाल सीबीआई की जांच जारी है. सीबीआई ने इस मामले में एन.एफ.एल. के प्रबंधक दीपक लाल, अतिरिक्त प्रबंधक अनिल शर्मा, एरिया प्रबंधक अरुण गोयल, जे.के. नारंग, कंपनी सचिव ए.के. मैत्रा, साईं कृष्णा इंपेक्स हैदराबाद और मेसर्स करसन लिमिटेड तुर्की के खिलाफ मामला दर्ज कर के अभियुक्त बना लिया है. पर सीबीआई सूत्रों के मुताबिक, जांच जिस तरफ मोड़ ले रही है, उस में नरसिंह राव के पुत्र प्रभाकर राव और रामलखन सिंह यादव के पुत्र प्रकाश चंद का बच निकलना आसान नहीं होगा. ●

कांटे में फंस गईं दो बड़ी मछलियां

133 करोड़ रुपए के यूरिया घोटाले में तुर्की की कंपनी 'करसन' का भारतीय एजेंट एन. संभाशिव राव की गिरफ्तारी के बाद सीबीआई की नजर पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव के बेटे प्रभाकर राव, उस के नजदीकी रिश्तेदार संजीव राव और पूर्व उर्वरक, रसायन मंत्री रामलखन सिंह यादव के पुत्र प्रकाश चंद यादव पर टिकी हुई थी, क्योंकि यूरिया घोटाले की जांच में जो तथ्य सामने आ रहे थे, उन में इन तीनों की भूमिका बड़ी संदिग्ध नजर आ रही थी. पर 18 जून को प्रकाश चंद यादव और संजीव राव को सीबीआई ने गिरफ्तार कर लिया, तो मामला एक दिलचस्प मोड़ पर जा पहुंचा.

सीबीआई के एक सूत्र के मुताबिक, 133 करोड़ रुपए भुगतान पाने के बावजूद यूरिया भारत न भेजने वाली कंपनी 'करसन' के भारतीय एजेंट संभाशिव राव का एन. एफ. एल. से परिचय संजीव राव ने कराया था और सौदे में कमीशन लिया था. जबकि नरसिंह राव के बेटे प्रभाकर राव अपनी पहुंच के बल पर इस कंपनी को ठेका दिलाने के आरोपी हैं. प्रकाश चंद यादव ने भी खास भूमिका निभा कर करसन को यूरिया आयात का ठेका दिलाने में दिलचस्पी दिखाई थी. बाकी इन दोनों को भी कमीशन मिली, इन्हीं तथ्यों की पुष्टि हेतु सीबीआई ने 18 जून की दोपहर प्रकाश चंद यादव को अपने मुख्यालय बुलाया था और फिर गिरफ्तार कर लिया था. संजीव राव हैदराबाद में गिरफ्तार हुआ.

अब प्रभाकर राव जांच के मुख्य बिंदु हैं.

बेमतलब के पाखंडों में विश्वास के आदी लोगों में इन दिनों एक और पाखंड सिर चढ़ कर बोलने लगा है. अनेक लोग अब 'वास्तुशास्त्र' के सहारे बैठेबिठाए धन, सुखसमृद्धि पाने का चमत्कार ढूंढ़ने लगे हैं. 'वास्तुशास्त्र' अर्थात मकान, दुकान, फैक्ट्री, दफ्तर आदि बनवाने का विधिविधान बताने वाला तथाकथित धर्मशास्त्र.

इस के सहारे समृद्धि पाने की सनक लोगों के मन पर इस कदर सवार है कि इस 'शास्त्र' के अनुसार जमीन, भवन आि खरीदने, बनवाने लगे हैं. और तो और, पहले से बने मकानों को तोड़ कर वास्तुविधि के मुताबिक निर्माण करवाए जाने लगे हैं.

दैनिक जीवन तथा कारोबार में दुख परेशानी, नफानुकसान आदि का सारा दो

लेख ● जगदीश पंवार

वास्तुशास्त्र: अंधविश्वासों का पुलिंदा



जमीन, मकान की बनावट या स्थिति पर थोपा जाने लगा है. ऐसे लोग 'वास्तु' के जानकारों के यहां चक्कर लगाने लगे हैं, और उन के बताए तरीके से मकानों, दुकानों आदि का निर्माण करवाने लगे हैं.

वास्तु के बल पर कष्ट, दुख मिटा कर सुख, धन दिलाने का दावा करने वाली कई दुकानें खुल गई हैं. ऐसे में धार्मिक धंधेबाजों की चांदी बन आई है. धंधेबाज मोटी फीस कोई वास्ता दिखाई नहीं देता.

आइए, सब से पहले इस कथित 'वास्तु' की हास्यास्पद एवं अजीबोगरीब उत्पत्ति के बारे में जानें.

वास्तुशास्त्र के अनुसार, त्रेता युग में एक विशालकाय भूत पैदा हुआ. उस ने अपने शरीर से समूचे संसार को ढक लिया.

यह बात शायद अजीबोगरीब न लगे क्योंकि धार्मिक ग्रंथों की बातों पर सहज ही

आजकल 'वास्तुशास्त्र' का पाखंड लोगों के सिर चढ़ कर बोल रहा है. इस के आगे न उन्हें धन की परवाह है और न वक्त की, बस यही सनक सवार है कि कैसे धर्मशास्त्र के अनुसार मकान इत्यादि बना कर सुखसमृद्धि बटोरी जाए. फिर भले ही इन्हें तुड़वा कर दोबारा क्यों न बनवाना पड़े. क्या पैसे और समय की बरबादी उन के लिए वाकई खुशहाली के द्वार खोल सकती है.

के एवज में किसी को पानी की टंकी तोड़ कर दूसरी दिशा में बनवाने का तर्क दे रहे हैं तो किसी को रसोई, बैठक अथवा घर के मुख्य द्वार की ही दिशा बदलने का सुझाव दे रहे हैं.



मजे की बात यह है कि लोग धड़ल्ले से ऐसा करने भी लगे हैं. लेकिन जिस वास्तुशास्त्र के सहारे लोग सुख-समृद्धि का तिलिस्म तलाश रहे हैं, वह शास्त्र निरर्थक बेसिरपैर की बातों से भरा पड़ा है. इस में वैज्ञानिक सिद्धांत तो अलग, व्यावहारिक बातों का भी दूरदूर तक कहीं विश्वास कर लिया जाता है. उस समय भूतप्रेत, देवता, राक्षस आदि यों हवा में ही पैदा हो जाते थे, और फिर ब्रह्माजी उस देवता या राक्षस को प्रकट हो कर कोई न कोई वरदान दे देते थे.

उस विशाल भूत से सारा संसार ढका देख कर इंद्र सहित कई देवता अचंभित हुए और भयभीत हो कर ब्रह्माजी के पास जा कर बोले–हे ईश्वर, हमें बड़ा डर लग रहा है. हम कहां जाएं?

ब्रह्माजी बोले, देवताओ, डरो मत. इस महाबली भूत का विरोध मत करो. तुम इस को औंधा पटक दोगे तो निर्भय हो जाओगे. बाद में देवताओं ने मिल कर उस भूत को पकड़ा और औंधे मुंह पटक कर उस के ऊपर बैठ गए.

आश्चर्य है कि एक भूत ने सारे संसार को अपने शरीर से ढक लिया. और तो और, इस भूत से देवताओं के राजा इंद्र की भी पिंडलियां थरथर कांपने लगीं.

खैर, बाद में उस भूत को यह वरदान दिया कि जो मनुष्य ग्राम, नगर, दुर्ग, महल, मकान, प्याऊ, तालाब, बागबगीचे आदि

बनवाते समय तुझे नहीं पूजेगा वह दुख और मृत्यु को प्राप्त होगा. उसे कदमकदम पर बाधा आएगी. वास्तु पूजा नहीं करने वाला तेरा भोजन होगा.

तभी से वह भूत वास्तुदेव के रूप में पूज्य बन गया. वैसे भी धर्मग्रंथों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि जब भी देवताओं को कोई सवा सेर मिला तो उस का पूजन शुरू कर दिया गया. कुल मिला कर 'वास्तुदेव' की कहानी भी कुछ इसी तरह की है.

अब आगे इस शास्त्र के ग्रंथ 'विश्वकर्म प्रकाश' में बिना सींगपूछ वाली बातें देखिए. प्रारंभ करते हैं वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि के प्रकारों की:

मधुरा ब्राह्मणी भूमिः कषाया क्षत्रिया मता
अम्ला वैश्या भवेभ्द्रूमिस्तिक्ता शूद्रा प्रकीर्तिता.
(अध्याय 1-26)

अर्थात जो भूमि मधुर हो वह ब्राह्मणी, कसैली क्षत्रिया, खट्टी वैश्या और चटपटी भूमि को शूद्रा कहा गया है.

गोया जमीन नहीं, कोई फल हो जिसे चख कर खरीदना चाहिए. इस शास्त्र में यह

वास्तु देवता की उत्पत्ति ही अवैज्ञानिक है

वास्तुविदों का कहना है कि वास्तुशास्त्र पूर्णतया वैज्ञानिक है. विभिन्न दिशाएं और उन में स्थित देवता भूमि, मकान आदि को प्रभावित करते हैं.

लेकिन जिस वास्तु देवता पर समूचा वास्तुशास्त्र टिका है उस की उत्पत्ति ही निरी कल्पना पर आधारित हो तो इसे किस आधार पर वैज्ञानिक ठहराया जा सकता है.

वराहमिहिर द्वारा लिखित बृहत्संहिता में कहा गया है :

किमपि किल भूतमभवद्रुन्धानं रोदसी शरीरेण
तदमरगणे सहसा विनिगृह्याधोमुखं न्यस्तम.
यत्र च येन गृहीतं विबुधेनाधिष्ठितः स तत्रैव
तदमरमयं विधाता वास्तुनरं कल्पयामास.
(बृहत्संहिता, वास्तुविद्या अध्याय 2,3)

अर्थात प्राचीन काल में अपने शरीर से पृथ्वी और आकाश को ढकने वाला कोई अपरिचित व्यक्ति उत्पन्न हुआ. उस को सहसा देवताओं ने पकड़ कर नीचे मुख कर के पृथ्वी पर स्थापित कर दिया. उस समय जो देवता जिस अंग को पकड़े थे, उन्होंने उस अंग में अपना स्थान बना लिया. उस देवमय अपरिचित व्यक्ति को ब्रह्माजी ने वास्तु पुरुष के नाम से कल्पित किया.

वास्तु संबंधी किसी भी ग्रंथ में यह नहीं बताया गया कि समूची पृथ्वी और आकाश को ढक देने वाले वास्तु पुरुष को जब देवताओं ने मिल कर पृथ्वी पर पटका तो धरती और आकाश में रहने वाले जीव उस के नीचे दब गए अथवा कहीं और चले गए. वैसे जमीनआसमान छोड़ कर जा भी कहां सकते थे क्योंकि पृथ्वी और आकाश तो ढक गया होगा, जगह ही नहीं बची होगी.

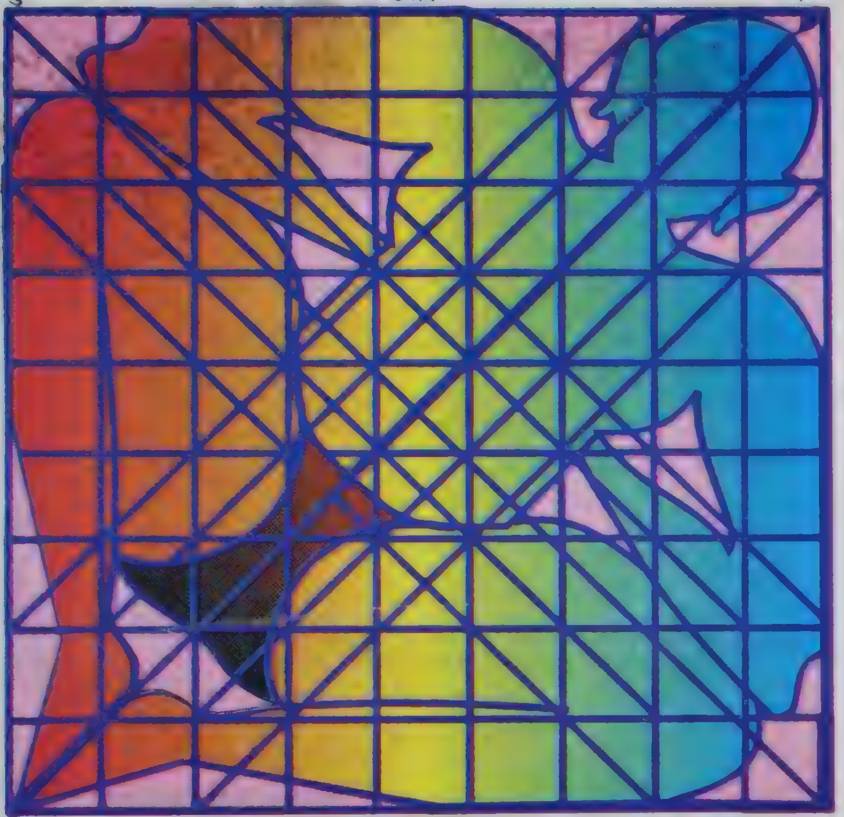
इस बात के पीछे कौन सा वैज्ञानिक फार्मूला है कि जो देवता वास्तु पुरुष के जिस अंग को पकड़े हुए था उस ने उसी अंग में अपना स्थान बना लिया. यही हो सकता है कि ये देवता उस के नीचे दब गए.

वास्तु पुरुष को जब पृथ्वी पर पटका गया तो जाहिर है कथा की कल्पना के अनुसार वह पूरी पृथ्वी पर गिरा. और फिर उस का कोई अंग अमेरिका में, कोई रूस में, कोई जापान, अफ्रीका आदि में टिका होना चाहिए. भारत की भूमि पर वास्तु देवता का कौन सा अंग टिका हुआ है यह खुलासा न तो विश्वकर्माजी ने किया, न ज्योतिषी वराहमिहिर ने और न ही नारदजी, कश्यपजी जैसे वास्तुविशेषज्ञों ने.

फिर उन्हें कैसे पता चला कि ऐसा कोई विशालकाय महाभूत पैदा हुआ था?

और फिर इतना बड़ा धरतीआकाश ढक देने की सामर्थ्य रखने वाला वास्तु पुरुष किसी शहर, गांव, मकान और छोटे से प्लाट तक में सिमट कर कैसे स्थित हो गया.

वास्तु पुरुष की उत्पत्ति संबंधी इस कपोलकल्पित कथा में कौन से विज्ञान के सिद्धांत माने जाएं.



कहीं नहीं बताया गया कि भूमि को मुंह में रख कर चखना चाहिए या लेट कर चाटना चाहिए. भूमि का स्वाद सिर्फ ऊपरी सतह से पता चलेगा या खोदने पर भी जो स्वाद हो वह अच्छा है.

इस का अर्थ यह भी है कि देश के जिन हिस्सों की भूमि खारी है वहां तो ब्राह्मणों का वास होना ही नहीं चाहिए. वास्तुशास्त्र में विश्वास रखने वाले ब्राह्मणों को राजस्थान आदि के विशाल भूभाग छोड़ देने चाहिए क्योंकि वहां की सारी भूमि खारी है. यही नहीं, इस प्रकार की भूमि चूंकि अपवित्र है, इसे देश से ही क्यों न निकाल दिया जाए. वास्तुशास्त्र बारबार कहता है कि खराब भूमि के कारण पुत्र हानि होती है, अनिष्ट होता है, अकाल पड़ता है.

मुरजाकारसदृशां सर्पमंडूक रूपिणीम्
खराजगर संकाशां बकांचिपिटरूपिणीम्.
(1-29)

मुदगराभां तथोलूककाकसर्प्यनिभां तथा

वास्तुदेवता : कोरी कल्पना पर आधारित उत्पत्ति को किस आधार पर वैज्ञानिक ठहराया जा सकता है.

शूकरोष्ट्राजसदृशां धनुः परशुरूपिणीम्.
(1-30)

वृकलासशवाकारां दुर्गम्यां च विवर्जयेत्
मनोरमा च या भूमिः परीक्षेत प्रयत्नतः.
(1-31)

अर्थात मृदंग (बाजा) के आकार जैसी, सांप, मेढक के रूप जैसी, अजगर, गधे के समान, बगुला, उल्लू, काग, सुअर, ऊंट, बकरी, धनुष, कुल्हाड़ी और मुरदे के समान रूप वाली तथा दुख से गमन की जाने वाली भूमि को त्याग दें. सुंदर भूमि की यत्न से परीक्षा करें.

कहने को तो ये शब्द आकर्षक लगते हैं पर यह जांच किस तरह की जाए कि भूमि किस पशु के आकार की है. फिर जानवर तो और भी बहुत सारे हैं. क्या भूमि उन की तरह नहीं हो सकती? प्रश्न यह भी उठता है कि

यदि भूमि मधुर हो पर सूअर की तरह हो तो क्या करेंगे? इन प्रश्नों का उत्तर तो वास्तुशास्त्र में है नहीं, फिर यह कैसे समझा जाए कि वास्तुशास्त्र में कोई ज्ञानविज्ञान है.

मुसलाभां महाघोरां वायुना वापि पीडिताम्
भल्लभल्लूकसंयुक्तां मध्ये विकटरूपिणीम्.
श्वशृगालनिभां रूक्षां दंतकैः परिवारिताम्
चैत्यमश्मशानबल्मीकधूर्तकालयवर्जिताम्.
चतुष्पथ महावृक्षेदेवमत्रिनिवासिताम्
दूराश्रितां च भूगर्त युक्तां चैव विवर्जयेत्.
(1-37,38,39)

यानी जो भूमि मूसल के समान और महाघोर हो, जो भालू युक्त हो, कुत्ते, गीदड़ के समान हो, रूखी दांतों वाली हो, मंदिर, श्मशान के स्थान से रहित हो, चौराहा हो, महावृक्ष, भूत बसते हों, शहर से दूर हो, ऐसी भूमि को छोड़ दें.

यानी भूमि, जमीन न हो कर जानवरों की नस्लें हों. और फिर मूसल, कुत्ते, गीदड़, गधे जैसी भूमि की पहचान कैसे की जाए. क्या जमीन के सींग, पूंछ आदि होते हैं. इस प्रकार भूमि के चुनाव के बारे में जो हिदायतें की गई हैं वे हास्यास्पद हैं.

अब अलगअलग प्रकार की भूमियों के फल देखिए :

वृत्ता सद्वित्तदा भूमिर्भद्र पीठनिभा तथा
त्रिशूलरूपा वीराणामुत्पत्तिर्धनखौख्यदा.
(1-42)

अर्थात जो भूमि वृत्त (गोलाकार) के समान है वह श्रेष्ठ धन देने वाली होती है, त्रिशूल के आकार वाली भूमि में शूरवीर पैदा होते हैं. और वह धन एवं सुख देने वाली होती है.

लिंगामा लिंगिनां श्रेष्ठा प्रसादध्वजसन्निभा
पदोन्नति प्रकुरुते कुंभीना धनवर्द्धिनी.
(1-43)

अर्थात लिंग के समान कांति वाली भूमि संन्यासियों के लिए श्रेष्ठ है. मंदिर की ध्वजा के समान मानसम्मान बढ़ाती है और घड़े के समान भूमि धन बढ़ाने वाली होती है.

सर्पाभा पुत्रपौत्रघ्नी वंशाना वंशहानिदा
शूकरोष्ट्राजसदृशी धनुः परशुरूपिणी.
कुचैलान्मलिनान् मूर्खान्ब्रह्मघ्नांनयेत सुतान्
कृकलासशवाकारा मृतपुत्रा धनार्तिदा.
दुर्गम्या पापिनां वंशप्रजाभूमिं परित्यजेत.
(1-47,48)

अर्थात सर्प के समान भूमि पुत्र, पौत्रों को खत्म कर देने वाली होती है. बांस जैसी भूमि वंश को नष्ट करने वाली और सूअर, ऊंट, बकरी, गाय, कुल्हाड़ी के आकार वाली भूमि मूर्ख तथा ब्रह्महत्यारे पुत्रों को पैदा करने वाली होती है. जो बिच्छू और मुरदे के समान हो वह पुत्रों को मौत देने वाली तथा धन का नाश करने वाली एवं पीड़ा देने वाली होती है.

जो दुख से जाने योग्य और पापियों के वंश की भूमि है उसे त्याग देना चाहिए.

देश के कई राज्यों की शक्लें (नक्शे) इस प्रकार की भूमियों से मेल खाती नजर आती हैं. क्या उन्हें छोड़ दिया जाए या उन राज्यों में सिर्फ पापियों का जन्म होता है. कई जगह जिलों का आकार इतना टेढ़ामेढ़ा होता है कि पशुपक्षी दिखने लगें. क्या उन जिलों को अपराध प्रवृत्ति वाले लोगों के जिले घोषित कर दिया जाए?

नदीघाताश्रिता मूर्खान्मृतवत्सांस्तथैव च
दरिद्रानश्ममध्यस्था गर्तावस्था मृषापुतान्.
(1-54)

यानी नदी के कटाव की भूमि मूर्खों और नपुंसकों को पैदा करती है. जिस भूमि के मध्य में पत्थर हों, वह दरिद्रों को और गड्ढे वाली भूमि झूठे पुत्रों को पैदा करती है.

इस के मुताबिक क्या यह समझा जाए कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, असम, गुजरात जैसे राज्यों में बहने वाली गंगा, यमुना, सतलुज, रावी, व्यास, चंबल, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों के कटाव में पड़ने वाले सैकड़ों कसबों, शहरों के लोग मूर्ख और नपुंसक होते हैं. यह भी विचित्र बात है कि इन भूमियों में जब नपुंसक पैदा होते हैं तो वे और नपुंसकों को कैसे पैदा कर सकते हैं?

90 लाख की आबादी वाला पूरा दिल्ली

महानगर ही यमुना के कटाव की भूमि पर बसा है. इलाहाबाद तो 3-3 नदियों के कटाव पर स्थित है. फिर मूर्खों और नपुंसकों से जनसंख्या कैसे बढ़ सकती है, लेकिन इस वास्तुशास्त्र और इसे मानने वालों को ठेंगा दिखाती हुई बढ़ती ही जा रही है.

क्या इसी तरह पहाड़ी प्रदेशों के लोगों को दरिद्र और झूठा माना जा सकता है? वे भी पत्थरों और गड्ढों की भूमि में रहते हैं.

विवरा पशुपुत्रार्त्तिदायिनी सौख्यहारिणी
वक्राति वक्रा जनयेत्पुत्रान्विद्याविहीनकान.
शूर्पमार्जारलकुटनिभा भीतिसुतार्तिदा
मुस़ला मुसलान्पुत्रांजनयेद्वंशघातकान्
घोरा घोरप्रदा वायुपीडिता वायुमीतिदा
भल्लभिल्लकसंयुक्ता पशुहानिप्रदा सदा.
(1-55,56,57)

अर्थात जिस भूमि में छेद हो, वह पशुओं और पुत्रों को दुख देती है. सुख को नष्ट करने वाली होती है और टेढ़ी व अत्यधिक रेतीली भूमि अनपढ़ों अर्थात विद्या से हीन पुत्रों को पैदा करती है. छाज, बिल्ली, लाठी के समान भूमि भय, पुत्रों को दुख देने वाली होती है तथा मूसल के समान भूमि वंश का नाश करने वाले मूसलचंदों को पैदा करती है. घोर भूमि अर्थात दुर्गम या कठिन भूमि भय देने वाली और वायु से पीड़ित भूमि वायु का भय देती है. भल्ल और भीलों से युक्त भूमि सदा पशुओं का नुकसान करती है.

विकटाविकटान् पुत्रांच्छ्व श्रृगाल निभांस्तथा
ददाति रूक्षा पुरुषा दुर्वचांजनमेत्सुतान्.
(1-58)

अर्थात विकट कुत्ते और श्रृगाल के समान भूमि टेढ़े पुत्र देती है और रूखी भूमि कठोर और बुरे वचन बोलने वाले पुत्रों को देती है.

अब भूमि परीक्षण की अर्थहीन बात देखें :

पांसवो रेणुतां नीत्वा निरीक्षेदंतरिक्षगाः
अधोमध्योर्ध्वगा नृणां गतितुल्यफलप्रदाः
(1-70)

यानी भूमि की रेत ले कर आकाश की तरफ फेंकें. यदि धूल निचले भाग में गिरे पतन करने वाली, बीच के भाग में गिरे मध्यम फल देने वाली और ऊपर की उड़े तो उन्नति देने वाली होती है.

भूमि परीक्षण का यह कौन सा माप हुआ? यह परीक्षण एकदम अवैज्ञानिक अव्यावहारिक है. यह मूर्खता या बकवास तो और क्या है.

वास्तुशास्त्र में यह बात कहीं नहीं ब गई है कि विभिन्न प्रकार की भूमियों को परखा जाए कि फलां भूमि मधुर, कसै खट्टी या चटपटी है? न ही यह बताया कि सांप, सूअर, मेढक, ऊंट, गीदड़, कु बकरी, बिच्छू, बांस, मूसल, श्मशान, या लिंग के समान कांति वाली व नदी कटाव की भूमि की जांच कैसे की जाए से पता चल सके कि फलां भूमि का स्वाद या फलां रूप है.

यह समझ से बाहर है कि इस प्र के शास्त्र पर आज 21वीं शताब्दी का म कैसे थोड़ा सा भी विश्वास कर सकता जिस शास्त्र में भूमि के चयन के मापदंड बचकाने और बेसिरपैर के हैं, उस वैज्ञानिकता ढूंढ़ना सिर्फ हठधर्मी है. –क्र

ईमानदारी की मिसाल

एक छात्र ने कप्तान गंज (आजमगढ़ में रुपयों से भरा पर्स उस के मालिक को लौ कर ईमानदारी की एक मिसाल पेश की है.

स्थानीय डिगरी कालिज का यह छ महाविद्यालय के सामने खड़ा था. तभी उ के सामने से गुजरती कमांडर जीप से ए पर्स सड़क पर गिर पड़ा. पर्स में 35,00 रुपए, सोने की चेन तथा गाड़ी के कागज थे. छात्र काफी देर तक सड़क पर खड़ा प के मालिक का इंतजार करता रहा. कुछ बाद कमांडर जीप वापस आई और पूछता करने के बाद छात्र ने पर्स के मालिक पर्स सौंप दिया. पर्स के मालिक ने छात्र कुछ रुपए देने चाहे पर उस ने इनकार दिया. पर्स का मालिक बैंक में शाखा प्रबंध था और शादी के संबंध में संबंधियों के स लड़की देखने जा रहा था. सभी लोगों ने छ की ईमानदारी की भूरिभूरि प्रशंसा की.

मेघालय समस्या

गैर जनजातीय लोगों पर कहर

लेख • प्रतिनिधि

अप्रैल की पहली तारीख को एक बार फिर मेघालय की राजधानी शिलांग शहर में खून की नदी बही. पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी एक 3 वर्षीय बच्चे को जिंदा जला दिया गया. पिछले वर्षों में तो चाकू और पेट्रोल बम का ही प्रयोग किया जाता रहा है. इस वर्ष देसी हथियारों का भी प्रयोग हुआ जो यह संकेत देता है कि अब पानी सिर से गुजरने वाला है. समय रहते इस का इलाज न किया गया तो मेघालय एक दिन आतंकवाद के चंगुल में बुरी तरह फंस कर रह जाएगा और तब आतंकवाद के इस विष को उतारना आसान नहीं होगा.

गत 22 मार्च को शिलांग के बड़ा बाजार क्षेत्र में बनी 'स्वीपर कालोनी' में आग लगी. कुछ लोगों का कहना है कि आग लगा दी गई. जिस में 147 घर जल कर राख हो गए और कम से कम 1,600 लोग बेघर हो गए. बेघर हुए लोगों को बसाने के लिए प्रयत्न करने के बजाय कुछ संस्थाओं ने उस कालोनी में बसे हरिजनों को वह स्थान खाली कर देने का आदेश दिया. यहां तक कि सरकारी तौर पर भी दबी जबान में यही बात कही गई. 5 आदिवासी संस्थाओं ने मिल कर इस जगह को खाली कराने का बीड़ा उठाया और 1 अप्रैल को बड़े पैमाने पर एक रैली का आयोजन किया. इस आयोजन के दौरान दिनदहाड़े एक गाड़ी को जला दिया गया तथा एक गैरआदिवासी युवक को मिट्टी का तेल छिड़क कर जिंदा जलाने का प्रयास किया गया. संयोगवश केंद्रीय रिजर्व पुलिस के

पलटन बाजार क्षेत्र के गैर जनजातीय लोगों द्वारा प्रदर्शन: शांति की आस में एक प्रयास.



दिनदहाड़े लूट लेना, हत्या कर देना या घरों को जला देना मेघालय में अब आम बात हो गई है. हालात यह हैं कि इस ईसाई बहुल जनजातीय राज्य में गैर जनजातीय लोगों को 'इंडियन डाग्स' कहा जाता है और उन के खिलाफ 'बहिरागत' भगाओ आंदोलन चला रखा है. उधर प्रशासन है कि मूक दर्शक बना हुआ है. क्या वह मेघालय के दूसरा पंजाब या कशमीर बनने का इंतजार कर रहा है?

जवान उस स्थान पर पहुंच गए और उस युवक को जिंदा जलने से बचा लिया जबकि उस का शरीर का कुछ भाग झुलस चुका था. आखिर उस जुलूस ने 12 बज कर 30 मिनट पर गनेश दास अस्पताल परिसर में आग लगा कर 3 वर्षीय शिशु को जला कर ही दम लिया.

इस रैली पर काबू पाने के लिए मेघालय पुलिस को 90 राउंड से अधिक गोलियां चलानी पड़ीं. 2 लोग मारे गए तथा 30 लोग घायल हुए. सुरक्षा की दृष्टि से 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया. केंद्रीय रिजर्व पुलिस के जवान हरपाल सिंह सहित 11 लोगों को गोलियां लगीं. तत्पश्चात उसी शाम 6 बजे से शिलांग के 15 क्षेत्रों में 'कर्फ्यू' लागू कर दिया तथा 4 दिनों के बाद दिन का कर्फ्यू उठा लिया गया.

पहली बार भीड़ की तरफ से हथियारों का प्रयोग किया गया. पत्थरब और गोली से पुलिस महानिरीक्षक बी.के और साबियन तथा नगर पुलिस अधीक्ष ए.एस. रिनजा भी बुरी तरह से घायल ह

पुलिस के साथ हुई इस मुठभेड़ के कई गैर जनजातीय समुदाय के लोगों को लिया गया और प्रताड़ित किया गया.

अकसर हर वर्ष किसी न किसी को ले कर बंद का आयोजन किया जाता रैलियां आयोजित की जाती हैं और

जनजातीय लोगों का जुलूसः शांति मार्च य शक्ति प्रदर्शन?



सांप्रदायिक या जातीय दंगे भड़क उठते हैं.

लोग बताते हैं कि मेघालय राज्य की स्थापना के पूर्व हर समुदाय के लोग मिलजुल कर रहते थे. 21 जनवरी 1972 को मेघालय राज्य की स्थापना हुई. तब से राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति हेतु आतंकवाद को समर्थन मिलने लगा और 1979 में बंगलाभाषियों को मेघालय छोड़ने पर मजबूर किया गया. तब से हर वर्ष किसी न किसी मुद्दे को ले कर बंद, रैली, धरना आदि का आयोजन होता रहता है.

1992 के दौरान गैर जनजाति के व्यवसायियों को लाइसेंस देने के विरोध में बंद का आयोजन हुआ और वर्ष के दौरान 59 हत्याएं हुईं. तब से समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है. शहर में हर वर्ष कहीं न कहीं आग लगती है और फिर उस जगह को वहां के निवासियों को खाली करना पड़ता है.

दिन के उजाले में ही गैरजनजाति के लोगों को प्रताड़ित किया जाता है. जेब से रुपए निकाल लिए जाते हैं और साथ में मार डालने की धमकी भी दी जाती है. डर के मारे कोई कुछ नहीं बोलता क्योंकि थाने में पहले यही देखा जाता है कि शिकायत दर्ज कराने वाला व्यक्ति किस समुदाय का है और किस के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने आया है.

मेघालय एक ऐसा राज्य है जहां गैर आदिवासियों को संवैधानिक अधिकार नहीं मिले हैं, फलस्वरूप उन्हें राजनीतिक और प्रशासनिक संरक्षण प्राप्त नहीं है. यहां पर रह रहे गैर आदिवासी समुदाय के लोगों को द्वितीय श्रेणी की नागरिकता मिली हुई है. इन्हें 'इंडियन डाग्स' कहा जाता है तथा 'विदेशी' समझा जाता है. यह राज्य ईसाई बहुल राज्य है लेकिन गैर ईसाई लाखों की संख्या में हैं, क्योंकि इस राज्य में केंद्र सरकार के कार्यालय अधिक संख्या में हैं इसीलिए यहां हर प्रांत के लोग निवास कर रहे हैं.

'बहिरागत' भगाओ आंदोलन

गैर आदिवासी लोग यहां पर न तो जमीनजायदाद खरीद सकते हैं और न पर्वत्योहार अपनी इच्छानुसार मना सकते हैं. इस राज्य की स्थापना से पूर्व अगर किसी गैरआदिवासी के नाम से जमीनघर है तो वह सिर्फ आदिवासी समुदाय के लोगों को ही बेच सकता है.

इस राज्य में नेपाल, भूटान, बंगलादेश और पंजाब के ऐसे लोग भी निवास करते हैं जिन का अपने पैतृक स्थान पर कुछ भी नहीं है. आखिर वे अब कहां जाएंगे? 'बहिरागत' भगाओ आंदोलन के कारण कई क्षेत्र ऐसे खाली किए गए जहां दिन के उजाले में भी डर के कारण कोई जाना नहीं चाहता.

आखिर इस समस्या का समाधान क्या है? 'नानट्राइबल यूथ एसोसिएशन' ने मांग की है कि राज्य में 'राष्ट्रपति शासन' लागू किया जाए. पर क्या यह स्थायी समाधान होगा? अन्य क्षेत्रीय पार्टियों ने राज्य सरकार से इस्तीफा देने की मांग की है. लेकिन 1992 में तो कांग्रेस की सरकर नहीं थी फिर भी सांप्रदायिक व जातीय दंगे भड़के थे. ●

शिष्टाचार

● बड़े होटलों में सूप मंगाएं तो साथ में ब्रैड रोल्स की बास्केट भी आती है. यदि सिर्फ सूप पीना हो तो क्या ब्रैड रोल्स लाने को मना करना अभिष्टता है?

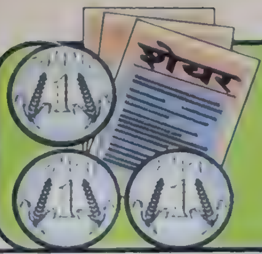
ब्रैड रोल्स न लाने को कहना अभिष्टता नहीं बल्कि सही शिष्टाचार है लेकिन यह आग्रह करना कि ब्रैड रोल्स न लेने के कारण सूप के नियत दाम कम कर लिए जाएं, गलत होगा.

● एक युवती द्वारा प्रौढ लगती महिला को बस में सीट देना शिष्टाचार के विरुद्ध हो सकता है क्योंकि इस से प्रौढ महिला के बूढ़े हो जाने का संदेश दिया जाता है. हां, यदि प्रौढ महिला बच्चा लिए हो या उस के हाथ में अधिक सामान हो तो युवती उसे सीट दे सकती है.

● यदि आप का अधिकारी, जिस से आप की लगातार अनबन रही हो, नौकरी छोड़ कर या अवकाश ग्रहण कर के जा रहा हो तो उस के विदाई समारोह में भाग न लेना गलत होगा. काम के दौरान बहुत से लोगों से मतभेद होते हैं पर जब वह व्यक्ति दफ्तर छोड़ रहा हो तो उन मतभेदों को भुला देना ही ठीक है. ●


सुना है आजकल तुम्हें सब से अच्छी जगह पुस्तकालय लगती है.
पुस्तकालय
हां.
और सबसे बुरी?
कृपया
शांति रखें.
वहां लगी तख्ती.
परकभीकभी वहां बैठे लोगों से बहुत परेशानी होती है.


सब तरह के मनुष्य होते हैं.
अच्छी पुस्तक कौन सी लगी?
का समय ही कहां मिलता है?
क्यों, फिर तुम वहां क्या करने जाती हो?
अपने रमेश से मिलने.
?



निवेश समस्याएं

कंपनी के शेयर खरीदने से पहले किनकिन बातों का खयाल रखा जाना चाहिए?
–राधिका, दिल्ली

कभी भी किसी के कहने पर बिना सोचेसमझे शेयर नहीं खरीदने चाहिए. सब से पहले तो आप को यह जानना चाहिए कि कंपनी का कारोबार क्या है और उस की बिक्री और लाभ का पिछला रिकार्ड कैसा रहा है. क्या कंपनी ने भविष्य के लिए कोई विस्तार योजना तैयार की है. उस विस्तार योजना की क्या लागत है. निवेशक के प्रति कंपनी का क्या रुख रहता है. पिछले 2-3 सालों से क्या कंपनी लाभांश दे रही है.

इन सब तथ्यों पर गौर करने के बाद ही आप को उस कंपनी के शेयर खरीदने चाहिए. यह सारी जानकारी आप को पत्रिकाओं या अखबारों के अलावा निवेश परामर्शदाता (इनवेस्टमेंट कंसलटैंट) से भी मिल सकती है. आप इस के लिए हमें भी लिख सकते हैं.

*

पेट्रान इंजीनियरिंग के शेयरों का क्या भविष्य है? **–रवि प्रकाश, दिल्ली**

पेट्रान इंजीनियरिंग कंस्ट्रक्शन मुंबई की कंपनी है और यह औद्योगिक परियोजनाओं के निर्माण में सक्रिय है. इस के ग्राहकों में बड़ीबड़ी कंपनियां हैं जैसे गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर, एसीसी, इंडियन आयल और रिलायंस. कंपनी मार्च 1995 में इश्यू लाई थी. मार्च 1995 में कंपनी की आमदनी 73.73 करोड़ रुपए और लाभ 5.67 करोड़ रुपए था. वर्ष 1995-96 में पहले 6 महीनों में कंपनी की आमदनी 34.45 करोड़ रुपए और मुनाफा 4.71 करोड़ रुपए है.

कंपनी का शेयर 45 रुपए का है. यानी कंपनी का भविष्य अच्छा नजर आता है. अगर आप ये शेयर खरीदना चाहते हैं तो कम से कम एक साल के लिए खरीदिएगा.

*

मैं किसी ऐसी कंपनी के शेयर खरीदना चाहती हूं, जिस में पैसा भी ज्यादा न लगे और भविष्य की संभावनाएं भी अच्छी हों.
–सीमा अग्रवाल, दिल्ली

दिल्ली स्टाक एक्सचेंज में 'अजय प्रोडक्ट्स' नाम की एक कंपनी हाल ही में सूची हुई है. यह दिल्ली स्थित कंपनी है और टूथब्रश शेविंग किट जैसा सामान बनाती है. इस के शेयर मूल्य इस समय 10-11 रुपए है. वर्ष 1994-9 इस कंपनी की बिक्री 10 करोड़ रुपए थी.

आप अपने ब्रोकर या सबब्रोकर के जरि शेयर खरीद सकते हैं. न्यूनतम 100 शेयरों के हि से आप को इस में सिर्फ 1000-1200 रुपए ल पड़ेंगे.

*

रेनको गियर्स के शेयरों का क्या भ है? **–सुशील कौल, दि**

रेनको गियर्स, जैसा कि नाम से ही जाहि गियर बाक्स बनाती है. ये गियर बाक्स टेक्सट सीमेंट, चीनी, रसायन, कागज और रिफाइनरी उ में इस्तेमाल होने वाली मशीनों में लगाए जाते हैं. 1993-94 में कंपनी की बिक्री 24.48 करोड़ लाभ 3.81 करोड़ रुपए था. उस के बाद वर्ष 1994 में कंपनी की बिक्री 64.77 करोड़ और लाभ करोड़ रुपए हुआ.

जिस कंपनी की बिक्री और लाभ इतनी से बढ़ रहे हैं, यकीनन उस का भविष्य भी अ ही होगा.

*

क्या मुझे एचसीएल-एचपी के शेयर खर चाहिए? **–रमन सिन्हा, चंड**

कंपनी का कामकाज हर साल सुधर रह जून 1995 में कंपनी की बिक्री 623.77 करोड़ और लाभ 40.78 करोड़ रुपए था. जबकि इ पिछले वर्ष कंपनी की बिक्री 397.93 करोड़ थी.

इस के शेयर का भाव 105 रुपए है. इस पर आप यह शेयर खरीद सकते हैं.

तान्या सिंह
सहायक उपाध्यक्ष
एलियांज कैपिटल
द्वारा उत्तर



समस्याएं इस पते पर भेजें :
सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055

...गी.
...थर बाक्सों

...सुनहरे

... यह है कि राइट ... जा रहे प्रीमियम की दरों ... कंपनी को अपना ऋण इक्विटी बनाए रखना है तो राइट इश्यू में ...ढ़ा कर भी ऐसा किया जा सकता था. ...नी के पब्लिक इश्यू का प्रीमियम कम भी रखा ...ा सकता था. वैसे भी काफी समय से पब्लिक इश्यू ...ी प्रस्तावित कीमत व बाजार भाव में कुछ खास ...ंतर नहीं है.

प्रीमियम के बारे में प्रवर्तकों की यह दलील ... कि अगले 5 सालों में कंपनी का वार्षिक कारोबार (...टर्नओवर) 10,000 करोड़ को पार कर जाएगा.

कंपनी पहले अगस्त में 688 करोड़ का राइट ...श्यू ला रही है. इस के तुरंत बाद 100 करोड़ की ...क्विटी वाला भारी प्रीमियम इश्यू जारी होगा. कंपनी ... गत वर्ष साढ़े 10 करोड़ का भारी घाटा उठाया ... यह कंपनी भरोसे वाली है.

ओ.एन.जी.सी.

सरकारी क्षेत्र की इस बहुत बड़ी कंपनी में पब्लिक इश्यू के जरिए सरकारी हिस्सेदारी कम करने की योजना तैयार की गई है. कुल पब्लिक इश्यू 1000 करोड़ का होगा और प्रति शेयर प्रीमियम 245 रुपए रखा गया है.

ओ.एन.जी.सी. इस से पहले भी 260 रुपए प्रीमियम पर शेयर इश्यू कर चुकी है. वर्ष 1995-96 के दौरान 500 करोड़ का जी.डी.आर. इश्यू लाया गया था.

देश के पेट्रोलियम क्षेत्र की इस सब से बड़ी कंपनी के शेयरों की नीलामी विनिवेश (सरकारी भागदारी कम करने) के 9वें दौर में 252 रुपए प्रति शेयर की दर पर की गई थी. इस दौर में कंपनी के 3.56 करोड़ शेयरों की नीलामी का प्रस्ताव था जबकि कुल 2 लाख शेयरों का ही विनिवेश हो सका था.

वित्तीय मोरचे पर यह कंपनी बेहद सफल रही है. वर्ष 1995-96 की पहली छमाही में कंपनी ने 6477.31 करोड़ की कुल बिक्री आय पर 1018.98 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ कमाया है. बिक्री अनुपात में कंपनी की लाभप्रदता 15.73 फीसदी है. इश्यू बाद यह करीब 20.15 फीसदी हो जाने का

कंपनी का नाम	वर्ष	बिक्री/आय (लाख रु. में)	शुद्ध लाभ/हानि (लाख रु. में)	लाभांश (%)	ई.पी.एस. (रु.)	शेयर मूल्य (रु.)	प्रीमियम (रु.)	इश्यू खुलने/बंद होने की तिथियां	बाजार मूल्य ऊंचा/नीचा
...रसरामपुरिया सिंथे लि.	94	17567	1803	27	9.4	10.00	10.00	27जून/8 जुलाई	84/67.50
	95	32200	2551	27	7.2				31.25/25.00
	95 (9 माह)	29795	827	-	2.64				
...ी.सी.एम डेवू मोटर्स	95	148.29	-10.51 (करोड़ रु. में)	-	-1.14	10.00	45.00	अगस्त	48.00/30.00
.... एन. जी. सी.	95	13027.6	2090.51	-	12.57	10.00	245.00	अगस्त	580/160
	95 (9 माह)	6768.11	1018.96 (करोड़ रु. में)	-	7.15				
...डा इंड. लि.	95 (9 माह)	32.33	75.72	-	2.14	10.00	20.00	29जून/4 जुलाई	पहला निर्गम
...भ एक्सिम लि.	-	-	-	-	-	10.00		4/8 जुलाई	पहला निर्गम
...कतलाल फाइनेंस ...पनी लि. (ऋणपत्र)	-	-	-	-	-	1000.00	-	28जून/8 जुलाई	पहला निर्गम
...वी.जी डिपार्टमेंटल ...र्स लि.	95	5571	84.00	-	-	10.00	-	29जून/4जुलाई	पहला निर्गम
	95 (9 माह)	39231	728.00	-	-				

प्रस्तावित इश्यू

पिछले दिनों सेबी ने कुछ बड़ी व मध्यम कंपनियों के इश्यू संबंधी प्रस्ताव मंजूर किए हैं. इन में बैंक आफ बड़ौदा, केनरा बैंक, गुजरात इंड. का 174.90 करोड़ का राइट व निरमा का 162.83 करोड़ का एन.सी.डी. राइट शामिल है. घाटे में चल रही वसिष्ठ डिटर्जेंट लि. 1:1 अनुपात में 21.50 रुपए मूल्य पर 60 करोड़ से ज्यादा का राइट इश्यू लाएगी. कंप्रेसर बनाने वाली हिंदुस्तान कंप्रेसर लि. भी अपनी विस्तार परियोजना के तहत 50 करोड़ से भी ज्यादा का राइट इश्यू लाएगी.

वसिष्ठ डिटर्जेंट जहां अपनी पुनरुद्धार योजना के तहत पूंजी बाजार में आएगी, वहीं हिंदुस्तान कंप्रेसर ने पूर्णतः देसी तकनीक आधारित प्लांट विकसित किया है. ये दोनों ही कंपनियां अपने निवेशकों को बेहतर रिटर्न दे सकेंगी.

इस के अलावा विक्टोरिया ग्लास क्रमशः 10.53 करोड़ का पब्लिक व 6.42 करोड़ का राइट इश्यू लाएगी. सूर्यलक्ष्मी काटन मिल्स 20.28 करोड़ का राइट व इतनी ही राशि का पब्लिक इश्यू लाएगी.

अनुमान है.

कंपनी में सरकार की इक्विटी भागीदारी 96.14 फीसदी है. वर्तमान में कुल 1425.93 करोड़ की इक्विटी में जनता की भागीदारी 1.89 फीसदी है.

भारी प्रीमियम के बावजूद निवेश का एक अच्छा अवसर है. इश्यू अगले माह अगस्त में आएगा.

मिंडा इंडस्ट्रीज लि.

अपनी विस्तार व आधुनिकीकरण योजना के आंशिक वित्त पोषण के लिए यह कंपनी 4.45 करोड़ रुपए का पब्लिक इश्यू ला रही है. वाहनों के स्विच व ताले बनाने वाली यह कंपनी मिंडा समूह से संबद्ध है. प्रति शेयर प्रीमियम 20 रुपए रखा गया है.

मिंडा समूह के अध्यक्ष व कंपनी के बोर्ड में शामिल शादीलाल मिंडा इस के मुख्य प्रवर्तक हैं. निर्मल कुमार मिंडा इस के प्रबंध निदेशक हैं.

कंपनी ने अपने विस्तार कार्यक्रम के तहत नवीनतम दो पहिया व तिपहिया वाहनों के लिए स्विच, हार्न और बत्तियां बनाने की यूनिट का आधुनिकीकरण करने का फैसला किया है. कारों की बाबत हाइटेक स्विच बनाने का एक नया उपक्रम खोला जाए जो मिंडा इंडस्ट्रीज लि. व जापान की टोकाई री और सुमितोमो कारपोरेशन का संयुक्त उपक्रम हो टोकाई व सुमितामो की इस में क्रमशः 35 व 5 फीस की हिस्सेदारी होगी तथा भारतीय प्रवर्तक की इक्वि हिस्सेदारी 60 फीसदी रहेगी. इस के अलावा उत्पा की बेहतर डिजाइनों के लिए सीएडी व सीएएम सिस्ट खरीदा जाएगा.

वाहन स्विचों के बाजार में 70 फीसदी हिस्सेद रखने वाली इस कंपनी के लाभ मार्जिन बहुत कम हैं. गत वर्ष 31 दिसंबर को समाप्त 9 माह अवधि में 32.33 करोड़ की बिक्री पर 75.72 ला रुपए के सकल लाभ ही कमाए जा सके हैं.

शुभ एक्सिम लि.

चंडीगढ़ की यह कंपनी विभिन्न प्रकार ट्रेडिंग गतिविधियों में संलग्न है. कंपनी के मु प्रवर्तक केवल कृष्णा गोयल हैं. कंपनी अब निय घराने का काम करना चाहती है. इस के तहत पौल उत्पादों का व्यापार किया जाएगा. कुल 5.09 करो की इस विस्तार परियोजना के तहत कंपनी पूं बाजार से 3.75 करोड़ रुपए एकत्र करेगी. स्वयं प्रवर्त 1.34 करोड़ रुपए लगाने का दावा कर रहे हैं.

इस तरह की बीसियों कंपनियां गत 2 सा में पूंजी बाजार में आ चुकी हैं. इस कंपनी में ख कुछ भी नहीं है और प्रवर्तकों ने सारा जोखिम जन के सिर डाला है.

मफतलाल फाइनेंस कंपनी लि.

अरविंद मफतलाल समूह की यह कंप पूंजी बाजार से 30 करोड़ रुपए जुटाने अपरिवर्तनीय ऋणपत्र जारी कर रही है. कंपनी योजना अपना कारोबार बढ़ाने की है. प्रत्येक 1,0 रुपए सममूल्य वाले इन ऋणपत्रों में निवेशकों लिए 2 विकल्प हैं. वह इन्हें 'डीप डिस्काउं ऋणपत्र के रूप में ले सकती है या फिर तिमा रिटर्न ऋणपत्र के रूप में भी खरीद सकता है. की वार्षिक कूपन दर 18 फीसदी रखी गई है.

तिमाही रिटर्न वाले ऋणपत्र सीमित अ वाले निवेशकों की आवश्यकताओं को ध्यान में र कर तैयार किए गए हैं.

इस कंपनी की गतिविधियां मुख्यतः फंड शुल्क आधारित क्षेत्रों में हैं. अन्य फाइनेंस कंपनि के मुकाबले इस का कारोबार मध्यम स्तर का है

निवेशकों के लिए यह फायदे का सौदा

होगा क्योंकि पूर्व में भी इस समूह ने निवेशकों को तंग ज्यादा किया है और रिटर्न कम दिया है. ऋणपत्रों पर ब्याज आदि देने में वैसे भी कंपनियां काफी लापरवाही बरतती हैं. फाइनेंस कंपनियों में निवेश का दौर अब बहुत कम हो गया है.

जे.वी.जी. डिपार्टमेंटल स्टोर्स लि.

विविध व्यावसायिक गतिविधियों में सक्रिय जे.वी.जी. समूह की प्रमुख कंपनी जे.वी.जी. डिपार्टमेंटल स्टोर्स लि. ने अब अपनी 'जे.वी.जी. मेरा बाजार' परियोजना के विस्तार का निर्णय लिया है. इस के तहत कंपनी उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, दिल्ली व चंडीगढ़ में 65 डिपार्टमेंटल स्टोरों की स्थापना करेगी.

यूको बैंक ने इस 11.62 करोड़ रुपए की विस्तार योजना का आकलन किया है. प्रवर्तक स्वयं 4.13 करोड़ लगाने का दावा कर रहे हैं और जनता से 7.48 करोड़ एकत्र किए जा रहे हैं.

'डिपार्टमेंटल स्टोर' का सोच मूलतः विदेशी है और भारत में अभी तक यह सफल नहीं हुआ है. कंपनी के इस समय 27 डिपार्टमेंटल स्टोर हैं जो बहुत ज्यादा सफल नहीं हैं.

इस समूह की मुख्य गतिविधियां फाइनेंस क्षेत्र से संबंधित हैं. अन्य बीसियों क्षेत्रों में घुसे होने पर भी समूह बहुत ज्यादा सफल नहीं है. समूह की इस कंपनी का कारोबार औसत से भी कम है. मार्च 1995 को समाप्त वित्तीय वर्ष के दौरान कंपनी की कुल आय तो 55.71 करोड़ रही पर शुद्ध लाभ 84 लाख ही रहा. इसी प्रकार दिसंबर 1995 को समाप्त 9 माह के दौरान कंपनी का कुल कारोबार 392.31 करोड़ और मुनाफा मात्र 7.28 करोड़ ही दर्ज किया गया.

कंपनी के मुख्य प्रवर्तक विजय शर्मा हवाबाज ज्यादा हैं. गत 2-3 सालों में वह पूंजी बाजार का स्वाद चख चुके हैं. अभी वह अपनी कई और कंपनियों के पब्लिक इश्यू लाएंगे.

एस.सी.आई.सी.आई.

निजी क्षेत्र की जानीमानी वित्तीय संस्था शिपिंग क्रेडिट एंड इनवेस्टमेंट कंपनी आफ इंडिया लि. इस साल बांडों के जरिए बाजार से 3,000 करोड़ रुपए उगाहेगी. कंपनी के उपाध्यक्ष एन.सी. सिंघल के मुताबिक 1,500 करोड़ पब्लिक बांडों के जरिए 1,000 करोड़ घरेलू बाजार से व 500 करोड़ विदेशी बाजारों से इकट्ठे किए जाएंगे.

अगस्त में आने वाले ये बांड देश के प्रमुख शेयर बाजारों में सूचीबद्ध होंगे. निवेशक को प्रत्येक साढ़े 4 साल बाद अपना पैसा निकालने या पोर्टफोलियो बदलने का विकल्प दिया गया है. निवेशकों के लिए ये फायदे का सौदा साबित होंगे. इसलिए उन्हें निवेश के लिए तैयार रहना चाहिए. ●

भ्रूण परीक्षण

लेख ● प्रदीप कुमार झा

लगभग डेढ़ दशक पहले भ्रूण परीक्षण की शुरुआत हुई थी, जिस का मूल उद्देश्य गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी हासिल करना था. विशेषकर गर्भस्थ अस्वस्थ शिशुओं का सही समय पर उपचार करने के लिए भ्रूण परीक्षण की समयसमय पर जोरदार वकालत की जाती रही थी.

लेकिन बाद में गर्भस्थ शिशुओं के भ्रूण परीक्षण का मामला लिंग परीक्षण के रूप में विकसित हो कर सामने आया. गर्भस्थ शिशुओं की हत्या होने लगी और उन में भी मादा शिशुओं की ज्यादा. तब सड़क से ले कर संसद भवन तक हंगामा हुआ और इस पर कानूनी रोक लगाए जाने की वकालत शुरू हुई परंतु वास्तव में इस पूरे प्रसंग को दूसरे दृष्टिकोण से समझने की जरूरत है.

भ्रूण परीक्षण पर कानूनी रोक लगाने की बात कदापि तर्कसंगत नहीं हो सकती. क्योंकि भ्रूण परीक्षण के सहारे डाक्टरों को कई रोगों का पता शिशु के जन्म लेने के पहले ही लग जाता है, इसलिए उन लाखों



वैसे तो भ्रूण परीक्षण का मूल उद्देश्य है गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य की जांच करना परंतु अब इस का प्रयोग लिंग परीक्षण के रूप में हो रहा है जिस के कारण इस पर कानूनी रोक लगाने की वकालत की जा रही है. लेकिन वास्तव में यह मांग क्या तर्कसंगत कही जा सकती है?

बीमार गर्भस्थ शिशुओं का उपचार उन के जन्म लेने से पहले ही करना संभव हो गया है. फिर जहां तक मादा शिशु की हत्या का सवाल है, इस पर हायतौबा मचाने की ज्यादा जरूरत नहीं है.

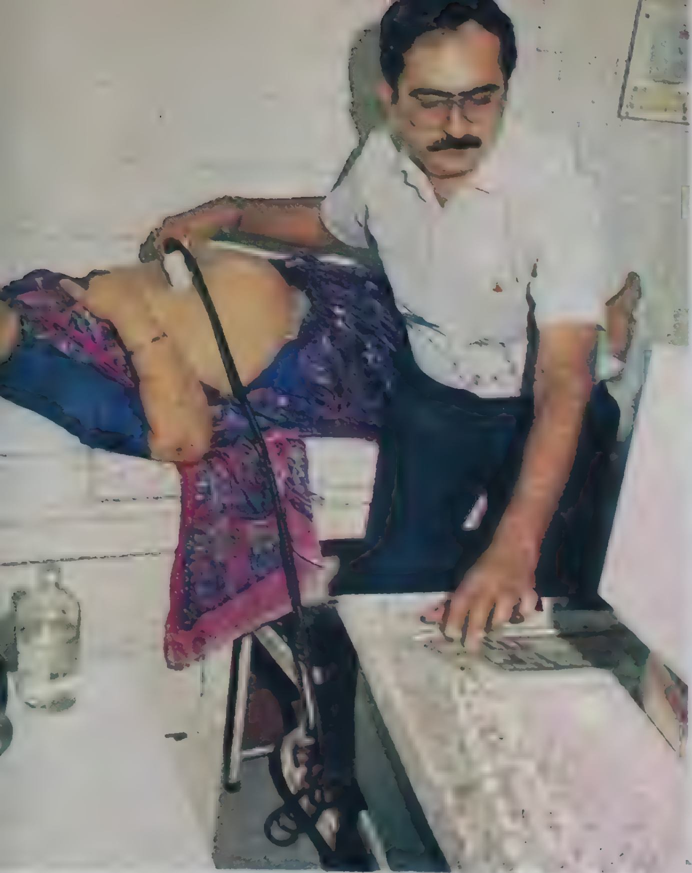
एक मां को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह बेटा चाहती है या बेटी. आकाशवाणी पटना में कार्यरत स्नेहलता इस का समर्थन करते हुई कहती है कि "बेटा या बेटी प्राप्त करने का अधिकार पूर्णतया मां को मिलना चाहिए." वह आगे कहती है कि "कोई मां जानबूझ कर मादा शिशु की हत्या करवाना नहीं चाहेगी." जब कोई महिला पहली बार मां बनने की स्थिति में आती है तो वह लड़कालड़की में शायद ही भेद करती हो. महिला अगर भ्रूण परीक्षण के बाद यह जान लेती है कि उस के गर्भ में मादा शिशु है, तब भी वह किसी कीमत पर उस शिशु को नष्ट नहीं करना चाहती है. आमतौर पर हर दंपती अपने पहले बच्चे का इंतजार बड़ी उत्सुकता से क
हैं. एक महिला के लिए पहली बार मां ब
ही एक बड़ी बात है और वह इस अव
को कभी खोना नहीं चाहती. इस पूरे प्र
पर स्नेहलता का विचार है कि भ्रूण परीक्ष
आज एक आवश्यकता है, पर एक महि
को बेटा चाहिए या बेटी, इस का
अधिकार उस महिला को मिलना चाहिए

मंजू को 7 वर्ष बाद मां बनने
अवसर मिला. वह बताती है कि एक स
तो उसे लगा कि शायद वह कभी भी मां
बन पाएगी पर लगातार डाक्टरी इलाज
बाद आखिरकार उसे मां बनने का अव
मिल ही गया. भ्रूण परीक्षण के बाद डाक्
ने बताया कि उस के पेट में मादा शिशु
रहा है. एक क्षण मेरे पति के दिमाग में अ
कि पहले बेटी ठीक नहीं रहेगी, पर मंज
साफसाफ कह दिया कि इस मामले में
कुछ भी सुनना नहीं चाहती.

पहली पुत्री के 2 वर्ष बाद उसे फिर
बनने का अवसर मिला. इस बार भी
परीक्षण से पता चला कि फिर बेटी ही



पहला बच्चा तो सभी को प्यारा होता है फिर चाहे वह लड़का हो या लड़की.



भ्रूण परीक्षण से डाक्टरों को कई रोगों का पता शिशु के जन्म लेने से पहले ही चल जाता है. फिर लिंग परीक्षण के नाम पर इस पर रोक लगाने की मांग क्यों?

वाली है. इस बार मंजू ने स्वयं पति से कहा कि "मुझे और बेटी नहीं चाहिए और स्वेच्छा से गर्भपात करवा लिया. तीसरी बार भ्रूण परीक्षण से बेटे का पता चला. आज मेरे घर में पति के अतिरिक्त 9 वर्षीया पुत्री और 1½ वर्ष का पुत्र सुमन है. इसलिए इस बात में कोई दम नहीं कि कड़े कानून बना कर इस परीक्षण को रोक देना चाहिए या मादा शिशु की हत्या के नाम पर एक राजनीतिक बखेड़ा खड़ा कर देना चाहिए."

भ्रूण परीक्षण 'क्रोनिक विलस सैपलिंग' द्वारा एमियोसेंटेसिस विधि से किया जाता है. इस परीक्षण में भ्रूण के एक हिस्से को कोरयन के ऊपर की रेशानुमा विलस कोशिकाओं का इस्तेमाल किया जाता है. इन कोशिकाओं में भ्रूण की कोशिकाओं के गुण होते हैं और इन की जांच से डाक्टर बच्चे की आनुवंशिक गड़बड़ियों का पता लगा सकते हैं. इस से जाना जा सकता है कि होने वाला बच्चा शारीरिक अथवा मानसिक रूप से अपंग है या नहीं. इस के साथ ही बच्चे के लिंग का भी आसानी से पता चल जाता है.

भारत में 90% से अधिक भ्रूण परीक्षण अल्ट्रासाउंड मशीन से होता है. यह परीक्षण इतना सहज और सुलभ है कि आम आदमी भी इस परीक्षण को करवा सकता है. साधारणतया डाक्टर अल्ट्रासाउंड से 600 से 800 रुपए में गर्भस्थ शिशुओं के लिंग की जानकारी दे देते हैं. बाद में एक महिला 1,500 से 2,000 रुपए और खर्च कर के गर्भपात करवा सकती है. कुल मिला कर एक महिला 2-3 हजार रुपए खर्च कर भ्रूण परीक्षण और गर्भपात करवा सकती है.

परंतु महिलाओं के लिए यह जानना आवश्यक है कि अल्ट्रासाउंड तकनीक पूर्णतया विश्वसनीय नहीं होती. हरियाणा के अंबाला जिले में घटित घटना इस का उदाहरण है, जहां एक महिला डाक्टर ने एक महिला के गर्भ परीक्षण के बाद उस में मादा शिशु के होने की बात कही थी. बाद में उस महिला ने जब स्वेच्छा से गर्भपात करवाया तो गर्भपात की रिपोर्ट में महिला के गर्भ में लड़की की जगह लड़का बताया गया. इस पर उक्त महिला ने अदालत में उस महिला डाक्टर पर हर्जाने का मुकदमा ठोक दिया.

इस प्रसंग में डा. हेमलता चौधरी कहती हैं कि अब अदालती चक्कर से बचने के लिए महिलाओं से इस बात की गारंटी ले ली जाती है कि गर्भपात के बाद वे कोई झंझट पैदा नहीं करेंगी. डा. चौधरी कहती हैं कि एक मां होने के नाते मैं कहना चाहूंगी कि चूंकि एक महिला स्वेच्छा से अपना गर्भपात कराती है इसलिए बाद में उसे किसी प्रकार का बखेड़ा खड़ा करने का कोई अधिकार नहीं है. इन

कानूनी पेचिदगियों से दूर हट कर डा. चौध
कहती हैं कि पहले बच्चे के समय कहीं
किसी प्रकार का दबाव नहीं होता, न प
की ओर से और न स्वयं गर्भवती महिला
ओर से. पहला बच्चा तो बहुत प्यारा होता
चाहे वह लड़का हो या लड़की और
महिला को मां बनने का शौक होता है.

इसी सिलसिले में ममता बसु कहती
कि थोड़ी परेशानी तब उत्पन्न होती है
पहली लड़की होती है तथा दूसरी बार
गर्भ में लड़की ही ठहर जाती है. ऐसी स्थि
में अगर कोई महिला यह जान कर कि
की होने वाली दूसरी संतान भी लड़की ही
और वह गर्भपात करवा लेती है तो इस
कोई बुराई नजर नहीं आती.

1989 में 'फोरम अगेंस्ट से
डिटर्मिनेशन एंड सेक्स फिक्सेशन'
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर
सरकार से मांग की थी कि लिंग परीक्षण
संवैधानिक रोक लगाई जानी चाहिए जिस
लड़कियों की बढ़ती हत्याओं पर लगाम लग
जा सके.

अंततोगत्वा सरकार ने एक संयु
संसदीय समिति का गठन किया, जिस
अपनी रिपोर्ट में कहा कि भारतीय मेडिक
कौंसिल से मान्यता प्राप्त मेडिकल कालि
से जुड़े अस्पतालों, शोध संस्थानों और शिक्ष
अस्पतालों तक ही भ्रूण परीक्षण की सुवि
सीमित रहनी चाहिए. साथ ही यह भी क
गया कि अल्ट्रासाउंड मशीन बनाने की अनुम
सिर्फ रजिस्टर्ड संस्थाओं को ही मिलनी चा
तथा इन मशीनों के स्थानांतरण पर भी र
लगानी चाहिए. पर यह एक ऐसा प्रसंग
जिस से महिलाओं का कल्याण होने व
नहीं है. इस से सरकारी तंत्र को संस्थाओं
रजिस्टर करने के नाम पर अवैध कमाई
मौका मिल जाएगा. वस्तुत: न तो संस्था
को रजिस्टर करने की जरूरत है और
ही इस विषय पर ज्यादा हायतौबा मच
की. एक मां को यह अधिकार मिलना
चाहिए कि वह क्या चाहती है, लड़का
लड़की?

बत्ती गुल आखिर क्यों?

लेख ● नरविजय यादव

आराधना घर की सारसंभाल में व्यस्त थी, शाम 6 बजे से मेहमान जो आने थे. बिटिया का तीसरा जन्मदिन था. पति केक ले आए. बीच के कमरे में सारा कार्यक्रम रखा गया. करीब 7 बजे पार्टी शुरू हुई. कात्या के केक काटते ही बच्चों और बड़ों ने तालियां बजाईं और गाने लगे– 'हैप्पी बर्थडे...' लेकिन लाइन पूरी हो पाती कि बिजली चली गई. पार्टी का सारा मजा किरकिरा हो गया.

बिजली का हर जगह यही आलम है. कब चली जाएगी और कितनी देर में आएगी, कोई नहीं जानता. दिल्ली हो या नोएडा अथवा देश का कोई और शहर, बिजली की कटौती



आजकल बिजली की कटौती से आम आदमी बेहाल है और इस का कारण है बिजली की बढ़ती खपत. लेकिन सरकार मांग और पूर्ति में बढ़ते अंतर को खत्म करने में असमर्थ है. ऐसे में बिजलीघरों के द्वार निजी क्षेत्र के लिए खोल दिए गए हैं. देखना है कि यह कदम हालात में कितने सुधार ला पाते हैं?

बेरोकटोक चलती रहती है. उत्तर प्रदेश में सरकार ने घोषणा की है कि 16 घंटे प्रतिदिन बिजली अवश्य सप्लाई की जाएगी. लेकिन कांग्रेस के भूतपूर्व विधायक नरेश अग्रवाल का दावा है कि प्रदेश के ज्यादातर जिलों में 6 घंटे भी बिजली ठीक से नहीं आती.

फिलहाल देश की कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 78,900 मेगावाट है. विशेषज्ञों का अनुमान है कि आगामी 10 वर्षों के दौरान यहां 1.4 लाख मेगावाट बिजली की जरूरत होगी. 1991 के मध्य में आर्थिक उदारीकरण की घोषणा के बाद से औद्योगिक एवं व्यापारिक गतिविधियां जिस तेजी से बढ़ी हैं, उस गति से विद्युत उत्पादन नहीं बढ़ा इसीलिए बिजली की किल्लत रहती है.

बिजली की खपत सभी राज्यों में ब है. महाराष्ट्र में अन्य सभी राज्यों के मुकाब ज्यादा बिजली पैदा होती है, 10,368 मेगावा परंतु वहां इस की मांग भी 500 मेगाव प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है. कर्नाटक औद्योगिक विकास की गति तीव्र करने लिए 6,000 मेगावाट अतिरिक्त बिजली जरूरत महसूस की जा रही है. इसी तर दिल्ली में बिजली की मांग हर साल प्रतिशत की दर से बढ़ रही है. दिल्ली विद्य प्रदाय संस्थान (डेसू) के अतिरिक्त महाप्रबंध के अनुसार, "इस वक्त राजधानी में 21 ला विद्युत उपभोक्ता हैं. हर साल इस सूची

प्रमुख विद्युत परियोजनाएं : तुलनात्मक स्थिति

स्थान	कंपनी	ईंधन	क्षमता (मेगावाट)	पूंजी लागत (रु. करोड़ प्रति मेगावट)
विजाग (आंध्र प्रदेश)	हिंदुजा एवं नेशनल पावर (यू.के.)	कोयला	1,000	5.81
मंगलौर (कर्नाटक)	कोग्नेट्रिक्स	कोयला	1,000	5.08
इव वैली (उड़ीसा)	ए.ई.एस. कारपोरेशन (अमेरीका)	कोयला	420	4.82
जेगरूपडु (आंध्र प्रदेश)	जी.वी.के. इंडस्ट्रीज (अमेरिका)	गैस	235	3.52
गोदावरी (आंध्र प्रदेश)	स्पैक्ट्रम पावर (अमेरिका)	गैस	208	3.60
जीरो यूनिट एन.एल.सी. (तमिलनाडु)	एस.टी. पावर (अमेरिका)	लिग्नाइट	250	4.5
दाभोल (महाराष्ट्र)	एनरान पावर (अमेरिका)	गैस	695	4.19



यह बात किसी से छिपी नहीं है कि झुग्गी-झोंपड़ियों में अनधिकृत रूप से बिजली का इस्तेमाल किया जाता है.

करीब 70 हजार नए नाम जुड़ जाते हैं."

जाहिर है, बिजली की मांग और पूर्ति में अंतर बढ़ता जा रहा है. इसे समाप्त करने के लिए सरकार ने बिजलीघरों के द्वार निजी क्षेत्र के लिए खोल दिए हैं. अनेक घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों ने ऊर्जा परियोजनाएं शुरू करने के लिए 243 प्रस्ताव भेजे हैं. इन में अमेरिकी कंपनी 'एनरान' सर्वाधिक चर्चा में रही है. महाराष्ट्र की दाभोल परियोजना के लिए इस का ठेका मंजूर किया गया है. 9,000 करोड़ रुपए से अधिक लागत वाली इस परियोजना की उत्पादन क्षमता 2,015 मेगावाट रखी गई है.

बिजली के उत्पादन और वितरण का बंदोबस्त मुख्यतः राज्य बिजली बोर्डों के अधीन है. लेकिन इन की हालत बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम जैसी है. भ्रष्टाचार के दलदल में डूबी ये घोड़ियां कर्ज के बोझ तले दबी हैं. उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड पर पावर ग्रिड कारपोरेशन के करोड़ों रुपए बकाया हैं. कुछ अन्य बोर्डों ने भी कारपोरेशन के करोड़ों रुपए के बिल अटका रखे हैं.

असम बिजली बोर्ड पर 9 करोड़ रुपए का कर्ज चढ़ा है. बिजली बोर्डों पर कोल इंडिया लिमिटेड का कुल 3123.4 करोड़ रु. तथा बी.एच.ई.एल. का करीब 1,000 करोड़ रु. चुकाना बाकी है. एनटीपीसी तथा एनएचपीसी के बिल भी अदा करने हैं.

घाटे के पीछे बिजली की चोरी, घटिया उपकरण, अपर्याप्त स्टाफ, प्रेषण और वितरण के दौरान होने वाली क्षति, भ्रष्टाचार तथा राजनीतिक दखलअंदाजी प्रमुख कारण हैं.

यहां बिजली को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने के दौरान 50 से 55 प्रतिशत तक बिजली नष्ट होती है जबकि यह मात्रा

डेसू : घाटे पर घाटा

- *दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री मदनलाल खुराना ने 19 अगस्त 1995 को घोषणा की थी कि रामलीला, दशहरा, गुरुपर्व, ईस्टर आदि धार्मिक पर्वों पर होने वाले कार्यक्रमों के लिए घरेलू दाम पर बिजली दी जाएगी. अभी तक 30 प्रतिशत अधिभार वसूला जाता था. इस से दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान (डेसू) को अनुमानतः 25 लाख रुपए सालाना का नुकसान होगा.*
- *मंदिरों, गुरुद्वारों, मसजिदों व चर्चों के विद्युत बिलों में 50 रुपए की छूट देने की घोषणा की गई है. इस कदम से भी डेसू को 75 लाख रुपए प्रतिवर्ष का घाटा होगा.*
- *डेसू कर्मचारियों को 250 रुपए से 700 रुपए तक प्रतिमाह अंतरिम राहत देने की घोषणा खुराना ने की थी. पहले ही घाटे में डूबे इस संस्थान पर इस से साढ़े 8 करोड़ सालाना का वजन बढ़ जाएगा.*
- *बढ़े वेतन की किस्तें 1 जनवरी 1994 से दिए जाने के निर्णय के बावजूद कर्मचारी संतुष्ट नहीं हैं.*
- *डेसू को बिजली चोरी के कारण पहले ही 700 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष का घाटा झेलना पड़ता है.*

ऊर्जा क्षेत्र का निजीकरण

घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों द्वारा विद्युत परियोजनाएं शुरू करने के लिए 243 प्रस्ताव पेश किए गए.

ऊर्जा क्षमता (मेगावाट)	राज्य, जहां ये बिजलीघर बनने हैं	अनुमानित लागत (करोड़ रुपए)
14403	आंध्र प्रदेश	51586
11070	तमिलनाडु	39752
9136	उड़ीसा	36819
7892	मध्य प्रदेश	29190
5457	महाराष्ट्र	22181.3
5272	कर्नाटक	20882.1
5112	उत्तर प्रदेश	16402.8
4328	हिमाचल प्रदेश	15861.1
4170	गुजरात	14880.4
3890	राजस्थान	12620.9
2715	पश्चिम बंगाल	12436
3021	केरल	10569.5
3187	जम्मूकशमीर	7950
1575	हरियाणा	6562.5
1200	सिक्किम	4200
1000	पंजाब	3500
703	बिहार	2877

स्रोत : उर्जा मंत्रालय

12 प्रतिशत तक ही रहनी चाहिए.

दिल्ली में डेसू को बिजली की चोरी के कारण ही औसतन 700 करोड़ रुपए का घाटा प्रतिवर्ष होता है. टैक्स इंडिया एक्सपोर्ट कंपनी के प्रबंध निदेशक राजवीर सिंह का कहना है, "दिल्ली में तमाम नई फैक्टरियां ऐसी हैं, जिन्हें बारबार कहने के बाद भी पावर कनेक्शन नहीं दिए गए हैं. ऐसी फैक्टरियां मजबूरन बिजली की चोरी कर के काम चलाती हैं."

झुग्गीझोंपड़ी बस्तियों में तो बिजली की चोरी आम बात है. इसी के मद्देनजर पूर्व मुख्यमंत्री मदनलाल खुराना ने राजधानी क्षेत्र की करीब 4 लाख 80 हजार झुग्गीझोंपड़ियों को एक बत्ती कनेक्शन देने की योजना लागू की थी. बदले में झुग्गीवासियों से नाममात्र का शुल्क लिया जाता है. फि[र] भी अनधिकृत रूप से बिजल[ी] इस्तेमाल करने वाले लो[ग] कर्मचारियों की मुट्ठी गरम कर के बिजली की चोरी करते हैं.

कृषि क्षेत्र को 1 या [2] रुपए प्रतियूनिट लागत वाल[ी] बिजली 35-40 पैसे प्रति यूनि[ट] के हिसाब से दी जाती है, त[ो] बिजली बोर्डों को नुकसान त[ो] होगा ही.

कई बार तो राजनीतिबाजो[ं] के कहने पर भी किसी खा[स] एरिया में बारबार बत्ती गु[ल] रखनी पड़ती है. जिस की वज[ह] से ही एक क्षेत्र के किसानों क[ी] फसल लहलहाती दिखती है त[ो] दूसरे क्षेत्र में ट्यूबवैल चल [ही] नहीं पाते.

निजीकरण क्यों?

बिजली के मामले [में] सरकार ने हथियार डाल दिए ह[ैं] ऊपर वर्णित कमियां दूर कर[ने] की बजाय अब इस क्षेत्र क[ो] निजी हाथों में सौंपा जा र[हा] है, हालांकि परमाणु ऊर्जा केंद्र सरकार अप[ने] पास ही रखेगी. कुल 33 हजार मेगावा[ट] अतिरिक्त बिजली तैयार करने की योजना ह[ै] इस में से 22 हजार मेगावाट विद्युत निजी क्षे[त्र] के बिजलीघरों से आएगी.

मौजूदा नियमों के तहत निजी कंपनि[यां] तैयार बिजली को राज्य बिजली बोर्डों क[ो] बेचने के लिए बाध्य हैं, जिन की हालत अच्छ[ी] नहीं है. इस का एक हल यह हो सकता है कि ये कंपनियां अपनी बिजली सीधे बड़े उद्योगों क[ो] दें, ताकि इन्हें भुगतान की दिक्कत न रहे.

यह निश्चित है कि निजी क्षेत्र क[ी] बिजली आम जनता को महंगी पड़ेगी. लेकि[न] अर्थशास्त्री एवं पत्रकार एस.ए. अय्यर मान[ते] हैं कि 'बिजली बिलकुल न होने से तो अच्छ[ा] है कि महंगी ही मिले.'



बीकानेरी भुजिया

लेख • डा. जमनालाल बायती

पिछले कुछ दिनों तक बीकानेरी भुजिया पत्रपत्रिकाओं की सुर्खियों में रही है. सुर्खियों में इसलिए कि भुजिया बनाने के इस लघु या कुटीर उद्योग में बहुराष्ट्रीय कंपनी की घुसपैठ का आभास होने लगा था. पेप्सी फूड या लहर नमकीन-बीकानेरी भुजिया के नाम से प्रचारित किया जाने लगा. ऐसा होते ही भुजिया उद्योग में लगे व्यवसायियों में खलबली मच गई. कारण स्पष्ट था कि पेप्सी फूड जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनी यदि ट्रेडमार्क के आधार पर उत्पादन आरंभ करती है तो वह बड़े पैमाने का उद्योग होगा, जिस में वे भारी मशीनों का उपयोग करेंगे. नतीजा स्पष्ट है कि छोटे व्यवसायी तथा इस कुटीर उद्योग में लगा मजदूर वर्ग रोजगार से बाहर हो जाएगा –अपनी इच्छा से नहीं वरन बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाले उद्योग के मुकाबले बाजार में न टिक सकने के कारण.

गत वर्ष 15 दिसंबर को भुजिया उद्योग

बीकानेरी भुजिया के उद्योग में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घुसपैठ खलबली मचा दी है. कई घरेलू चुनौतियों से जूझते हुए व्यवसायी इस नई मुसीबत से परेशान हैं. इस से न केवल उ के व्यवसाय के चौपट होने का खतरा पैदा हो गया है बल्कि कई लोगों की रोजीरोटी छिन जाने का भी डर है.

को इस प्रभाव से बचाने के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने भुजिया व्यवसायियों के हित में प्रधानमंत्री को पत्र लिखा. उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि बीकानेर में प्रतिदिन 17-18 टन भुजिया तैयार होती है तथा बीकानेर के लगभग 300 लघु



महिलाओं को पापड़ बेलने के काम के द्वारा घर बैठे ही आमदनी बढ़ाने का जरिया मिला हुआ है.

व्यवसायी 50 हजार लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देते हैं. बीकानेर संभाग में 5 में से 3 वर्ष सूखा पड़ता है, उस समय यही उद्योग लोगों की रोटीरोजी का सहारा बनता है. इसी पत्र में मुख्यमंत्री ने आशंका भी व्यक्त की थी कि यदि बीक भुजिया बहुराष्ट्रीय कंपनियां हथिया लेत तो पापड़, बड़ी, कचरी, कैर, सांगरी जैसे सहायक उद्योग भी उस की चपेट में आ ज

मुख्यमंत्री ने अपने पत्र के साथ बीक पापड़ भुजिया उत्पादक संघ के पत्र को संलग्न किया था जिस में बहुराष्ट्रीय कंप से सुरक्षा की मांग की गई थी.

स्थिति का अधिक बारीकी से अध्य करने के लिए भुजिया पापड़ उत्पादक बीकानेर के अध्यक्ष घेवरचंद से संपर्क कि गया. इस उद्योग में बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्र को ले कर वह बड़े चिंतित थे. उन का क था कि यदि ऐसा हो गया तो यह उ बरबाद हो जाएगा. फिर इस धंधे में लगे छोटे व्यवसायियों की संतानों का क्या हो पेप्सी फूड या लहर नमकीन कंपनी एकाधिकार हो गया तो एकाधिकार प्रण के सभी दोष यहां घर कर जाएंगे. पूरा बा उन के हाथ में होगा, वे कामगारों का शो करेंगे. बड़ीबड़ी मशीनें आ जाने से उ बेरोजगारी फैलेगी. जब अध्यक्ष घेवरचं कहा गया कि मशीन प्रयोग होने से तथा पैमाने पर उत्पादन होने से भुजिया सस्ती तो हो सकती है तो वह ठहाका लगा कर तथा बोले, "आप सिद्धांतों की बात करत आलू के चिप्स आज 240 रुपए प्रति कि बिक रहे हैं. कहां हैं सस्ते? बिजली बोर्ड सस्ती दे रहे हैं बिजली उपभोक्ताओं को

भुजिया, पापड़ या बड़ी का आधार है मोठ, जो इस क्षेत्र में पर्याप्त में पैदा होता है. इन के लिए दूसरी खास है 'साजी' या क्षार, यह भी स्थानीय पैद है. इस में सोडियम-बाई-कारबोनेट पाया



पेप्सी फूड जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा इस व्यवसाय को हथिया लेने से इस धंधे से जुड़े कई लोग बेरोजगार हो जाएंगे.

है जिसे वांछित मात्रा में पानी में घोल कर पापड़ बनाने के काम में लिया जाता है. मांग बढ़ने के साथसाथ साजी की पैदावार नियोजित फसल के रूप में बदल गई है.

भुजिया, पापड़, बड़ी तो मुख्यतः मोठ पर ही निर्भर हैं पर समय बीततेबीतते पापड़ बनाने में मूंग तथा उड़द की दाल भी काम में ली जाने लगी है.

भुजिया 3 किस्म की होती है. पहली, मोटी भुजिया जो अपेक्षाकृत सस्ती होती है और आलू आदि के साथ सब्जी बनाने के काम भी आती है. दूसरी, बारीक भुजिया जो एकदम कड़क तथा स्वादिष्ट होती है और तीसरी किस्म की भुजिया मुलायम व कम मिर्च की होती है. बच्चे इसे पसंद करते हैं. इन के अलावा 'डंकोली' नाम से एक और भुजिया मिलती है. यह ऊपर बताई गई तीनों किस्मों से भिन्न होती हैं. इस में मसाला अधिक होता है तथा अधिक मोटा होता है और इसलिए अधिक देर तक तली जाती है. आजकल पालक की भुजिया भी मिलने लगी है. इस में अन्य मिश्रणों के साथ पालक भी पर्याप्त मात्रा में मिलाया जाता है और इस का स्वाद भी तनिक भिन्न होता है.

भुजिया, पापड़ के इन धंधों में पुरुष तथा स्त्रियां दोनों को बराबर काम मिलता है. पापड़ बेलने का काम तो महिलाएं ही करती हैं. जितने अधिक समय तक ये पापड़ बेल सकती हैं उतना ही पारिश्रमिक बढ़ जाता है. इस धंधे में लगे प्रबंधक या उन के नौकर प्रातः किसी एक निश्चित स्थान पर अन्य मिश्रणों सहित मूंग का गूंधा आटा लोथों के रूप में, बेलने वाली औरतों को क्षमतानुसार बांट देते हैं. वे इस से पापड़ बेल कर अगले दिन दे जाती हैं. इन की मजदूरी का भुगतान साप्ताहिक या पाक्षिक आधार पर किया जाता है.

कालांतर में पापड़ उद्योग के द्रुत गति से विकास में मानव श्रम बाधक बनने लगा. इतना ही नहीं, कुछ स्तरों पर अनुपयोगी भी लगा. आज विभिन्न स्तरों पर मशीनों का प्रयोग संभव हो गया है. पर ये मशीनें भी लघु स्तर पर ही उत्पादन करती हैं तथा मानवश्रम की भी जरूरत बनी रहती है.

पापड़ उद्योग में लगे युवा व्यवसायी रोटेरियन मनोहर झंवर के अनुसार, "बीकानेर में भुजिया, पापड़, बड़ी, मंगोड़ी के व्यापार का वार्षिक टर्न ओवर एक अरब रुपयों से ऊपर बैठता है जिस का आधा तो केवल पापड़ के ही हिस्से में आता है. लगभग 5 करोड़ रुपया काम करने वाली औरतों को मजदूरी के रूप में भुगतान किया जाता है."

आज बीकानेर के नाम से कई अन्य स्थानों पर भी इन चीजों का उत्पादन शुरू हो गया है. पर वहां के उत्पादनों में बीकानेर के उत्पादनों जैसा स्वाद नहीं होता. जानकार लोगों का कहना है कि इस का कारण पानी की भिन्नता है. यहां के व्यवसायियों के सामने यह भी एक चुनौती खड़ी है जिसे इन्हें देखना है. ●

कमरे में आते ही नीला ने राहत की सांस ली. उसे वहां अजीब सा सुकून मिल रहा था. पल्लू को कंधे पर से सरका दिया. जूड़े को खोल कर बालों को आजाद छोड़ दिया और आंखें बंद कर के पलंग पर लेट गई. कुछ देर पहले हुए जलसे ने सब कुछ बदल दिया था, उस के सोच को हिला डाला था.

वह खयालों में खोई थी, तभी उसे पीठ पर किसी हाथ का स्पर्श महसूस हुआ.

"तुम आ गए," उस ने लेटेलेटे ही पूछा.

"आज तुम नीली साड़ी में बहुत सुंदर लग रही थीं."

"क्या तुम...?" उस ने चौंक क
आंखें खोल दीं और एक झटके से उठ बै

"हां, तुम घर में कहीं दिखी नहीं तो
ने सोचा..."

"तुम ने सोचा... और सीधे मेरे कम
में चले आए... तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई
उस ने लगभग चीखते हुए कहा.

"इस में इतना नाराज होने की क
बात है नीलू, क्या आज से पहले मैं इस कम
में आया नहीं?" शैलेश शायद ऐ
व्यवहार के लिए तैयार नहीं था.

"आए हो, पर इस इरादे से नहीं
और हां, मुझे नीलू नहीं, 'भाभी' बोलो.
कभी तुम्हारी सहपाठिन थी पर अब तुम्ह



क्षितिज के उस पार

कहानी • अर्चना प्रियंवदा जौहरी

दोस्त के बड़े भाई की पत्नी हूं... तुम्हारी भाभी, समझे?"

"यह सब तुम क्या कह रही हो? क्या हो गया है, तुम्हें?"

"मुझे आज जो कुछ भी हुआ है, वह बहुत पहले हो जाना चाहिए था. अब फौरन यहां से चले जाओ."

शैलेश अजीब नजरों से उसे देखता हुआ बाहर निकल गया.

नीला ने आगे बढ़ कर तेजी से दरवाजा बंद कर लिया और दरवाजे से पीठ लगा कर खड़ी हो गई, जिस से कि फिर कोई शैलेश उस की जिंदगी में घुसने की कोशिश न करे.



पर देखा जाए तो इस में शैलेश का ही तो दोष नहीं था, खुद ही तो नीला ने उस को इतनी छूट दी थी. अचानक अतीत का एकएक पृष्ठ उस के सामने खुलने लगा...

कितनी उमंगों से प्रोफेसर सरस के साथ उस का ब्याह किया गया था. सजीले सुदर्शन सरस कालिज में अंगरेजी साहित्य के प्रवक्ता थे. जयमाला के समय जब उस ने अपने वर को कनखियों से देखा था तो अपनी उपलब्धि पर गर्वित हो उठी थी. सरस हर तरह से सुयोग्य थे.

शादी के बाद कुछ दिन तो बहुत अच्छी तरह से कटे. नीला सरस के प्यार में सराबोर हो गई. लेकिन जैसेजैसे दिन गुजरने लगे, सरस अपने काम में व्यस्त होने लगे और नीला के जीवन में शुष्कता आने लगी. और धीरेधीरे उस ने महसूस किया कि सरस का स्वभाव एकदम अलहदा है.

नीला मौजमस्ती चाहती थी, जबकि सरस संयत व संजीदा थे. वह हमेशा सरस से अपने लिए अलग वक्त चाहती थी, जबकि सरस का ज्यादातर वक्त किताबों और कालिज में बीतता था. उन दिनों तो वह अंगरेजी की कोई नई किताब लिख रहे थे. इसलिए घर पर भी आधीआधी रात तक अपने अध्ययन कक्ष में ही रहते.

नीला तरहतरह से सरस का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करती, पर वह तो जैसे अपनी किताब के लिए सुधबुध खो चुके थे. छुट्टी वाले दिन भी लिखने में व्यस्त रहते और उस की तरफ निगाह उठा कर भी न देखते. कई बार तो वह अंदर तक आहत हो उठती थी.

नीला पति सरस के शुष्क व्यवहार से परेशान थी. उस का हर वक्त किताबों में डूबे रहना व उस की तरफ ध्यान न देना नीला को आहत कर जाता. धीरेधीरे वह सरस के छोटे भाई के दोस्त शैलेश में अपनी खुशी तलाशने लगी. लेकिन आज एक ऐसा सच उस की आंखों के सामने था जिस ने पिछली सारी शिकायतें दूर कर दी.

नीला पति को लुभाने के लिए कितना भी सजतीधजती, पर वह कभी दो बोल उस की तारीफ में न कहते. कहना तो दूर, उन्हें तो यह भी याद न रहता कि उस ने क्या पहना है. उन्हें तो केवल अपनी किताबें, छात्र और कालिज वगैरह ही याद रहते.

एक दिन तो हद ही हो गई थी. मां ने उन दोनों के लिए खास दीवाली के मौके पर कपड़े भेजे थे. नीला ने सोचा,'दीवाली तो दूर है, आज ही साड़ी पहन कर देख लेती हूं.'

उस साड़ी में वह दुलहन सी लग रही थी. अपने को आईने में भरपूर निहारती रही. फिर सरस के मुंह से अपनी प्रशंसा के दो बोल सुनने का लोभ न त्याग सकी और चल पड़ी उन के कमरे की ओर. अलमारी से कोई चीज लेने के बहाने सरस की कुरसी के बिलकुल नजदीक से वह गुजरी थी. उस ने जानबूझ कर अपनी साड़ी का पल्लू कुरसी में फंसा दिया, ताकि उसे निकालने के बहाने वह वहां रुक सके और सरस उस के सौंदर्य को निहार सकें.

नीला पलटी, रुकी, झुकी भी, पर इस से पहले बिना नजरें उठाए, बिना उस की तरफ देखे सरस ने हाथ पीछे कर के साड़ी का पल्लू कुरसी के हत्थे से निकाल दिया और अपने काम में व्यस्त हो गए. नीला वहां क्यों गई, यह नहीं पूछा. वह साड़ी क्यों पहनी, यह भी नहीं पूछा, वह कैसी लग रही है, यह भी नहीं देखा.

नीला आहत सी हो कर रह गई थी. वह भाग कर अपने कमरे में गई, साड़ी उतार कर फर्श पर फेंक दी और बिस्तर पर लेट कर सिसकने लगी, 'इतनी उपेक्ष इतना अपमान. क्या मेरी तरफ देख नह सकते थे? मेरे आगेपीछे लोग भंवरों क तरह मंडराया करते थे, पर मैं ने किसी क परवाह नहीं की और यह दंभी तन से नही मन से भी लोहा है.'

नीला मन ही मन घुटती रहती थी,प कहती किस से? मन की बात दर्द बन क दिल में ही बसी रहती. शिकायत भ आखिर किस बात की की जाती. पति अच पद पर थे, अच्छा कमाते थे. 'शराफत में उ के नाम की मिसालें दी जाती थीं. उन पुरुषत्व पर भी तो उंगली नहीं उठा सकत थी. अंतरंग क्षणों में भरपूर सुख दिया थ उन्होंने और एक चांद सी बिटिया 'सलोन भी.

फिर क्या कमी थी, उसे? कौन सा दु था जो सालता रहता था. क्यों जिंदगी सून लगती थी? अंदर का खालीपन कै भरता?

एक दिन बहुत बारिश हुई थी. सा मौसम गीलागीला सा था. फिजां में अजी सी मस्ती छाई हुई थी. नीला का मन हवा उड़ चला था. सरस के पास जा कर बोल ' चलिए न, गाड़ी निकाल लीजिए. कितन अच्छा मौसम है. आज हम बहुत लंबी सै पर जाएंगे. मुझे ऐसे मौसम में घूमना बह पसंद है.'

'नहीं, मुझे तो आज बहुत काम वैसे भी मौसम अभी तक पूरी तरह से खु नहीं है. बारिश फिर हो सकती है. सलो को सर्दी लग जाएगी...'



"यह है मेरी प्रेरणा... मेरी शक्ति... मेरी पत्नी," नीला की तरफ देखते हुए सरस बोले.

'उफ, तुम कभी मेरी सुनते भी हो,' वह झल्ला उठी थी, 'तुम किस कदर शुष्क हो.'

'तुम चाहो तो चली जाओ... सलोनी को मैं संभाल लूंगा,' कह कर सरस फिर अपनी किताबों में खो गए.

एक झटके से नीला कमरे से बाहर निकल गई. निकलतेनिकलते उस की निगाह सरस की मेज पर रखी किताब पर पड़ी थी. जिस कविता के वह नोट्स बना रहे थे, वह थी, राबर्ट ब्राउनिंग की 'दि लास्ट राइड टूगेदर.'

नीला सोचने लगी,'राबर्ट ब्राउनिंग को समझना इन के बस का काम है क्या? प्यारमुहब्बत, रोमांस इन के लिए सिर्फ किताबी पन्ने हैं और 'लास्ट राइड टूगेदर' जैसा जज्बा और ख्वाहिश क्या है, इन्हें क्या मालूम.

'काश, जिंदगी में कहीं से कोई मिठास आ जाए. ऐसी रूखी व रेगिस्तान की तरह तपती जिंदगी में कैसे बहेगी शीतलता? क्या कभी ऐसा होगा?'

लेकिन फिर एक दिन ऐसा ही हुआ था. उस मरुस्थल में एक मीठे जलस्रोत की तरह शैलेश का आगमन हुआ था. वह सरस के छोटे भाई का दोस्त था, जो कभी नीला के साथ ही पढ़ा करता था. बंबई में उस का एम.बी.ए. के लिए चयन हो गया था.

शैलेश सिर्फ मिलने आया था, पर सरस के मधुर व्यवहार और आग्रह ने उसे

वहीं रुकने पर मजबूर कर दिया. वह सुनते ही बोला था, 'अरे, मैं तो पहले से ही भाभी का दीवाना हूं... आप कहें तो हमेशा के लिए यहीं रह जाऊं.'

उस वक्त तो किसी ने उस की इस बात पर ध्यान नहीं दिया, पर सच पूछो तो नीला को यह बात शीतल बयार की तरह सहला गई थी. वह सोचने लगी कि कोई तो है, जो उस का प्रशंसक है. हालांकि कालिज में उस ने शैलेश की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया था.

फिर शैलेश वहीं रहने लगा. धीरेधीरे नीला भी शैलेश से घुलमिल गई. वह बहुत ही रोचक युवक था.

वह नीला के बनाए खाने की तारीफ करता. वह कब, क्या पहनती है, सब का ध्यान रखता. उस की जी खोल कर तारीफ करता. जब से शैलेश घर में आया था, जैसे रौनक सी आ गई थी. हर वक्त हंसीमजाक और कहकहे गूंजते रहते.

सरस भी कभीकभी इस हंसीमजाक में शामिल होते. सच पूछो तो वह भी शैलेश के आने से आश्वस्त हो गए थे. जब भी नीला को हंसते देखते, कहते, 'अच्छा हुआ, तुम यहीं रह गए... कम से कम तुम मन तो लगाए रखते हो अपनी भाभी का, वरना मुझे तो यह 'ड्राई' कहती है,' फिर एक भरपूर ठहाके के बाद कहते, 'सच, तुम्हारे आने से इस के चेहरे की मुसकराहट लौट आई है.'

नीला को कभी कहीं जाना होता तो ज्यादातर शैलेश ही साथ होता. सरस खुद ही कह देते, 'मैं तो नहीं जा पाऊंगा. हां, शैलेश को साथ ले जाना.' यहां तक कि नीला के कपड़ों का चयन भी शैलेश ही करता था. जब उसी के पसंद के कपड़े घर आ कर वह पहन कर दिखाती तो वह कहता, 'क्या बात है, भाभी, इस में तो आप परी लग रही हैं.' तब नीला खुशी से झूम उठती.

सच में नीला के पतझड़ जैसे जीवन में बहार आ गई थी. कभीकभी वह



मुलाकात

दिनरात तेरी याद है और मैं हूं
लब पे इक फरियाद है और मैं हूं,
तंगिए वक्ते हालात है और मैं हूं
मुख्तसर सी मुलाकात है और मैं हूं.

–डा. आदर्श मदान,

मन ही मन सरस और शैलेश की तुल करने लगती... कितना खूबसूरत है शैलेश पढ़ालिखा, हंसमुख और सब से बड़ी बा यह है कि उस की कितनी कद्र करता दूसरी ओर सरस तो सिर्फ नाम के ही सर हैं, वरना बिलकुल नीरस. कहीं कोई तो मे नहीं है उस का और सरस का, पर...

धीरेधीरे नीला को लगने लगा था वह मन के धरातल पर भी शैलेश के का निकट आती जा रही है. शैलेश को न ज कब वह 'शैलेशजी' से 'शैलू' और वह उसे 'नीला भाभी' की जगह सिर्फ 'नी कहने लगा था.

कई बार जब वे दोनों अकेले होते नीला सरस की नीरसता का रोना ले कर जाती और शैलेश बोलता, 'अरे, छो यार, अपने बोर पति की बातें... अब मैं गया हूं न,' और फिर दोनों हंस पड़ते.

सरस भी जब कभी कहता कि अपनी व्यस्तता के कारण नीला पर ज्या ध्यान नहीं दे पाता तो भी शैलेश कहत


"समझदारी देखें तो इसकी क़ीमत कुछ भी नहीं."
"मेरे पति को मेरा कितना ख्याल है. पता है वह मेरे लिए क्या लाए ? प्रेस्टीज पॉपुलर प्रेशर कुकर चौड़े मुंह वाला ताकि पकाने में मुझे आसानी हो."
बिलकुल ! मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं काम से घर लौटूं और मेरी बीवी रसोई में उलझी रहे."
"और इसका तला ज़्यादा मोटा है ज़्यादा शक्ति. लंबी उम्र."
क्यों नहीं ! प्रेस्टीज का जो है प्रेस्टीज की जानी-मानी क्वालिटी और विश्वसनीयता के साथ साधारण कुकर होता न, तो जब-तब नये कुकर पर पैसे बेकार जाते"
"यही नहीं, मेरी सुरक्षा के लिए 3 सुरक्षा खूबियां भी. एक अनोखे गैस्केट रिलीज़ सिस्टम (जी आर एस) सहित. इतना सब कुछ और क़ीमत भी कम."
"भई, कुकर तो दूसरा ले सकते हैं पर मेरी प्यारी बीवी ? अब आप ही बताइए, भला सच्चे प्यार की कोई कीमत लगाई जा सकती है ?'
ISI
Prestige
प्रेस्टीज
पॉपुलर
प्रेशर कुकर
आखिर अक़्ल की बात है !
ttk उत्पादन
MAA Bozell 1131-95

अरे भैया, अब आप बिलकुल निश्चित हो जाइए. अब यह खादिम आ गया है न भाभी की जीहुजूरी करने के लिए...'

एक रात इम्तिहान के कारण शैलेश देर तक पढ़ाई कर रहा था. उस के कमरे की बत्ती जली देखी तो सरस ने खुद ही नीला से कहा, 'आजकल शैल बहुत मेहनत करता है, जरा उस का ध्यान रखा करो. वह हमारे घर के लिए कितना करता है. जाओ, उस से चाय के लिए पूछ लो.'

नीला उठ कर शैलेश के कमरे की तरफ गई. पता नहीं कैसा लग रहा था. यों तो दिन में कितनी ही बार वह और शैलेश अकेले रहते थे, पर रात के इस पहर में शैलेश के कमरे में जाना...

> **संपन्नता**
>
> *संपन्नता अनेक भयों और रुचिकर बातों से रहित नहीं होती, और निर्धनता सांत्वनाओं और आशाओं से रहित नहीं होती.*
>
> --बेकन

उस ने बाहर से ही दरवाजा खटखटाया.

'कौन?' कह कर शैलेश बाहर आया और नीलू को देख कर बोला, 'अरे, तुम? तुम्हें दरवाजा खटखटाने की क्या जरूरत थी... तुम तो बेखटके अंदर आ सकती हो. तुम्हारे लिए तो मेरे दिल के दरवाजे भी हर वक्त खुले हैं... सिर्फ तुम्हारे लिए,' कह कर उस ने नीला का हाथ पकड़ लिया.

नीला सन्न रह गई थी. इस बात के लिए वह बिलकुल तैयार नहीं थी. तभी शैल हंसते हुए बोला था, 'अरे, बुरा मान गईं भाभी जान, मैं तो मजाक...'

नीला भाग कर अपने कमरे में आ गई.

दूसरे दिन सरस के कालिज में कोई जलसा था. उन्होंने शैलेश को निर्देश दिया कि वह ठीक 5 बजे नीला को ले कर कालिज पहुंच जाए.

छुट्टियां होने के कारण सलोनी नानी के घर गई थी. शाम को ठीक 4 बजे वे दोनों घर से निकले. फिर यह सोच कर कि अ[illegible] तो वक्त है, काफी हाउस में चले [illegible] कालिज पहुंचतेपहुंचते देर हो गई.

सरस ने कालिज के गेट पर 5 [illegible] मिलने को कहा था, लेकिन अब तो स[illegible] बज रहे थे. थोड़ी देर तक उन दोनों ने [illegible] खड़े हो कर इंतजार किया, लेकिन [illegible] नहीं दिखे.

तभी 3-4 छात्राएं वहां से गु[illegible] नीला ने आगे बढ़ कर एक से पूछा, [illegible] सरस को देखा है?'

'अरे बाबा, सरस सर, उन [illegible] बहुत डर लगता है. होंगे कहीं... य[illegible] लाइब्रेरी में या फिर स्टाफ रूम...'

'नहीं...,' तभी दूसरी छात्रा ब[illegible] 'उन्हें तो आज अपनी नई पुस्तक के [illegible] सम्मानित किया जा रहा है. आइए... मेरे साथ ऊपर...'

वह छात्रा उन दोनों को हाल के [illegible] पर छोड़ कर नीचे चली गई. पूरा [illegible] खचाखच भरा हुआ था. दरवाजे प[illegible] लोग खड़े थे. अंदर जाने की जरा सी [illegible] जगह नहीं थी. वहीं भीड़ में फंसेफंसे [illegible] ने सुना कि सरस का नाम पुकारा गया[illegible]

नीला जल्दीजल्दी जगह बना[illegible] अंदर जाना चाहती थी ताकि उन्हें पुरस्[illegible] लेते देख सके. पर भीड़ में सरकने की [illegible] भी नहीं मिल रही थी. तभी प्रो. सरस[illegible] माइक पर चंद शब्द कहने के लिए आम[illegible] किया गया.

सरस की आंखें भीड़ में किसी क[illegible] रही थीं. वह बोले, 'मैं... मेरी [illegible] शक्ति... मेरी प्रेरणा स्रोत....'

तब तक प्रयत्न से नीला वहां पहुं[illegible] थी, जहां से वह सरस को साफ देख स[illegible] थी और सरस ने भी उसे देख लिया. उ[illegible] आंखें चमक उठीं. वह बोले, 'हां, मैं [illegible] लोगों से उसे मिलवाऊंगा उसे...,' उ[illegible] नीला को आंख से इशारा किया.

नीला कुछ समझ पाती, इस से [illegible] सरस स्टेज से नीचे आए. नीला के हाथ [illegible] अपने हाथों में थाम भीड़ को चीरते हु[illegible]

पुनः स्टेज पर जा कर खड़े हो गए.

नीला की तरफ देखते हुए सरस बोले, 'यह है मेरी प्रेरणा... मेरी शक्ति...मेरी पत्नी... मैं ने जो कुछ भी पाया है, उस के लिए मेरी पत्नी को बहुत कुछ खोना पड़ा है. इस के त्याग और सहयोग के बिना मेरे लिए कुछ भी कर पाना असंभव था...'

इस के आगे नीला कुछ सुन नहीं पाई. उस की आंखों से झरझर आंसू बहने लगे.

जलसा खत्म हुआ. खानपान हुआ और लोग छंटने लगे. सरस ने शैलेश को बुला कर कहा, 'तुम भाभी को ले कर घर चलो, मैं कुछ काम निबटा कर थोड़ी देर में पहुंचता हूं.'

नीला बेमन से शैलेश के साथ चल पड़ी.

'आज तो कमाल कर दिया तुम्हारे बोर मास्टर ने...' शैलेश ने व्यंग्यात्मक मुसकान के साथ कहा.

नीला ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई. किसी शांत स्थिर झील की तरह गाड़ी में खामोश बैठी रही. घर पहुंच कर हमेशा की तरह वह सब से पहले रसोई में पानी पीने गई.

उधर से शैलेश की आवाज आई, 'नीलू, अभी तो तुम्हारे बोर पति को आने में देर है. चलो, एक बाजी ही हो जाए.'

पर नीला ने उस की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने कमरे में आ कर लेट गई... और फिर शैलेश का आगमन...

घंटी की आवाज ने नीला को खयालों के घेरे से बाहर ला दिया. वह भाग कर बाहर आई.

"अरे, तुम अभी तक सोई नहीं?" सरस ने पूछा.

"नहीं... नींद नहीं आ रही है."

"और हां, शैलेश को अचानक ऐसा क्या काम याद आ गया, जो रात की गाड़ी से अहमदाबाद चला गया?"

"अहमदाबाद...?" नीला ने चौंक कर पूछा.

"हां, मुझे बाहर सूटकेस लिए मिला था... कह रहा था, घर जा रहा हूं."

नीला ने राहत की सांस ली और बोली, "अब छोड़िए दूसरों की चिंता, आज सिर्फ अपने बारे में सोचें... आज तो खुशी का दिन है."

"मेरी उपलब्धि से तुम्हें खुशी मिली, इस से ज्यादा खुशी और क्या हो सकती है. अरे हां, यह लो अपनी अमानत," कह कर उन्होंने प्रमाणपत्र और 10 हजार रुपए नीला के हाथ में थमा दिए.

नीला ने प्रमाणपत्र और रुपए अपने सीने से लगाए और खुद सरस के सीने से लग गई.

"पगली, प्रमाणपत्र देख तो लो," सरस ने कहा.

"मैं ने बंद आंखों से देख लिया, पढ़ लिया. अब मेरी अंदर की आंखें खुल गई हैं मैं बंद आंखों से भी देख सकती हूं, दूर, बहुत दूर... क्षितिज के उस पार तक..." ●

हमारी बेड़ियां

हमारे पड़ोसी हमेशा राम नाम जपा करते थे. एक बार उन्होंने 10 लाख बार 'जय राम, श्रीराम लिखने का संकल्प किया. वह जहां भी जाते, कागजकलम ले कर लिखने बैठ जाते थे. दफ्तर में भी रोज कई घंटे वह इसी काम में लगाने लगे.

इस बात की भनक जब उन के उच्च अधिकारी को लगी तो फौरन उन का वहां से तबादला कर दिया गया. –डा. मनोहर नलावडे

*

साहू समाज में अभी भी ऐसे कठोर नियम हैं कि वे भेड़बकरियां नहीं पाल सकते.

हमारे गांव के एक परिवार ने 4-5 भेड़बकरियां खरीद कर उन्हें पालने का फैसला कर लिया.

जब साहू समाज के लोगों को यह बात मालूम हुई तो इस का विरोध प्रकट करते हुए उस परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया. इतना ही नहीं उन्हें भेड़बकरियां बेचने तथा पालने के जुर्म में 500 रुपए जुर्माना देने का फैसला भी सुनाया गया.

अंत में परिवार के मुखिया को भेड़बकरियां शहर के कसाई के हाथ में बेचनी पड़ीं तथा जुर्माना भी भरना पड़ा. तब जा कर उस परिवार को दोबारा समाज में सम्मिलित किया गया.

–राष्ट्रपाल गजभिये 'माहुद'

*

हमारी दादीजी बहुत पुराने विचारों की थीं. जब एक बार हमारे एक निकट संबंधी के पिता की मृत्यु हो गई तो उन्होंने हमें शोक पत्र भेजा. हमारी दादी ने उसे तुरंत फाड़ कर फेंक दिया. उन के अनुसार, "शोक पत्र को घर में रखने से परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है.

हमारे पिताजी को इस की खबर भी नहीं लगी और वह उन के दुख में शामिल नहीं हो सके.

–श्वेता मणि

*

मेरी चाचीजी ने बड़े शौक से मकान बनवाने का काम शुरू किया है. मकान का नक्शा पास करवाने के लिए चाचाजी को सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़े थे.

कमरे आदि तैयार हो चुके थे. जब जीना बनवाया जा रहा था तो चाचाजी के एक मित्र ने मकान का निरीक्षण करते हुए कहा, "भाभीजी, यह आप ने क्या अनिष्ट कर डाला? दक्षिण की ओर जीना तो अमंगलकारी होता है. इस की दिशा बदलवा दें."

मेरे चाचीजी के दिमाग में यह बात ऐसी बैठी कि उन्होंने तुरंत मकान का काम बंद करवा दिया. फिर अर्किटेक्ट से दूसरी दिशा में जीना बनवाने के लिए दूसरा नक्शा बनवाया. अब चाचाजी इस नक्शे को पास करवाने के लिए फिर से सरकारी कार्यालयों के चक्कर काट रहे हैं. –राजीव कुमार गुप्ता

*

हमारे यहां धनतेरस के दिन किसी को धन नहीं दिया जाता है. ऐसा माना जाता है कि धन देने से वर्ष भर धन की हानि होती है.

मेरे पिताजी एक थोक व्यापारी हैं. उन्हें एक बड़ी की एजेंसी मिली थी. उन्हें नि तिथि को अग्रिम राशि जमा थी.

संयोगवश उस दिन ध था. मेरी दादी ने उस दिन को रुपए नहीं जमा करने दि तरह एक अच्छी कंपनी की उन के हाथ से चली गई. व्या प्रतिस्पर्धा में पिताजी पीछे तथा संभावित लाभ से भी रह गए.

इस बात का अप पिताजी को आज भी है.

–सुजीत कुम

*

मैं नयानया तबादले पर था. उन दिनों विभ आवासों की बहुत कमी थी भी मैं ने काफी दौड़धूप कर आवास आवंटित करवा लि समय पितृ पक्ष चल रहा था परिवार व पड़ोस के लोगों ने शुरू कर दिया, "पितृ पक्ष में लेना व गृह प्रवेश अशुभ है."

सब की बातों में आ ने वह मकान आवंटन विभ यह कह कर वापस कर दिया पक्ष के बाद लूंगा."

वह घर मेरे बाद कर्मचारी को मिल गया. इस काफी प्रयास से करीब 8 मही ही मुझे दूसरा आवास आवं पाया. –राजनारायण

•

इस स्तंभ के लिए अपने तथा संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्र प्रकाशित अनुभव पर 50 रुप पुस्तकें पुरस्कार में दी जा अपने अनुभव इस पते पर सरिता, संपादकीय विभाग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी नई दिल्ली-110055.

कहानी प्रीत की



फिर खोली अलमारी अतीत की
अब भी है गंध व्यतीत की.

शब्दशब्द बोले हैं
रंग रस घोले हैं,
पृष्ठपृष्ठ जिंदा है
डायरी में एक शाम गीत की.

तहें कपड़ों के बीच
पड़ी थी आंखें मींच,
खोल कर पलकें हुई
फिर वाचाल पाती, मीत की.

रूमाल के कोने पर
नहीं ये रेशमी अजर
रेशेरेशे से लिखी
एक लंबी कहानी प्रीत की.

–निरुपम

श्रेया जब जागी तो उस ने देखा, वर्तिका कमरे में नहीं है. उसे आश्चर्य हुआ,

क्योंकि वह तो कभी भी इतनी सुबह नहीं जागती थी. फिर रात को वह देर तक पढ़ती रही थी. उस के सो जाने के बाद भी वह कितनी देर बैठी रही थी और अब इतनी शीघ्र जाग गई.

उस ने झांक कर नीचे देखा, वर्तिका आंगन में भी दिखाई न दी. दीदी कालिज जाने के लिए तैयार हो रही थीं. निक्की तो दीदी के कमरे में ही सो रही होगी. हितांशु कल से स्कूल की ओर से मैच खेलने के लिए बाहर गया हुआ है, श्रेया को थोड़ी चिंता हुई, वह



परिवर्तन

कहानी • सुदर्शन रत्नाकर

वापस कमरे में आ गई. तभी उस की नजर अपने सिरहाने के पास पड़े लिफाफे पर गई, जिसे वह खोल कर पढ़ने लगी:

श्रेया, जब तुम उठोगी, तब मुझे अपने कमरे में न पा कर हैरान अवश्य होगी, क्योंकि आज तक मैं तुम से पहले कभी जागी ही नहीं. यह मेरा रिकार्ड रहा है. पर आज रात तो मैं सोई नहीं. तुम्हारे सोने के बा मैं जागती रही. जब देखा कि तुम गहरी में सो गई हो, तब मैं तुम्हें यह पत्र लि लगी हूं.

देखो श्रेया, यह पत्र लिखने के ब

यह घर छोड़ कर दिव्यांश के साथ चली जाऊंगी. दिव्यांश को तुम जानती हो. मैं ने एक बार तुम्हें उस से मिलवाया था. वह मेरे साथ ही काम करता है. हम दोनों एकदूसरे को प्यार करते हैं. तुम जानती हो, मुझे यह रास्ता क्यों अपनाना पड़ रहा है.

पिताजी में इतनी ताकत नहीं रही कि वह हमारी शादियां करा सकें. पहले दीदी, फिर तुम्हारी और उस के बाद मेरी. निक्की अभी छोटी है. इतनी प्रतीक्षा के बाद तो मैं भी दीदी की तरह बुढ़ाने लग जाऊंगी और उस के बाद भी क्या भरोसा कि कोई मेरा



हाथ मांगने आएगा. इसी प्रतीक्षा में तो अभी तक दीदी बैठी हैं. वह पिताजी और उन के परिवार की मान्यताओं को मानती रहें, प्रतीक्षा करती रहें, लेकिन मैं नहीं कर सकती.

सोचो, जब मां, पिताजी नहीं रहेंगे, तब हम बहनों का क्या होगा? सगेसंबंधी आलोचना तो बहुत करते हैं, लेकिन कोई सहायता तो नहीं करता. कोई ऐसा सजातीय है, जो बिना दानदहेज के हम से विवाह करने के लिए तैयार हो? नहीं न, फिर मैं किसी की परवाह क्यों करूं?

श्रेया, तुम भी कोढ़ी होते संस्कारों को तिलांजलि दे दो और प्रतीश के साथ विवाह कर लो. तुम ने मुझे कभी कुछ बताया नहीं, पर मैं सब जानती हूं. दिव्यांश की तरह प्रतीश के घर के लोग भी तुम्हें अपनाने को तैयार हैं. प्रतीश स्वयं आ कर पिताजी से तुम्हें मांग सकता है. पर तुम जानती हो, वह कभी मानेंगे नहीं. मां तो हंगामा ही कर देंगी. कैसे कर दें शादी विजातीय लड़के के साथ. हम ठहरे कुमाऊं के, संस्कारों से बंधे रूढ़िवादी परिवार के लोग, क्या कहेंगे सब.

श्रेया, जागो, आगे बढ़ो, नहीं तो समय तुम्हें निगल जाएगा. कब तक स्वयं को झुठलाती रहोगी. न दीदी की शादी होगी और न ही हमारी बारी आएगी. दीदी के लिए कोई उपयुक्त वर नहीं मिल पा रहा तो उस की सजा हम क्यों भुगतें? यह तो अच्छा है, बड़ी तीनों बहनों की शादी हो चुकी है नहीं तो इस लंबी कतार में अपना अस्तित्व तो नगण्य था.

मुझे तो निक्की पर तरस आता है. हम तो विवाह की आयु पार कर ही गई हैं, उस ने तो अभी यौवन की दहलीज पर पांव रखा है. पता नहीं, उस की शादी भी हो सकेगी या नहीं.

श्रेया, मुझे क्षमा करना. पर मुझे ऐसा करते हुए कोई ग्लानि, कोई दुख नहीं हो रहा, क्योंकि मैं एक नई रोशनी की तलाश में अंधकार से बाहर निकल रही हूं. शायद मेरे ऐसा करने से मां, पिताजी रूढियों की

मातापिता के रूढ़िवादी रवैए के आगे तापसी और श्रेया ने तो अपना सिर झुका लिया था लेकिन वर्तिका इस तरह अपनी जिंदगी बरबाद करने को तैयार नहीं थी इसलिए उस ने विद्रोह कर दिया.

पट्टी आंखों से उतार दें और तुम्हारे, निक्की, दीदी के लिए कोई रास्ता निकल आए.

अच्छा, मैं निकलती हूं. दिव्यांश अब तक पहुंच चुका होगा. हम सीधे उस के मातापिता के पास जाएंगे. मैं पिछले दरवाजे से जा रही हूं, उसे बंद कर लेना. शीघ्र ही अपने बारे में सूचना दूंगी.

–वर्तिका.

पत्र पढ़ कर श्रेया जड़ हो गई. मां रसोई में व्यस्त थीं और पिताजी अखबार पढ़ रहे थे. इस से पहले दोनों पूजाघर में थे. तापसी दीदी तैयार हो कर कालिज जा रही थीं. श्रेया दीदी को बताना चाहती थी, पर फिर कुछ सोच कर रुक गई. किंकर्तव्यविमूढ़ श्रेया कमरे में वापस आ गई. वर्तिका का पत्र अभी उस के हाथ में था. वह फिर से उसे पढ़ने लगी. अक्षर कईकई चित्र बन कर उभरने लगे...

पिताजी प्रशासनिक सेवा में प्रवेश पाने के लिए अभी परीक्षा की तैयारी कर ही रहे थे कि उन्हें विवाह सूत्र में बंधना पड़ा था. दादी को मां पसंद आ गई थीं. किसी विवाहोत्सव में उन्होंने देखा था. वहीं बातचीत हुई और रिश्ता पक्का हो गया. परीक्षा से एक मास पूर्व पिताजी सेहरा बांधे मां के गांव पहुंचे थे. विवाह के बाद पिता तो शहर लौट आए और मां दादी के पास रह गईं.

नौकरी लग जाने के बाद भी मां, गांव में दादी के पास ही रहीं. देवयानी, कल्याणी, मानसी तीनों का जन्म गांव में ही हुआ था. 1-1 वर्ष के अल्प अंतराल में जन्मी तीनों दादी को फूटी आंख नहीं सुहाती थीं. उन्हें तो पोते का मुंह देखना था. घर में कलह रहने लगा. उधर पिताजी को भी अकेले रहने में परेशानी होने लगी थी. वह पत्नी को अपने साथ ले आए थे.

इस आशा की डोर में बंधी मां को विश्वास था कि 3 लड़कियों के बाद लड़ ही होगा. दादी ने कहा भी था, 'बहू, की बार लड़का ले कर वापस आना.' लेकि उस बार भी निराशा ही मिली और आ तापसी, मां ने पूरा समय बीमारी में क था, प्रसव के समय भी मरतेमरते बची

पहले तीनों लड़कियों का रंगरूप पर था, जैसे सौंदर्य की प्रतिमाएं हों, लेकि कृष्ण पक्ष में जन्मी तापसी ने पता नहीं ग सांवला रंग कहां से पाया था. पिताजी ने कई दिनों तक उसे अपनी गोद में नहीं उठ था. तब की उपेक्षित तापसी हमेशा उस को सहती रही. नितांत अकेली पड़ती ता के रंगरूप को सब देखते, लेकिन उस पीड़ा को कोई न समझता.

तापसी के बाद जन्मी श्रेया त्रिशंकु त्रासदी को झेल रही थी. उस से कोई नहीं कहता था, लेकिन वह तापसी वर्तिका के बीच अधर में लटकी थी. वर्ति के समय भी मां ने एक आस रखी लड़कियों के बाद लड़का जरूर होगा आ गई वर्तिका. पर रंगरूप और स्वभ दोनों में तापसी के बिलकुल विपरीत, ता उपेक्षित हो कर भी मांबाप की आकांक्षा संस्कारों के साथ बंधी थी, पर वर्तिक अवहेलना को कभी स्वीकारा ही नहीं

एक के बाद एक 7 पुत्रियों के वंश की बेल आगे बढ़ाने और मातापिता तर्पण करने, बहनों की रक्षा करने के हितांशु आ ही गया. आना ही था तो प आ जाता, क्यों धरती पर इतनी बहनों बोझ बढ़ने दिया.

मां एक के कपड़े बनवातीं बारीबारी सब के हिस्से में आ जाते. स

ी पुस्तकें तब तक चलतीं, जब तक द्यक्रम बदल न जाता. पूरा आटोरिकशा र कर स्कूल पहुंचता. किसी को भी घर बाहर निकलने की आवश्यकता नहीं पड़ती . सभी बहनें एकसाथ घर के बड़े आंगन खेल लेती थीं. पिताजी का जहां भी



श श्रेया से विवाह के लिए कई बार कहता, मातापिता यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेंगे, कर वह चुप ही रहती.

नांतरण होता, एक बड़ा सा बंगला रचाकर पहले ही तैयार मिलते. नाअपना कमरा अपनीअपनी जोड़ी पहले बन जाती. बड़े छोटे का प्रश्न ही नहीं मातापिता के कमरे को छोड़ कर सब में बंट जाते. लेकिन तब भी तापसी ली रह जाती.

छुट्टियों में सब अल्मोड़ा के पास अपने गांव में जाते थे. घूमने का यह एक सुनहरा अवसर होता था. पहाड़ पर बसा छोटा सा गांव, चीड़ के पेड़ों से घिरा घर. आंगन में खिले रंगबिरंगे फूल, जहां वे सब तितलियों की तरह उड़ती रहतीं. जब बहुत छोटी थीं, डिग्गी में तैरतीं. सीमेंट की बनी दीवार पर बैठ कर घंटों धूप सेकतीं.

गांव में जाने से पहले सब को कठोर आदेश दिए जाते थे, 'कोई अपनी स्कर्ट साथ नहीं ले जाएंगी,' इसलिए नए सूट सिलवाए जाते. पिताजी के पद के अनुसार अच्छेअच्छे कपड़े साथ ले जाने होते थे. मां के निर्देश सारी यात्रा में चलते रहते थे.

तापसी के लिए विशेष रूप से मां की सीख रहती, 'देख, बंदरिया सी इधरउधर फांदती मत रहना. क्या कहेंगे सब,' और तापसी का नन्हा मन कुछ भी न समझते हुए घुट सा जाता.

धीरेधीरे गांव जाना कम होने लगा था. देवयानी, कल्याणी, मानसी कालिज जाने लगी थीं. वैसे भी सब को साथ ले जाना अब मां के बस का नहीं रह गया था. पिताजी अपने काम में व्यस्त रहते थे. मां छोटियों को साथ ले जातीं और 8-10 दिन बाद लौट आती थीं. तापसी जब कुछ समझने लगी तो उस ने साथ जाना वैसे भी छोड़ दिया था. अपनी पढ़ाई में ही जुटी रहती या फिर मां के काम में हाथ बंटाती.

देवयानी ने जैसे ही बी.ए. पास किया,



जिंदगी

जिंदगी खिलती है, मुरझाती है फूल सी
जिंदगी चुभती है कभी, बबूल के शूल सी,
वैसे तो जिंदगी अनमोल होती है मगर
बेमोल बिक जाती है, वक्त पर पड़ी धूल सी.
–सौरभ शर्मा 'पायलट'

पिताजी को उस के विवाह की चिंता होने लगी. सजातीय आई.ए.एस. मनीष ने उन्हें चिंतामुक्त कर दिया था. बड़ी धूमधाम से देवयानी दीदी का विवाह हुआ था, पिताजी सोचते थे कि उन के पद और साजसजावट को देखकर उन की बेटियों के लिए लड़कों में होड़ लग जाएगी.

शायद पिताजी का सोचना ठीक भी था, क्योंकि उस के बाद कल्याणी के लिए फौजी अफसर नीलाश और मानसी का डाक्टर हेमंत से विवाह हो गया. मां और पिताजी प्रसन्न थे कि एक के बाद एक तीनों लड़कियों का विवाह उन्होंने 3 वर्षों में कर दिए थे.

तापसी अभी पढ़ रही थी. वैसे भी 3 शादियां करने के बाद पिताजी का बजट चरमरा गया था. तापसी ने हिंदी में एम.ए. किया था. लेकिन 2 वर्ष बाद तक भी उस के लिए सुयोग्य सजातीय वर पक्ष की ओर से कोई प्रस्ताव नहीं आया था. मातापिता चिंतित रहने लगे थे. तापसी का विवाह हो तो वह श्रेया की बात सोंचे. उस के लिए कई रिश्ते आने लगे थे.

लेकिन तापसी के विवाह से पह
श्रेया के हाथ कैसे पीले कर देते. 3
के विवाह कर देने के बाद तो संबंध
बढ़े थे, लेकिन तापसी तो जैसे किस
स्वीकार्य थी ही नहीं. इसी बीच उ
पीएच.डी. भी पूरी कर ली थी. कालि
नौकरी भी लग गई थी. लेकिन समस्य
की वहीं थी.

श्रेया, वर्तिका भी नौकरी करने
थीं. मातापिता चाहते तो नहीं थे, पर
करते, घर में बैठी यौवनावस्था पार
3-3 बेटियों का बोझ जो सिर पर था
देवयानी ने भी पिताजी को समझाय
'नौकरी करने दीजिए, आज के इस म
के युग में अपना खर्चा तो निकाल
समय भी कट जाएगा. फिर हो सक
नौकरी करने से विवाह में भी सुविध
आजकल लड़के नौकरीपेशा लड़
अधिक पसंद करते हैं.'

पिताजी को देवयानी की यह बात त
गई थी. लेकिन किसी विजातीय से
की बात उन्हें नहीं भाई थी. इस तरह परं
की लकीर पीटतेपीटते तापसी ने 30 प
लिए और उस के पीछेपीछे श्रेया और व
भी षोडशियां नहीं रहीं.

अपने विषय में पारंगत
विद्यार्थियों का मन भले ही मोह लेती,
उस का रूपसौंदर्य किसी को बांध न
एक बार उस की योग्यता के आकर
किसी को बांधा भी था. उस ने देवयान
मानसी को नागेश की इच्छा की बात
भी थी. लेकिन उस के बाद से उस ब
धुआं तक नहीं उठा. काश, उस समय
स्थिति को समझ पाते. पर कैसे समझ
तो आज तक नहीं समझ पाए हैं.
समझाना तो और भी मुशकिल है.

पिताजी के रिटायर होने में के
वर्ष और बचे थे. 4-4 बेटियों का
और हितांशु की पढ़ाई, सोच कर भ
का कलेजा मुंह को आ जाता. ताप

नए पहले उस के मन में क्रोध और ईर्ष्या की भावना रहती थी, लेकिन अब वह ऐसा सोचती, अब उस के मन में दया उपजती थी, बेचारी तापसी सब से कटीकटी रहती. बचपन से अब तक उस ने उसे यों ही र्विकार पाया है. अवहेलना, उपेक्षा पा कर ी उस ने कभी किसी से शिकायत नहीं की. ब छोटी थी, तो सब जोड़ियां बना लेतीं, र वह अकेली रह जाती. फिर भी वह चुप, ांत रहती. अपनी ही मां जब उसे हीन दृष्टि देखती तो भी वह कुछ न कहती. गलती ोई भी करे, डांट उसी को पड़ती. पिताजी ा प्यार भी उस ने कभी नहीं पाया. फिर ी मातापिता की आकांक्षा उसे स्वीकार्य थी. ह यंत्रवत अपना काम करती रहती.

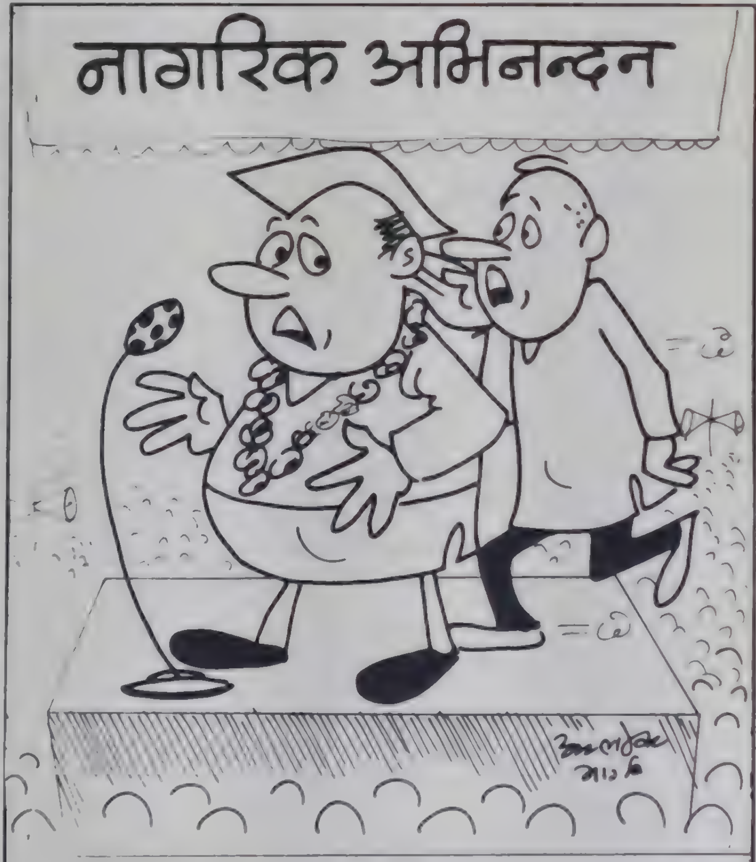
वर्तिका ने उस के विपरीत स्वभाव पाया . बचपन से विरोधी प्रवृति की वर्तिका को पसी का यों चुपचाप सब छ सहना कभी न भाया. मी तो जब तापसी के लिए झले जीजा के विधुर, बैंक क्लर्क के पद आसीन चचेरे ई, जिन का एक बेटा भी , प्रस्ताव आया था तो वह ड़प उठी थी. तापसी जैसी शिक्षित कन्या के लिए ऐसा ? तापसी तब भी नहीं ली थी, लेकिन वर्तिका ने ंडर मचा दिया था.

घर, आफिस में अपने द्धांतों के पक्के, कठोर नुशासनप्रिय पिताजी के मने वर्तिका का यह रोधी रूप उन्हें अंदर तक ला गया था. स्वयं उन्हें यह ताव पसंद आया हो, ऐसा ीं था. लेकिन वर्तिका का विरोध करना उन्हें पसंद ीं आया था.

मातापिता के बीच कई ों तक मंत्रणा चलती रही और फिर अंतिम निर्णय मंझले जीजा को सुना दिया गया. एक अध्याय का आरंभ होते ही अंत हो गया था. उस के बाद तापसी के लिए कोई प्रस्ताव न आया. लंबी प्रतीक्षा के बाद नागेश ने भी अन्यत्र विवाह कर लिया था. वर्तिका को नागेश और तापसी के बारे में, तब मालूम नहीं था. अगर जान जाती तो ऐसा न होने देती.

दिव्यांश बैंक मैनेजर था और वर्तिका सहायक मैनेजर. पिछले 3 वर्षों से दोनों एकदूसरे को प्यार करते थे. श्रेया यह बात जानती थी. बाद में वर्तिका ने स्वयं भी उसे बता दिया था. उस ने वर्तिका को समझाने का प्रयत्न किया था.

'देखो, पिताजी को यह बात पसंद होती तो क्या वह तापसी के लिए सहमत न हो जाते. फिर तुम्हारे लिए तो सजातीय वर



"क्या गजब कर रहे हैं! यहां हमें आम जनता को धन्यवाद देना है. अपराधियों, स्मगलरों व माफिया का आभार हम रात क्लब में व्यक्त करेंगे."

मिलना कठिन नहीं है...थोड़ी प्रतीक्षा कर लो न.'

पर वह कहां मानी थी. उस के कहने से दिव्यांश ने अपने मातापिता को भेजा था. लेकिन उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा था. यह तो अच्छी बात थी कि पिताजी ने बड़े सहजता से यह बात उन्हें समझा दी थी कि यदि वह ऐसा करते हैं तो उन्हें दूसरी बेटियों के विवाह में कई अड़चनें आ जाएंगी. उस समय तो वे लोग चले गए थे. लेकिन बात वहीं समाप्त नहीं हुई थी. उन्हें अपने बेटे के लिए वर्तिका पसंद थी, तभी तो स्वयं घर आए थे. इस बात को 1 वर्ष बीत चुका था.

आखिर वर्तिका ने अपना रास्ता स्वयं बना लिया था. तापसी और श्रेया विघ्न बनीं, उस के रास्ते से स्वयं ही हट गईं. वैसे भी चलने का साहस हो तो रास्ते के पत्थर कब बाधा बन पाते हैं भला?

अभी भी पत्र श्रेया के हाथ में था. वह सोच नहीं पा रही कि क्या करे? तापसी दीदी

चीन में कुत्ता पालना आसान नहीं

चीन की राजधानी पेइचिंग में कुत्तों की बढ़ती संख्या को देखते हुए वहां नए कानून बनाए गए हैं, जिन के अनुसार कुत्ता पालना सब के वश की बात नहीं रहेगी. कुत्तों की बढ़ती संख्या पर नियंत्रण के लिए कुत्तों के सालाना पंजीकरण की राशि बढ़ा कर 6 हजार यूआन (करीब 703 डालर) कर दी गई है. इस के साथ ही स्थानीय समय के अनुसार 6 बजे सुबह से रात 8 बजे तक पेइचिंग की सड़कों पर कुत्तों को घुमाना भी मना है.

इन नए कानूनों के अनुसार चीन में कुत्ते को ले कर लिफ्ट, सार्वजनिक वाहनों, दुकानों, स्कूलों, पार्कों या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है.

इस कानूनों के पारित होने पर बहुमंजिली इमारतों के निवासियों के लिए कुत्ते पालना असंभव ही हो जाएगा.

कालिज जा चुकी थीं, निक्की आंगन मे
अखबार पढ़ रही थी. पिताजी तैयार ह
हैं. मां रसोई में थीं. सब कुछ पूर्ववत
रहा था, प्रतिदिन की भांति, कहीं
परिवर्तन नहीं. वर्तिका, वह वैसे भी
उठती और देर से आफिस जाती, इ
किसी का ध्यान उस की ओर नहीं थ

अनायास श्रेया को प्रतीश का
आ गया. वह सोचने लगी, वर्तिका क
सब कैसे पता चला. उस ने तो कभी
तक नहीं उठने दिया. यहां तक कि
तक से उस ने खुल कर बात नहीं की
भी उस की वह उम्र नहीं रही, जि
लड़केलड़कियां मिलने के लिए घर, अ
से दूर पार्क, सिनेमाघर या रेस्तरां जा
वह तो बस इतना जानती है, प्रतीश
अच्छा लगता है. शायद वह उस से प्या
करने लगी है. प्रतीश भी उसे चाहता है
जानती है, आफिस में जब कभी अकेल
के सामने होती है तो वह उस की नजर
सामना नहीं कर पाती. उस की आंख
अपने प्रति तैरता हुआ प्यार वह समेट
में स्वयं को असमर्थ पाती है, जबकि
आंखों की गहराइयों में डूब जाने क
का मन करता है.

प्रतीश की छोटी बहन के विवाहोत्स
वह दिन तो श्रेया कभी भी भूल नहीं
प्रतीश अवश्य ही कई युवतियों के आ
का केंद्रबिंदु बना रहा होगा. पर उस
इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था. विव
दिन जब वह अपने सहकर्मियों के
प्रतीश के घर गई थी तो स्वयं को अ
सी परिस्थिति में उस ने पाया.

प्रतीश अन्य आगंतुकों की ओर
ध्यान नहीं दे रहा था. वह बारबार कि
किसी को अपने साथ ले आता और
रूप से उस का परिचय करवाता. श्रेय
यह सब अटपटा सा लग रहा था. उस
तो वह अत्यधिक अन्यमनस्क हो उठ
जब 5-6 सजीसंवरी लड़कियां आईं औ
से नमस्ते कर के चली गईं और फिर त

लगा कर हंसने लगीं.

यह सब श्रेया के लिए असह्य हो रहा था. बरात आने से पहले ही वह चुपके से वहां से चली आई थी. 2 दिन बाद जब प्रतीश लौट कर दफ्तर आया तो उस ने इस तरह से चले आने का गिला दिया था.

बाद में प्रतीश ने स्वयं ही बताया था कि उसे वह बहुत अच्छी लगती है. अभी तक उस ने विवाह नहीं किया, क्योंकि कोई लड़की उसे पसंद ही नहीं आई. श्रेया को देखते ही उस ने अपने मन में एक निर्णय ले लिया था. विवाह के अवसर पर उस ने अपने निर्णय की बात घर में बता दी थी, इसलिए सब उसे देखना चाहते थे. तभी वह सब से उस का परिचय करवा रहा था.

श्रेया के मन से कटुता दूर हो गई और उस का स्थान प्यार ने ले लिया था. प्रतीश उसे कई बार विवाह के लिए कह चुका था, लेकिन वह जानती थी कि मातापिता कभी यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेंगे. यह बात वह कई बार प्रतीश को बता चुकी थी, पर वह अपनी बात पर अडिग था कि प्रणय सूत्र में बंधेगा तो केवल श्रेया के साथ, नहीं तो जीवन पर्यंत अविवाहित ही रहेगा.

श्रेया यह सब जानती थी. पर मातापिता से अपने बारे में कुछ कह न पाती. वह ऐसे संस्कारों में पली थी कि यह सब कुछ कहना उस के स्वभाव में नहीं था. देवयानी दीदी से भी कहने का कोई अर्थ नहीं था, क्योंकि तापसी दीदी के बारे में पिताजी ने कौन सी उस की बात मान ली थी. इसीलिए 3 बरस से उस ने चुप्पी साधी हुई थी. लेकिन वर्तिका का पत्र पढ़ कर उसे प्रतीश का स्मरण हो आया.

मां की आवाज सुन कर श्रेया की तंद्रा टूटी. वह वर्तिका और उसे नीचे बुला रही थीं. सोचतेसोचते उसे समय का ध्यान ही न रहा. पर वह कैसे नीचे जाएगी, मातापिता को क्या बताएगी, लेकिन जाना तो होगा. इस स्थिति, इस सत्य को तो उन्हें स्वीकारना ही होगा. यही सोच कर वह नीचे आ गई, पत्र उस के हाथ में ही था.

इस से पहले कि मां वर्तिका के बारे में पूछतीं, उस ने पत्र पिता के हाथ में थमा दिया, वह अखबार पढ़ना छोड़ कर पत्र पढ़ने लगे. वह पिता के मनोभावों को उन के चेहरे पर पढ़ने लगी कि पता नहीं वह क्या कहेंगे, कौन सा बवंडर उठने वाला है, डर के मारे वह कांपने लगी. परंतु वह खामोश ही रहे.

सारा दिन श्रेया का आफिस में मन नहीं लगा. वह सोचती रही कि पत्र पढ़ते समय पिताजी कैसे लग रहे थे. कैसाकैसा अंतर्द्वंद्व उठ रहा होगा, उन के मन में कितनी मानसिक पीड़ा हुई होगी. उसे वर्तिका पर क्रोध आता रहा. ऐसा कर के उस ने पिताजी को कैसी स्थिति में डाल दिया है.

शाम को जब वह आफिस से घर पहुंची तो देखा मातापिता आंगन में बैठे हैं. तापसी दीदी कमरे में थीं, वह भी अपने कमरे में चली गईं. घर में कोई किसी से नहीं बोल रहा था.

रात खाने के समय भी सभी चुपचाप खाना खा कर उठ गए, जबकि प्रतिदिन यह वह समय होता था, जब सब बतियाते, अपनीअपनी दिनचर्या. लेकिन उस समय तो कोई किसी की ओर देखने का साहस भी नहीं जुटा पा रहा था.

वर्तिका के बिना श्रेया को रात में नींद न आई. कभी पिता का चेहरा सामने आता तो कभी मां का. सोचने लगी दोनों कैसे एकदम खामोश हो गए हैं. उन के मनस्थिति को वह न समझ पा रही हो, ऐसी बात नहीं थी, उसे तो स्वयं विवशता ने जकड़ रखा था. मंझधार में फंसी वह कुछ सोच न पाती, यही सब सोचतेसोचते उस की आंख लग गई.

सुबह उठ कर नीचे आई तो देखा, तापसी दीदी अभी कालिज नहीं गई हैं. निक्की भी तैयार हो कर बैठी है. वह कुछ पूछती, इस से पहले ही पिताजी बोले, "श्रेया, जल्दी से तैयार हो जाओ, वर्तिका के घर जाना है." ●

स ड़क के शोरोगुल को चीरती एक आवाज कानों में पड़ी, "आधारिका..."

पीछे मुड़ कर देखा तो कोई तेज कदमों से चला आ रहा था. हांफता हुआ वह सामने आ कर खड़ा हो गया. बालों से सफेदी झलक रही थी.

"थक गया...उस मोड़ से तुम्हें देखा तो चिल्लाते हुए आ गया. कैसी हो, तुम?"

आधारिका को आवाज पहचानते देर न लगी. वह सोचने लगी, पिछले 8-9 बरसों में सुधीर कितना बदल गया है. क्या मैं भी इतनी बदल गई हूं?

"अरे, लगता है, तुम ने पहचाना नहीं?"

"नहींनहीं, मैं ने पहचान लिया. सुधीर, मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं. कैसे हो?"

एक लंबी श्वास छोड़ते हुए सुधीर ने कहा, "ठीक ही हूं."

अब दोनों साथसाथ चलने लगे थे.

"आधारिका, यदि तुम्हें जल्दी न हो तो यहां पार्क में बैठें?"

पहले तो आधारिका कुछ सोचने लगी फिर धीरे से कह दिया, "चलो."

"एक साल पहले मेरा यहां तबादला हुआ था. तुम्हारे घर में गया तो पता चला कि तुम लोग जा चुके हो. मैं तो तुम्हारे मिलने की उम्मीद ही छोड़ बैठा था. आधारिका, तुम बिलकुल नहीं बदलीं, अब भी उतनी ही खूबसूरत हो. अच्छा, यह बताओ, तुम्हारे मातापिता कैसे हैं?"

दिवंगत मातापिता का स्मरण होते ही आधारिका का गला भर आया, "सुधीर, तुम्हारे जाने के बाद 2 वर्षों के भीतर ही मां और बाबूजी का देहांत हो गया. मैं अकेली कैसे रहती...सो मकान बेच कर नंदू भैया के

कहानी ● रूप रानी



पास चली गई."

सुधीर ने 15-20 मिनट के भीतर ही सब के बारे में पूछ लिया. आधारिका को सांत्वना भी दी और साथ ही 'जीवन तो नश्वर है,' जैसे कई वाक्य भी दोहरा दिए.

आधारिका संक्षिप्त उत्तर देती रही. सुधीर के बीते वक्त का क्या रंग रहा, यह जानने की इच्छा होते हुए भी वह चुप रही,



दर्द

क्योंकि उस के भीतर अपराधबोध में डूबा भय का सागर उमड़ रहा था. वह अपने बारे में क्या बताएगी? विशेषकर अपने विवाह के विषय में? सुधीर पर क्या बीतेगी, यह सुन कर कि उस ने किसी और से विवाह कर लिया है.

बरसों पहले आधारिका ने सुधीर द्वारा प्रस्तुत किया गया विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दिया था. अपने बीमार बाबूजी और असहाय मां को छोड़ कर वह विवाह के लिए कतई तैयार न थी.

"कहां खो गई, आधारु?" प्यार से सुधीर आधारिका के लिए इसी नाम का प्रयोग करता था. एक बार फिर सुधीर को स्वयं के करीब आते देख आधारिका कांप रही थी. क्या करे, सुधीर को कैसे समझाए?

सुधीर, उस की मनःस्थिति से बेखबर कहता गया, "तुम मेरे बारे में कुछ जानना नहीं चाहतीं? बीते 8-9 बरसों में मैं कहां रहा, कैसे रहा?" अब तक सुधीर ने आगे बढ़ते हुए आधारिका की कोमल हथेलियों को अपने दोनों हाथों में कस लिया था.

ऊपर अंधकार में डूब चुके आकाश की ओर नजरें गड़ाए, सुधीर ने अपने अतीत का संक्षिप्त खाका खींच दिया, "तुम तो जानती ही हो, मेरा तबादला होता रहता है, अतः बस यहां से वहां घूमता रहा. हां, अकेले रहरह कर अच्छा 'कुक' हो गया हूं," और फिर पुरानी जानदार हंसी के तार छेड़ दिए.

आखिरकार आधारिका ने पूछ ही लिया, "सुधीर, तुम ने विवाह क्यों नहीं किया?"

अचानक सुधीर भावुक हो गया, "आधारिका, मेरा मानना है कि विवाह 2

दिलों का मिलन है और यह मिलन तो तुम से बरसों पहले ही हो चुका है," कहते हुए सुधीर ने आधारिका की हथेलियों को छोड़, कंधों पर पकड़ मजबूत कर दी.

स्वयं को छुड़ाते हुए आधारिका उठ खड़ी हुई, "अब चलना चाहिए, घर पर सब चिंता करेंगे."

"घर पर नंदू भैया और भाभी ही तो होंगी, मुझे उन से नहीं मिलवाओगी?"

"सुधीर, आदमी सोचता कुछ है और होता कुछ और है. जिंदगी में सब कुछ तो नहीं मिल जाता. 8 बरस पहले तुम जिस आधारिका को छोड़ कर गए थे, अब वह नहीं रही. इस लंबे अरसे में बहुत कुछ बदल गया है," कहते हुए आधारिका बस पर चढ़ गई.

सुधीर उस के इस विचित्र व्यवहार से अचंभित वहीं खड़ा तेजी से भागती हुई बस और साथ ही कहीं गुम होती 'आधारु' को देखता रहा, जो बरसों की प्रतीक्षा के पश्चात मिली भी. लेकिन बस एक झलक दिखा कर न जाने कहां गुम हो गई.

बस की खिड़की से छोटी होती जा रही सुधीर की आकृति और उस की अवस्था को देख, आधारिका भी अपने आंसुओं को रोक न सकी. वह बहुत बेचैन थी. बस तेजी से आगे भागती जा रही थी और सड़क के दोनों ओर कतार में सजीसंवरी दुकानें पीछे छूटती जा रही थीं. ठीक उसी तरह जैसे कि जिंदगी के बीते वर्ष पीछे छूट गए थे, बहुत पीछे.

कितनी ही बार सुधीर के साथ इन सड़कों पर, इन्हीं बसों में घूमते हुए ठहाकों में डूबी खुशनुमा शामें बीती थीं. न जाने कितनी रंगबिरंगी कल्पनाओं से सजे सपनों के घरौंदे उन दोनों ने बनाए थे, सजे हुए बाजार, जगमगाती सड़कें उसी प्रकार आमंत्रण दे रही हैं, किंतु जीवन इन सब से बहुत आगे निकल चुका था.

ब्रेक के साथ ही बस को झटका लगा और साथ ही आधारिका की तंद्रा भंग हुई, वह संभलते हुए नीचे उतर गई.

रात के 8 बज गए थे. तेज कदमों से चलते हुए वह घर की ओर बढ़ रही थी, किंतु मनमस्तिष्क में सुधीर की छवि, उस की बातों की गूंज, स्पर्श की महक और सुखद एहसास विद्यमान था. घर आ गया तो आधारिका ने घंटी पर उंगली का दबाव डाल दिया.

"आता हूं, आता हूं," कहते हुए रमेश भागा आया. उस के हाथ में अधखुली पत्रिका थी. बोला, "अरेअरे, इतनी भी जल्दी क्या है, आज तुम ने घंटी पर ऐसी उंगली दबाई कि मैं तो बस...भई, अंदर से आने में वक्त लगता है."

"ओह," कहते हुए आधारिका भीतर प्रवेश कर गई.

मेज पर चाय का प्याला देख आधारिका समझ गई कि अपनी आदतानुसार रमेश आफिस से आ कर चाय पी चुका है.

आधारिका ने झट से गाउन पहना, जूड़ा बांधते हुए रसोईघर में प्रवेश करने ही वाली थी कि रमेश मुसकराते हुए हाथों में 2 प्याले चाय थामे, द्वार रोक कर खड़ा हो गया, "आओ, पहले चाय पी लो, फिर खानावाना बनाना."

मुखमंडल पर बनावटी हंसी बिखेरते हुए आधारिका कुरसी पर बैठ गई.

मेज पर रखी पत्रिका के फड़फड़ाते पन्नों पर पेपरवेट रखते हुए रमेश ने चाय की

निश्छल प्रेम की जिन यादों को आधारिका अतीत की गहराइयों में दफन कर आई थी आज वह अचानक सुधीर के रूप में उस के सामने थीं, अपना सारा दर्द समेटे. लेकिन आधारिका लाचार थी, बीते हुए कल के लिए वह अपने आज को भी तो नहीं ठुकरा सकती थी.



"आधारिका, उस दिन कहां गुम हो गई थीं," सुधीर ने बदहवासी में पूछा.

चुसकी ली और फिर पूछ ही लिया, "आज आने में बहुत देर हो गई...काम ज्यादा था क्या?"

आधारिका का चाय का घूंट गले में ही अटक गया, "हां," उस के मुंह से स्वतः ही निकल गया. शायद बसीबसाई गृहस्थी को बचाने का एकमात्र यही उपाय था. बात को पलटते हुए उस ने आगे कहा, "बच्चे कहां हैं?"

"मनोज सो रहा है और गुड़िया पड़ोस में मुन्नी से कोई कापी लेने गई है."

चाय का प्याला मेज पर रखते हुए रमेश उठ खड़ा हुआ और फिर घड़ी की ओर देखता हुआ बोला, "समाचार का वक्त हो गया, मैं चला. मैडम, अब आप अपना रणक्षेत्र संभाल लीजिए," रसोईघर के लिए अकसर रमेश 'रणक्षेत्र' संबोधन का प्रयोग करता था.

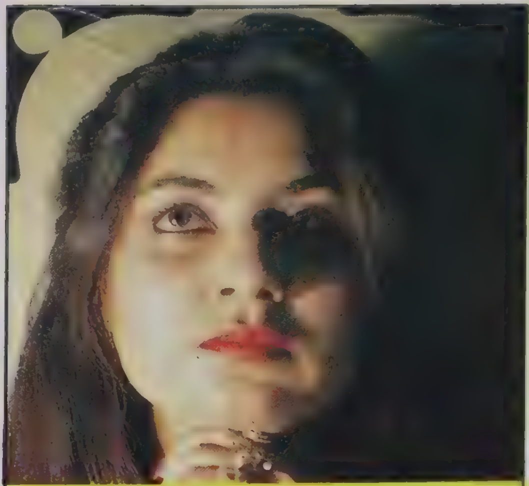
आधारिका बेचैनी से सोच रही थी, 'आज इतने बरसों बाद सुधीर क्यों मिला? मैं ने कितनी मुशकिल से उसे भुलाया था. वक्त ने किस मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया है,' एक लंबी श्वास छोड़ते हुए वह रसोईघर में आ गई.

अतीत सागर में डुबकी लगाते हुए ही उस ने भोजन तैयार कर लिया और रोज की तरह मेज पर पहुंचने की घोषणा भी कर दी. किंतु स्वर कुछ धीमा था.

सभी झटपट खाने के लिए पहुंच गए.

"क्या बात है, आज तबीयत ठीक नहीं है क्या? बड़ी धीमी आवाज लगाई?" पति ने पूछा.

"हां, सिर में दर्द है, जल्दी खाना खा लो. आज मैं टहलने नहीं जाऊंगी, जल्दी सोना चाहती हूं."



यादें

आप की यादों को
एक शहर से
दूसरे शहर ले जाएंगे,
इन्हीं पराग पुष्पों से
सपनों की सूनी
सेज सजाएंगे.

–इंद्रजीत सिंह

भोजन समाप्त कर आधारिका जूठे बरतन उठाने ही जा रही थी कि रमेश ने हाथ थाम लिया, "डार्लिंग, हमें भी कुछ करने का मौका दो. तबीयत ठीक नहीं, फिर भी लगी हो. जाओ, तुम सो जाओ, मैं बरतन उठा दूंगा और हां, जरा बच्चों के साथ एक चक्कर भी लगा आऊं..."

रमेश का प्यार भरा प्रस्ताव वह ठुकरा न सकी. उस के माथे पर एक चुंबन अंकित करती हुई शयनकक्ष की ओर बढ़ गई.

वह चुपचाप बिस्तर पर लेट गई, किंतु नींद कहां आने वाली थी, आंखें तो कुछ और ही देखने में व्यस्त थीं. हां, अतीत में सुधीर के साथ बिताए प्यार भरे पल एक बार फिर सजीव हो नाचने लगे...

शहर के शोरशराबे से दूर पेड़ों के झुरमुट से घिरे एक टीलेनुमा स्थान पर अकसर युगल प्रेमी अपनी रंगीन शामें गुजारा करते थे. आधारिका के कानों में वही बात गूंज रही थी, जो एक दिन शाम को डूबते सूर्य को देख सुधीर ने कही थी, 'आधारिका, उधर देखो, दूर पहाड़ियों के पीछे लाल स
का गोला डूब रहा है और अपनी लालि
से सारे आकाश को रंगीन कर गया है. इ
तरह मैं भी मरते दम तक तुम्हें मुसकरा
खिलखिलाते देखना चाहता हूं...'

'ओ सुधीर, मैं तुम्हें बहुत प्यार कर
हूं,' कहते हुए आधारिका, सुधीर की बा
में सिमट गई.

"आधारिका...आधारिका, सपने
किसे प्यार कर रही हो? मैं तो यहां
जानेमन," रमेश ने उस को गुदगुदाया.

"रमेश...तुम आ गए, मैं तुम्हारा
सपना देख रही थी."

"ओ डार्लिंग," कहते हुए रमेश
आधारिका को अपनी ओर खींच लिया.

सुबह 6 बजे का अलार्म बजते ही र
की तरह बिस्तर छोड़ आधारिका काम
जुट गई. बच्चों को स्कूल भेजा, रमेश
लिए नाश्ता बनाया, अपना टिफिन रखा अ
तैयार हो कर आफिस के लिए निकल प
इस दौरान पल भर के लिए भी वह सुध
को न भूल पाई.

आधारिका ने जानबूझ कर दूसरी ब
पकड़ ली. अब उस ने आनेजाने का दूस
रास्ता अपना लिया था. किंतु मन ही मन उ
कुछ खाए जा रहा था.

हर महीने के पहले रविवार को बच
के साथ आधारिका तथा रमेश घूमने के लि
जाया करते थे. इस बार भी चिड़ियाघर ज
का कार्यक्रम बना. बच्चों के मनपसंद पकव
बने, टेपरिकार्डर, कैसेट, बैडमिंटन...स
सामान जुटा कर वे निकल पड़े.

चिड़ियाघर के गेट पर आधारिका
देख दूर से ही सुधीर ने आवाज लग
आधारिका को आवाज पहचानते देर न ल
दिल की धड़कन तेज हो गई. रमेश भी बच
के साथ रुक गया और बदहवास से भ
कर आते शख्स को निहारने लगा.

"आधारिका, उस दिन कहां गुम
गई थीं?" सुधीर ने पूछा.

"उस दिन जरा जल्दी में थी. आउ
मैं तुम्हारा परिचय करवा दूं," अब तक र

और सुधीर की आंखें आपस में टकरा चुकी थीं.

"रमेश, यह सुधीर हैं, मेरे कालिज के दोस्त...और सुधीर, यह मेरे पति रमेश हैं," कहते हुए आधारिका की आवाज अटक गई.

रमेश ने सुधीर की ओर हाथ बढ़ा दिया, किंतु सुधीर हतप्रभ सा दोनों को निहारता रहा और बिना कुछ कहे ही लौट गया.

सुधीर की बेचैनी और लाचारी आधारिका से छिप न सकी.

"बड़ा अजीब आदमी है, इतना परेशान क्यों हो गया?" रमेश ने कहा.

"पता नहीं. अरे, बच्चे कहां निकल गए...जाओ, उन्हें बुला लाओ."

रमेश बच्चों के पीछे भागा और आधारिका की डबडबाई नजरें दूर जा चुके सुधीर के पीछे.

दूसरे दिन आधारिका ने आफिस जाने के लिए पुराना रास्ता ही पकड़ा, क्योंकि अब कोई डर न था. आशा के अनुरूप सुधीर चौराहे पर खड़ा पहले से ही उस की प्रतीक्षा कर रहा था.

दूर से ही उसे देख आधारिका ठिठक गई. वह पीछे मुड़ने ही वाली थी कि सुधीर उस के निकट आ कर खड़ा हो गया, "नहीं आधारिका, मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा."

"सुधीर, हटो, कोई देख लेगा तो क्या सोचेगा. तुम जानते हो, मैं शादीशुदा हूं."

"हां, लेकिन तुम्हें मेरे प्रश्न का उत्तर देना होगा. मुझ में क्या कमी थी, तुम ने मुझे क्यों इनकार किया था?"

"सुधीर, मैं तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर अवश्य दूंगी. तुम तो जानते हो, मेरे दोनों भाइयों ने मांबाप को रखने से मना कर दिया था. ऐसे में मैं उन्हें अकेला सड़ने के लिए तो नहीं छोड़ सकती थी. तुम नौकरी के लिए बाहर चले गए थे. मैं मां और बाबूजी को अकेले, असहाय अवस्था में छोड़ कर तुम्हारे साथ कैसे आ सकती थी. इसलिए मैं ने मना कर दिया था. लेकिन साथ ही मैं ने यह निश्चय किया था कि आजीवन कुंआरी रहूंगी.

"तुम्हारे जाने के बाद 2 सालों के अंदर ही मां और पिताजी दोनों चल बसे. मैं नंदू भैया के पास आ कर रहने लगी. हालांकि मैं कमाती थी, लेकिन भाभी को बोझ लगती थी. मैं ने कई बार उन्हें भैया से कहते सुना था कि 'या तो इस की शादी कर के निकालो या कहीं अलग मकान ले कर रहे.'

"एक दिन भैया पत्नी के दबाव में आ कर रमेश का रिश्ता ले कर आए. सुधीर, दोनों बच्चे मेरे नहीं हैं, रमेश की पहली पत्नी के हैं."

"तो क्या रमेश..." सुधीर ने बात काटते हुए पूछा.

"हां, रमेश विधुर था. मेरे सामने 2 विकल्प थे...या तो वह रिश्ता मंजूर कर लूं, या अलग मकान ले कर रहूं. मैं टूट चुकी थी सुधीर, मैं ने तुम्हारे आफिस जा कर पता लगाना चाहा कि आजकल तुम कहां हो, लेकिन निराशा ही हाथ लगी. अंततः मैं ने बहुत सोचविचार के बाद वह रिश्ता मंजूर कर लिया. रमेश एक अच्छा इनसान है, इन बीते वर्षों में उस ने मुझे भरपूर प्यार दिया, उस में कोई कमी नहीं है. अब तुम्हीं बताओ, क्या मैं उसे धोखा दे सकती हूं?"

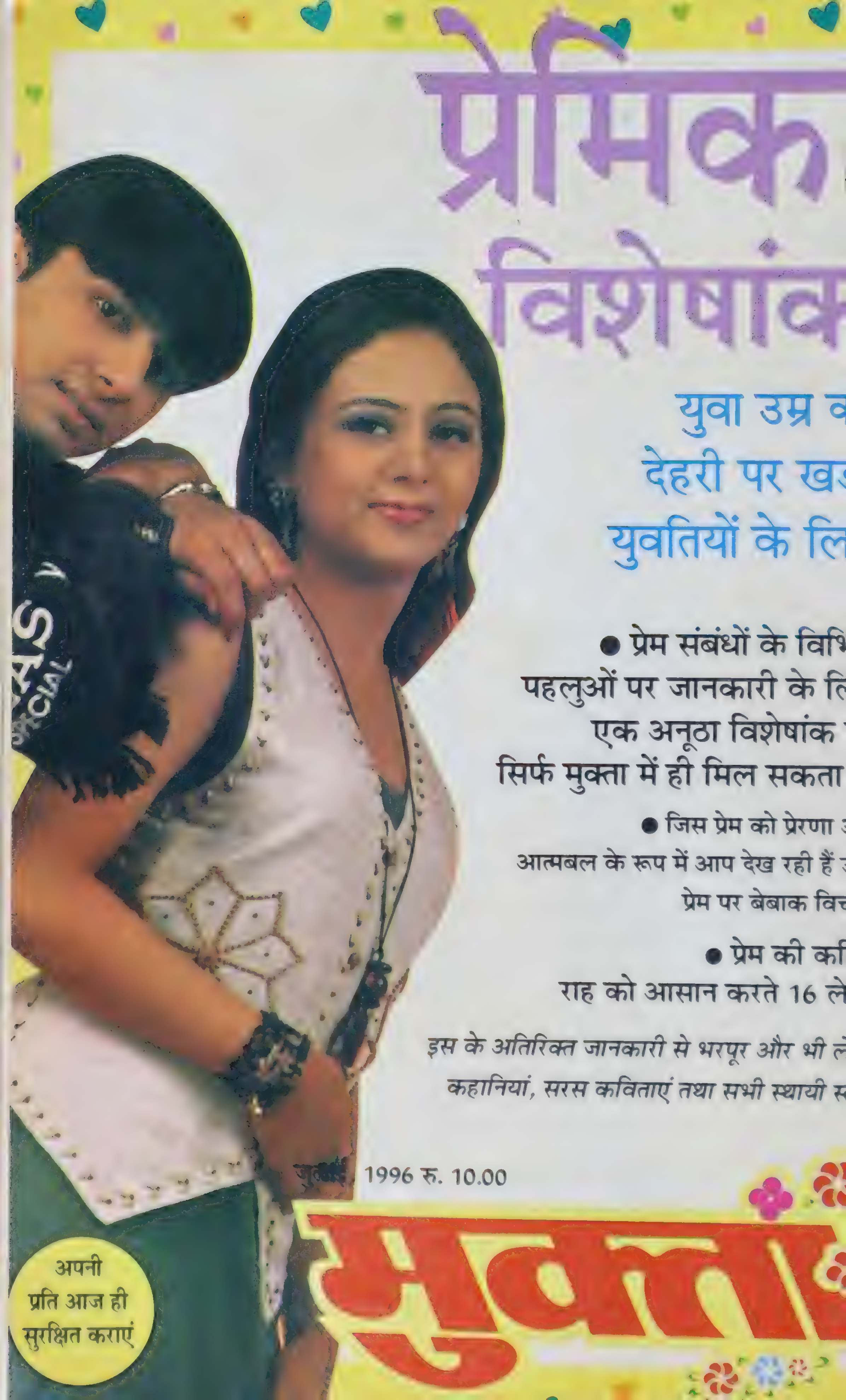
तूफान थम चुका था. डबडबाई नजरों से सुधीर ने कहा, "नहीं, आधारिका नहीं, तुम्हारा कर्तव्य यही है कि तुम अपना घरपरिवार बनाए रखो. मैं अपना तबादला बहुत दूर करा लूंगा और अब कभी तुम्हारे जीवन में नहीं आऊंगा," कहते हुए सुधीर उसी भीड़ में खो गया.

आधारिका के दिल में लगा गहरा घाव एक बार फिर हरा हो गया, जिस का दर्द जीवन का एक हिस्सा बन गया था. ●

सज्जन

बहुत अधिक सरल भी नहीं होना चाहिए. जंगल में जा कर देखिए कि वहां जो बहुत सीधे वृक्ष होते हैं, वे कट जाते हैं और जो टेढ़ेमेढ़े होते हैं, वे उसी तरह खड़े रहते हैं.

– डेश चाणक्य



प्रेमिक
विशेषांक
युवा उम्र
देहरी पर
युवतियों के
प्रेम संबंधों के
पहलुओं पर जानकारी के
एक अनूठा विशेषांक
सिर्फ मुक्ता में ही मिल सकता
जिस प्रेम को प्रेरणा
आत्मबल के रूप में आप देख रही हैं
प्रेम पर बेबाक
प्रेम की
राह को आसान करते 16
इस के अतिरिक्त जानकारी से भरपूर और भी
कहानियां, सरस कविताएं तथा सभी स्थायी
1996 रु. 10.00
मुक्ता
अपनी
प्रति आज ही
सुरक्षित कराएं

हमारे पड़ोस में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी. लोग उन के र अफसोस करने आ रहे थे. इसी ीच औरतों की एक टोली आई. न में से एक औरत ने उन के घर ी एक दूसरी औरत के गले लग र कहा, "बहनजी, आप के कानों ी बालियां ढीली हो गई हैं. लाइए, ीक कर दूं."

कुछ देर बाद वह औरत कहीं जर नहीं आई. पता चला, वह ालियां ठीक करने के बहाने सोने ी बालियां निकाल कर उन की गह पीतल की बालियां पहना गई ी. साथ आई औरतों से पूछा गया मालूम हुआ कोई भी औरत उसे हीं जानती थी. –नीलम

*

मेरे भैया फौज में हैं. छुट्टियों में वह घर आ रहे थे. ट्रेन से उतरते 22-25 वर्षीय एक व्यक्ति उन पैर छू कर बोला, "मेरा नाम सवंत है. मैं आप के गांव का रहने ला हूं. जब आप फौज में गए थे ब मैं काफी छोटा था. मैं अब शहर ही नौकरी करता हूं."

भैया के पास एक ट्रंक तथा बैग थे. उस युवक ने जबरदस्ती या से दोनों बैग ले लिए तथा कहा, चलिए, मैं आप को टैक्सी में बैठा ा हूं."

थोड़ा ही आगे बढ़ने पर एक र वहां आ कर रुकी, तुरंत वह नों बैग सहित उस कार में बैठ ा. जब तक भैया कार तक ुंचते, कार वहां से जा चुकी थी.

–राजेश कुमार चंद्रेल

*

मेरे फूफाजी मंदिर के पुजारी हैं. एक दिन दोपहर में किसी ने का दरवाजा खटखटाया. उन्होंने हर आ कर देखा तो सामने 2 न सभ्य से दिखने वाले पुरुष ड़े थे. एक ने कहा, "पंडितजी, कल हमारे पिताजी का श्राद्ध है. आप सपत्नीक हमारे घर भोजन करने आइएगा."

फिर अपने निवास का पता दे कर व समय बता कर वे लोग चले गए. करीब आधे घंटे बाद वे पुनः लौटे और कहने लगे, "पंडितजी, हमारे घर बड़े पतीले नहीं हैं. यदि आप उपलब्ध करवा दें तो बहुत कृपा होगी. कल लौटा देंगे."

पंडितजी ने 2 बड़े पीतल के पतीले उन्हें दे दिए. दूसरे दिन पंडितजी उन के बताए निवास पर सपत्नीक पहुंचे पर वहां इस प्रकार का कोई आयोजन नहीं था न ही उन दोनों व्यक्तियों में से फिर कभी कोई दिखाई पड़ा. –दर्शन शर्मा

दिन दहाड़े

मेरे दादाजी का मोतियाबिंद का आपरेशन हुआ था. आपरेशन के बाद मेरे पिताजी घर लौट गए. मैं अपने दादादादीजी के साथ अस्पताल में थी. दोपहर में दादाजी बरामदे में बैठे थे तथा मैं व दादी भीतर के कमरे में लेटी हुई थीं. करीब 3 बजे एक व्यक्ति आया और दादाजी के पास कुरसी खींच कर बैठ गया. फिर अपने को कंपाउंडर बताते हुए उस ने दवा की ट्रे निकालने के लिए कहा. मैं ट्रे ले कर आई तो कहने लगा, "एक दवा की अभी जरूरत है पर इस में तो है नहीं."

वह बाहर से दवा लाने को तैयार हो गया. दवा की कीमत उस ने 50-55 रुपए बताई तो मैं ने सौ रुपए का एक नोट उसे दे दिया. पर काफी देर तक वह लौट कर नहीं आया तो हमें कुछ शक होने लगा. शाम को एक जानेपहचाने कंपाउंडर के आने पर हम ने उसे सारी बात बताई. सुन कर उस ने कहा, "उसे रुपए की जरूरत होगी, वह धोखे से ले कर भाग गया. अब नहीं आने वाला." –रश्मि पारिजात

*

हमारे एक रिश्तेदार फोटोग्राफर हैं. एक दिन दोपहर में उन की दुकान के सामने एक मारुति कार आ कर रुकी.

उस में से 3 पुरुष व 2 महिलाएं बाहर निकलीं. उन में से एक मेरे रिश्तेदार के पास जा कर कहने लगा, "देखिए, कल हमारे बेटे का जन्मदिन है हमें वीडियो फिल्म बनवानी है."

सारी बातें तय करने के बाद वे लोग दूसरे दिन शाम 7 बजे आने के लिए कह कर चले गए.

अगले दिन वे सभी रात 9 बजे आए और बोले, "बिजली गुल हो जाने के कारण हमें आने में देर हो गई, आप जल्दी कीजिए. सारे सामान सहित शीघ्र हमारी गाड़ी में बैठिए."

रास्ते में सुनसान जगह देख कर उन लोगों ने जबरदस्ती मेरे रिश्तेदार को चलती कार में से धक्का दे कर गिरा दिया. फिर उन का वीडियो कैमरा व अन्य सामान ले कर तेजी से भाग गए.

–साधना गर्ग ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



कहानी • छाया श्रीवास्तव

पराया बेटा

गतांक से आगे

सुशीला को तेज बुखार चढ़ आया. उस का बुखार जब 3-4 दिन तक न टूटा तो निरंजन चिंतित हो उठे. अर्धचेतना में सुशीला केवल एक ही बात की रट लगाए थी कि उसे इस घर से ले चलो. वह अब यहां नहीं रह सकती. डाक्टर ने स्पष्ट कह दिया था कि इन के मन को कोई सदमा

लगा है. आप इन्हें कुछ दिनों के लिए और ले जाएं. तब निरंजन ने सोचा कि अलग होने का समय आ गया है. जि उस ने कल्पना भी नहीं की थी, वह अ जा रहा है. यह भी सत्य है कि बिना के सुशीला इस घर में रह नहीं सकेगी. उस ने किसी और का बेटा गोद ले होता तो आज यह दुख न सहना पड़

फिर उस ने 2-3 दिन के अंद

पूर्व कथा

विवाह के 10 वर्षों बाद भी सुशीला की गोद न भर सकी पर वह जेठानी के बच्चों की 'छोटी अम्मां' बन उन में घिरी रहती. सब से बड़े अजय के लिए तो वह सगी मां से भी बढ़ कर थी. इसी कारण मांबेटे में अकसर झड़प हो जाती, तब अजय के साथसाथ उसे भी जेठानी की जलीकटी सुननी पड़ती.

एक दिन खाना पहले खाने की छीनाझपटी में अजय गुस्से में छोटे भाई संजय को छड़ी से मारने लगता है तो उस के पिता सुखनंदन उसे खूब पीटते हैं. उस दिन के बाद अजय घर की छत पर सुशीला से अपने लिए अलग खाना बनवा कर खाने लगता है. जेठानी नमकमिर्च लगा कर यह बात पति को बताती है. नतीजतन वह अजय को बहुत मारते हैं. वह रोता हुआ घर छोड़ कर चला जाता है. सुशीला यह सब नहीं देख पाती और बेहोश हो जाती है. अब आगे...

कान तलाश कर किराए पर ले लिया. जिस दिन वह सुशीला को ले कर चला, तब ाईभाभी को बता आया था कि वह अब लग रहेगा.

जाते समय न भाई कुछ कह सके न ाभी, क्योंकि उन्हीं के व्यंग्यबाणों और ांछनों के कारण दोनों अलग रहने जा रहे . सुखनंदन की छाती फटी जा रही थी. वह ोच रहे थे कि जिस बहू को बेटी समान ानते रहे थे और जिस ने घरभर की तनमन सेवा की थी, जिस घर, जिस गृहस्थी, जिन ठजेठानी और बच्चों को उस ने कभी स्वप्न पराया नहीं समझा वही आज परायों की रह बीमारी, लाचारी में इस घर से विदा हो ही है.

परंतु अब पछताने से क्या फायदा था.

तुम्हें खो दूंगा तो फिर किस के लिए जिऊंगा," निरंजन अवरुद्ध कंठ से बोले.



वह चंद शब्द भी मुंह से नहीं कह सके और कहते भी किस मुंह से? अपनी ही नजर में वह गिर गए थे. दोष किस का कहां तक है, वह समझ नहीं पा रहे थे.

निरंजन को नए घर में आए 1 माह से ऊपर हो रहा था. जितना प्रबंध उन से बना, कर लिया था. परंतु गृहिणी की अस्वस्थता ने सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था. सुशीला का ज्वर उतरता ही नहीं था. उधर निरंजन रातदिन की परेशानियों से घुले जा रहे थे.

सुशीला तो चारपाई से नीचे उतरते हुए भी डरती थी. उसे दवा, फल और दूध

वगैरह भी निरंजन ही देते थे.

15 दिन बाद जब वह कोर्ट से निकल रहे थे तब बड़े भाई पर उन की नजर पड़ गई. देख कर कलेजा मुंह को आ गया. वह भी सूख कर आधे रह गए थे. जब दोनों की नजरें टकराईं तो बड़े भाई से मुंह चुराते न बना. धीरेधीरे पग उठाते वह निकट आ गए. फिर निरंजन के कंधे पर हाथ रख कर बोले, "भैया, सुशीला की तबीयत कैसी है?"

"बुखार नहीं छूट रहा है भैया, दवा चल रही है," उस ने वैसे ही नेत्र दूसरी ओर कर के उत्तर दिया.

"किस डाक्टर का इलाज चल रहा है?"

"अभी तो डाक्टर दिनेश का इलाज चल रहा है... वैसे मैं 3-4 डाक्टरों का इलाज

विवाह के बाद भी सुशीला की गोद सूनी थी परंतु उस ने जेठानी के बेटे अजय पर अपनी पूरी ममता उड़ेल दी थी. वह भी चाची के स्नेह में सगी मां को भूल सा गया. क्या इतना अपनत्व होते हुए भी वह अजय को 'अपना बेटा' कहने का अधिकार पा सकी?

करा चुका. थोड़ा बुखार तो बना ही रहता है. ठीक से किसी की दवा लग नहीं रही है."

"कहीं टायफाइड तो नहीं?"

"नहीं, खून की जांच तो करा ली है, न मलेरिया है, न टायफाइड. डाक्टर कहते हैं कि मानसिक आघात है. जहां वह गहराई से सोचती है, बुखार हो जाता है."

बड़े भाई का मुंह लटक गया. क्षण भर चुप रह कर वह बोले, "वह कमबख्त घरभर को मार रहा है. तुम्हारी भाभी की यही दशा है.... दिन पर दिन सूखती जा रही है. मैं आज रात को आऊंगा और बहू समझाऊंगा कि व्यर्थ में कुछ न सोचा क

निरंजन ने कुछ उत्तर न दिया. थ देर बाद दोनों भाई अपनी राह चल दि

घर जा कर निरंजन ने सुखनंदन बारे में कुछ न कहा, परंतु किसी उम्मी किवाड़ अवश्य खुले रखे. परंतु आधी तक जब कोई न आया तो वह किवाड़ कर के बिस्तर पर लेट गए. मन ही मन स कि अच्छा किया जो सुशीला को कुछ बताया अन्यथा वह इसी चिंता, दुख में न पाती और फिर बुखार चढ़ आता. सो अवश्य भाभी ने मना कर दिया होगा, तो भैया नहीं आए.

सुबह 8-9 बजे तक निरंजन प सब्जीभाजी लेने बाजार चले जाते थे. डाक्टर से हाल बता कर सुशीला की भी ले आते थे. 10 बजे तक बाहर से कर लौटते थे. सुशीला को वह पड़ोसियों जिम्मे छोड़ जाते थे. पड़ोस के परिवारों आत्मीयता बढ़ गई थी. उन के जाने पश्चात उन की स्त्रियां चायपानी को जाती थीं.

दूसरे दिन वह जब बाजार और डा के यहां से दवाएं, फल आदि ले कर तो 10 बज चुके थे. साइकिल बाहर ही कर जब वह भीतर आए तो किसी पुरुष भर्राया कंठ सुन कर चौंक पड़े. उन्होंने इ कर देखा, सुखनंदन कुरसी पर बैठे सुश के सिर पर हाथ फेर रहे थे और समझा थे, पर वह थी कि सिसकियों पर काबू पा रही थी.

निरंजन बाहर ही किवाड़ों की आ चुपचाप खड़े हो गए. सुखनंदन कह रहे "बहू, विश्वास जानो, जिस दिन से तुम घर छोड़ कर चले आए हो, उस दिन से खाने को दौड़ता है. घर की रौनक, शांि लगता है, कोसों दूर हो गई है. तुम यह जानना कि मैं अजय को ले कर यह कह रहा हूं. बेटी, मैं तुम्हारे सिर पर रख कर कह रहा हूं कि उस से सौगुना



"बहू, विश्वास जानो, जिस दिन से तुम दोनों र छोड़ कर आए हो, घर की रौनक, शांति कोसों दूर हो गई है," सुखनंदन बोले.

ुझे तुम्हारे और निरंजन के चले आने का . क्या बताऊं, उस दिन हम से बहुत भारी ूल हो गई. बहुत अन्याय हो गया है, तुम ोगों के साथ.

"मैं ने निरंजन को हमेशा अपने बेटे की रह ही माना है. तुम्हीं ने तो अपने सद्व्यवहार , सेवा से पूरे घर को एकता के सूत्र में ांध दिया था. जेठानी की हर संतान को तुम अपनी झोली में ले कर पाला है. कौन ह सकता है कि वे सब..."

"नहींनहीं भैया, मैं लक्ष्मी कब थी. मैं जस योग्य थी, वही तो करती रही थी. मैं... जन्म की बांझ..."

"छि:छि:... क्या कह रही हो तुम? वे... सब तुम्हारी संतानें तो हैं. यह बात... यह बात फिर कभी मत कहना. वह... वह... अजय तो एकमात्र तुम्हारा है. सच कहता हूं बहू, वह कमबख्त लौट आए तो उसे तुम्हारी ही झोली में डाल कर मैं अलग हो जाऊंगा. उसे तो केवल तुम ही संभाल सकती हो. तुम्हारी जेठानी आदतवश उस दिन उलटासीधा कह तो गई, परंतु अब दिनरात इसी ज्वाला में फुंकती रहती है... बहुत पछताती है. अगर मैं जरा सा कुछ कहता हूं तो अब लड़ने के बजाय फूटफूट कर रो पड़ती है. तुम्हें भी तो उस ने अपनी देवरानी से बढ़ कर माना है. रही बड़बड़ाने की बात, तो वह उस की जन्मजात आदत है."

"नहीं भैया, मेरा अब इस दुनिया में कोई नहीं है," कहतेकहते वह दोनों हाथों से मुंह छिपा कर फूटफूट कर रोने लगी.

निकट बैठे जेठ से यह दुख सहन नहीं हो रहा था. बारबार वह मुंह छिपा कर अपने आंसू पोंछ लेते थे.

सुशीला की सिसकी थमी तो वह बोले, "बहू, और चाहे जो कहना, यह कभी मत कहना कि दुनिया में तुम्हारा कोई नहीं है. जिस दिन... जिस दिन तुम और निरंजन यह सच मान बैठोगे, उस दिन सच जानना, हम सब बिना मरे ही मर जाएंगे. आधे प्राण तो घरभर के उसी दिन निकल गए थे, जिस दिन तुम दोनों घर छोड़ कर आए थे... और... और वह कमबख्त जीतेजी बाप की छाती पर चट्टान पटक कर न जाने कहां दरदर की ठोकरें खाता फिर रहा है. अच्छा, अब जा रहा हूं... फिर किसी दिन आऊंगा."

भैया दोनों हाथों से आंसू पोंछते उठ खड़े हुए तो सुशीला ने भरीभरी आंखों से उन्हें देखते हुए हाथ जोड़ दिए.

निरंजन तुरंत अपनी तरल आंखें लिए भाई के आने से पूर्व दूसरे कमरे में घुस गए थे. जब वह चले गए तब वह सुशीला के सिरहाने जा कर बैठ गए. उन्हें देखते ही सुशीला विह्वल सी हो कर रो उठी. फिर सिसकियों के बीच बोलती चली गई, "मुझे वहीं ले चलो, यहां मैं अकेली मरना नहीं चाहती.

"भैया क्या मेरे जेठ ही हैं... अरे, वह मेरे पिता भी तो हैं.

"क्यों ले आए तुम मुझे यहां? अरे... यहां तो मेरे प्राण घुटते हैं. बच्चों की लड़ाई का सुख, दीदी के दिनरात खीजने, बड़बड़ाने का सुख सब तो छूट गया यहां. जानते हो, अभी भैया आए थे. ये फल वही तो लाए हैं... और कह रहे थे... कह रहे थे..."

"मैं सब सुन चुका हूं सुशीला. तुम अपने को शांत करो, नहीं तो बुखार बढ़ जाएगा. तुम जैसा कहोगी, मुझे वैसा ही तो करना है. तुम्हारे कहने ही से तो मैं तुम्हें यहां लाया हूं. तुम स्वस्थ हो जाओ तो आगे की सोचूंगा. अभी तो भाभी स्वयं बेटे के गम में आधी हो गई हैं. इतनी बड़ी गृहस्थी क्या वह अकेले संभाल पा रही होंगी? ऊपर से तुम बीमार पहुंचोगी तो उन्हें और कठिनाई होगी. वह तुम्हें संभालेंगी या घरगृहस्थी और बच्चों को," उस के सिर पर हाथ फेरते हुए वह बोले.

"तो जब बुखार उतर जाएगा, तब वहां ले चलोगे न?"

"हां, जरूर ले चलूंगा. मुझे भी सा यहां अच्छा लगता है."

"परंतु मैं वहां नहीं रह सकूंगी. यहां ही सड़ने दो. मैं वहां भी नहीं जाऊं कभी नहीं जाऊंगी," कहतेकहते वह पटकपटक कर रोने लगी.

निरंजन स्तब्ध से बैठे रह गए. फिर की आंखों से आंसू पोंछते हुए भर्राए कं बोले, "तुम्हें हो क्या गया है सुशीला? कहती हो वहां ले चलो... कभी कहती वहां नहीं जाऊंगी?"

"तुम तो बिलकुल पत्थर का क ले कर जन्मे हो. क्या तुम्हारे मन में जरा भी ममता नहीं है. जिस नन्हे से अजय क ने इतना बड़ा किया है ... जिस की याद के कणकण में समाई है, उसे देखे बिन क्या जीवित रह सकूंगी? उस की हर दिनभर मेरा कलेजा चीरेगी, रक्त जला तुम चले जाना मैं... मैं यहां ही रहूंगी."

बहुत रोकने पर भी निरंजन के बहने लगे, वह भलीभांति जानते थे सुशीला का बुखार न उतरने का कारण के अजय है. रातदिन रोने का कारण वही

सुखनंदन चौथेपांचवें दिन फल व ले कर सुशीला का हालचाल पूछने आ थे. वह भांतिभांति से उसे समझा जाते परंतु सुशीला का मंदमंद ज्वर छूट नहीं था. 2-3 बार जेठानी तथा बच्चे भी हो थे.

हर घड़ी बकबक करने वाली जेठानी सारी बकवास भूल गई थीं. जब उ सुशीला से हाथ जोड़ कर माफी मांगी तो उन की गोद में सिर रख कर रो पड़ी. आंसू पोंछते हुए बोली, "दीदी, मैं ने को जेठानी कब माना है, बोलो तो? ह मां का दर्जा ही तो दिया है तुम्हें."

जेठानी ने उसे कस कर कलेजे से कर अवरुद्ध कंठ से कहा, "सुशीला, मुझ से छोटी होती हुई भी मुझ से बड़ी

मेरी गलती से ही तो इतना बड़ा कांड हुआ है. सच मानो, जिस दिन से अजय गया है, तुम दोनों घर छोड़ आए हो, तुम्हारे जेठ ने मुझ से सीधे मुंह बात नहीं की. ऐसा लगता है, जैसे नाता ही समाप्त हो गया है.

"उसी दिन से इन्होंने रसोई में आना ही छोड़ दिया है. तुम लोगों के कमरे में संजय खाना दे आता है, वहीं खा कर चुपचाप पड़े रहते हैं. उस दिन से इन्हें न तो घरगृहस्थी से मतलब है, न मुझ से. वह खामोश रह कर ही मुझे दंड दे रहे हैं. यदि वह मुझे 10 जूते मार लेते तो शायद मुझे इतना दुख न होता. परंतु अब तो मैं रातदिन दीए की जोत सी जल रही हूं."

एक दिन सुखनंदन फलों के साथ एक अखबार भी लाए थे. पहले उन्होंने सुशीला का हाल पूछा फिर अखबार उस की ओर बढ़ाते हुए बोले, "देखो बहू, तुम ने और निरंजन ने तो नहीं बताया, परंतु यह अखबार सब बता गया है," उन्होंने आंखें पोंछते हुए कहा.

सुशीला ने अंतिम पृष्ठ पलट कर देखा तो देखती ही रह गई. वहां अजय का फोटो छपा था और नीचे लिखा था...

'इस किशोर की आयु 17 वर्ष, रंग गोरा और कद साढ़े 5 फुट है. यह नीली कमीज तथा नीले रंग की पैंट पहने है. लाने वाले को आनेजाने के किराए के अतिरिक्त 1 हजार रुपए का पुरस्कार.'

'अजय तुरंत आ जाओ. तुम्हारी छोटी अम्मां की हालत ठीक नहीं है.'

–तुम्हारा चाचा, निरंजन.

नीचे पता इसी घर का लिखा हुआ था.

पढ़तेपढ़ते सुशीला के आंसू बहने लगे. "अब रो मत, बहू. तुम रोती हो तो बुखार बढ़ जाता है. मैं तो इस कारण आता हूं कि तुम्हारा दिल बहले, पर तुम बातबात पर रो पड़ती हो. यह सूचना पढ़ कर तुम्हारा बेटा अवश्य लौट आएगा."

"मुझे तो इन्होंने कुछ नहीं बताया. पर यह अखबार तो 2 माह पहले का है. यदि अजय ने पढ़ा होता तो अब तक आ न जाता. न जाने कहां भटक रहा होगा... उस के पास न पैसा था, न कपड़े. कहां रहता होगा, कहां खाता होगा...? इस वर्ष की पढ़ाई भी बरबाद हुई..."

"वह तो सब हुआ ही है. किसी होटल में जूठे कपप्लेट धोता होगा," वह उदास मन से बोले.

"यदि अपना पता, ठिकाना लिख देता तो क्या पैसे न भेज दिए जाते? पता नहीं कहां भटक रहा होगा?" वह आंसू पोंछ कर बोली.

शीघ्र ही निरंजन लौट आए थे. तभी सुखनंदन ने अखबार उठा कर उन के सामने कर दिया तो वह दुखभरी मुसकान फेंक कर थैला लिए रसोई में जा घुसे.

सुशीला का बुखार वैसे तो छूट गया



"...सब शोर मचा रहे हैं कि आप सुंदर कांड नहीं हवाला कांड सुनाएं..."

था, परंतु दवा चालू थी, क्योंकि जरा सी मेहनत करते ही बुखार हो जाता था. निरंजन ने एक नौकर रख लिया था, जो खाना बनाने से ले कर घर के अन्य सभी काम भी करता था. परंतु 14-15 वर्ष का लड़का शैतान बहुत था. काम होते ही बाहर भाग खड़ा होता. फिर सुशीला के कितने पुकारने पर भी कान न देता.

एक दिन अचानक बारिश आने पर कपड़े व अन्य सामान उठातेउठाते सुशीला पूरी तरह भीग गई थी. शाम को उसे फिर बुखार हो गया तो निरंजन ने नौकर को बहुत डांटा. इसी गुस्से में वह उसी दिन नौकरी छोड़ कर भाग खड़ा हुआ. अब निरंजन के ऊपर फिर कार्य का भार बढ़ गया.

एक दिन बुखार उतरने के बाद सुशीला ने खिचड़ी खाने की जिद की, पर घर में मूंग की दाल नहीं थी. बाजार वहां से थोड़ी दूरी पर था. ऊपर से बादल भी छाए हुए थे. परंतु वह पत्नी का हृदय नहीं तोड़ सके और साइकिल से बाजार चल पड़े.

उन के जाने के कुछ देर बाद पानी बरसने लगा. सुशीला अब पछता रही थी कि व्यर्थ में उस ने उन्हें बाजार भेजा. दूध पी कर रात काट लेती तो ठीक रहता.

कई बार मन में आया कि किवाड़ बंद कर आए, परंतु भीगने के डर से बाहर न गई.

अचानक तेज गर्जन के साथ मूसलाधार बारिश होने लगी. उसी समय बत्ती भी गुल हो गई. चारों ओर गहरा अंधेरा छा गया. भय से सुशीला का हृदय तेजी से धड़कने लगा, 'यदि कोई चोर, बदमाश घुस आए तो?' सोचते ही वह कांप उठी. उस में इतना भी दम न था कि उठ कर लालटेन जला दे.

तभी बाहर के दरवाजे की खड़खड़ाहट से उस की जान में जान आई कि निरंजन लौट आए हैं. परंतु साइकिल रखने का स्वर सुनाई नहीं दिया. कुछ क्षणों के पश्चात निरंजन के स्थान पर एक छोटी आकृति दरवाजे पर आ कर ठहर गई.

सुशीला के प्राण कंठ में आ कर फंस गए. वह समस्त साहस बटोर कर चिल्लाई, "कौन घुस आया है, अंदर? अरे, कहां तुम? देखो, कौन है?" वह जानबूझ कर ऐ चिल्लाई कि चोरउचक्का उसे अकेली न ज कर भाग खड़ा हो.

परंतु उस आकृति पर शायद कुछ प्रभ न पड़ा. वह बरसते पानी में आंगन पार क बरामदे में आ खड़ी हुई. सुशीला का सव कांप उठा. वह जोर से चिल्लाई, "अरे, जाने कौन घुस आया है. बोलो, कौन तुम? आगे मत बढ़ना, मेरे हाथ में छुरा है जान से मार दूंगी," वह बुरी तरह हांफ र थी.

तभी अंधेरे से भर्राई आवाज गूंज "छोटी अम्मां, मैं हूं अजय."

फिर वह दौड़ता हुआ सुशीला की ग में आ कर गिर गया.

"अजय...अजय... तू आ गया," सुशी ने उसे कस कर हृदय से लगा लिया अ फफकफफक कर रो उठी. अजय शा पहले ही रो रहा था.

जब सुशीला चिल्लाई थी, उसी क्षण निरंज भी दरवाजे तक पहुंच चुके थे. अज्ञात आशं से घिरे वह साइकिल पटक कर भीतर ओर दौड़े, "कौन, कौन घुस आया भीत सुशीला, सुशीला... मैं आ गया हूं... घबर नहीं."

परंतु सुशीला कुछ उत्तर न दे सव अचानक घर के सारे बल्ब जल उठे. निरं ने भयातुर नेत्रों से भीतर देखा तो क्षणा को उन्हें विश्वास नहीं हुआ, परंतु अजय पहचानते ही उन के होंठों पर मुसकान थि उठी.

सुशीला की छाती से लिपटे अजय उन्होंने जबरन छुड़ा कर अपनी बांहों में लिया.

निरंजन के आंसू अजय के घुंघर बालों में मोती जड़ते चले जा रहे थे. सुशी हंसती, रोती आंखों से यह अपूर्व मिलन रही थी और मचलमचल कर बहते अ पोंछ रही थी. आज पराया नहीं, उस अपना भटका हुआ बेटा लौट आया था.

इन्हें भी आजमाइए



● उरद की दाल खाने से सर्दियों में ठंड नहीं लगती. यह दाल भारी होती है, इस में सोंठ, काली मिर्च तथा हींग अवश्य डालें. दुबले लोगों का वजन बढ़ता है.

● नकसीर में उरद के आटे को पानी के साथ तालू के ऊपर लेप करें, तुरंत आराम आएगा.

● उरद की दाल का हलवा शक्तिवर्धक, पौष्टिक तथा हर प्रकार की कमजोरी में तथा स्त्रियों के कमर दर्द में लाभकारी होता है.

● यदि पित्ती निकली हो तो उरद को उबाल कर बांधें, सूजन भी घटेगी व लाभ भी आएगा.

● मवाद वाले फोड़ों पर उरद की पुल्टिस बांधें, आश्चर्यजनक लाभ पहुंचेगा.

● हैजे में प्याज का रस गुनगुना कर के पीना अत्यंत लाभदायक है. –डा. उर्वशी बंधु

● पनीर बनाए दूध से निकले पानी में एक बड़ा चम्मच दही डाल कर 5-6 घंटे के लिए छोड़ दें, अब इस से कढ़ी बनाएं, स्वादिष्ठ कढ़ी बनेगी.

● कांच के जिन बरतनों में हाथ न पहुंचता हो उन के अंदर से चाय व काफी के दाग छुड़ाने हेतु उस में नीबू का रस डालें व कोई भी डिटर्जेंट पाउडर थोड़ा सा छिड़कें, दोनों की प्रतिक्रियास्वरूप झाग उठेगा, अब ब्रुश से साफ कर लें, बरतन तुरंत चमक जाएगा. इसी विधि द्वारा थर्मस भी साफ कर सकते हैं.

● रेशमी कपड़े पर मलमल का कपड़ा बिछा कर इस्तिरी करें अन्यथा इस्तिरी का सीधा स्पर्श रेशमी कपड़े पर पड़ने से वस्त्र के तंतु कमजोर हो जाते हैं.

● नीबू के पानी से कुल्ला करने से मुख की दुर्गंध दूर होती है.

● साबुत लाल सूखी मिर्चों को तेज धूप दिखा कर उन में हलके हाथों से सरसों का तेल मल दें व फिर पिसवा लें. अब इस पाउडर में कुछ नमक के ढेले डाल दें. यह पिसी लाल मिर्च हवाबंद डब्बे में रखें, यह सालभर खराब नहीं होगी.

● पेंट, फेवीकोल व नेल पालिश इत्यादि के डब्बे या शीशियों के ढक्कन लगाने से पूर्व ढक्कन, शीशी या डब्बे के किनारों को मिट्टी के तेल में भीगे कपड़े से भली प्रकार पोंछ लें, अगली बार ढक्कन आसानी से खुल जाएगा. –नीरू भट्ट

● प्रतिदिन सुबह एक गिलास पानी में एक नीबू का रस मिला कर पीने से सौंदर्य में वृद्धि होती है.

● घिस चुकी झाड़ू पर पकड़ने के स्थान को छोड़ कर बड़ा कपड़ा गीला कर लपेटें और पूरे कमरे में लगाएं. यह फर्श पर झाड़ूपोंछा लगाने का आसान तरीका है.

● पापड़, चिप्स आदि चारपाई पर मलमल का कपड़ा बिछा कर सुखाएं व ऊपर मच्छरदानी लगा दें, इस से धूप भी अच्छी लगेगी और मक्खियों, कौओं आदि से भी बचाव होगा.

● जब भी आप एलबम में फोटो लगाएं, उस के पीछे निगेटिव भी लगा दें. जब भी निगेटिव की जरूरत होगी, आसानी से मिल जाएगा.

● सोडा, चाक पाउडर, राख व डिटर्जेंट पाउडर समान मात्रा में मिला कर कपड़े से छान कर डब्बे में भर कर रख लें. आप का बढ़िया विम तैयार है. –राधा रानी मिश्रा

● बहुत दिनों तक रखेरखे कैसेट जाम हो जाते हैं, इन्हें 3-4 घंटे धूप में रखें, ठीक हो जाएंगे.

● बचे चावलों में खट्टा दही, सूजी, नमक व थोड़ा गरम पानी डाल कर मिक्सी में पीसें और गरमगरम इडली तैयार करें.

● बालों में जूं होने पर नारियल के तेल में कपूर का चूर्ण मिला कर रातभर सिर में लगाएं, सुबह सिर धो लें.

● कान व नाक छेदने के बाद नीम की सीक छिद्र में डाल दें, इस से कान पकते नहीं.

● नीबू का अचार बिगड़ता दिखाई दे तो उस में थोड़ी चीनी डाल दें, अचार खराब होना बंद हो जाएगा. –विनोद श्री ●

"अरे सुनो, ये सब्जी की टोकरियां कब से बाहर रखी हैं, इन्हें उठा कर अंदर क्यों नहीं रखते?" कमरे में पलंग पर लेटेलेटे बाबूजी घर के हर कोने का मुआयना कर रहे थे.

भैया जब तक बाहर आते, भाभी ने मेरी सहायता से टोकरियों में से सब्जियां निकाल कर फ्रिज में करीने से सजा दी थीं.

ऐसे संबोधन भैया या भाभी के लिए हो हैं, इतना तो वह जानती ही थीं. बाकी बच सब्जियों के लिए उन्हें कोई स्थान नहीं मि रहा था.

"रहने दो भाभी, यहीं रसोई किनारे पर टोकरियां रख देते हैं. रात त नहीं तो कल सुबह तक तो सारा सामा खत्म हो ही जाएगा," मैं ने मेहमानों क



नाटक

कहानी • पुष्पा भाटिया

जायजा लेते हुए भाभी की समस्या सुलझाई.

"पर बाबूजी..."

"कुछ नहीं कहेंगे. मैं कह दूंगी कि मैं ने रखी हैं," डरती हुई भाभी अपना वाक्य पूरा करें, इस से पहले मैं ने उन्हें आश्वस्त किया.

कमरे से निकल कर बाबूजी आंगन में आ गए. वह कड़कती आवाज में भैया को घूर कर बोले, "मेरे कपड़े स्नानघर में टंगवा दो, नहाना है."

समझ में नहीं आ रहा था, दिसंबर की कड़कड़ाती सर्दी में सुबहसवेरे नहाने की बाबूजी को क्या सूझी? कहीं घुटनों का दर्द शुरू हो गया तो मुशकिल हो जाएगी. लेकिन भैया बिना कुछ कहे बाबूजी की अलमारी में से उन के कपड़े निकाल लाए थे.

तभी बड़ी बूआ की फुसफुसाहट सुनाई दी थी. वह भाई को समझा रही थीं, "वीरेन, अब अलमारी की चाबी बेटे, बहू को हाथ में मत दिया करो. कौन जाने किस की नीयत कब बिगड़ जाए? जमाना बड़ा खराब है. शकुंतला थी तो सब कुछ संभला हुआ था. अब तो तुम्हें इस घर को और खुद को भी संभालना है. ऐसा न हो कि सब कुछ हजम हो जाए और तू हाथ पर हाथ ही धरे रहे."

रसोई में भाभी के साथ पालक काटते



हुए मेरे हाथ रुक गए थे. भाभी यों दर्शा रही थीं, जैसे उन्होंने कुछ सुना ही नहीं. लेकिन बूआ की फुसफुसाहट किसी नगाड़े से कम थी क्या? उन्होंने तो जानबूझ कर ही यह व्यंग्यबाण अपने तरकश में से छोड़े होंगे, ताकि भाई के घर में कलह हो. घर फूंक कर तमाशा देखने वालों की कमी थोड़े ही है.

आजीवन मां को तिरस्कृत करने वाली बूआ अब कितनी हमदर्द बनी बैठी थीं. बाबूजी के धन की चिंता करने से पहले उन के शरीर की तो चिंता करें, कम से कम उन्हें समझाएं कि यों सर्दी में न नहाएं. मां होतीं तो छीन कर कपड़े अपने पास रख देतीं और इन उलटीसीधी बातों का ऐसा उत्तर देतीं कि बूआ की बोलती ही बंद हो जाती.

थीं, "अब वीरेन को चाहिए, नेहा के पास जा कर रहे या बेटीदामाद को अपने पास ही बुला ले."

"क्यों राजन के साथ क्यों नहीं रहता?" चाची चौंकी थीं.

"बापबेटे की बनती कहां है? शकुंतला थी, तो दोनों आतेजाते भी थे. मुझे तो लगता है, बापबेटे में अनबन है," मेरठ वाली बूआ ने अब पूरी बागडोर संभाल ली थी.

"एक ही बेटा, पर वह भी कपूत," चाची ने बुरा सा मुंह बनाया. जी में आया कि इन सब का मुंह बंद कर दूं. लेकिन समय की नजाकत देखते हुए मैं खामोश ही रही. वैसे भी किसकिस का मुंह बंद करती? सभी के मुंह में यही बात थी. भाभीभैया ने कभी

बाबूजी ने अपने व्यवहार से राजन व अपने बीच एक दीवार सी खड़ी कर ली थी. मां जिंदगीभर इस दीवार को गिराने का प्रयास करती रहीं परंतु वह नहीं बदले, लेकिन आज ऐसा क्या हुआ कि इस दूरी को मिटाने को वह खुद ही तैयार हो गए.

अपने घर को सुरक्षा कवच पहनाना उन्हें आता था.

लेकिन मां के जाने के बाद सभी कुछ तो बदल गया था. 12 दिन ही तो हुए थे, मां को गए हुए. लेकिन ऐसा लग रहा था, जैसे बरसों बीत गए हों. मेहमानों से भरा हुआ घर भी वीरान सा ही लग रहा था.

कपड़े फैलाने के बहाने मैं बाहर आंगन में आ गई. धूप में अधलेटी चाची ने अपनेआप को पूरी तरह सिकोड़ लिया था. मेरठ वाली बूआ भी पास के ही खटोले पर पसर गई थीं. देशी घी के 5-5 परांठे खा कर डकार न लेने वाली ये बूआ, चाची यहीं तो जुगाली करती थीं. यह नहीं कि थोड़ा काम में ही मदद कर दें, चावल बीन दें, सब्जी काट दें.

आंगन में रोज का निंदापुराण चालू हो गया था. बड़ी बूआ चाची को कह रही

मुंह खोला नहीं था और मां होंठ सी कर चली गईं. तभी तो लोगों को अफवाहें उड़ाने का मौका मिल गया.

रात को पूरा काम निपटा कर मैं भाभी के पास ही बैठ गई. बेचारी कमरदर्द से कराह रही थीं. आखिर थकावट से इनसान बुरी तरह टूट ही जाता है. भैया भी पास ही लेट गए थे. मेरा हाथ पकड़ते हुए वह बोले, "नेहा, कल मां की तेरहवीं है. फिर सभी अपनेअपने घर चले जाएंगे. तब बाबूजी का क्या होगा? इतने बड़े घर में अकेले रहना मुशकिल है. कोई तो हो, जो सुखदुख में उन का साथ दे."

"तुम्हारी कोई बात बाबूजी नहीं टालते. उन से कहो, हमारे साथ चल कर रहें. राशि के साथ उन का मन भी लगा रहेगा," भाभी विनयपूर्वक बोली थीं.



"तुम्हारा वहम है यह, उस की खुशी की कौन सी चीज मैं ने नहीं दी है," पिताजी की बात सुन कर मां निरुत्तर हो गईं.

उन दोनों की बातें अक्षरक्षः सत्य थीं. इस घर की हर चीज में मां रचीबसी थीं. दिनरात पति के पीछे परछाईं के समान घूमने वाली मां के बिना बाबूजी अब कैसे रहेंगे? वह तो इस परिवार की परिधि भी थीं और धुरी भी. लेकिन बाबूजी को समझाना इतना सरल था क्या?

बाबूजी ने अपने और राजन भैया के बीच जिस अदृश्य दीवार को खड़ा कर दिया था, उसे ढहाना क्या सरल था? ऊपर से ये अतिथि बनी औरतें, जो सुबह उठते ही आलोचनाओं और आरोपों के तानेबाने बुनना शुरू करती हैं तो देर रात तक खुद भी उलझी रहती हैं और बाबूजी को भी उलझाए रखती हैं. थकीहारी भाभी और भैया कब से नींद की आगोश में चले गए थे, लेकिन मैं जागती आंखों से अतीत के सपने देख रही थी...

बरसों पुराना यह आंगन, जहां अब संगमरमर लगा है, कभी कच्चा था और इस के बीचोबीच था, एक आम का पेड़. स्कूल से लौट कर मैं और भैया कितनी देर तक उस के इर्दगिर्द घूमते थे, आंखमिचौली खेलते थे. मां चिल्लाचिल्ला कर दूध पीने को बुलाती रहती थीं, लेकिन हम दीवार के पीछे छिप जाते थे.

एक दिन मेरा पैर फिसल गया था और रक्त की धारा फूट पड़ी थी. बदहवास सी मां दौड़ती हुई आईं और रक्त प्रवाह रोकने के लिए पट्टी बांध दी. दबे, सहमे से राजन भैया दूर खड़े हो गए. डर के मारे उन का पूरा शरीर कांप रहा था.

तभी बाबूजी की गाड़ी आ कर रुकी. उन्होंने भैया को बहुत पीटा. मैं चिल्लाती रही, मां हाथ पकड़ती रहीं कि भैया ने कुछ नहीं किया, वह निर्दोष हैं, लेकिन बाबूजी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था. रात में भैया को ज्वर ने घेर लिया. पूरी रात बर्फ की पट्टियां बाबूजी ने ही बदली थीं. लेकिन ज्यों ही ज्वर कुछ कम हुआ, उन्होंने फिर से अपना भाषण शुरू कर दिया था.

तब मां अपना धैर्य खो बैठी थीं. बोलीं, 'एक बार शुरू होते हो तो चुप क्यों नहीं करते? नन्ही सी जान के प्राण ही निकाल दोगे क्या?' मां का स्वर इतना ऊंचा नहीं था कि भैया सुन लेते, वह तो सिर्फ बाबूजी को समझाना चाहती थीं.

उस दिन बाबूजी चुप हो गए, लेकिन ऐसी ही न जाने कितनी घटनाओं से हमारे जीवन की माला गुंथी हुई थी. न जाने क्यों बाबूजी मुझे बहुत लाड़, दुलार करते थे, परंतु बेटे से सामना होते ही वह इतने कठोर बन जाते थे कि कभीकभी मां रो पड़ती थीं. मेरा बड़े से बड़ा अपराध क्षमा करने वाले बाबूजी भैया की छोटी सी त्रुटि भी बरदाश्त नहीं करते थे. बचपन में बाबूजी की इस कमजोरी का मैं ने कई बार फायदा भी उठाया था. निर्दोष भैया को बहुत बार पिटवाया था. उन के हिस्से में आने वाली हर चीज को छीना था.

मेरा व्यवहार ऐसा होता, मानो बाबूजी के प्यार पर मेरा ही एकाधिकार हो. मां हमेशा बाबूजी के इस व्यवहार का विरोध करती रहीं. एक ही घर में जन्मे, पलेबढ़े बच्चे समान प्यार व आदर के अधिकारी होते हैं, ऐसा वह मानती थीं. जब कभी उन के धैर्य का बांध टूटता तो बाबूजी मां को समझाते, 'बेटी तो पराया धन है. कुछ ही दिनों में ससुराल चली जाएगी. क्या मालूम, ससुराल में उसे प्यार मिलेगा भी या नहीं. कम से कम यहां तो उसे प्यार, दुलार लेने दो.'

मां प्रतिवाद करतीं, 'तो इस का मतलब यह तो नहीं कि बेटी को सिर पर चढ़ा कर रखो और बेटे के सिर पर कभी हाथ भी न रखो.'

'यह तुम्हारा वहम है. उस की खुशी की कौन सी चीज मैं ने नहीं दी है? अगर कठोरता न बरतो तो बेटे बिगड़ जाते हैं.'

मां निरुत्तर हो जाती थीं. पर वह पति को आजीवन समझा नहीं पाई थीं कि प्यार और अपनत्व से सींचा पौधा हमेशा हराभरा रहता है. उस के कुम्हलाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता. उन्हें लगता, बेटे के प्रति अपनाया गया यह शुष्क व्यवहार उन्हें अलगाव की ऐसी दूरी पर खड़ा कर देगा, जिसे मिटाना तो दूर, कभी पाटना भी शायद संभव न हो सके.

ज्योंज्यों उम्र के सोपान चढ़ती गई, जीवन के कई खट्टेमीठे अनुभवों से मैं इतना जान गई थी कि बाबूजी का व्यवहार भैया के प्रति न्यायसंगत नहीं है. भैया की निरीह नजरें कई बार उन्हें दया का पात्र बना देती थीं. दफ्तर से लौट कर आए बाबूजी, जब मेरे मस्तिष्क पर चुंबन अंकित करते, तब दबे, सहमे भैया से दूरी बनाए रखने में उन्हें पता नहीं क्या आनंद मिलता था?

दिन बीतते गए. मेरा ब्याह हो गया. सुंदर, सुदर्शन व आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी रोहित बहुराष्ट्रीय कंपनी में डाइरेक्टर थे. मेरी भरीपूरी ससुराल थी. घर का हर व्यक्ति स्नेहशील व सुसंस्कृत था. ससुराल की दहलीज ऐसी लगी, जैसे मायका ही हो.

राजन भैया प्राइवेट फर्म में इंजीनियर थे. उन की अच्छीखासी आय थी. मां सुघड़ और सुशिक्षित बहू चाहती थीं, जो घर को सजाएसंवारे और जिम्मेदारियों से मां को मुक्त करे. बड़ी ही कुशलता से उन्होंने बेटे का मन भी टटोला था और जान गई थीं कि उन के बेटे की पसंद उन से अलग नहीं है.

लेकिन बाबूजी की विचारधारा बिलकुल अलग थी. वह भैया को सुनाते हुए मां से बोले, 'चूल्हाचक्की तो नौकरीपेशा

लड़कियां भी संभाल लेती हैं. मियांबीवी दोनों कमाएं तो घर की अर्थव्यवस्था सुचारू रूप से चलती है.'

'लेकिन राजन की अपनी तनख्वाह कम है क्या? फिर नौकरीपेशा बहू क्यों चाहते हैं आप?'

'क्योंकि उन का व्यक्तित्व सुलझा हुआ होता है. घर बैठने वाली बहुएं इधरउधर की कहसुन कर ही अपना समय व्यतीत करती हैं.'

मां निरुत्तर हो गई थीं. मैं सोच रही थी, 'उन की अपनी बेटी भी तो घर बैठने वाली ही है. क्या मैं अनर्गल बातों में ही समय व्यतीत करती आई थी?'

लेकिन बाबूजी के जिद्दी स्वभाव के सामने कुछ भी कहना व्यर्थ था. भैया के जीवन का हर निर्णय वह खुद ही तो लेते आए थे. भैया झुक गए थे. वैसे भी वह हर कीमत पर शांति खरीदने के पक्ष में थे.

वसुधा भाभी बाबूजी के सहकर्मी डा. विनोद की बेटी थीं. वह एक कालिज में प्रवक्ता थीं. सुंदर व लावण्यमयी भाभी सभी को पसंद थीं.

हनीमून से लौट कर भैयाभाभी ने अपना अवकाश बढ़ा दिया था. कुछ दिन मैं भी मायके आ गई थी. मन में नई भाभी के साथ रहने की चाह थी. एक दिन मां सुबहसुबह चाय बना कर उन के कमरे में दे आई थीं. पर बाबूजी को यह सही नहीं लगा था, अधिकारपूर्वक बोले, 'अब रसोई की बागडोर बहू को संभालनी चाहिए.'

मां उन के ऊंचे स्वर से घबरा गईं. बोलीं, 'ब्याह के शुरूशुरू के दिन घूमनेफिरने, खानेपीने के होते हैं. फिर तो यह नूनतेल का चक्कर चलेगा ही.'

लेकिन भाभी समझदार थीं. ससुर का मंतव्य समझ गई थीं. दूसरे दिन जल्दी उठ कर उन्होंने चाय बनाई और बाबूजी के कमरे में दे आई थीं. मां बहू की समझदारी पर खुश हो रही थीं, लेकिन बाबूजी को चाय बेस्वाद लग रही थी.

फिर तो भाभी ने घर की पूरी बागडोर संभाल ली थी. मैं उन के साथ बैठ कर कितनी देर तक हंसीमजाक करती रहती थी. इस बीच अगर मां ने थोड़ा भी काम किया तो बाबूजी चिढ़ जाते. तब मां कहतीं, 'कैसी बातें करते हो जी? ननदभाभी को कुछ देर बैठ कर हंसबोल लेने दो.'

लेकिन तब तक भाभी रसोई में पहुंच ही जाती थीं. कभीकभी लगता, बाबूजी इस नए माहौल से अपनेआप को सहज नहीं कर पा रहे हैं. जब कभी उन्हें पास बैठने को विवश भी करती तो वह मुझे अपने पास बुला लेते और फिर शुरू हो जाता बेटेबहू की आलोचना का कभी न समाप्त होने वाला सिलसिला. मैं सोचती, 'इस युग में बेटीबहू में अंतर ही क्या है? जब बेटे को ही अपना न समझा तो बहू क्यों कर अपनी बनेगी? अगर मेरे ससुर मेरी निंदा मेरी ननद के सामने करें तो मुझे कैसा लगेगा?' यही सोच कर एक दिन मैं वहां से उठ कर चली आई थी. मां ने भी झिड़क कर बाबूजी को चुप करा दिया.



जहान

इक टुकड़ा उड़ने को
मुझे आसमां मिल गया,
बस कुछ न पूछो
मुझ को मेरा जहान मिल गया.

–नीरजा श्रीवास्तव 'नीरू'

दूसरे दिन बाबूजी का जन्म था. भैया मां के लिए साड़ी और बाबूजी के लिए दुशाला लाए थे. मां भैया की लाई साड़ी पहन कर सब को दिखा आई थीं. बाबूजी को भी समझाती रहीं कि दोशाला ओढ़ लें, पर उन्हें यह दिखावा सा लग रहा था.

बाबूजी ने अपनी नासमझी से जुड़े हुए तार तोड़ दिए. भैया आशान्वित नजरों से बाबूजी को देखते रहे, लेकिन उन के पास ऐसी भावनाओं की कद्र ही कब थी? भैया की भावनाओं और संवेदनाओं को उन्होंने समझा ही कब था?

बाबूजी खर्च का अतिरिक्त भार भी शायद वहन करना नहीं चाहते थे. समझ में नहीं आया कि उन का पैसा किस दिन काम आएगा? भैया सब समझ गए थे. उस दिन से बिजली, पानी, फोन के बिल से ले कर फलसब्जी, सभी कुछ उन के जिम्मे हो गया.

भैया ने एक और निर्णय लिया. वह अपनी आय को बाबूजी के हाथों में रख देते थे. घर का हर सदस्य खुश रहे, यही उन की इच्छा थी. लेकिन बाबूजी ने अपने लिजलिजे स्वभाव से घर के वातावरण को ही कलुषित बना दिया था.

एक दिन मैं मायके गई तो मां ने जो कुछ कहा, उसे सुन कर ऐसा लगा, जैसे सब कुछ बदल सा गया है. वह बोलीं, 'मैं ने निर्णय लिया है, राजन और बहू अपने लिए अलग मकान ले कर रहें.'

बाथरूम में विवाह

अभी तक अनोखी शादियां अंतरिक्ष व समुद्री लहरों पर होती आई हैं पर अब एक ताइवानी जोड़े ने 5 अन्य जोड़ों के साथ मिल कर स्नान घर में शादी रचाई है.

ताइवान के एक पार्क में स्थित इस स्नानघर को विशेष रूप से दूल्हा, ली वांग फेंड व दुलहन चीऊ चुलू-केयुल ने बनाया है. शादी का खर्च करीब 10 लाख डालर आया है.

स्नानघर ऐसी जगह है जहां आमतौर पर सभी लोग जाते हैं. इसी कारण इन जोड़ों ने यहां शादी रचाने का फैसला किया.

'क्या कह रही हो, मां? भाभी के पांव भारी हैं. इस समय उन्हें सहारे की जरूरत है. लोग क्या कहेंगे, यह भी सोचा है, तुम ने?'

मां चुप हो गई थीं. मैं ने उन्हें दिलासा दिया कि नन्हे बालक की किलकारियां और पायल की रुनझुन बाबूजी का मन द्रवीभूत कर देंगी. कुछ दिनों बाद राशि भैयाभाभी की गोद में आई.

जब भाभी की कालिज की छुट्टियां खत्म हुईं तो बाबूजी ने उन्हें आया रखने का परामर्श दिया. पर मां ने समझाया कि पूरा दिन वह अकेली ही तो रहती हैं. लेकिन बाबूजी अपनी ही जिद पर अड़े रहे. आया तो रखी गई, लेकिन समस्या तब आती, जब वह छुट्टी पर होती थी. बरामदे में खड़ी भाभी आया का इंतजार करती रहतीं और कमांडर की तरह बाबूजी कमरे में टहलते रहते.

मां खूंटे में बंधे ढोर की तरह टुकरटुकर निहारतीं रहतीं. कई बार वह कहतीं, 'घर और बाहर की जिम्मेदारी निबाहतेनिबाहते बहू टूट गई है. नौकरी वाली बहू लाए हो तो समझौता करने की आदत भी डालो.'

व्यावहारिक बुद्धि वाली मां टूट चुकी थीं. पुराना निर्णय एक बार फिर उन्हों[ने] लिया. मैं ने कहा, 'रह लोगी, भैया के बिना?'

लेकिन मां दृढ़ निश्चय के साथ बोलीं, ' मनुष्य भूखा जी सकता है, लेकिन अपमान व तिरस्कार से भरा जीवन काटना बहुत मुशकिल होता है. कहीं पिता के सामने इन बच्चों के संयम का बांध टूट न जाए.'

कितना बड़ा पत्थर रखा होगा, मां [ने] कलेजे पर. अब भी वह आशान्वित नेत्रों [से] पति को निहार रही थीं. लेकिन उन के हृदय की गहराइयों को समझ पाना बेहद मुशकिल था. शायद यही आस थी कि बेटा व दामाद समयअसमय उन्हें सहारा देंगे.

भैया उस घर से चले गए तो मां

बिस्तर पकड़ लिया. घर छोड़ने के बाद भी भैया लगातार इस घर से बंधे रहे. मैं कब जा पाती थी वहां? अपने परिवार की ही जिम्मेदारियां बहुत थीं. मां की बीमारी का इलाज बाबूजी के पास था, पर शुष्क व्यक्ति आत्मीय किस प्रकार बन सकता है? न जाने कितना पैसा उन की बीमारी पर खर्च हो गया.

उधर सब की जबान पर यही था कि मां की बीमारी का कारण भैया ही हैं. सब के लिए सुख के साधन जुटाने वाले भैया अपने हिस्से की अपकीर्ति चुपचाप सह गए थे. एक दिन मां ने मुझे बुलवा भेजा था. टूटती, बिखरी आवाज में बोलीं, 'मेरे बाद तेरे बाबूजी का क्या होगा, नेहा?'

'तुम कहां जा रही हो? तुम्हें हम जाने देंगे क्या?' मैं ने हंसते हुए कहा था. यह जानती थीं कि उन की हालत सोचनीय है.

मां जीवन की अंतिम घड़ी में भी कुछ जोड़ना चाहती थीं. बोलीं, 'अपने बाबूजी को समझा दो कि राजन के पास रहें,' इतना कहतेकहते उन्होंने दम तोड़ दिया था.

बूआ की बात सुन कर कुछ अजीब सा लग रहा था. यह बात नहीं है कि बेटी के घर मातापिता नहीं रह सकते. आधुनिक समाज बेटी व बेटे में अंतर नहीं करता. लेकिन वैसा तब होना चाहिए, जब बेटे के मन में पिता के लिए आदर या प्यार न हो. भैया ने मर्यादा की कोई सीमा पार नहीं की थी. मेरे घर में तो बाबूजी अतिथि बन कर ही रह सकते थे. मैं सोचने लगी, 'अगर अपने सासससुर को पहले भोजन दिया या आदर दिया तो बाबूजी खुद को अपमानित महसूस करेंगे. अपने घर में जैसे चाहें, जहां चाहें उठेंबैठें. मेरे घर में तो वह कैदी ही बन कर रह जाएंगे.'

मेहमानों की भीड़ छंटनी शुरू हो गई थी. तेरहवीं का भोज पंडित खा चुके थे. सिर्फ दानपुण्य चल रहा था. अचानक मैं ने बाबूजी से कहा, "बेटी को आप क्या दान दे रहे हैं? मां का सोना और हीरों के कर्णफूल मेरे हिस्से के हैं."

कांपती आवाज में बाबूजी ने मुझे समझाया, "बेटी, मुझे याद नहीं, वह सब कहां रखा है?"

"जहां भी हों, कल मेरे घर पहुंच जाने चाहिए और आप को आने की जरूरत नहीं, भैया को भेज दीजिएगा."

उस के बाद अपशब्दों का भंडार मेरे शब्दकोष से फूट पड़ा था.रोहितआग्नेय नेत्रों से मुझे देख रहे थे. भैया हमेशा की तरह सहमे खड़े थे.

चुपचाप सामान बांध कर मैं घर आ गई थी. मैं ने बाबूजी का कितना अपमान किया था, कैसी दयनीय स्थिति उत्पन्न कर दी थी. इस के साथ ही मैं खुद पति की नजरों से भी गिरी. 8 दिन तक न बाबूजी की खोजखबर ली, न ही उन के पास गई.

रविवार को सुबहसुबह सब नाश्ता कर रहे थे. भैयाभाभी मेरे पास आए. भैया बोले, "8 दिन तक तेरे पास आ नहीं सके थे. सामान वगैरह ले जा रहे थे..."

"कहां?" मैं ने विस्फारित नेत्रों से पूछा.

"अब हम बाबूजी के साथ ही रहेंगे."

उस के बाद जेवरों का डब्बा भाभी ने मुझे पकड़ाया. मैं ने चुपचाप उन्हें डब्बा वापस कर दिया, खोल कर देखने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था.

"अगर जेवर नहीं लेने थे तो यह तमाशा क्यों किया?" मेरे पति रोहित का स्वर ऊंचा था. उन्हें भी तो मैं ने अपमानित किया था. मैं हौले से बोली, "इसलिए कि भैयाभाभी को बाबूजी अपने पास बुला लें. उन की नजरों में स्वयं को गिराने का मेरे पास यही एकमात्र उपाय था. बाबूजी भैया की अमानत हैं. मां की अंतिम इच्छा थी कि बाबूजी, बहूबेटे के साथ ही रहें."

भैया ने मुझे गले लगा लिया. रोहित प्रशंसात्मक दृष्टि से मुझे देख रहे थे. टूटते तार जुड़ते हुए से प्रतीत हो रहे थे. मेरे मायके के दरवाजे भी तो मेरे लिए अब खुल गए थे. ●

जंगल के राजा के नाम से विख्यात बाघ भारतीय वनों का सिरमौर प्राणी है. मनुष्य से ले कर जंगली जानवरों तक, सभी पर उस का दबदबा अभी भी पूर्व की भांति बरकरार है. इस का नाममात्र सुनने से रोबीली मूंछों व डरावनी आंखों वाले हिंसक पशु का दृश्य उपस्थित हो जाता है. 'दि रायल टाइगर' के नाम से दुनिया भर में प्रसिद्ध भारतीय बाघ आज भी देशविदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है.

बाघ का उल्लेख भारत में ईसा से 3 हजार वर्ष पहले की हड़प्पा की मुहर... मिलता है. 19वीं शताब्दी तक बाघ की प्र... तुर्की से ले कर चीन तक फैली हुई थी. ... ऋषियों के अनुसार ऐसा महसूस किया ... है कि इस प्रजाति की उत्पत्ति उत्तर मे... और यह चीन व बर्मा के रास्ते भारत ...

भारत के उत्तरपश्चिम क्षेत्र व गु... के अलावा यह सभी प्रकार के जंगल... पाया जाता है. पश्चिमी बंगाल के दल...

लेख ● जयकिशन शर्मा

भारतीय वनों का



सुंदरवन के पानी में एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक यह तैरता दिखाई देता है. असम की लंबी घास हो या फिर हिमालय के तराई क्षेत्र, मध्य भारत के साल वृक्षों के घने जंगल हों अथवा दक्षिण के सदाबहार जंगल, बाघ की दिल दहलाने वाली दहाड़ें जंगल के सन्नाटे को चीरती हुई दूरदूर तक सुनाई देती हैं.

शताब्दी के आरंभ में भारत में बाघों की संख्या 40,000 के लगभग थी जो 1992 में घट कर 2,000 के लगभग रह गई. तब राजामहाराजाओं व उच्च वर्ग के लोगों के लिए बाघ का शिकार मनोरंजन हुआ करता था. तत्पश्चात इन का स्थान शिकारियों और वन्य जीवों के अंगों का विक्रय करने वाले तस्करों ने ले लिया. फलतया खाल और हड्डियों के लालच में इन का अंधाधुंध शिकार होने लगा जो आज भी अबाध गति से जारी है.

1 अप्रैल, 1973 को वन्य जीवन संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 'बाघ परियोजना' आरंभ हुई. इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य बाघों की निरंतर घटती संख्या

सिरमौर बाघ



बाघ भारतीय वनों का सिरमौर प्राणी है परंतु अंधाधुंध शिकार से इस की संख्या निरंतर घटती गई है जिसे संतुलित करने के लिए 'बाघ परियोजना' शुरू की गई थी. परंतु अथक प्रयास करने और करोड़ों रुपए खर्च करने के बावजूद अभी भी बाघों की संख्या में कोई खास वृद्धि नहीं हो सकी है.

को संतुलित कर उन की संख्या में वृद्धि करना, उन को संरक्षण प्रदान करना तथा वनों को सुरक्षित रखना व अत्यधिक घने वनों को 'टाइगर रिजर्व' घोषित करना था. सर्वप्रथम यह परियोजना बांदीपुर (कर्नाटक), कार्बेट नेशनल पार्क (उत्तर प्रदेश), मानस (असाम), मेलाघाट (महाराष्ट्र), पलामू (बिहार), रणथंभौर (राजस्थान), सिंपलीपाल (उड़ीसा), सुंदर वन (पश्चिम बंगाल) के 12,928 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में आरंभ हुई. उस समय देश में बाघों की कुल संख्या 1,827 थी.

भारत की बाघ परियोजना को 1 अ
1995 को 22 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, लेकि
इन 22 वर्षों के अथक प्रयास और कर
रुपए खर्च करने के बाद इन की सं
4,200 के लगभग ही हो पाई है.
परियोजना देश के 19 प्रमुख अभयारण्यो
संचालित की जा रही है. 1 अप्रैल, 1973
बाद 1979 में पेरियार (केरल), सरि
(राजस्थान), 1983 में बक्सा (पशि
बंगाल), इंद्रावती (मध्य प्रदेश
नागार्जुनसागर (बिहार), नामदापा (अरुण
चल प्रदेश), 1988 में दुधवा (उत्तर प्रदेश
1989 में कालाकांमुंदायुरई (तमिलनाडु
1990 में बाल्मीकि (बिहार), 1992 में
(मध्य प्रदेश) के 13,895 वर्ग किलोमी
क्षेत्रफल में यह परियोजना शुरू की गई.

बाघ की लंबाई साढ़े 7 फुट से ले
साढ़े 9 फुट तक और वजन 500 पौंड
लगभग होता है. लेकिन इतिहास के पृष्ठों
पलटने पर जानकारी मिलती है कि मध्य प्र
के ग्वालियर जिले में सुलतानपुर के जंग
में 1947 के पूर्व तक साढ़े 10 फुट लं
वाला बाघ (नरमादा) का जोड़ा भी प
जाता था. बाघ के इस जोड़े का शिक

'टाइगर रिजर्व' वनों के सुरक्षित वातावरण म
बाघ निर्भय हो कर विचरण करते हैं.





बाघ की यह विशेषता होती है कि भूख लगने पर अपने शावकों व स्वयं के लिए खुद ही शिकार कर के खाता है.

कालीन सिंधिया स्टेट के समय ब्रिटिश धिकारियों द्वारा किया गया.

मादा (बाघिन) 105 से 115 दिन तक र्भधारण करने के पश्चात 2 से ले कर 6 च्चों तक जन्म देती है, जिन का औसत जन 2-3 पौंड के लगभग होता है. 5-6 हीने तक ये बच्चे मां के दूध पर ही निर्भर ते हैं. फिर मां धीरेधीरे उन्हें शिकार करने प्रशिक्षण देती है. तब कहीं 2-3 वर्ष में पूर्ण रूप से वयस्क हो कर स्वयं शिकार ने के लायक होते हैं. मादा बाघ सभी सम में प्रजनन करती है. और यह बाघ की भक्षण शैली के अनुरूप भी है. चूंकि बाघ हर बार अपना शिकार स्वयं करना होता इसलिए यदि उस की गर्भावधि लंबी चले र भ्रूण का आकार बड़ा हो जाए तो उसे ना शिकार तलाशने में कठिनाई होती है. र इस से दुर्घटना व गर्भपात की संभावना बढ़ जाती है. बाघ की उम्र 30 वर्ष के भग होती है. खरगोश, जंगली सूअर, ण, बंदर, सेही आदि प्राणी इस का प्रमुख जन होते हैं.

बाघ अपने पेशाब या मल की गंध से प्रयोजन हल करते हैं. जमीन को कुरेद अथवा पेड़ों की झुकी हुई टहनियों के निचले भाग पर पेशाब या मल त्याग कर बाघ अपने क्षेत्र पर निशान लगाते हैं. ये निशान दूसरे बाघों के लिए चेतावनी और निवेदन दोनों का काम करते हैं. गंध से बाघ जंगल में एकदूसरे का अनुगमन करते हैं. यह उक्त क्षेत्र के अधिकृत होने का सूचक है, जिस से दूसरे बाघ यथास्थिति आकर्षित हो सकते हैं या जिसे वे अस्वीकार कर सकते हैं. गंध सूचना विशेष भी संप्रेषित कर सकती है. जैसे, किसी बाघ की पहचान या परिचय करना, उसे उस स्थल से गुजरे कितना समय हुआ, यह बताना और यदि वह मादा है तो क्या कामोत्तेजित स्थिति में है अथवा नहीं आदि.

बाघ की प्रमुख विशेषता यह होती है कि जब तक उसे छेड़ा न जाए, तब तक वह किसी मनुष्य को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता. प्राणी विशेषज्ञों के सामने अभी तक कोई ऐसी घटना देखने में नहीं आई, जब कोई बाघ किसी के प्रति जानबूझ कर क्रूर हुआ हो या फिर वह इस हद तक रक्तपिपासु हो गया हो कि बगैर परेशान किए हुए उस ने अपनी व अपने शावकों की भूख से अधिक

शिकार किया हो.

बाघ कभी नरभक्षी नहीं होते और न ही मनुष्य बाघ का प्राकृतिक आहार है. अपनी मूल प्रकृति के कारण वह अकसर मनुष्य से भय खाता है. बाघ के नरभक्षी होने का मुख्य कारण उस के आवासीय क्षेत्र की हानि अथवा विघ्न होता है. जब बाघ के क्षेत्र में वन्य जीवों की संख्या नगण्य के बराबर रह गई हो और उसे जंगल के इर्दगिर्द स्थित किसी आवासीय क्षेत्र में पालतू पशुओं को

अपना शिकार बनाने की आदत पड़
तब ऐसी स्थिति में कभीकभी उस का
से सीधा सामना हो जाता है. तब वह
पशुओं तक पहुंचने के लिए मनुष्य को
रास्ते से हटाने की कोशिश करता है
तरह की जोरआजमाइश यदि बाघ और
के बीच 2-4 बार हो जाए, तो बाघ
साहस इतना अधिक बढ़ जाता है कि
मनुष्य को अपना शिकार बनाना आरंभ
देता है. वह संयोग से अथवा जानबूझ

किस ने मारे कितने बाघ

शिकारकर्ता	*शिकार क्षेत्र*	*मारे गए बाघों की संख्या*	*सन जिस में बाघों का शिकार किया गया*
1. विलियम राइस	राजस्थान	158	1850 से 1854 के म
2. गार्डन कंमिंग	मध्य प्रदेश एवं अन्य क्षेत्रों में	83	1863 से 1865 के म
3. डब्ल्यू फोरसिथ	उत्तर प्रदेश में 31 दिनों में	29	–
4. महाराजा गौरीपुर		500	1884 से 1940 के म
5. महाराजा नेपाल व मेहमान		433	1933 से 1940 के म
6. कर्नल नाईटिंगल	पूर्व हैदराबाद राज्य में	300 से अधिक	–
7. महाराजा उदयपुर	100 से अधिक	आजीवन	
8. विजय नगरम के महाराजकुमार		323	आजीवन
9. महाराजा सरगुजा		1950	आजीवन
10. महाराजा कोटा		100 से अधिक	
11. महाराजा गंगासिंह बीकानेर		104	
12. टोंक के नवाब		100 से अधिक	
13. महाराजा रीवा		500	1923 से 1969 के म
14. महाराजा ग्वालियर व मेहमान	900 से अधिक	आजीवन	
15. जार्ज यूल		400 से अधिक	
16. मोंटेग जिराड	मध्य भारत व हैदराबाद में	227	



क बार यदि मनुष्य पर आक्रमण कर उसे
ख्मी कर दे या उसे मौत के घाट उतार दे,
फिर उस का मनुष्य के प्रति भय समाप्त
जाता है.

बाघ अकसर रात के समय शिकार रने वाला प्राणी है. इस के शिकार अभियान पूर्ण रूप से पेशेवराना झलक दिखाई देती जब यह अपने शिकार पर निकलता है, उस क्षेत्र की भौगोलिकता के अपने ज्ञान कार्यान्वित कर उन स्थलों पर पहले ही ुंच जाता है, जहां उसे शिकार मिलने की धिक संभावना होती है. बाघ की श्रवण क्ति और बुद्धि काफी तीव्र होती है और में धैर्य एवं आत्मविश्वास कूटकूट कर ा होता है.

आकस्मिकता एवं फुरती घात लगाने व कार करने के मूल मंत्र हैं. घात लगाते वक्त प्राणी दबे पैर शिकार का पीछा करता तब सूखी पत्ती और घास पर चलते हुए उस की आवाज सुनाई नहीं देती. बाघ कसर अपने शिकार पर पीछे से आक्रमण ता है. यह शिकार की पीठ पर कूद कर जमीन पर गिराने में माहिर होता है. बाघ ने दांतों को उस की गरदन पर गाड़ देता और जैसे ही शिकार डगमगा कर जमीन

प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में विचरण करने वाला बाघ आज अपने शरीर के कारण डरा हुआ है.

पर गिरने को होता है, तब यह उस की गरदन को ऊपर की ओर उठा कर ऐसा झटका देता है कि एक ही झटके में उस की रीढ़ की हड्डी टूट जाती है या फिर यह शिकार की गरदन एवं श्वास नली पर अपनी पकड़ तब तक नहीं छोड़ता, जब तक कि उस की दम घुटने से मृत्यु नहीं हो जाती.

सुप्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट ने बाघ को पर्यावरण का रक्षक कहा था, इसलिए उस ने अपने जीवन में कभी भी किसी ऐसे बाघ को नहीं मारा, जो कि मानव भक्षी न हो.

आज जबकि सरकार बाघ संरक्षण और उस की वंश वृद्धि के लिए करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, तब बाघ के अंगों की मांग पश्चिम के बाजारों में बहुत तेजी से बढ़ रही है. पश्चिम से उठे खतरे के बादल भारतीय बाघ पर भी बरस रहे हैं. भारतीय जंगलों का राजा अगर डराडरा, सहमासहमा हुआ है, तो उस का कारण है, उस का अपना खूबसूरत, बलशाली, अनमोल एवं विलक्षण शरीर, जो कि अब दवा और शराब बनाने के काम आने लगा है. ●

पाठकों की समस्याएं



मैं 24 वर्षीया युवती 30 वर्षीय युवक से प्रेम करती हूं जो बैंक में कार्यरत हैं. मैं उन्हें जीजान से 5 वर्षों से चाहती हूं और वह भी यही कहते हैं, पर इधर कुछ दिन से यही कह रहे हैं कि एक महात्मा ने बताया है कि हमारे विवाह करने पर एक नहीं बचेगा, वह शादी से इनकार करते हैं. हमारे शारीरिक संबंध भी नहीं हैं.

आप दोनों यदि एकदूसरे से प्रेम करते हैं तो इस तरह के अंधविश्वासों में न पड़ें. ये ढोंगी महात्मा केवल उलझाने के लिए इस तरह की बेबुनियाद भविष्यवाणियां करते हैं. आप को यदि लगता है कि महात्मा का नाम ले कर विवाह न करने का बहाना बनाया जा रहा है तो बात दूसरी वरना आप बिना किसी डर के विवाह कर लें.

मैं 23 वर्षीय सरकारी कर्मचारी हर समय बेकार की बातें सोचता रहता हूं. स्मार्ट लोगों को देख कर या तो घबराहट होती है या गुस्सा आता है. इस चक्कर में मेरा वजन भी नहीं बढ़ पाता. कैसे अपने गुस्से और घबराहट को काबू करूं, कोई राय दीजिए.

आप हीन भावना के शिकार हैं. अपने विचारों पर काबू रख कर अपनी सोच बदल सकते हैं. आयु के इस दौर में कई बार युवा अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं. मातापिता का साया उठ जाने पर यह प्रश्न सामने आने लगता है कि जीवन में क्या होगा और इसी डर से कुछ लोग अपनेआप को छिपाने लगते हैं. आप हिम्मत न छोड़ें. 1-2 वर्षों में विवाह होने के बाद सब कुछ ठीकठाक हो जाएगा.

मैं 20 वर्षीय स्नातक हूं. संगीत व गायन में रुचि है. संगीत के क्षेत्र में यश प्राप्त करना चाहता हूं, क्या करूं. कोई संस्था या कंपनी नए गायकों को प्रोत्साहन देती है क्या ?

आप कोई भी स्थानीय संगीत प्रशिक्षण केंद्र में दाखिला ले कर आगे बढ़ सकते हैं. इस के अलावा दूरदर्शन में नए गायकों के प्रोत्साहन के लिए कुछ कार्यक्रम हैं. उन कार्यक्रमों में आप कैसेट भेज कर परीक्षण करा सकते हैं, इस के अतिरिक्त स्टेज कार्यक्रमों के आयोजकों से मिल कर भी आप अपनी कला का विस्तार कर सकते हैं. रेडियो व दूरदर्शन गायक बनने के लिए विधिवत प्रशिक्षण का होना जरूरी है और स्वर परीक्षण भी होता है. जिस में उत्तीर्ण
ही आप इस ओर बढ़ने की कोशिश कर सकते

**मैं विवाहिता हूं. इधर 2 वर्षों
ससुरालवाले मुझे नहीं रख रहे और कहते
ससुराल में रहने के लिए डाक्टर का प्रमाण पत्र
कि मैं स्वस्थ हूं. जब हम प्रमाणपत्र दिखाते हैं तो
हैं यह कागज नहीं चाहिए. समझ में नहीं अ
कैसा कागज मांगते हैं वे लोग. उस के बिना
ससुराल में नहीं रहने देंगे. ऐसे में मैं क्या करूं**

आप जरूर अपने ससुराल में किसी त
विवाद खड़ा कर रही हैं. हर परिवार चाहता
उस के घर एक बहू आए जो घर का काम
बड़ों का आदर करे, पति को सुख दे. लगता
कुछ ऐसा व्यवहार करती हैं कि किसी को
नहीं मिला उलटे उन्हें डर लगता है कि आ
ऊंचनीच न कर बैठें. आप से भयभीत हो कर
डाक्टर का प्रमाणपत्र चाहते हैं. इस तरह की
बड़े आपस में बैठ कर सुलझा सकते हैं प
खुद को देखिए क्या आप पत्नीधर्म निभाने ला
या नहीं.

**मैं एक लड़की के प्रेम में पागल अवि
युवक हूं. वह भी मुझे बेहद चाहती थी. इध
अन्य लड़के को वह चाहने लगी है. आ
दीजिए कि क्या उस लड़के को दुनिया से
या दुनिया छोड़ दूं या लड़की को बाहों
लूं.**

आप भावुकतावश ऐसा सोच रहे हैं.
को मारने या स्वयं मरने का आप को वि
अधिकार नहीं दिया. दूसरे, हो सकता है वह
आप को एक साधारण दोस्त के रूप में चाह
शादी नहीं करना चाहती थी. इसलिए हर
यथार्थ रूप में स्वीकार करें. अच्छा हुआ विव
आप को पता चल गया. अपना ध्यान अन्यत्र

-कं

**पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञा
पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उतर इस
में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य सबंधी उत्तर देना संभ
है. पत्र द्वारा अलग से उत्तर नहीं दिए जा सकते.
समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झं
एस्टेट, नई दिल्ली-110055.**

बदलती बैंक सेवाएं

प्रभाव व विकल्प



लेख • आर.एम. कोचेटा

आर्थिक उदारीकरण व भूमंडलीकरण के कारण बैंक क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन व प्रयोग किए जा रहे हैं. बैंकों व वित्तीय संस्थाओं की परिचालन लागत में मितव्ययता लाने और उत्तरदायित्व व लाभप्रदता में वृद्धि करने के लिए भारत सरकार द्वारा गठित नरसिंहम समिति ने नवंबर 1991 में अपनी रिपोर्ट वित्त मंत्री को प्रस्तुत की थी. जिस में मुख्य रूप से बैंकिंग ढांचे में आधारभूत परिवर्तन करने, निजी बैंकों की स्थापना में उदार दृष्टिकोण अपनाने, बैंकों को अपने क्रियाकलापों में पूर्ण स्वायत्तता देने और प्राथमिक क्षेत्रों में रियायती ब्याज दरों पर ऋण देने पर नियंत्रण करने की सिफारिशें की गई थीं.

1995 के आतेआते आर्थिक उदारीकरण व नरसिंहम समिति की सिफारिशों का प्रभाव बैंकिंग क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा. विदेशी व कुछ निजी बैंकों को छोड़ कर यदि हम सार्वजनिक क्षेत्र के व्यावसायिक बैंकों में हुए परिवर्तन व उन के प्रभावों का आकलन करें तो पता चलता है कि भारत सरकार व बैंक अधिक से अधिक सेवासुविधा उपलब्ध कराने व

अपने कर्मचारियों की कार्यक्षमता व उत्पादकता में वृद्धि करने की बजाय केवल अमीर व धनाढ्य वर्गों का ही हित पोषण कर रहे हैं.

आज बड़े शहरों में शायद ही ऐसा कोई बैंक हो जो 5,000 रुपए या 10,000 रुपए से स्थायी जमा खाता खोलने को तैयार हो. उन्हें अब इस खाते में कम से कम 50,000 रुपए की रकम चाहिए. अब बढ़ती हुई महंगाई के युग में यदि आम आदमी अपने सुरक्षित भविष्य के लिए छोटी राशि बैंक के जमा खातों में जमा कराना चाहे तो उस के लिए बैंक प्रोत्साहन नहीं देगा.

इसी प्रकार से रिजर्व बैंक में बचत दर में निरंतर गिरावट को जानते हुए भी पिछले 3 वर्षों से बारबार हर 4 माह में जमा खातों व ऋण पर ब्याज दरों में परिवर्तन कर रहा है. यह दीर्घकालीन बचत में वृद्धि करने व मध्यमवर्गीय व गरीब वर्ग से हैं जिन का इस महंगाई के जमाने में जीवन निर्वाह करना भी कठिन हो रहा है. ऊपर से इस प्रकार की शर्त से उन के कष्ट में वृद्धि ही होगी. साथ ही ऐसे ग्रामीण, जरूरतमंद लोग, छात्र पेंशनभोगी आदि अन्य व्यक्ति जिन्हें अब तक जीवन बीमा की विभिन्न योजनाओं के तहत निश्चित अवधि के बाद रकम की वापसी ब्याज, लाभांश, पेंशन, मुआवजा या छात्रवृत्ति की सुविधाएं रेखांकित चेक से आसानी से सुलभ हो रही थीं, अब उन की एक बड़ी राशि तो केवल खाता खोलने व रखने में ही अटक जाएगी.

बैंकों का तर्क

इस संबंध में बैंकों का तर्क है कि न्यूनतम शेष राशि में वृद्धि करना इस बढ़ती हुई महंगाई, बैंकों की परिचालन लागत में

यों तो सरकार आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में बैंक सेवाओं में सुधार के प्रयास कर रही है लेकिन इस के लिए जो कदम उठाए गए हैं उन से सेवासुविधा में सुधार तो नहीं हुआ, हां, आम आदमी की परेशानी अवश्य बढ़ गई है. क्या भारत जैसे गरीब देश के लिए ये परिवर्तन ठीक हैं?

मुद्रा बाजार के स्वस्थ विस्तार व स्थायित्व की दृष्टि से उचित नहीं है. अभी हाल ही में रिजर्व बैंक ने वाणिज्यिक बैंकों को 2 वर्ष से अधिक की जमा राशियों पर ब्याज की दरों के निर्धारण की जो स्वतंत्रता दी है उस से बैंकों में आपस में अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा प्रारंभ होगी, बैंकिंग क्षेत्र का असंतुलित विकास होगा और अंतरबैंक हस्तांतरण जैसी गलत परंपराएं प्रारंभ होंगी.

रिजर्व बैंक ने अभी हाल ही में खातों में न्यूनतम राशि शेष रखने की अनिवार्यता के संबंध में भी बैंकों को जो स्वायत्तता दी है उस से लगभग सभी बैंकों ने बचत खातों में 500 रुपए या 1,000 रुपए या अधिक न्यूनतम जमा शेष सदैव रखने की शर्त लागू कर दी है. बैंकों के अधिकांश ग्राहक

हो रही वृद्धि, बेनामी खातों पर रोक व बैंक सेवा के दुरुपयोग के कारण आवश्यक व सामयिक है. इसी तथ्य का वित्त मंत्री भी समर्थन करते हैं. उन के अनुसार, हमें 'मुफ्त की मलाई' खाने की आदत छोड़नी होगी. तब तो फिर सरकार को पोस्टकार्ड, केरोसीन, डीजल, बिजली, राशन सामग्री और इसी प्रकार की अन्य सामाजिक सेवाओं के शुल्क में भी तुरंत वृद्धि करनी चाहिए क्योंकि ये सेवाएं भी अभी तक अनुदान से ही चलती हैं. सरकारी नीतियों की विसंगति का इस से अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है कि सरकार एक ओर तो मुफ्त भोजन, वृद्धों को पेंशन, महिलाओं को सहायता जैसी सामाजिक व कल्याणकारी योजनाएं आरंभ कर रही है और दूसरी ओर बैंक जो कि आज हमा



रिजर्व बैंक ने न्यूनतम शेष रखने की अनिवार्यता के संबंध में बैंकों को स्वायत्तता दे कर अधिकांश ग्राहकों को परेशानी में डाल दिया है.

सामाजिक जीवन के अनिवार्य अंग बन चुके हैं की सुविधाओं से आम आदमी को वंचित करने का कुत्सित प्रयास कर रही है.

विकल्प

बैंकों को उपर्युक्त कमजोर तर्क का सहारा लेने के स्थान पर अन्य उपलब्ध विकल्पों की पेशकश करनी चाहिए जैसे, प्रथम तो न्यूनतम शेष राशि 100 रुपए या चेक बुक की स्थिति में 200 रुपए से अधिक नहीं रखनी चाहिए. फिर भी यदि उक्त राशि से अधिक राशि रखना अनिवार्य ही हो तो उसे ग्राहक को यह सुविधा देनी चाहिए कि जिन बचत खातों में एक छमाही में निरंतर न्यूनतम राशि जमा रहेगी उसे उस अवधि के लिए स्थायी जमा खाते का ब्याज दिया जाएगा.

इस के अतिरिक्त यदि किसी ग्राहक के खाते में न्यूनतम शेष राशि नियमानुसार निर्धारित राशि से कम हो जाती है तो बजाय इस के कि उस पर 50 रुपए का दंड लगाया जाए, उसे यह विकल्प देना चाहिए कि यदि निर्धारित राशि से कम राशि खाते में हो जाएगी तो उसे उस छमाही का कोई ब्याज नहीं दिया जाएगा. इस से न केवल बैंकों को अनावश्यक ब्याज की गणना के भय से मुक्ति मिलेगी बल्कि बैंकों की परिचालन लागत में भी कमी आएगी. इसी प्रकार ग्राहक को किसी भी एक वर्ष में प्रथम 10 चेकों की बुक की सुविधा 10 रुपए मूल्य पर और अतिरिक्त 10 चेक की बुक 20 रुपए मूल्य पर मिलनी चाहिए.

भारत जैसे लोकतांत्रिक व ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले देश में जहां अधिकांश जनसंख्या को अभी तक अपनी रोजीरोटी की ही सुध नहीं है उस पर ऐसी शर्तें थोपने की गलती सरकार को नहीं करनी चाहिए अन्यथा कुछ वर्ष पूर्व जिस प्रकार सरकार ने बैंक जमा राशियों पर ब्याज में से स्त्रोत पर आय कर काटने की शर्तें लगा कर गलती की और फिर उस ने स्त्रोत पर आय कर काटने की सीमा बढ़ा कर 10,000/- रुपए कर अपनी गलती सुधारी है, उसी तरह के गलत प्रयोग व गलत निर्णय को सुधारने का एक और प्रयास करना पड़ेगा. ●

कुएं से बचे तो खाई में

कहानी • शक्ति पैन्यूली

रामशरण जैसे ही घर से बाहर निकला, उधर से आता चंदू उसे दिखाई दे गया. तेजी से रामशरण उस के पास पहुंच गया.

रात को जब रामशरण बहुत परेशान था तो पत्नी ने उसे एक अच्छी सी सलाह दे दी थी, "देखो जी, जब सीधी उंगली से घी नहीं निकलता तो कोई दूसरा उपाय हर कोई ही करता है. आप मेवालालजी से क्यों नहीं मिलते. सुना है वह लोगों के काम चुटकी बजाते ही करवा देते हैं."

रामशरण को बात जंच गई थी. मेवालाल



तेजतर्रार नेता के रूप में जाने जाते थे. पिछली बार नगरपालिका के चुनाव में खड़े हुए थे, मगर जीत न पाए थे. उस के बाद तो वह और भी उग्र हो गए थे. उन्होंने घोषणा कर दी थी कि भले ही वह हार गए हैं, मगर भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना संघर्ष अंतिम सांस तक जारी रखेंगे. लोग उन्हें धीरेधीरे एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जानने लगे थे.

रामशरण सोच रहा था कि मेवालालजी की सिफारिश से उस का काम बन सकता है. मगर उन से कैसे मिला जाए, यह समझ में नहीं आ रहा था. काफी सोचने के बाद अचानक उसे पड़ोस में रहने वाले चंदू की याद आ गई.

चंदू मेवालाल का खास आदमी समझा जाता था. चुनाव के दौरान उन का प्रचार सब से ज्यादा गला फाड़फाड़ कर उसी ने किया था. बाद में गला बैठ जाने के कारण लगभग 1 महीने तक इशारों में ही बातें करता दिखाई दिया था.

चंदू से मिल कर मेवालाल तक पहुंचा जा सकता है, यही सोच कर रामशरण सुबहसुबह घर से बाहर निकला था और निकलते ही चंदू उसे दिखाई दे गया था.

"चंदू भैया, नमस्कार. मैं तो तुम्हारे पास ही आ रहा था."

"अरे, ठेकेदारजी आप...कहिए, क्या सेवा कर सकता हूं मैं?" चंदू किसी घिसे हुए नेता की तरह हाथ जोड़ कर बोला.

"भैया, जरा मेवालालजी से मिलना है. पिछले दिनों मेरी

अक्ल मारी गई थी और एक सरकारी दफ्तर के भवन की मरम्मत का ठेका ले लिया था. काम पूरा हुए महीने से भी ऊपर हो चुका है, मगर दफ्तर वाले पैसा चुकाने का नाम ही नहीं ले रहे हैं. जेब के पूरे 30 हजार फंस गए हैं. वे लोग तरहतरह के बहाने बना कर मुझे टाल देते हैं. सच्ची बात तो यह है कि बिना कुछ लिए वे भुगतान करने को तैयार ही नहीं हैं. अब अपना ही पैसा वसूल करने के लिए मैं उन्हें रिश्वत दूं, यह कहां का इंसाफ है?"

"इंसाफ क्या, यह तो सरासर धांधलेबाजी है," चंदू ने आंखें सिकोड़ीं.



"देखो जी, जब सीधी उंगली से घी नहीं निकलता तो कोई दूसरा उपाय हर कोई करता ही है," पत्नी की यह बात रामशरण को जंच गई.

"सोच रहा था, अपना दुखड़ा किस के सामने रोऊं, तभी मेवालालजी का ध्यान आ गया. वह सिफारिश कर दें तो शायद इस गरीब का भला हो जाए," रामशरण बोला.

"बिलकुल ठीक सोचा, ठेकेदारजी," चंदू ने कहा और रामशरण के साथ मेवालालजी के यहां चलने को तैयार हो गया.

मुख्य सड़क पर आते ही चंदू थोड़ा रुक सा गया और बोला, "पैदल जाने में तो बहुत देर लग जाएगी, आटोरिकशा कर लेते हैं," रामशरण की ओर से किसी जवाब की प्रतीक्षा किए बिना उस ने तुरंत हाथ दे कर एक तिपहिए को रोक दिया और लपक कर उस में सवार हो गया.

रामशरण को भी उस का अनुसरण करना पड़ा. चंदू के निर्देश पर तिपहिया तेजी से एक ओर को चल पड़ा.

काफी समय तक वे दोनों चुपचाप ही बैठे रहे. अचानक एक स्थान पर चंदू चौंक पड़ा और माथे पर हाथ मार कर बोला, "मैं भी कितना भुलक्कड़ हूं. कल मेवालालजी की धर्मपत्नी ने मुझे गैस के 2 सिलेंडर लाने के लिए कहा था, और मैं खाली हाथ जा रहा हूं. अरे भैया, जरा आटो गैस एजेंसी की तरफ ले लेना..." उसने आटो वाले को आदेश दिया और फिर रामशरण से बोला, "अब आटो कर लिया है तो इस काम को भी निबटाते चलते हैं."

गैस एजेंसी शहर के एक कोने में थी. वहां तक जातेजाते आधा घंटा लग गया.

चंदू अंदर गया फिर शीघ्र ही वापस आ कर उस ने 2 सिलेंडर आटोरिकशा में लदवा दिए.

"चिंता मत करना, खाली सिलेंडर अभी थोड़ी देर बाद भिजवा दूंगा," उस ने पता नहीं किस से कहा और फिर आटो वाले को चलने का आदेश दे दिया.

अभी आटो लगभग 10 मिनट तक ही चला था कि चंदू एक बार फिर से चौंक कर

उछल सा गया, और विचित्र ढंग से रामशरण को घूरने लगा.

रामशरण की समझ में कुछ न आया तो वह भी उसे ताकने लगा.

"ठेकेदारजी, इतने बड़े आदमी से मिलने जा रहे हो, और वह भी अपने काम से... खाली हाथ जाना अच्छा लगता है क्या? हमारे मेवालालजी को मावे की मिठाइयां बहुत पसंद हैं. कम से कम 1 किलो का डब्बा तो रख ही लीजिए."

फिर उस ने एक मिठाई की दुकान के सामने आटो को रुकवा भी दिया. रामशरण को नीचे उतर कर मिठाई का डब्बा लाना ही पड़ा. तब कहीं जा कर वह मेवालालजी के घर पहुंच पाए. यह अलग बात थी कि वहां पहुंचने में पैदल जाने से भी अधिक समय लग चुका था.

मेवालालजी ने रामशरण की ओर देखा.

उसी समय चंदू ने रामशरण को इशा किया तो वह तुरंत ही अपनी रामकहानी कर शुरू हो गयाः

पिछले दिनों एक सरकारी भवन व मरम्मत का ठेका उस ने लिया था. पूरे 3 हजार रुपए खर्च कर के टेंडर की शर्तों अनुसार काम भी पूरा कर दिया था. मगर ज दफ्तर से भुगतान लेने की बारी आई त अचानक वे लोग उदासीन से हो गए.

खर्चे का सारा ब्योरा उस ने बिल रूप में संबंधित बाबू की मेज पर रख दिय बाबू ने कसैला सा मुंह बना कर न केवल पा की पीक बल्कि सारा पान ही नीचे रख टोकरी में थूक दिया और बोला, 'तुम्हारे बि बनाने से क्या होता है. भाई काम का मुआय तो हम करेंगे, फिर उसी आधार पर बि बनेगा. तुम अगर 3 लाख का बिल बना दो

रामशरण परेशान थे कि रिश्वत दिए बिना उन का बिल पास नहीं हो रहा था. परंतु वह रिश्वत नहीं देने पर अड़े थे और इस के लिए उन्होंने मेवालालजी की सेवाएं ले लीं. लेकिन उन सेवाओं की जो कीमत उन को चुकानी पड़ी उस में उन की हालत कुएं से निकले खाई में गिरे वाली हो गई...

चंदू सब से पहले गैस सिलेंडर अंदर पहुंचाने के महत्त्वपूर्ण काम में जुट गया. बाद में वह आया और रामशरण को अपने साथ अंदर ले जाने लगा, तो आटो वाला आगे बढ़ कर जाने की आज्ञा मांगने लगा.

"तुम अभी यहीं ठहरो. हो सकता है मेवालालजी इन के साथ चलने के लिए तैयार हो जाएं. वह पैदल तो नहीं जाएंगे न..."

रामशरण चंदू के साथ बैठकनुमा कमरे में पहुंच गया. वहीं पर कुछ लोगों से घिरे हुए गोलमटोल से मेवालालजी बैठे हुए थे. उस समय देश की राजनीति पर गंभीर चर्चा चल रही थी. रामशरण नमस्कार कर के चुपचाप एक ओर बैठ गया.

चर्चा काफी देर बाद बिना किसी परिणाम के एक किनारे पर पहुंची. तब

तो हम मान थोड़े ही जाएंगे.'

'तो फिर मुआयना जल्दी करवा दीजिए उस ने विनती की.

'वह हम अपने हिसाब से खुद कर लेंगे. सरकारी काम है, हवा में नहीं हो जात कई तरह की खानापूरी करनी पड़ती है.'

बाबू ने लापरवाही के साथ कह दि था. अब रामशरण के पास इंतजार करने अलावा कोई चारा नहीं रह गया था.

इस इंतजार के 15-20 दिन बीत ज के बाद भी जब परिणाम ढाक के तीन प से आगे नहीं बढ़ पाया तो रामशरण को बेचै सी होने लगी. बेचैनी इसलिए कि उस भुगतान तो रुका पड़ा था, मगर उस के ब आने वाले 2-3 ठेकेदारों को विभाग वालों तत्परता से भुगतान कर दिया था.



रामशरण मिठाई का डब्बा और चंदू गैस सिलेंडर घर के अंदर पहुंचाने के महत्त्वपूर्ण काम में जुट गया.

रुपए बाबू के मुंह पर मारने की सलाह दे कर चला गया.

रामशरण सोचने लगा, आखिर ये लोग किस बात के पैसे मांगते हैं? अपना ही पैसा लेने के लिए वह भला रिश्वत क्यों दे?

सीधी और सच्ची बात करने के लिए वह सीधा बाबू के सामने पहुंच गया. बाबू ने जब सरकारी कामों का हवाला दे कर उसे टालना चाहा तो वह सिरे से ही बिफर गया. रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के न जाने क्याक्या आरोप बाबू पर लगाने लगा. मगर बाबू जरा भी विचलित न हुआ.

'अगर रिश्वतखोरी का मामला नहीं है, तो और लोगों को भुगतान कैसे हो रहा है?' वह बाबू से पूछने लगा.

'अरे भाई, जिस ठेकेदार को भुगतान हुआ है, उस ने बड़े साहब के स्नानघर की मरम्मत की थी. तुम ने तो केवल सरकारी भवन को ठीक किया है, फिर भी हम कोशिश कर रहे हैं कि अगले हफ्ते तक तुम्हारा काम हो ही जाए.'

बाबू ने कहा तो रामशरण का पारा थोड़ा सा कम हो गया. अगले एक हफ्ते तक वह रोज आ कर बाबू को अपने काम की याद दिलाता रहा. इस बार बाबू ने झूठ नहीं बोला था और सचमुच ही रामशरण का काम कर दिखाया था. मगर उस काम को देख कर रामशरण ने तो अपना सिर ही पीट लिया.

मुआयना करने वाले ने उस के काम की कीमत केवल 8 हजार रुपए लगाई थी और

इस संबंध में एक ठेकेदार से उस की बातचीत हुई तो वह उसे ऐसे देखने लगा, जैसे उस से बड़ा मूर्ख उस ने दुनिया में कोई और देखा ही न हो.

'पहली बार ठेका लिया है क्या?' ठेकेदार ने उस से पूछा.

'हां, सरकारी ठेका तो पहली बार ही लिया है. इस से पहले प्राइवेट ठेके ही लेता था. वहां तो कोई समस्या नहीं होती थी. इधर काम खत्म हुआ, उधर पैसा हाथ में आ जाता था, मगर यहां तो...,' रामशरण बोला.

'भैया, यह सरकारी दफ्तर है. जब तक सब की पूजा नहीं करोगे, किसी की भी आंख नहीं खुलेगी.'

'कैसी पूजा भाई?'

ठेकेदार ने उसे संक्षेप में समझा दिया था तो रामशरण को मन ही मन क्रोध सा आने लगा था. 5 सौ रुपए बड़े साहब के हस्ताक्षर की कीमत, 4 सौ रुपए मुआयना करने वाले की रिपोर्ट की कीमत, 2 सौ रुपए बाबू द्वारा बिल बनाने के और 3 सौ रुपए लेखापाल द्वारा बिल को आगे सरकाने के तथा 1 सौ रुपए चपरासियों का मुंह बंद रखने की कीमत. सारा हिसाब लगा कर ठेकेदार उसे 15 सौ



खूब रही

कल की मुलाकात भी खूब रही
कुछ मैंने कही कुछ तुम ने कही,
घंटों हम ने चुप्पी साध रखी थी
नजरों से जो हो गई थी कहाकही.

–केशव कूल

बाबू ने इतने का ही बिल उस के हाथ में पकड़ा दिया था.

'तुम्हारा बिल बन गया है, मगर भुगतान का चेक हम तुम्हें अगले महीने ही दे पाएंगे. अभी तो हमारे पास बजट ही नहीं है,' बाबू कुटिल मुसकराहट के साथ बोला.

'अरे, केवल 8 हजार रुपए...यह क्या धांधलेबाजी है? मैं ने तो पूरे 30 हजार रुपए खर्च किए हैं. रिश्वत नहीं दी तो उस का बदला यहां उतारा है तुम लोगों ने...मगर मैं चुप नहीं बैठूंगा, ऊपर तक इस की शिकायत कर के रहूंगा.'

रामशरण बाबू को धमकी दे कर घर लौट आया था और दूसरी सुबह ही शिकायत ले कर मेवालाल के पास आ गया था.

मेवालाल ने उस की सारी बात सुनी तो गंभीर से हो गए, "इसी भ्रष्टाचार ने तो हमारे देश को खोखला कर रखा है. आम आदमी का तो जीना ही मुशकिल हो गया है. उस दफ्तर के बड़े साहब को मैं जानता हूं, बड़ा ही खाऊ किस्म का आदमी है. मगर आप चिंता न कीजिए, हम आप के लिए कुछ न कुछ अवश्य ही करेंगे."

मेवालाल के आश्वासन पर रामशर को थोड़ी शांति सी मिल गई. मेवालाल बोल "आज तो हमारे पास समय नहीं है. आप क शाम को आ जाइए. बड़े साहब के घर पर कर ही उन से बात कर लेंगे. वैसे तो सी दफ्तर में जा कर भी डांटडपट की जा सक है, मगर इस से वे लोग नाराज हो कर दूस परेशानियां पैदा कर सकते हैं."

मेवालाल ने पुनः कहा तो रामशरण गरदन हिला दी. दूसरे दिन आने के लिए क कर वह नमस्कार कर के बाहर निकलना चाह रहा था कि चंदू बीच में बोल पड़ "भाईजी, गैस के खाली सिलेंडर गोदाम भिजवाने थे. रामशरणजी का आटो बाहर ख है. आप कहें तो इन के हाथ ही भिजवा दूं

"हांहां, क्यों नहीं, अगर इन्हें कोई क न हो तो..."

रामशरण को कोई कष्ट होता या होता, मगर मना करने की स्थिति में तो बिलकुल भी नहीं था. खाली गैस के सिलेंड ले कर उसे गैस एजेंसी होते हुए ही घर लौट पड़ा.

दूसरे दिन शाम को वह फिर से एक मित का डब्बा हाथ में लिए मेवालाल के घर पह गया. वह उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुए. कु देर इधरउधर की बातें करने के बाद रामशरण के धंधे की तारीफ करने लगे. फि बोले, "मकान के पिछली तरफ वाला छज टूट गया है. कई दिनों से ठीक करवाने सोच रहे थे. मगर कोई भरोसे का आदमी दिखाई नहीं दे रहा था. अब आप तो अपने आदमी हैं, 2 बोरी सीमेंट लगवा कर काम कर देते तो चिंता दूर हो जाती."

"ठीक है साहब, मैं कल अपना आद भेज दूंगा."

रामशरण को कहना पड़ा. उस के मेवालाल उस के साथ चल पड़े. साथ में भी था. रामशरण को फिर से आटो करना प

"भाईजी, बड़े साहब से मिलने जा रहे क्या खाली जाना ठीक रहेगा," रास्ते में चंदू बो

"नहीं, यह तो ठीक नहीं होगा. तुम ने ख़ूब याद दिलाया. साहब तो शौकीन तबीयत के आदमी हैं. एक अच्छी सी व्हिस्की की बोतल साथ में रख लेते हैं. वह किसी काम को मना करने लायक रह ही नहीं जाएंगे," मेवालाल ने रामशरण की ओर देख कर हंसते हुए कहा.

3 सौ रुपए की बोतल रामशरण को ही ख़रीदनी पड़ी.

साहब घर पर ही मिल गए. मेवालाल को देख कर उन्होंने गर्मजोशी से उन का स्वागत किया.

कुछ समय बाद व्हिस्की का दौर शुरू हो गया. रामशरण ने तो हाथ जोड़ कर मना कर दिया, मगर साहब और मेवालाल के साथसाथ चंदू भी उस दौर में शामिल हुआ. उसी दौरान मेवालाल ने अपने आने का प्रयोजन भी साहब को बता दिया.

"अरे, बस इतनी सी बात. मैं कल ही देखता हूं. सारा काम ठीक करवा कर परसों तुम्हें पूरे 30 हजार का भुगतान हो जाएगा," साहब ने कहा.

"ठीक है, फिर हम परसों आप के दफ्तर में हाजिर हो जाएंगे," मेवालाल ने कहा और फिर शेष समय इधरउधर की बेसिरपैर की बातों में ही बीता. वहां से घर लौटना देर रात को ही संभव हो सका.

रामशरण का अगला पूरा दिन मेवालाल के मकान के छज्जे की मरम्मत में ही बीता.

तीसरे दिन वे दफ्तर पहुंचे तो बाबू सचमुच ही रामशरण का काम करने में जुटा हुआ था. उस को देख कर वह उसे केवल घूर कर रह गया.

दोपहर के 12 बजने तक पूरे 30 हजार रुपयों का भुगतान आखिर रामशरण को मिल ही गया.

साहब को धन्यवाद कह कर जब वे वहां से लौटे तो रास्ते में चंदू को कुछ बेचैनी सी होने लगी. मौका पा कर वह रामशरण के पास चला आया और उस के कान में बोला, "आप भी अजीब आदमी हैं भाईजी, आप के चक्कर में सुबह से भूखेप्यासे घूम रहे हैं, और आप चुप बैठे हैं. अब भुगतान हो गया है, कम से कम उन्हें खाना तो खिला ही दो."

बेचारा रामशरण, उस से न कहते ही नहीं बन पड़ा. एक अच्छे से होटल में 3 सौ रुपए की चपत उसे झेलनी ही पड़ी.

बाद में घर पहुंचा तो बिना रिश्वत दिए भुगतान लेने की खुशी उस के चेहरे से गायब हो गई थी.

डायरी ले कर हिसाब करने बैठा तो सारी चीजें याद आने लगीं. गैस सिलेंडर पहुंचाने के चक्कर में 1 सौ रुपए, 140 रुपयों की मिठाई, 50 रुपए साहब के घर तक आटो में जाने के, 3 सौ की व्हिस्की की बोतल, 3 सौ का होटल का खाना और 1 हजार रुपए के लगभग छज्जे की मरम्मत में, कुल 1,890 रुपए का चूना लग गया था.

15 सौ बचाने के चक्कर में 390 ज्यादा ही चले गए थे, और मेवालाल के साथसाथ चंदू का एहसान भी सिर पर लद गया था. रामशरण सिर पकड़ कर बैठ गया. कुएं से बच कर खाई में गिरने वाली कहावत तो उस ने सुनी थी, मगर उस का अनुभव उसे पहली बार हो रहा था. ●

अमेरिका में स्वस्थ रहना सब से महंगा

अमेरिका में स्वास्थ्य से संबंधित तंत्र सब से महंगा है. अतः अमेरिका व दूसरे देशों में स्वास्थ्य पर किए जाने वाले खर्चों का अंतर बहुत तेजी से बढ़ रहा है. पेरिस के आर्थिक सहयोग व विकास संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार 1992 में अमेरिका के प्रत्येक व्यक्ति ने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए करीब 3,094 डालर (एक लाख रुपए) खर्च किए. अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का 13.6 प्रतिशत स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं पर खर्च किया गया.

कनाडा में यह प्रतिशत 10.3 तथा प्रति व्यक्ति खर्च 1,949 डालर था. स्विटजरलैंड, जरमनी, फ्रांस, फिनलैंड, इटली, ब्रिटेन और जापान में स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति क्रमशः 2,068, 1,775, 1,745, 1,363, 1,497, 1,151 और 1,376 डालर सालाना खर्च किया गया.

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर 'केन्या' की नंदी पहाड़ियां

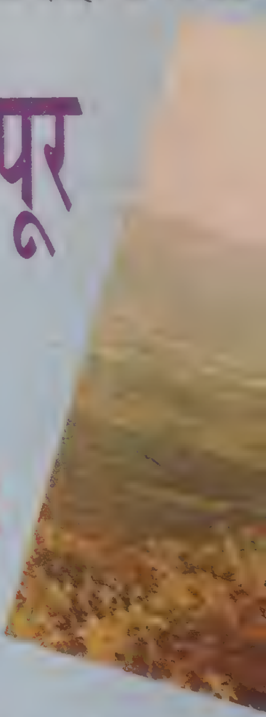
लेख ● राजीव अरोड़ा

एक लंबे समय से केन्या में रहने के बावजूद मुझे प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत नंदी पहाड़ियां देखने का अवसर नहीं मिला था. ये पहाड़ियां अपने अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य तथा चाय बागानों के लिए पूर्वी अफ्रीका में विख्यात हैं.

पिछले दिनों अपने व्यापार के सिलसिले में मुझे वहां जाने का अवसर प्राप्त हुआ. मैं उन गिनेचुने भारतीय मूल के व्यक्तियों में था जो व्यापार के सिलसिले में वहां गए. नंदी पहाड़ियां नकुरू नगर से लगभग 170 किलोमीटर दूर हैं. इन की ऊंचाई 10 हजार फुट है. हम नकुरू कार से रवाना हुए, लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद लोंडियानी नामक स्थान आया. वहां से आधे घंटे की यात्रा के बाद टिंबरवा पहुंचे, जहां से भूमध्यरेखा गुजरती है.

टिंबरवा के बाद नंदी की पहाड़ियां प्रारंभ हो गईं. यहां से सघन वन, ऊंचीऊंची पहाड़ियां तथा चाय बागान दिखाई देने लगे. चाय के बागों में काम करने वाली महिलाओं ने बरबस ही मुझे दार्जिलिंग की याद दिला दी जहां मैं बरसों पहले गया था. स्थानस्थान पर चाय बागानों में झोंपड़ीनुमा विश्रामस्थल बने हुए हैं जहां यात्री तेज वर्षा होने पर अ बचाव कर सकते हैं. हलकीहलकी वर्षा यहां दिनभर होती रहती है.

आगे एक घंटे की यात्रा के बाद एक छोटे से कसबे में पहुंचे. इसे 'नंदी हि टाऊन' कहते हैं. मैं सोच रहा था कि न वहां के लोग हम से कैसा व्यवहार क क्योंकि भारतीय मूल के लोग व्यापार के यहां नहीं जाते. लेकिन वहां के निवासिय मिलने पर हमें ऐसा लगा मानो हम अपने में ही हों. हमारा हार्दिक स्वागत किया के लोगों ने. तब तक दोपहर के 12 बज थे. वहां के लोगों ने जो कि नंदी जाति हैं, हमारे सम्मान में भोज का आयोजन कि वे कहने लगे कि उन के रीतिरिवाजो अनुसार प्रथम कार्य मेहमानों का आदरस करना है. इसीलिए भोजन के बाद ही काम शुरू होना चाहिए.



समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में पढ़ कि नंदी जाति के लोग कठोर स्वभाव होते हैं. लेकिन हम ने उन्हें ठीक इस विपरीत पाया. वहां के भोलेभाले बच्चे से उन का चित्र लेने का आग्रह करने हम ने उन के आग्रह को सहर्ष स्वीकार कि हम जो वस्तुएं वहां बेचने के लिए ले थे, वे देखते ही देखते बिक गईं.



प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत नंदी पहाड़ियां चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध हैं : चाय बागानों में बने झोंपड़ीनुमा विश्रामस्थल (ऊपर), नंदी पहाड़ियों से दिखती दृश्यावली (बाएं) तथा बागानों में काम करती युवती (नीचे).





केन्या में नंदी पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है. चाय बागान और बहते झरने इन पहाड़ियों को और भी खूबसूरती प्रदान करते हैं, खूबसूरती भी ऐसी जो एक बार देख कर भुलाई न जा सके. आइए, इस का कुछ आनंद हम भी उठा लें.

नंदी पहाड़ियों में एक बड़ा जलप्रपात है जो सघन वन से घिरा है. हम वहां भ्रमण करने गए तो कुछ भारतीय एक फिल्म की शूटिंग में व्यस्त नजर आए. पूछने पर पता चला कि 'टाइगर' नामक एक हिंदी फिल्म की शूटिंग हो रही है. एक कैनेडियन नवयुवक मिस्टर लैंस इस में टार्जन का अभिनय कर रहा था. इस फिल्म को टौनी नामक एक सिख सज्जन बना रहे थे जिन्होंने बरसों पहले 'मिस्टर नटवरलाल' फिल्म का निर्माण किया था. दिप्सी नागपाल नामक एक लड़की इस में पहली बार नायिका का अभिनय कर रही थी. इन सब से मिल कर बहुत आनंद आया. कुछ चित्र भी लिए.

यहां से हम चाय के विभिन्न बागानों में भ्रमण के लिए गए. चाय की पत्तियां तोड़ने वाली एक महिला ने जब मेरा नाम पूछा तो मेरा नाम सुन कर वह खुशी से उछल प
क्योंकि उन के विचार से राजीव नाम
व्यक्ति राजीव गांधी से संबंधित होते
यहां चाय के कारखानों में चित्र लेने
अनुमति नहीं है. यहां की चाय अनेक यूरोप
तथा अफ्रीकी देशों को निर्यात की ज
है. लगभग 20 चाय कंपनियां यहां सक्रि
हैं.

यहां की पुलिस लोगों की पूरी देखभ
करती है. लोगों में पुलिस के प्रति अपने
की भावना है. नंदी हिल्ज के थानाध्यक्ष
लंगट ने मुझे यह बताया.

चाय बागानों के बाद हम यहां
स्वच्छ पानी की झील देखने गए जहां
प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है.

कलकल करते झरने नंदी पहाड़ियों की घटा को और भी आकर्षक बना देते हैं.



नंदी जाति के लोग बहुविवाह में
श्वास करते हैं. अधिकतर लोग ईसाई धर्म
ो मानते हैं तथा कुछ अपने पुराने धर्म को.
न में पुरुषों तथा महिलाओं दोनों की सुन्नत
ती है. बिना विवाह के जिन स्त्रियों के बच्चे
ते हैं उन्हें भी समाज में पूरा सम्मान मिलता
. ऐसी ही एक स्त्री जो अपनी दुकान चलाती
ी, बताने लगी कि बेशक हमें समाज में
मान स्थान मिला हुआ है लेकिन हमारे बच्चे



जाति के भोलेभाले मासूम बच्चे सरकारी ालयों में शिक्षा शुल्क की अधिकता के ण प्रायः शिक्षा से वंचित ही रह जाते हैं

ा की कमी महसूस करते हैं.

नंदी पहाड़ियों का जलवायु काफी ठंडा
ो कि चाय की खेती के अनुकूल है. एक
आश्चर्यजनक लगी कि यहां हिरन तथा
ेमोटे अन्य जीवों के अलावा जंगली
वर कतई नहीं हैं. यहां शिक्षा का कुछ
ाव है. उस का प्रमुख कारण यह है कि
सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का शुल्क काफी अधिक है. जो लोग यहां धनी हैं अपने बच्चों को पढ़ने के लिए छात्रावास की सुविधाओं वाले विद्यालयों में भेजते हैं.

भारतीय मूल के लोगों के प्रति इन के मन में विशेष प्रेम है. इस का पता मुझे यहां की कई दुकानों में महात्मा गांधी का चित्र देख कर चला. यहां के (दिवं.) राष्ट्रपति जोमो केन्याटा महात्मा गांधी का बहुत आदर करते थे.

सांझ हो चली थी. ढलता हुआ सूरज अपनी लालिमा से वनों तथा चाय बागानों से लदी पहाड़ियों की सुंदरता में चारचांद लगा रहा था. चलते समय हमारी आंखों में खुशी के आंसू थे, उन लोगों के अथाह प्रेम तथा सहयोग के कारण जो उन्होंने हमें इस अल्प अवधि में दिया था. नंदी पहाड़ियां प्राकृतिक सौंदर्य का अनोखा चमत्कार हैं. जो व्यक्ति एक बार वहां चला जाए, इन पहाड़ियों को आजीवन भूल नहीं सकता. ●

आईना

सरिता, बीस साल पहले, जुलाई (प्रथम) 1976

कहानी • अरनी राबर्ट्स

सांझ का झुटपुट फैल चुका था. फादर लियो विलसन ने संध्याकालीन प्रार्थना के लिए गिरजे की ओर प्रस्थान किया. गिरजे की घंटी बज चुकी थी. नन कैरोलाइन गिरजाघर में पियानो बजा रही थी. ननें अपने निवास से निकल कर गिरजे की ओर बढ़ रही थीं. वे सामूहिक रूप से हिम (धार्मिक गीत) गाती हुई आ रही थीं. सफेद जगमगाते हुए चोगों से ढके उन के शरीर बड़े आकर्षक लग रहे थे. सेंट पाल स्कूल के छात्र भी नीली निकरें और सफेद कमीजें तथा लाल टाइयां पहने गिरजे में प्रवेश कर रहे थे.

आज फ्राइडे की विशेष संध्याकालीन प्रार्थना थी. गंभीर और शांत व्यक्तित्व वाले फादर विलसन जैसे ही गिरजाघर के प्रवेशद्वार की सीढ़ियां चढ़ने लगे, उन की दृष्टि अचानक एंटोनी पर पड़ी. एंटोनी उन का भतीजा था और सेंट पाल स्कूल में अंगरेजी का अध्यापक था. फादर ने साफसाफ देखा कि एंटोनी की आड़ में नन फेरिया भी खड़ी है. फादर के कदम थम गए. उन की इच्छा हुई कि वह आगे बढ़ कर फेरिया और एंटोनी को डांट दें. एक नन को कोई अधिकार नहीं कि वह किसी युवक से प्यार करे. वह उसूलों के खिलाफ कैसे जा रही है? और उन के भतीजे को यह क्या हुआ है कि वह एक नन से प्रेम करने लगा है, यह जानते हुए भी कि यह बात धर्म के खिलाफ है.



कुछ सोच कर फादर विलसन ने उन दोनों के पास जाना उचित नहीं समझा. वह गिरजे के अंदर चले गए. गिरजे में एकदम खामोशी थी. ननें सिर झुकाए घुटनों के बल बैठी हुई प्रार्थना में लीन थीं.

फादर विलसन के व्याख्यान मंच पर आते ही सब लोग बैंचों पर बैठ गए. रिबैका ने मंच के नीचे की ओर कता रखी मोमबत्तियां जला दीं. गिरजे में खूब प्रकाश फैल गया. फादर ने हाथ जोड़ प्रार्थना की. फिर सामूहिक रूप से ध गीत गाए गए, इस के बाद फादर ने व्या दिया. पर इन सब कार्यक्रमों के बीच उ मस्तिष्क में रहरह कर नन फेरिया और ए के चेहरे घूमते रहे.

लगभग घंटे भर बाद आशीर्वाद के चन कह कर फादर ने संध्याकालीन प्रार्थना भा समाप्त कर दी. भारी कदमों से चल र वह अपने मकान पर गए. ड्राइंग रूम में टोनी बैठा हुआ था. उस ने उन्हें अभिवादन किया. सिर हिला कर वह सोफे पर बैठ गए और एंटोनी को कुछ कहने की भूमिका ांधने लगे. सहसा उन्होंने कहा, "तुम इस क्त शाम को कैसे आए हो?"

इस अप्रत्याशित प्रश्न को सुन कर टोनी चौंक उठा. संयत हो कर उस ने कहा, फेरिया से मिलने आया था."

उस की स्पष्टवादिता से क्षणभर को ादर हतप्रभ रह गए.

"एंटोनी, तुम्हें मालूम है, नन अपना ारा जीवन ईश्वर की सेवा में अर्पित कर ती है. फिर उस का सांसारिक जीवन और

"आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं और फेरिया एकदूसरे से प्रेम करते हैं. मैं उस से विवाह करना चाहता हूं."

फादर विलसन का मुंह क्रोध से तमतमा उठा, "क्या तुम्हें इतने बड़े बंबई शहर में फेरिया ही विवाह के लिए मिली? हमारे कैथोलिक समाज में एक से एक सुशील, सुंदर और योग्य लड़कियां हैं. फिर..."

एंटोनी ने बीच में ही उन की बात काट कर कहा, "ये सारे गुण तो फेरिया में भी हैं. वह बचपन से अनाथ है इसीलिए उसे नन बनना पड़ा."

"तो यह तुम्हारा आखिरी फैसला है कि तुम फेरिया से ही विवाह करोगे?"

"जी हां."

फादर विलसन ने अपने भतीजे की



ाज से कोई संबंध नहीं रह जाता."

"फादर, यही तो मेरी समझ में नहीं ता कि ऐसा क्यों है. ईश्वरीय सेवा का र्थ यह तो नहीं कि संसार और समाज से मोड़ लिया जाए. आखिर इस पलायन क्या जरूरत है?"

ओर देखा. उस की आंखों में आत्मविश्वास और दृढ़ता की चमक थी. वह जानते थे कि एंटोनी एक बहुत ही होनहार और अच्छे चरित्र का लड़का है. आखिर वह सोचने पर मजबूर हो गए.

सारी रात वह एंटोनी और फेरिया के

बारे में ही सोचते रहे. उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन एक नन को ले कर ऐसी परिस्थिति आ जाएगी. फेरिया अनाथ बालिका के रूप में सेंट सोफिया स्कूल में आई थी. सीनियर कैंब्रिज करने के बाद वह ननरी में रख ली गई थी. एक विशेष शपथ लेने के बाद वह नन बना दी गई थी.

फेरिया बहुत अच्छे स्वभाव की थी. अचानक एक दिन एंटोनी से उस की मुलाकात हुई और फिर दोनों एकदूसरे से प्रेम करने लगे. दूसरी ननों ने फेरिया को आगाह किया कि वह गलत मार्ग पर बढ़ रही है. पर फेरिया ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह एंटोनी से विवाह करेगी.

आखिर फादर विलसन के मस्तिष्क में एक योजना ने जन्म लिया. एकबारगी अपनी इस योजना को सोच कर वह अंदर ही अंदर

समस्या का हल निकाला है. मैं तुम्हें क
भेज देता हूं. तुम योग्य हो. वहां रहने
बंदोबस्त कर लेना. मैं तुम्हें अपने मित्रों
नाम कुछ पत्र दूंगा. वे तुम्हें कोई नौकरी
देंगे, फिर कुछ महीनों बाद मैं फेरिया
भी कनाडा भेज दूंगा. तुम लोग वहां वि
कर लेना."

एंटोनी आश्चर्य से फादर विलसन
बात सुन रहा था. उस ने पूछा, "मगर
और फेरिया के जाने पर हजारों का जो
होगा वह कहां से आएगा?"

रहस्यमयी मुसकान के साथ फ
विलसन ने कहा, "पैसा मैं दूंगा."

"आप? कहां से लाएंगे इतना रुपए

"धीरे बोलो, एंटोनी, तुम जानते
कि स्कूल का सारा बजट मेरे हाथ
गिरजे का हिसाब और इन संस्थाओं
मिलने वाला हजारों का दान मेरे पास

फादर लियो विलसन का भतीजा एंटोनी नन फेरिया से प्रेम कर था. लेकिन फादर को यह कतई मंजूर नहीं था कि उन की ननरी की कोई नन नियमों के विरुद्ध विवाह करे. इस लिए उन्होंने एंटोनी को बहुत समझाया परंतु जब वह टस से मस न हुआ तो उन्होंने एक खतरनाक निर्णय ले लिय

थर्रा गए. लेकिन उन्हें इस योजना पर कार्य करना ही होगा. वह अपने माथे पर यह कलंक नहीं लगने दे सकते कि उन की ननरी की एक नन ने नियमों के विरुद्ध विवाह कर लिया है. उन्होंने अपने कमरे में एंटोनी को बुला भेजा. वहां सेंट पाल स्कूल के प्रिंसिपल भी थे.

"आप ने मुझे याद किया?" एंटोनी ने अंदर आ कर कहा.

"हां बेटा, बैठो, मुझे तुम से एक जरूरी बात करनी है."

"कहिए."

फादर विलसन कुछ देर मेज पर रखे पेपरवेट को हाथ में ले कर उलटतेपुलटते रहे. फिर उन्होंने कहा, "एंटोनी, मैं ने तुम्हारी

है. अगर इस में से कुछ हजार काम
लिया तो क्या बुरा है?"

एंटोनी फादर विलसन की बात
कर स्तब्ध रह गया. फादर यह सब क्या
रहे हैं? उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि
सब कुछ उस के चाचा फादर विलस
कहा है. जब से उस ने होश संभाला
उस ने अपने चाचा को एक सुदृढ़ चरित्र
कर्मठ व्यक्ति के रूप में देखा था. दूरदूर
उन की महानता के चर्चे थे. गिरजे के
पदाधिकारी भी उन की बहुत इज्जत
थे. इस वजह से उन के कार्यकाल में
किसी प्रकार की कोई गड़बड़ नहीं हु
दुखियों की सेवा ही जिस के जीवन का
रहा हो, ऐसे आदर्श और महान व्यक्ति
मुंह से वह क्या सुन रहा है?



"ईश्वर तथा मानवता की सेवा तो विवाह कर के भी की जा सकती है," एंटोनी ने फेरिया से दृढ़ता के साथ कहा.

"आप इस काम के लिए संस्था का पैसा लेंगे?"

मुझे ऐसा करना ही होगा, एंटोनी. किसी को इस बात का पता भी नहीं चलेगा. मेरी ननरी की नन किसी से विवाह कर ले, मैं इस कलंक से तो बच जाऊंगा."

"क्या?" एंटोनी ने उत्तेजित हो कर कहा, "तो फिर मेरी बात भी सुन लीजिए, मैं कनाडा नहीं जाऊंगा. मुझे तो यह देश ही अच्छा लगता है. मैं यहीं रहूंगा. यहीं फेरिया से विवाह करूंगा."

"और मेरे माथे पर कलंक लगा दोगे?" फादर विलसन ने कहा.

"नहीं, चाचा. यकीन जानिए, आप के माथे पर इस से कलंक नहीं लगेगा. हम विवाह के पवित्र सूत्र में बंधना चाहते हैं, और यह कोई पाप नहीं है."

गंभीर स्वर में फादर बोले, "सुनो एंटोनी, अगर तुम मेरी इज्जत करते हो तो तुम्हें मेरी योजना पर काम करना होगा, तुम्हें कनाडा जाना होगा. मैं और कुछ सुनना नहीं चाहता. मैं कल ही तुम्हारे लिए हवाई जहाज का टिकट रिजर्व कराने जाऊंगा. 2-3 दिन बाद ही तुम्हें यहां से जाना होगा."

फेरिया जब 3 या 4 वर्ष की थी, तभी अनाथ हो गई थी. फेरिया के पिता रोजर्स बहुत ही ऐयाश और शराबी थे लेकिन फेरिया की मां ऐमी बहुत ही नेकदिल और आदर्श महिला थी. ऐमी अपने पति को सही राह पर चलने के लिए समझाती रही पर रोजर्स के दिमाग से ऐयाशी और शराब का भूत नहीं उतरा. वह रातरात भर दूसरी औरतों के साथ गुजारते और अंधाधुंध शराब पीते. ऐमी जब भी इस बात का विरोध करती, रोजर्स उसे लातघूंसों से बुरी तरह पीट डालते. फेरिया कोने में खड़ी चुपचाप आंसू बहाती हुई अपने क्रूर शराबी पिता और बेबस मां को देखती रहती.

एक दिन अचानक ही रोजर्स को दिल का दौरा पड़ा और वह फिर नहीं उठ सके. पति की मृत्यु से ऐमी को गहरा सदमा पहुंचा, वह भी सख्त बीमार पड़ गई. लगातार 3 महीने बीमारी से लड़ने के पश्चात वह भी मृत्यु की गोद में सो गई. अपनी मौत से पहले फेरिया को फादर लियो विलसन के हाथों में सौंपते हुए ऐमी ने कहा था, 'फादर, अब इस अनाथ बच्ची के सब कुछ आप ही हैं. मैं बड़ी अभागी हूं. मैं ने इसे जन्म तो दिया पर इस के प्रति अपना फर्ज निबाहे बगैर ही इस संसार से विदा हो रही हूं. फादर, इसे नन बनाना, एक धर्म पुत्री ईसा मसीह की सेवा में– मां मरियम जैसी ही दिव्य.'

उस दिन के बाद फेरिया मिशन की देखरेख में आ गई थी. जब से फेरिया ने



जीवन

धरती बिलकुल सहमीसहमी
अंबर रोया सा लगता है,
शायद तुम को विश्वास न हो
जीवन में सब पा कर भी,
सब खोयाखोया लगता है.
—कनक अग्रवाल 'कनुप्रिया'

होश संभाला था तब से उस ने अपने को कैथोलिक मिशन के संरक्षण में पाया था. वहां उस की हमउम्र बहुत सी अनाथ बच्चियां थीं. लेकिन फेरिया को कभी महसूस नहीं हुआ कि वह अनाथ है. मृदु स्वभाव वाली ननें, शांतिपूर्ण माहौल, फादर लियो विलसन का पितातुल्य. अपूर्व स्नेह—इन सब चीजों ने उसे एक व्यवस्थित और नई जिंदगी दी थी. स्कूल से लौटने के बाद वह पियानो पर भजन सीखती और घुटने टेक कर अपने नन्हे हाथों को जोड़ कर भजन गाती.

सीनियर कैंब्रिज के बाद फेरिया को नन की दीक्षा देने के लिए फादर विलसन ने अन्य चार लड़कियों के साथ उस का नाम भी प्रस्तावित किया. बिशप ने इसे स्वीकार कर लिया. उस समय फेरिया की उम्र सोलह वर्ष की थी. जब उस ने सुना कि नन बनने के लिए उस का नाम प्रस्तावित किया गया है तो वह सोचने लगी, क्या वह जीवन भर अपने को सफेद चोगे में लपेट कर इतनी बड़ी जिम्मेदारी निबाह सकेगी? फिर फेरिया ने अपने को काफी हद तक मानसिक रूप से नन बनने के लिए तैयार कर लिया.

दीक्षा समारोह के दिन फेरिया और उस के साथ अन्य चार युवतियां सफेद चोगों में लिपटी हुई मां मरियम की विशाल मूर्ति के सम्मुख खड़ी हो गईं. उन के गले में रोजरी भी थी, जिस में नीचे की तरफ क्रास था. बिशप मैक्लीन ने दीक्षा लेने वाली सभी धर्मपुत्रियों के सिर पर हाथ रख कर प्रार्थना की और उन्हें आशीर्वाद दिया. फिर उन्हें बाइबल के कुछ अंश पढ़ कर सुनाए. इस के बाद शपथ ग्रहण कार्यक्रम हुआ.

'क्या तुम स्वेच्छा से प्रभु के इस महान कार्य को स्वीकार करती हो?'

पांचों ननों ने हामी भरी.

'क्या तुम निष्ठापूर्वक इस कार्य को तनमन से पूर्ण करोगी?'

उन्होंने फिर स्वीकृति में सिर हिलाया.

'क्या तुम अपनेआप को सदैव के लिए सांसारिक मोहमाया से हटा कर अपना सर्वस्व धर्म और मानवता को अर्पित कर दोगी?'

'हम ऐसा ही करेंगी,' वे बोलीं.

इसी प्रकार के प्रश्नों और स्वीकृतियों के बाद बिशप ने अंतिम आशीर्वाद दिया और हाथ उठा कर प्रार्थना की कि ईश्वर इन नई धर्मपुत्रियों को जीवन भर अपने आशीष से भरपूर रखे. अन्य ननों ने सामूहिक रूप में गीत गा कर उन का अभिनंदन किया और इस प्रकार फेरिया नन बन गई.

फेरिया ने ननरी के जीवन से अपनेआप को पूरी तरह से जोड़ लिया था. कभीकभी उसे लगता कि उस की इस दुनिया के अलावा एक और दुनिया भी है, जहां लोग प्यार करते हैं और बिलकुल व्यक्तिगत जिंदगी जीते हैं. अचानक उस की भेंट एंटोनी से हुई और जीवन में पहली बार किसी युवक के लिए उस के हृदय में प्यार उमड़ा. यह जानते हुए भी कि वह एक नन है और उस की दुनिया में किसी भी युवक से प्यार करना उसूलों के खिलाफ है, फेरिया एंटोनी के प्यार में डूबती

चली गई.

कोई भी समारोह होता, एंटोनी व फेरिया मिलते और प्यार की बातों में खो जाते. दोनों शाम को अकसर मिलने लगे. अन्य ननों ने फेरिया से एंटोनी के विषय में पूछा तो उस ने यही बताया कि वह उस का ब्वायफ्रेंड है.

एक दिन एंटोनी ने उस के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया. यह सुनते ही वह अंदर तक कांप उठी, 'यह कैसे हो सकता है? क्या यह गुनाह नहीं होगा?'

'नहीं, क्योंकि हम सच्चा प्यार करते हैं, और फिर ईश्वर तथा मानवता की सेवा तो विवाह कर के भी की जा सकती है,' एंटोनी ने दृढ़ता से कहा.

फेरिया को एंटोनी की बात भा गई और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे विवाह कर लेंगे.

शाम घिर आई थी. फादर अपने अंदर एक अजीब सी बेचैनी महसूस कर रहे थे. उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि जब वह संस्था के धन में से एंटोनी के लिए रुपए निकालेंगे तब क्या वह अपने को संभाल पाएंगे. जिन हाथों ने जिंदगी भर दुखियों, रोगियों की सेवा की, जिन हाथों से उन्होंने हजारों व्यक्तियों को आशीर्वाद दिया, क्या वे अनधिकृत रुपयों को उठा पाएंगे? वह जानते थे कि किसी को भी उन पर संदेह नहीं हो सकता. फिर भी वह अंदर ही अंदर टूट रहे थे.

उन्होंने अपने को किसी तरह तैयार किया. उन्हें मालूम था कि अलमारी में अनाथालय के लिए बहुत सा रुपया रखा है. इस अलमारी को उन के हाथों ने कितनी ही बार खोला था.

उन्हें खयाल आया कि आज उन्होंने ननरी और स्कूल का चक्कर नहीं लगाया है. यह उन का रोज का नियम था कि रात को 8 और 9 बजे के बीच वह वहां का चक्कर लगाते थे. अलमारी की ओर बढ़ने से पहले उन्होंने वहां का चक्कर लगा लेना उचित समझा. सफेद गाउन के भीतर हाथ डाल कर उन्होंने रूमाल निकाला और माथे पर आए पसीने को पोंछ कर कमरे से बाहर आ गए. हर रोज जैसी शांति उन के मन में नहीं थी. लग रहा था जैसे उन का हर कदम बहुत भारी उठ रहा है.

ननरी में पूर्णतः शांति थी. ननें खाना खा चुकी थीं. फादर को देख कर सब शिष्टता से उठ खड़ी हुईं. इन ननों में फेरिया एकदम मासूम और देवी सी लग रही थी. अचानक उन के मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया कि कुछ नियम किसी के अच्छे काम में बाधा क्यों डाल देते हैं. यदि फेरिया और एंटोनी आपस में प्रेम करते हैं तो वे विवाह क्यों नहीं कर सकते? यही सोचते हुए वह बाहर आ गए.

सेंट पाल स्कूल के होस्टल के छात्र अपनेअपने कमरों में अपने होम वर्क करने



में व्यस्त थे. फादर को आया देख वे सम्मान से खड़े हो गए. फादर को उन का अनुशासित व्यवहार अच्छा लगा. मासूम, भोले और शरारती चेहरों पर उन्हें जीवन की मुसकान दिखाई दी. उन के मुड़ते ही 'गुड नाइट, फादर' की ध्वनि सुनाई दी. अब वह तेजी से अपने कमरे की ओर प्रस्थान कर रहे थे. कमरे

में आते ही उन्हें खयाल आया कि उस दिन सीनियर कैंब्रिज की क्लास में उन्होंने एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया था. विषय थाः 'मैं भविष्य में क्या बनना चाहता हूं?'

वह मेज के सामने बैठ गए. दराज खोल कर उन्होंने प्रतियोगिता में लिखे निबंधों की कापियां निकाल लीं. वह उन में खो गए. किसी ने लिखा था कि वह डाक्टर बनना चाहता है, किसी ने इंजीनियर, किसी ने वकील, किसी ने टीचर बनने की इच्छा जाहिर की थी. अचानक एक निबंध उन के सामने आया. उस में लिखा था, 'मैं फादर विलसन बनना चाहता हूं, उन्हीं की तरह कर्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी, महान और ईमानदार.' फादर विलसन की दृष्टि उन पंक्तियों में जम सी गई. उन्हें लगा वह एक दर्पण देख रहे हैं, जिस में उन का चेहरा है. एकदम स्पष्ट आकृति. लेकिन उन की आकृति के माथे पर कलंक लगा हुआ है. उन का चेहरा एकदम भद्दा और बीभत्स हो उठा. लड़के ने उन के जो गुण लिखे थे, क्या वह अब भी उन के योग्य रह गए हैं.

अचानक वह बच्चों की तरह फफक कर रो पड़े. उन्होंने अपना चेहरा हथेलियों में छुपा लिया. उन्हें लग रहा था जैसे उन के अंदर जमी मैली काई आंसुओं के रूप में बह कर निकल रही है. वह सोचने लगे, क्या हो गया था उन्हें? वह यह क्या करने जा रहे थे. उन्हें दो युवा हृदयों के बीच दीवार बनने का कोई अधिकार नहीं है. लोग भले ही कुछ भी कहें, वह एंटोनी और फेरिया को मिला कर ही रहेंगे.

फादर विलसन एकदम से उठ खड़े हुए और कोने में रखे टेलीफान की ओर बढ़ गए. टेलीफोन पर वह एंटोनी को सूचित करना चाहते थे कि अब उसे कहीं जाने की जरूरत नहीं है. अब वह फेरिया से विवाह की तैयारी करे. मारे खुशी के उन के हाथ कांप रहे थे. अब वह डायल पर एंटोनी के घर का टेलीफोन नंबर मिला रहे थे. ●

जब कोई चेन खींचे तो...

आगरे की नार्थ ईदगाह कालोनी में, जहां पुलिस ने विशेष नाकेबंदी कर रखी थी, लुटेरों ने एक शाम 7 बजे आगरा कालिज के सामने एक महिला के गले से सोने की जंजीर तोड़ कर पुलिस के तमाम सुरक्षा साधनों को झुठला दिया.

लेख ● नीता गाबा

जयपुर के जौहरी बाजार के महिला चिकित्सालय में 2 महिलाएं चिकित्सक से परामर्श लेने के लिए कतार में खड़ी थीं. पुलिस उप अधीक्षक (आदर्श नगर) वी. के. गुप्ता ने बताया कि तभी कतार में से एक महिला ने अपनी सोने की चेन गायब हो जाने पर शोर मचाया. ज्यों ही शोर मचा, पीछे



खड़ी महिला ने भागने का प्रयास किया. जंजीर गायब करने वाली ऊषा मराठी को घटनास्थल पर ही गिरफ्तार कर लिया गया.

दिल्ली में राजेंद्र बाबू क्षय रोग अस्पताल की 32 वर्षीया नर्स एलिस जोसफ अस्पताल से ड्यूटी समाप्त कर जब घर जा रही थी तो रास्ते में बदमाश उसे चाकू से घायल कर उस के गले की सोने की चेन ले उड़े. इस घटना में उस के दोनों हाथ जख्मी हो गए.

आगरा शहर की ही सिंडिकेट बैंक कालोनी (बाईपास रोड) निवासी डा. अनिल मोहन की पत्नी कविता मोहन 30 जुलाई को अपराह्न 1 बजे अपने मोपेड पर बाजार से घर लौट रही थीं. जब वह कैलाश विहार कालोनी के निकट पहुंचीं, तभी यामहा मोटरसाइकिल पर सवार 2 बदमाशों ने उन्हें रोक कर गले से लगभग डेढ़ तोला वजनी सोने की जंजीर खींच कर भाग गए. दोनों लुटेरों की आयु लगभग 25 वर्ष बताई गई.

चेन खींचने की तमाम ऐसी वारदातों के पश्चात महिलाओं में एक भय अवश्य व्याप्त रहता है. लेकिन इस भय के कारण 'सोने' के प्रति मोह या आकर्षण में तनिक भी कमी नहीं आती. ऐसी घटनाएं केवल दिल्ली, आगरा या जयपुर में ही नहीं वरन अन्य महानगरों एवं कसबों में भी खूब हो रही हैं. रातबिरात तो दूर, दिनदहाड़े भी सरेआम चेन खींचने की वारदातों में निरंतर वृद्धि हो रही है.

अब इन वारदातों में खासा परिवर्तन यह देखने में आया है कि चेन खींचने वालों में उच्च एवं निम्न मध्यम वर्ग के युवाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है. जिन युवकों की सभी इच्छाओं की पूर्ति करने में अभिभावक समर्थ नहीं होते वे मित्रमंडली में अपनी साख बनाए रखने के लिए ऐसे उलटेसीधे मा[...] अपना लेते हैं. और एकाध बार ऐसी वारदा[...] में सफलता मिलने के पश्चात उन के हौस[...] बढ़ जाते हैं.

अकसर देखने में आया है कि युवक[...] द्वारा चेन, पर्स आदि झपटने की वारदात [...] समय महिलाएं प्रायः संज्ञाशून्य सी हो जा[...] हैं. अपने साथ हुई घटना में अपराधी [...] पकड़ना तो दूर, वे चिल्ला कर औरों [...] अपने साथ घटित घटना का ब्योरा तक न[...] दे पातीं.

ऐसी वारदातों से बचने के लिए गह[...] पहनना ही छोड़ देना समस्या का ठोस समाध[...] नहीं है, बल्कि ऐसे अवसरों पर मौन धार[...] न कर के जहां तक संभव हो, खूब जोरों [...] चिल्लाना चाहिए.

ऐसी ही एक घटना 13 मई 1994 [...] दिल्ली में करोलबाग के एक इलाके में घटि[...] हुई थी. उस दिन रात्रि 8.30 बजे 42 वर्षी[...] शशि मल्होत्रा अपनी 21 वर्षीया बेटी शिल[...] मल्होत्रा एवं एक अन्य महिला पांचाली [...] साथ जब घर के बाहर टहल रही थीं [...] मोटरसाइकिल पर सवार 2 युवकों ने बा[...] नगर का पता पूछा. शशि मल्होत्रा रास्ता ब[...] रही थीं कि मौका देख कर उन में से ए[...] युवक ने शशि मल्होत्रा की चेन खींच ली[...]

यह किस्सा यहीं समाप्त नहीं हुआ. श[...] ने मोटरसाइकिल पर सवार युवकों में से ए[...] को कमीज की कालर से पकड़ लिया. शिल[...] को घटना की पूरी जानकारी नहीं थी, लेकि[...] युवकों द्वारा किसी प्रकार के दुर्व्यवहार [...] आशंका से उस ने भी भाग कर मोटरसाइकि[...] को पीछे से पकड़ा. तब युवकों ने चाकू [...] शिल्पा की बांह पर 2 वार किए और भाग[...]

बाजारों, सड़कों, बसों आदि जगहों में सोने की चेन खींचने की वारदातों में निरंतर वृद्धि हो रही है. और यह देखा गया है कि महिलाएं वारदात के वक्त चिल्लाती नहीं, संज्ञाशून्य सी खड़ी रह जाती हैं. परंतु इस तरह चुप्पी साध लेना तो अपराधियों के हौसले बुलंद करना है. इसलिए यदि कोई चेन खींचे तो...



में सफल हो गए.

ऐसी संगीन वारदातों में अकसर अभियुक्तों के पास छोटेमोटे हथियार भी होते हैं. ऐसे में महिलाएं हमले का करारा जवाब देने में स्वयं को असमर्थ महसूस करती हैं. लेकिन ऐसी स्थिति में 'चिल्ला कर ' या 'शोर मचा कर' भीड़ इकट्ठी करना भी काफी असरदायक होता है, इसलिए अपने साथ हुई ऐसी ज्यादती को मूक दर्शक की भांति बरदाश्त नहीं कर लेना चाहिए. चुप्पी साध लेने से तो अपराधियों के हौसले ही बुलंद होते हैं.

कुछ सावधानियां

- *नकली गहनों का अधिकाधिक प्रयोग करें.*
- *स्वर्णआभूषण पहन कर एकांत व सुनसान स्थान की यात्रा न करें.*
- *आसपास के माहौल एवं हर व्यक्ति पर चौकस नजर रखें.*
- *किसी भी वाहन में यात्रा करते समय चेन इत्यादि छिपा कर रखें.*
- *ऐसी घटनाओं को चुपचाप बरदाश्त करने की अपेक्षा साहसपूर्वक स्थिति का सामना करें. इस के लिए सब से सुरक्षित उपाय है चिल्ला कर भीड़ इकट्ठी करना.*
- *बाजार एवं अधिक भीड़ वाले स्थानों पर गले के आसपास कपड़ा लपेटना सुरक्षा के लिए आवश्यक है.*

अपने साथ हुई ज्यादती को 'शोर मचा कर' सारी भीड़ को बताएं जो सुरक्षा की दृष्टि से भी ठीक रहता है.

घटना के पश्चात घटनास्थल के पुलिस स्टेशन में प्राथमिक सूचना अवश्य ही दर्ज करवानी चाहिए. यदि अभियुक्त किसी वाहन पर है तो उस का नंबर नोट करना न भूलें. चूंकि पुलिस स्टेशन में पुलिस अधिकारी अपने इलाके के अपराधियों के अड्डों से सामान्यतः वाकिफ होते हैं, इसलिए उन के हुलिए एवं कुछ अन्य जानकारियां अभियुक्त की पहचान में सहायक सिद्ध हो सकती हैं.

एक पुलिस अधिकारी का कहना था कि जहां तक संभव हो महिलाएं सोना पहन कर प्रदर्शन की भावना पर नियंत्रण रखें क्योंकि इस तरह का प्रदर्शन अपराधियों की कुत्सित भावना को भड़काने में पेट्रोल का काम करता है. एक घटना का वर्णन सुनाते हुए वह कहते हैं,"अभी कुछ समय पहले जब मैं गश्त पर था तो मैं ने एक महिला को लगभग आधा किलो सोने के आभूषण पहने देखा. अब आप ही बताइए कि इतना

सोना पहन कर खुले बाजार में घूमना कहां तक जायज है. इसलिए अपनी सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए बाजार में अधिक गहने पहन कर न चलें."

कुछ महीने पहले मधुमिता को अपनी सहेली नेहा के यहां उस की सगाई की रस्म पर जाना था. काफी मिन्नतों के बाद उसे मां से सोने की कीमती चेन तो जैसेतैसे मिल गई, लेकिन इस हिदायत के साथ कि गले के आसपास किसी तरह से कपड़ा लपेट कर ही जाए, वरना कब कौन हाथ मार दे, क्या भरोसा?

जहां तक संभव हो अपनी सुरक्षा के कुछ साधनों को अपने पास रखें.

सुकन्या एवं उस की मां एक पारिवारिक समारोह से लौट रही थीं. रात्रि का समय था इसलिए उन्होंने तिपहिया वाहन द्वारा यात्रा करना अधिक श्रेयस्कर समझा. रास्ते में ही चालक की नीयत बदल गई. लेकिन सुकन्या ने समझदारी से काम लेते हुए उस वाहन का नंबर नोट कर लिया था. बाद में उन्हें गहने ही सुरक्षित नहीं मिले वरन एक अमूल्य सीख भी मिली.

सुरक्षा की दृष्टि से सुनसान या एकां स्थान की यात्रा हानिकारक व खतरना हो सकती है. ऐसे में सुरक्षा के लिए किस को साथ लेना न भूलें. और यदि भ बस में सफर कर रही हैं तो जल्द ही अप लिए एक सुरक्षित कोना अवश्य तला लें.

ऐसी घटनाओं में जनता की भूमिक सहयोगात्मक होनी चाहिए. लेकिन लोग दूसरों की जलती आग में कूदने की अपेक्ष घटना को एक फिल्म की भांति देख क उस का मजा लूटने में अधिक दिलचस्पी ले हैं. दरअसल जनता की सक्रिय भूमिका अभाव में ही ऐसी वारदातों की निरंतर वृ हो रही है. जहां तक संभव हो पुलिस कुछ भी करने से पहले स्वयं अपनी मद करें. अपने आसपास के माहौल पर सद कड़ी निगाह रखें. इस से ऐसी घटनाओं तो कमी आएगी ही, साथ ही सावधान रह पर ऐसे अपराधियों से जूझने का आप में साह भी पैदा होगा.

पासा पलट गया

मेरे पिताजी घर खर्च के लिए जो भी रुपए अम्मां को दे जाते, अम्मां उन में हेराफेरी करतीं और हिसाब मांगने पर कोई बहाना बना कर बात को रफादफा कर देती थीं. एक बार पिताजी ने अम्मां को 500 रुपए का एक नोट देने से पहले उस का नंबर नोट कर लिया. 3-4 महीने बाद जब पिताजी ने कुछ रुपए मांगे तो अम्मां ने कहा कि घर में तो नहीं हैं, सहेली से उधार ला कर देती हूं और थोड़ी देर में अम्मां ने 500 रु. का नोट पिताजी को दे दिया. जब पिताजी ने अपने पास नोट किया उस का नंबर निकाला तो अम्मां की सूरत देखने लायक थी.

–रश्मि वाजपेयी

*

मेरे जीजाजी को होशियारी दिखाने का बहुत शौक है. एक बार उन्होंने मेरे हाथ से 50 रुपए का फटा नोट ले कर उसे चलाने की ठानी. संयोग से एक सज्जन 100 रुपए के छुट्टे मांगने आए. जीजाजी ने झट से 50 के एक अच्छे नोट के साथ वह फटा नोट उसे दे दिया. गर्व से फूले जीजाजी ने बाद में जब एक दुकान पर वह सौ का नोट दिया तो दुकानदार बोला, "यह फटा है, नहीं चलेगा." उस समय जीजाजी की सूरत देखने लायक थी.

–अंजू यादव

*

अपने मित्र के साथ बस में सफर करते समय हम ने देखा कि पास वाली सीट पर बैठे एक सा सिगरेट पी रहे हैं. साथ वाली स पर एक बूढ़ी औरत भी बैठी हम ने उस से कहा, "माताजी सिगरेट के धुएं से परेशानी हो है, सिगरेट बुझा दें." उस आद ने सिगरेट बुझा दी और माफी मांग ली. लेकिन कुछ देर बाद उस बूढ़ी माताजी ने बीड़ी सुल कर पीना शुरू किया तो हम ल बगलें झांकने लगे.

–महेश बड़थ्वाल

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं ने ज्यों ही कमरे का दरवाजा खोला, राजेश जल्दी से अंदर आया और कुरसी पर ढेर हो गया. उस के बाल बिखरे ए थे, आंखें सुर्ख हो रही थीं.

"मनोज, मैं लुट गया," राजेश ने दोनों थों से अपना चेहरा छिपा लिया और फिर ने लगा.

"क्या हुआ? घर में तो सब कुशल हैं?" ने लपक कर उस के कंधे पर हाथ रखा र घबराए हुए स्वर में पूछा.

"घर में तो सब ठीक हैं, मगर मैं लुट या," राजेश ने हाथों को चेहरे से हटा कर हा और फिर अपने सिर पर दोहत्थड़ मारा.

"अरेअरे, यह क्या कर रहे हो?" मैं ने ल्दी से उस के दोनों हाथ पकड़ लिए, "क्या नौकरी के इम्तिहान में फेल हो गए हो? ई बात नहीं, अगली बार खूब मेहनत रना, अभी कौन सी तुम्हारी नौकरी की उम्र निकल गई है."

"नहींनहीं, नौकरी के इम्तिहान का तो अभी नतीजा नहीं निकला," उसने अपने हाथ छुड़ाने की चेष्टा की.

"तो क्या जिस कंपनी के तुम ने शेयर खरीदे थे, वह अपना बिस्तर गोल कर गई?"

"अरे बाबा, नहीं. मगर मैं लुट गया. बरबाद हो गया, तबाह हो गया," उस ने डबडबाई नजरों से मेरी ओर देखा.

"मगर इस बरबादी की वजह तो बताओ, नहीं तो मैं अपना सिर पीटना शुरू कर दूंगा," मैं ने खीज कर कहा.

"पिताजी मेरी शादी करना चाहते हैं," राजेश ने आंसू भरी आंखों से मेरी ओर ताका.

"क्या, फूफाजी तुम्हारी शादी करना चाहते हैं. क्या इसीलिए तुम रोपीट रहे हो?"

व्यंग्य ● लाज ठाकुर

लड़की देखेंगे



मैं ने उस के हाथ छोड़ दिए, “लो अब जी भर कर अपना सिर पीटते रहो.”

राजेश ने फटीफटी आंखों से मेरी तरफ देखा तो मैं बोला, “अगर भारत का हर नौजवान तुम्हारी तरह शादी के नाम से भड़कता रहे तो बढ़ती हुई आबादी का मसला अपनेआप ही हल हो जाएगा.”

“यार, मैं शादी से नहीं डरता,” उस ने मुझे समझाना चाहा.

“फिर क्या तुम किसी और के प्रेम बंधन में जकड़े हुए हो?”

“नहीं,” उस ने गरदन हिलाई, “गड़बड़ यह है कि वह मेरी शादी ऐसी लड़की से कर रहे हैं, जिसे मैं ने देखा भी नहीं.”

“इतनी सी बात है. तुम फूफाजी से साफसाफ कह दो कि ब्याह से पहले तुम उस लड़की को एक नजर देखना चाहते हो,” मैं ने राय दी.

राजेश की इच्छा थी लड़की देखने की और उस के पिताजी थे कि बिना लड़की दिखाए ही उसे शादी के मंडप पर बैठाने की कोशिश कर रहे थे. ऐसे में जब हम ने उस की इच्छा पूरी करनी चाही तो...

“मैं ने कहा था. मगर वह बोले कि जब मैं ने तुम्हारी मां से बिना देखे शादी कर ली तो तुम क्यों बिना देखे शादी नहीं कर सकते?”

“बूआजी ने नहीं समझाया?”

“तुम तो जानते हो, उन के आगे किसी की नहीं चलती. बातबात पर जान देने की धमकी देते हैं. कहते हैं, ‘भले ही और 10 जगह तुम्हारे रिश्ते की बात चला दूंगा, मगर शादी से पहले लड़की न देखने दूंगा, आखिर हमने भी बेटियां, भतीजियां ब्याहनी हैं’.... अब तुम्हीं बताओ?” राजेश फिर से रोने की तैयारी करने लगा.

“ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम चोरी
लड़की देख आओ. हो सकता है, यह ल
शायद तुम्हें पसंद ही आ जाए. फिर ‘हां
देना. इस तरह फूफाजी की बात भ
जाएगी.”

“वाह प्यारे, क्या बात सोची है,”
की आंखें खुशी से चमक उठीं, “यानी
रहे बागवान, राजी रहे सय्याद भी.”

“हां, तुम्हें लड़की वालों का पता
है?” मैं ने डरतेडरते पूछा कि कहीं
स्कीम चौपट न हो जाए.

“सब मालूम है. यह भी पता है कि
कौन से कालिज में पढ़ाती है,” राजेश
की जेब से एक नोटबुक निकाली.

“जब इतना कुछ जानते हो तो
क्या मुशकिल है?”

“अब आगे की भी तुम ही त
लड़ाओ. मेरी अकल तो...”

“सिर पीटपीट कर मारी गई है,”
राजेश का वाक्य पूरा किया.

उस के होंठों पर मुसकराहट उभर
और उस ने नोटबुक का पन्ना मेरे मु
आगे कर दिया.

अब हम दोनों अपने अभियान पर
पड़े...

मैं ने चाय का प्याला मुंह से ल
और एक छोटा सा घूंट भरा, बल्कि
को चखा. राजेश ने कलाई पर बंधी घ
एक बार फिर नजर डालने के बाद
भावी ससुर के घर के गेट की ओर द

सामने सड़क के दूसरी ओर हलवा
दुकान पर मैं राजेश के साथ पिछले
से बैठा था. हम दोनों कालिज के व
पहले ही उस दुकान के अंदर गंदी कु
पर जमे हुए थे. हमें इंतजार था कि
कालिज जाने के लिए घर से निकले
राजेश उस के ‘दर्शन’ कर ले. यह
चाय का पांचवां और समोसों की तीसरी
थी. हलवाई का नौकर हर 10 मिनट
हम लोगों के सामने लगी मेज पर अ
झाड़न से सफाई करने लग जाता औ



अरे, यह क्या? एक पांव में काला और सरे में ब्राउन जूता," किरण ने कहा तो वे नों अपने पैरों को देखने लगे.

ोग उसे नया आर्डर दे देते.

वैसे जले हुए दूध की चाय और 1 दिन हले के समोसों को चखते ही दुकान से ाग जाने को जी चाहा था, मगर मजबूरी . थोक के हिसाब से चाय, समोसे खाने र काउंटर के पीछे बैठा हलवाई घूरघूर कर म लोगों को देख रहा था. राजेश की नजरें ामने वाले मकान के दरवाजे पर चिपकी ई थीं.

नौकर झाड़न संभाले एक बार फिर हमारी मेज की ओर बढ़ा. राजेश एकदम कुरसी से उठ खड़ा हुआ. मैं ने चौंक कर एक नजर राजेश के चेहरे पर डाली और फिर गरदन घुमा कर सड़क की ओर देखा.

एक रिकशा उस मकान के सामने खड़ा था. मकान के बरामदे में एक लड़की के फिरोजी सूट की झलक नजर आई. वह लंबी, पतली लड़की मकान के गेट की ओर बढ़ रही थी. राजेश तेजी से दुकान के दरवाजे की ओर दौड़ा, मगर हलवाई का नौकर उस का रास्ता रोक कर खड़ा हो गया.

"लालाजी, यह बाबू चाय, समोसों के पैसे मार कर भाग रहा है," नौकर काउंटर की तरफ मुंह कर के चिल्लाया.

"ठहरठहर, कहां भागा जा रहा है?" हलवाई ने जल्दी से उठ कर राजेश की कमीज का कालर थाम उस की गरदन घुमाई.

"अरे सेठ, छोड़ो मुझे," राजेश ने कालर छुड़ाना चाहा.

"पहले पैसे काउंटर पर धरो, फिर पांव बाहर रखो," हलवाई ने राजेश को काउंटर की ओर खींचते हुए फटकारा.

"लालाजी, इसे छोड़ दो...पैसे मैं दे रहा हूं," मैं ने जेब से पर्स निकाला.

"यह 'ट्रिकबाजियां' मैं सब जानता हूं. ऐसे ग्राहकों से मेरा रोज वास्ता पड़ता है," हलवाई ने अपनी लंबी मूंछों पर हाथ फेरा, "कालिज के लौंडेलपोड़े 8-8, 10-10 के ग्रुप में आ कर खातेपीते हैं और बारीबारी खिसक जाते हैं. आखिर वाला अपने पैसे काउंटर पर फेंक कर अकड़ता हुआ चला जाता है."

हलवाई के काउंटर पर जब पैसे चुकाने के बाद हम लोगों ने सड़क पर नजर डाली तो दूर मोड़ पर मुड़ते हुए रिकशा में से फिरोजी चुनरी का आंचल ही लहराता नजर आया. सड़क पर आ कर राजेश हलवाई की उंगलियों की चिकनाहट से भरे अपने कालर को टेढ़ी आंखों से देख रहा था और मैं ऐसे रिकशा को ढूंढ़ रहा था, जो हमें उस कालिज तक जल्दी से पहुंचा देता, जिस में वह लड़की पढ़ाती थी.

कालिज के गेट के करीब बस स्टाप के 'शेड' में हम दोनों लिफाफे हाथों में लिए मूंग ठूंग रहे थे. दोनों ओर से बसें आजा रही थीं. मगर राजेश की और मेरी निगाहें कालिज के गेट पर खड़े गोरखा दरबान की टोपी पर जमी हुई थीं. उसे चायपानी के पैसे दे कर हम ने इस बात पर राजी कर लिया था कि जैसे ही वह लड़की कालिज से वापसी के लिए गेट की तरफ आएगी, वह टोपी सिर से उतार उस से अपने चेहरे को हवा देने लगेगा. पहले तो वह इस बात पर राजी न हुआ, उलटे हमें वहां से भगाने को अपनी कमर में बधी खुखरी पर हाथ डालने लगा. मगर जब मैं ने उसे समझाया कि हम अ भतीजी की पढ़ाई के बारे में, जो इस लड़ की छात्रा है, उस से मिलना चाहते हैं तो राजी हो गया.

बस स्टाप पर खड़ेखड़े मैं ने नोट वि कि एक सुंदर कालिज छात्रा मेकअप सजीसंवरी, हर 15-20 मिनट बाद कि सीने से लगाए लचकती, मटकती कालि के गेट से बाहर आती है. फिर स्टाप आगे से निकल कर सड़क के एक मोड़ घूम जाती है और 5-7 मिनट बाद उसी से कालिज की ओर आती दिखाई देती फिर बस स्टाप के आगे से निकल वा कालिज में चली जाती है. मैं ने सोचा, अ सिरफिरी लड़की है, जो केवल कालिज गेट और सड़क पर चहलकदमी कर मांबाप का पैसा बरबाद कर रही है.

वह कालिज छात्रा बस स्टाप के सा से एक बार फिर गुजरी और उस ने हम ल की तरफ देखा. फिर शेड के पास आ खड़ी हो गई.

"मैं देख रही हूं , आप दोनों पि डेढ़ घंटे से इस बस स्टाप पर खड़े हैं. लग हर रूट की बसें आईगई हैं, मगर आप किसी पर भी सवार नहीं हुए, क्यों?" लड़की ने पलट कर हम से पूछा.

"क्योंकि हम लोग बस का इंतजार कर रहे हैं," राजेश ने बताया.

"फिर?" उस लड़की ने अपनी त पलकें झपकाईं.

"हम लोग किसी और के इंतजा हैं," मैं ने कहा.

"कौन है?" उस लड़की ने बड़े स्वर में पूछा, "कोई लड़की है क्या?"

"हां. लड़की है, मगर हम लोग का नाम तुम्हें नहीं बताएंगे," मैं ने जरा क स्वर में कहा.

"चिंता मत करो, नाम हम लोग पूछ लेंगे. तुम दोनों मेरे साथ चलो," लड़की ने अपने पर्स में हाथ डाला.

"कहां?" मैं ने उस बेहया लड़की

ों में झांका.

"पुलिस स्टेशन," लड़की ने थोड़ा कड़े में कहा.

"पुलिस स्टेशन, क्यों?" मैं ने हैरानी से , "कौन हो तुम? क्या चाहती हो?"

"मैं विषकन्या हूं," उस ने पर्स से हाथ ला.

"विषकन्या हो तो किसी राजदरबार के पर थिएटर में जाओ," राजेश ने बेकरारी ालिज के गेट की ओर देखते हुए कहा.

"आजकल सरकार ने तुम जैसे मजनुओं पकड़ने की हमारी ड्यूटी लगाई है," ी ने रोब से कहा और अपने हाथ में ा पहचान पत्र हमारी नाक के सामने कर

राजेश और मैं ने डरतेडरते उस कन्या' की ओर देखा.

"पुलिस के पास शिकायतें पहुंची हैं कुछ सिरफिरे लड़के कालिज आतीजाती कयों से छेड़खानी करते हैं. सो उन लोगों वालात पहुंचाने का काम हमें सौंपा गया

विषकन्या' ने पर्स से सीटी निकाल कर तो जाने कहां से 4 सिपाही एक हाथ ा और दूसरे में ताश के पत्ते ले कर बस के सामने आ कर एड़ियां बजाने लगे.

"मगर हम लोगों ने आप से कब ानी की है?" राजेश ने अपने बचाव में

"मैडम, आप ने खुद 5-7 चक्कर लगा ख लिया कि हम लोगों ने कोई ऐसीवैसी नहीं की," मैं ने सफाई पेश की.

"मगर तुम ने अभी स्वीकार किया है म लोग किसी लड़की का इंतजार कर ," लड़की ने मुझ से कहा और फिर वालों से कड़े शब्दों से बोली, "ले इन बदमाशों को पुलिस चौकी."

"मैडम, इन के मुंह पर कालिख पोत ने चलें या ऐसे ही?" एक सिपाही ने हाथ में पकड़े ताश के पत्ते कमीज ब में ठूंसते हुए पूछा.

"देखो मैडम, हम किसी लड़की को छेड़ने के लिए यहां नहीं खड़े हुए," राजेश जल्दी से बोला, "हम तो एक कालिज लेक्चरर की राह देख रहे हैं, जिस से हम... अपनी भतीजी की ट्यूशन के बारे में बात करना चाहते हैं."

विषकन्या ने पैनी नजरों से राजेश को और मुझे घूरा.

"मैडम, आप को तो पता है कि कालिज वाले अपने स्टाफ को ट्यूशन की इजाजत नहीं देते, सो हम लोग कालिज के बाहर उन से बात करने आए हैं," मैं ने राजेश की बात का समर्थन किया.

"अरे, तो फिर उस लेकचरर के घर पर जा कर बात करो ना, हमारी गेम क्यों खराब कर रहे हो?" एक पुलिस वाले ने डंडा बगल में दबाया और जेब से ताश के पत्ते निकालने लगा.

"चलो, भागो यहां से," दूसरे सिपाही ने अपना डंडा सड़क पर फटकारा.

> **ध्यान**
>
> *संपत्तियां मनुष्य जाति के ध्यान, विचार तथा बधाइयों को आकर्षित करती हैं.*
>
> – जान एडम्स

"जाओ, उस के घर जा कर बात करो," मैडम विषकन्या ने जहरीले स्वर में हुक्म सुनाया.

एक बार फिर हम दोनों उस गली में चले आए. मगर हलवाई की दुकान के बजाय इस बार जूते मरम्मत करने वाले के पास डेरा जमाया. राजेश और मैं ने अपनेअपने जूते उतार कर उस कारीगर को पालिश करने को दिए.

"अरे बाबा, अब बस भी करो, 5-5 बार तो तुम लोगों के जूते पालिश कर चुका हूं," कारीगर हम दोनों को घूरते हुए कहा.

"हम लोग तुम्हें 5-5 बार पैसे भी तो दे चुके हैं," मैं ने कहा.

"बाबा, जब हमें पैसे देने पर एतराज नहीं तो तुम्हें पालिश करने पर क्यों आपत्ति है?" राजेश ने अपने जूते उस के आगे सरकाए.

“देखो बाबू साहब, हमारे गुरु ने कहा है कि हराम की कमाई मत खाओ,” उस ने अपनी संदूकची के खुले ढक्कन में अंदर की ओर चिपकी एक तसवीर की तरफ हाथ जोड़े, “अब तुम्हारे जूतों पर पालिश की कोई गुंजाइश नहीं है.”

“तो ठीक है, इन की मरम्मत कर दो,” राजेश ने कहा.

“किस जगह की मरम्मत करूं? दोनों जोड़े नए लगते हैं,” कारीगर ने जूतों को उलटपलट कर देखा.

“तो इन का सोल उखाड़ कर नया लगा दो,” राजेश ने सड़क पर दूर तक देखते हुए कहा.

“जल्दी से तला लगाना शुरू करो,” मैं ने सड़क पर से नजरें हटाए बिना कहना चाहा, मगर फिर पलट कर उसे देखा.

अब कारीगर ने पहले जूतों के तले पर निगाह डाली और फिर राजेश की ओर देखा मगर वह दूसरी ओर ताक रहा था. फिर वह मेरी ओर मुंह कर के बोला, “कहीं तुम पागलखाने से छूट कर तो नहीं आए हो?”

“कौन पागलखाने से आया है, रामदीन?” एक बुजुर्ग अपने खिचड़ी बालों को खुजाते हुए रुक गए.

रामदीन ने सामने खड़े भद्रपुरुष की ओर गरदन उठाई, “ताऊजी, ये लोग कभी कहते हैं, पालिश किए हुए जूतों पर पालिश कर दो, कभी मरम्मत करने को बोलते हैं. अब बोले हैं, नए तलों को उखाड़ कर सोल ही जड़ दो,” रामदीन एक सांस में कह गया.

“अच्छा,” उस बुजुर्ग ने हम दोनों की ओर ताका.

“कोई 1 घंटे से जूते पालिश और मरम्मत कराने के बहाने यहां जमे हुए हैं और इधरउधर के घरों को ताक रहे हैं,” रामदीन ने शिकायताना लहजे में कहा.

“पिछले हफ्ते ही इस गली में 3-4 घरों के ताले टूट चुके हैं. मैं पुलिस चौकी फोन करता हूं,” वह महाशय तेजी से नुक्कड़ पर बने पब्लिक बूथ की ओर बढ़े.

मैं और राजेश यह जानते थे कि
हमें चोर समझ कर पकड़ न पाएगी
यहां हम क्यों बैठे हैं, यह तो उगल
लेगी. सो हालात का रुख भांप कर ह
ने जल्दी ही जूते पहने और पास खड़े
में सवार हो लिए.

“अरे, यह क्या? एक पांव में
और दूसरे में ब्राउन जूता. क्या किसी
में भरती हो गए हो?” राजेश की बहन
ने हम दोनों को देख कर हंसते हुए कह

“ब्राउन... काला जूता,” मेरे मुंह से नि

मेरे साथसाथ राजेश ने भी मे
अपने पांवों की ओर देखा. उस गली से
से पहले हम दोनों ने हड़बड़ी में 1-
दूसरे का पहन लिया था.

“मैं भी कहूं कि दाएं पैर का
इतना तंग कैसे हो गया,” राजेश झेंप

“और मैं सोच रहा था कि प
भीगे बिना यह दायां जूता इतना ढील
हो गया कि पांव से ही निकला जा रह
मैं भी हंसा.

“अब जल्दी से अपना हुलिया ठीव
ऊपर चौबारे में लड़की अपने पिता
साथ आई हुई है,” किरण दीदी ने
की पीठ पर हौले से मुक्का मारा.

“लड़की? कौन सी लड़की?” मैं

“वही, जिस के साथ राजेश के
की बात चल रही है,” दीदी मुस
“लड़की वाले चाहते हैं कि राजेश
को देख ले, ताकि बाद में कोई झ
हो. वैसे मनोज भैया, लड़की है बड़ी

“वह लड़की यहां आई है और
राजेश ने जल्दी से मुंह बंद कर लिय

“अब जल्दी से मुंहहाथ धो कर
बदल लो, वे लोग 2 घंटे से तुम्हारी र
रहे हैं,” किरण ने राजेश को धकेला
तेजी से सीढ़ियों की ओर बढ़ा.

“अरेअरे, मेरे वाला जूता
जाओ,” मैं ने पुकारा.

राजेश ने हंसतेहंसते जल्दी से दो
से जूते उतार कर मेरी ओर उछाल ि

मि 2 सहेलियां एकसाथ रह कर नौकरी करती थीं. हमारी एक चिता रोज हमारे यहां पहुंच जातीं र जो भी बना होता उस की खूब ीफ करतीं और खा जातीं. जाते य कहतीं, "हमारी बेटी को यह त पसंद है," और फिर कुछ उस लिए ले जातीं.

कुछ ही दिनों में हम उन से शान हो गए. एक दिन हम दोनों लियां उन के घर गईं. फिर हम उन के हाथ का बना खाना खाने इच्छा प्रकट की. उन्हें हमें खाना लाना पड़ा. अगले दिन भी हम के घर पहुंच गए. हम ने कहा, ाप के हाथ का खाना खा कर हमें अपनी मां की याद आ गई." ं हमें फिर खाना खिलाना पड़ा. रे दिन हम उन के यहां गए तो वाजे पर ताला लगा था.

इस के बाद उन्होंने हमारे यहां ना कम कर दिया. और खाने का ग्रह करने पर भी वह मना कर थीं. –नरिंदर पाल कौल

*

मारे मकान की ऊपरी मंजिल पर मिस्त्री तथा मजदूर काम रहे थे. हमारा सीमेंट प्रतिदिन ी हो रहा था. पर बिना रंगे हाथ ड़े किसी मजदूर पर इलजाम ाना उचित नहीं था.

एक बार दोपहर में खाने के ात सभी मजदूर आराम कर रहे उन्हें नींद आ गई थी. मैं ने अपने को भेज कर उन के टिफिन डब्बे नीचे मंगवा लिए. टिफिन डब्बे खोले तो सारे में सीमेंट हुआ पाया. मैं ने सीमेंट निकाल उन में रेत भरवा कर टिफिन स्थान रखवा दिए.

दूसरे दिन से सीमेंट की चोरी हो गई. इस तरह बिना कुछ ुने व किसी पर इलजाम लगाए ा काम हो गया. –प्रभा वर्मा

मैं अपनी पत्नी व सास के साथ फिल्म देखने गया. हमारे आगे की पंक्ति में आवारा किस्म के 3 लड़के बैठे थे. कभीकभी वे सीटी बजाते हुए खड़े हो जाते थे, जिस से हमें फिल्म अच्छी तरह नहीं दिखाई देती थी.

अगली बार जैसे ही वे लोग सीटी बजाते हुए खड़े हुए, पीछे से मेरी पत्नी ने निडरतापूर्वक 2 लड़कों को एकएक धौल जमा दिया. वे कुछ बोल पाते इस से पहले ही मेरी पत्नी ने कहा, "भाई साहब, पीछे क्या देख रहे हो, आप की वजह से आप की इस बहन को दिखाई नहीं दे रहा है. कृपया बैठ जाइए."

इस के बाद फिल्म खत्म होने तक उन लोगों ने बिलकुल शोर नहीं मचाया. –विद्याधर नन्हकू विश्वकर्मा

बात ऐसे बनी

*

मेरे जीजाजी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक हैं. वह मेरी दीदी की हर बात में कुछ न कुछ कमी निकालते और कहते, "इस खानदानी बीमारी को मेरे इलाज की सख्त जरूरत है."

उन की इस आदत से हम सभी परेशान थे पर रिश्ते की नाजुकता के कारण हम चुप ही रहते थे. एक बार छुट्टियों में जीजाजी की बहन अपने परिवार सहित आई थीं. उन्होंने नाश्ते में सब के लिए एक खास तरह का पुलाव बनाया. मेरी दीदी ने जैसे ही पुलाव की प्लेट मेज पर रखी, जीजाजी मुझे देखते हुए व्यंग्य से बोले, "नाश्ते में भी कभी पुलाव बनता है. इस खानदानी बीमारी को मेरे इलाज की सख्त जरूरत है."

दीदी ने मुझे देख कर कहा, "मुन्ना भैया, अपने जीजाजी को कहो, खानदान की तो वे ही जानें पर अपनी बहन का इलाज आज से ही शुरू कर दें क्योंकि यह नाश्ता उन की बहन ने बनाया है."

इस के बाद जीजाजी ने कभी भी दीदी को अपमानित नहीं किया. –सुमन अग्रवाल

*

मैं 12वीं की परीक्षा दे रही थी. एक बार नए शिक्षक वहां निरीक्षण के लिए आए. उन्हें सभी छात्रछात्राओं को 'ए मिस्टर' कहने की आदत थी. कोई भी विद्यार्थी इधरउधर देखता था तो वह जोर से चिल्ला कर कहते, 'ऐ मिस्टर, सीधे बैठिए."

हम सब को इस से बहुत चिढ़ लगती थी. एक बार मेरी सहेली ने मुझ से कुछ कहा तो तुरंत उन्होंने टोक दिया, और अपना रटारटाया डायलाग दोहरा दिया. मेरी सहेली से रहा नहीं गया. उस ने अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा, "सीधे ही तो बैठे हैं मैडमजी."

उस की बात सुन कर हम सब हंस पड़े. शिक्षक बुरी तरह झल्ला गए. पर दोबारा उन्होंने किसी को भी 'मिस्टर' कह कर नहीं बुलाया. –रंजना त्रिपाठी ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अतीत की याद

कहानी ● यशपाल जैन

फोन की घंटी बजी तो चोंगा उठाने पर आवाज आई, "डाइरेक्टर साहब हैं?"

"कौन बोलते हैं?"

"जी, मैं रामनिवास बोल रहा हूं. जरा साहब से बात करा दीजिए."

"कहिए, मैं बोल रहा हूं."

"मुझे आप से कुछ जरूरी बात करनी है. क्या मैं अभी 5 मिनट को आ सकता हूं."

"आप 3 बजे दफ्तर में आ जाइए."

"अच्छी बात है. मैं 3 बजे आप के दफ्तर में हाजिर हो जाऊंगा."

चेतन ऊंचे पद पर है. उद्योग विभाग में निर्देशक हैं. उस के पास नगर के बड़ेबड़े उद्योगपति और व्यापारी आते रहते हैं. रामनिवास शहर के बड़े व्यापारी हैं. कुछ साल पहले मामूली हैसियत के थे, अब वह करोड़पति हैं, शहर में उन की है. चेतन इस नगर में 1 साल से है. वह व्यापारियों को जानता है. उसे यह भ है कि कौन व्यापारी कैसा है.

ठीक 3 बजे रामनिवास आ चपरासी के द्वारा परची भेजी तो चे उन्हें फौरन बुला लिया. अभिवादन के उन्होंने कहा, "आप से मिलने की बड़ी थी. कई दिनों से आने की सोच रहा थ आप तो जानते ही हैं कि हम व्यापारि जिंदगी में बीसियों झंझट लगे रहते है

चेतन ने उन की ओर देखा, फिर "कहिए, मैं आप की क्या सेवा कर सकत



उस के इस प्रश्न पर रामनिवास भीतर ही भीतर कुछ बुझ से गए. फिर संभल कर बोले, "आप की सालगिरह आ रही है, सोचा, मुबारकबाद दे दूं. आप जैसे अफसर मिलते कहां हैं. साहब, सारा शहर आप की बड़ी तारीफ करता है."

चेतन अकसर ऐसी बातें सुनता रहता है. जानता है कि इस के पीछे असलियत क्या है. उस ने कहा, "बोलिए, काम क्या है."

रामनिवास धीरे से बोले, "कोई खास काम तो नहीं है... आप के पास हमारी एक फाइल है. आप के दस्तखत होने हैं... उस पर कर दें तो बड़ी मेहरबानी होगी."

इतना कहतेकहते उन्होंने अपने बैग में से एक बड़ा लिफाफा निकाल कर चेतन के सामने रख दिया और बोले, "साहब, आप बुरा मत मानिए... हमारे घर में एक परंपरा चली आती है कि जब किसी से मिलने जाते हैं, तो कुछ भेंट ले जाते हैं."

चेतन व्यापारियों के हथकंडे अच्छी तरह जानता है. मन ही मन उसे बड़ी खीज हुई. आखिर सेठ ने यह जुर्रत कैसे की? क्या यह सोचते हैं कि मैं इतना भोला या मूढ़ हूं जो इन के जाल में फंस जाऊंगा? इन का लिफाफा मुझे खरीद लेगा?

उसी समय एक आकृति उस के सामने आ खड़ी हुई. वह कह रही थी. पैसा हाथ का मैल है. आदमी की सब से बड़ी दौलत उस का चरित्र है.

यह आकृति चेतन की मां की थी. वह क्षणभर उस की ओर देखती रही और फिर गायब हो गई.

चेतन ने मन के ज्वार को दबाने की कोशिश की. पर वह अपनी कोशिश में पूरी तरह सफल न हुआ. उस ने लिफाफे को रामनिवास की ओर बढ़ाते हुए कहा, "आप ने बड़ी कृपा की, जो मिलने आए. पर इतना याद रखिए कि सारे अफसर एक से नहीं होते. आप ने बहुत दुनिया देखी है, पर थोड़ाबहुत अनुभव हमें भी है."

तभी चपरासी ने एक चिट ला कर उसे दी. चिट देख कर चेतन ने कहा, "क्षमा



कीजिए, मुझे एक मीटिंग में जाना है."

वह उठ खड़ा हुआ. रामनिवास भी नमस्कार कर के चले गए.

यह चेतन के जीवन की पहली घटना नहीं थी. अनेक बार उस के सामने ऐसे प्रलोभन आए थे, पर कभी उस ने एक पैसा तक न छुआ... इतना ही नहीं, अपना खर्चा निकाल कर जो बचता, उसे वह जरूरतमंदों को दे देता. आज जाने क्यों, मां की उसे बारबार याद आ रही थी. मां ने जिन बातों का ताबीज अपने लाड़ले बेटे की बांह में सदा के लिए बांध दिया था, उन बातों को उस ने अपने जीवन में चरितार्थ कर के भी दिखा दिया था. वह एक रियासत के दीवान की लड़की थीं. उन के चारों ओर बड़े ठाटबाट थे, लेकिन उस में उन का तनिक भी रस न था.

चेतन की मां ने पैसे को कभी अहमियत नहीं दी थी. उन की नज़र में दुनिया की सब से बड़ी दौलत थी आदमी का चरित्र. चेतन को भी उन्होंने जिंदगी का यही रहस्य समझाया था,जो आज उस की जिंदगी का सब से बड़ा सच बन गया था.

उन का विवाह भी एक बड़े घराने में हुआ. वहां भी किसी तरह की कोई कमी न थी. पर मां उस सब के बीच ऐसे रहीं, जैसे जल के बीच कमल रहता है.

चेतन उन का अकेला बेटा था, पर रिश्तेदारों के 1-2 बच्चे हमेशा उन के घर बने रहते थे. मां सब को खिला कर खुद खातीं और सब को सुला कर खुद सोतीं.

मां की मृत्यु हो गई पर चेतन को उन की एकएक बात याद है. घर में खूब पैसा था और मां का हाथ खुला था. जिसे तंगी होती, वही आ जाता और कभी खाली न लौटता. जाने कितना पैसा उन्होंने दूसरों को दिया, उस में से चौथाई भी वापस न आया.

चेतन कभीकभी उन से कहता, 'मां, तुम यह क्या करती हो?'

तब उन का एक ही जवाब होता, 'अरे, बड़ी परेशानी में है. पैसा न लौटा पाई तो क्या हुआ... हमारे यहां तो कोई कमी आने वाली है नहीं, उसे सहारा मिल जाएगा.'

ऐसी 1-2 नहीं, बीसियों घटनाएं चेतन अपनी आंखों देखता. पैसा न आता तो न आता, किंतु मां पर उस का कोई असर न होता.

देश आजाद हुआ. जमींदारी खत्म हो गई. लेकिन मां जैसी की तैसी बनी रहीं. उन्होंने पैसे पर कभी मुट्ठी नहीं बांधी. दिनभर काम में लगी रहतीं और रात को चैन से सोतीं.

वे लोग एक देहात में रहते थे. चेतन ने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद मां से कहा, 'मैं आगे पढ़ना चाहता हूं.'

'तो पढ़... तुझे रोकता कौन है?' मां ने सहज भाव से उत्तर दिया.

चेतन ने कहा, 'तुम ने तो कह दिया कि पढ़. पर मां, शहर का खर्चा बहुत है.'

मां ने सहज भाव से कहा, 'तू उस की चिंता क्यों करता है, उस का प्रबंध हम करेंगे.'

चेतन उम्र के लिहाज से छोटा था, पर बड़ा समझदार था. देखता था, आमदनी कम हो गई है और खर्च बढ़ गया है. यही बात उस ने मां से कह दी तो वह खूब हंसीं फिर बोलीं, 'चेतन, तू हमेशा पगला ही रहेगा. अरे, तुझे क्या लेनादेना है आमदनी और खर्चे से... तुझे पढ़ना है पढ़. इधरउधर की फालतू बातें क्यों करता है? मेरे पास बहुत जेवर हैं, वे किस दिन काम आएंगे? आखिर मांबाप अपने बच्चों के लिए नहीं करेंगे तो किस के लिए करेंगे?'

यह सुन कर चेतन का जी भर आया था. मां की गोद में सिर रख कर वह रो पड़ा था. बड़े प्यार से मां उस के सिर पर हाथ फेरती रही थीं.

चेतन को लगा कि मां का हाथ आज भी उस के सिर को सहला रहा है. उस की



"क्षमा कीजिए, मैं आप को बता नहीं पाई, वह निबंध प्रतियोगिता में प्रथम आया था," बोलते हुए रंजना मारे शर्म के गड़ गई.

आंखें डबडबा आईं.

चेतन शहर में पढ़ने चला गया. मां बराबर खर्चा भेजती रहीं. चेतन ने भी खूब मेहनत से पढ़ाई की. वजीफा मिला तो मां को सूचना दी. वह बड़ी खुश हुईं. उन्हें भरोसा था कि उन का बेटा आगे चल कर बहुत नाम कमाएगा.

धीरेधीरे समय गुजरता गया. चेतन की पढ़ाई का 1 साल रह गया कि अचानक एक दिन उसे घर से सूचना मिली, मां बीमार हैं. वह घर पहुंचा तो मां बिस्तर पर पड़ी थीं. उन का ज्वर विषम हो गया था. बहुत दुबली हो गई थीं. चेतन को देख कर उन की आंखें चमक उठीं. उन्होंने बैठने का प्रयत्न किया. पर बैठ न पाईं.

चेतन ने उन्हें सहारा दे कर बिठाया. मां का हाल देख कर उसे रोना आ गया.

मां ने एक बार पूरा जोर लगा कर कहा, 'बेटा, तू रोता है... अरे, मैं जल्दी ही अच्छी हो जाऊंगी.'

पर मां अच्छी न हुईं. 2 दिन बाद ही उन की जीवनलीला समाप्त हो गई. मां के प्यार से वंचित हो कर चेतन अपने को असहाय सा अनुभव करने लगा. साथ ही उसे यह चिंता भी सताने लगी कि घर में पिताजी अकेले रह गए हैं, अब उन का क्या होगा. पर संयोग से घर में पुराना नौकर था, उस ने सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली. चेतन पढ़ाई पूरी करने के लिए शहर चला गया. पर कई दिनों तक उस का मन बड़ा बेचैन रहा.

एक दिन जब वह होस्टल के कमरे में बैठा था उस ने देखा, दरवाजे पर कोई खड़ा है. वह उठ कर दरवाजे पर आया तो पाया कि क्लास की रंजना है. वह सकपका सा गया और बोला, 'कहिए.'



सुख

सुख का महत्त्व
वही जानते हैं,
जो दुख की सरिताओं को
हंस कर लांघते हैं.

–चंद्र कुमार असाटी

रंजना ने मुसकराते हुए कहा, 'क्यों, अंदर आने को नहीं कहेंगे?'

'नहींनहीं, आइए,' चेतन ने कमरे का दरवाजा पूरी तरह खोल दिया. कमरे में एक ही कुरसी थी, वह उस ने रंजना को दे दी और स्वयं पलंग पर बैठ गया. थोड़ी देर दोनों चुप रहे, फिर रंजना ने कहा, 'मैं एक काम से आई हूं.'

'बताइए?' चेतन ने उत्सुकता से उस की ओर देखा.

'मुझे एक निबंध लिखना है, लेकिन सूझता नहीं कि क्या लिखूं. आप की मदद चाहती हूं.'

इतना कह कर उस ने सारी बात विस्तार से बता दी और अंत में कहा, 'यह निबंध एक प्रतियोगिता में जाएगा... पर समय कम है.'

चेतन का वह प्रिय विषय था. उस ने बिना समय खोए निबंध लिखवा दिया. रंजना तो यह सोच कर आई थी कि वह कुछ मोटीमोटी बातें बता देगा और उन के आधार पर वह निबंध लिख डालेगी. लेकिन उस ने तो सारा निबंध स्वयं लिखवा दिया और ऐसा कि हजार कोशिश करने पर रंजना वैसा लेख नहीं लिख सकती थी. उस का आभार मानते हुए वह चली गई.

कुछ समय बाद एक दिन पुस्तकालय में रंजना मिल गई तो चेतन ने पूछा, 'कहिए, उस निबंध का क्या हुआ?'

रंजना मारे शर्म के गड़ गई. बोली, 'क्षमा कीजिए, मैं आप को बता नहीं पाई. वह निबंध प्रतियोगिता में प्रथम आया और उस पर मुझे 100 रुपए का पुरस्कार मिला.'

'बधाई,' चेतन ने कहा, 'आप को मिठाई खिलानी चाहिए.'

रंजना के अंदर का तार झंकृत हो उठा. बोली, 'वह निबंध तो आप का था... बधाई आप को मिलनी चाहिए.'

चेतन ने मुसकराते हुए कहा, 'यह कह कर मेरी मिठाई मत मारिए... वह पक्की रही... क्यों?'

रंजना ने चेतन की ओर देख कर निगाह नीची कर ली. पर वह मन ही मन चाह रही थी कि वह कुछ कहे, लेकिन चेतन को किसी से मिलना था. वह चला आया और रंजना खोई सी खड़ी रही.

इस के तीसरे दिन रंजना की वर्षगांठ थी. अगले दिन वह कालिज से सीधी चेतन के होस्टल गई. चेतन वहां नहीं था. थोड़ी देर उस ने राह देखी और फिर एक परचे पर लिख, 'कल मेरी वर्षगांठ है. आप जरूर आइएगा. मुझे बड़ी खुशी होगी... मुझे ही क्यों, सारे घर को अच्छा लगेगा. मैं राह देखूंगी? रंजना.'

उस के जाने के बाद चेतन लौटा तो उसे रंजना का नोट मिला, जिसे पढ़ कर उस ने रंजना के मन में झांकने की कोशिश की. थोड़े ऊहापोह के बाद उस ने सोचा कि हो न हो, वह उस के नजदीक आना चाहती है. क्या यह उचित होगा?

तभी उसे मां की बात याद आई, 'इनसान की सब से बड़ी दौलत उस का चरित्र है.' वह सोचने लगा, लेकिन चरित्र का अर्थ क्या है? मन का संयम? चरित्रवान वही है, जो

अपने को बस में रखता है. उस ने अपने मन को टटोला. रंजना के प्रति उस के मन में सहानुभूति थी, वासना का लेश मात्र भी नहीं था. वह बुदबुदाया, 'तब मुझे वहां जरूर जाना चाहिए.'

वर्षगांठ के दिन उपहार में एक पुस्तक ले कर वह रंजना के घर गया. रंजना उसे देख कर बड़ी खुश हुई. उस ने उसे अपने मातापिता से मिलवाया. चेतन जितनी देर रहा, रंजना उस के आसपास चक्कर लगाती रही. आयोजन छोटा सा था, ज्यादातर घर के लोग थे. खापी कर चेतन चला आया.

इस के बाद रंजना उस से 2-3 बार मिली. पर मारे संकोच के वह मन की बात उस से कह न पाई. उस के लिए जिस साहस की जरूरत थी वह रंजना में नहीं था.

चेतन की पढ़ाई पूरी हो गई. परीक्षा भी समाप्त हो गई. जिस शाम को वह घर के लिए रवाना होने वाला था, रंजना उस के पास आई. उस ने चेतन के पैर छुए और बिना उस के कुछ कहे कुरसी पर बैठ गई. वह अपने मन को पूरी तरह खोल कर उस के सामने रख देने का संकल्प कर के आई थी. उस ने कहना आरंभ किया, 'अब आगे आप का क्या विचार है?'

'घर जा रहा हूं. जैसा पिताजी कहेंगे, करूंगा,' चेतन ने मुसकरा कर कहा, 'पर आप का इरादा क्या है?'

रंजना जानती थी कि पढ़ाई पूरी हो जाने पर लड़कियों का क्या भविष्य होता है. पर उस ने वह कहा नहीं. बस इतना बोली, 'अभी कुछ सोचा नहीं है.'

चेतन ने मुक्तभाव से कहा, 'पढ़ाई पूरी हो गई. अब आप को क्या सोचना है... वह काम तो आप के मातापिता करेंगे.'

यह सुन कर रंजना का चेहरा आरक्त हो गया. धरती को पैर के नाखून से कुरेदती हुई बोली, 'क्या यह संभव हो सकता है...?' आगे के शब्द उस के होंठों के पीछे रह गए.

चेतन ने उसे आगे कुछ भी कहने का मौका न दिया. बोला, 'रंजनाजी, आप को एक भाई चाहिए था, मुझे एक बहन की जरूरत थी. हालात और वक्त ने दोनों की इच्छा पूरी कर दी. क्यों, है न?'

चेतन के चेहरे पर इतनी सात्विकता थी और शब्दों में इतनी निश्छलता कि रंजना भीतर से भीग सी गई. उसे ऐसा लगा, मानो चेतन ने उसे गंगा की निर्मल धारा में डुबकी लगवा कर उस के तप्त हृदय को शीतल कर दिया हो. वह भारी मन ले कर आई थी, हलका मन ले कर लौटी.

बात बहुत पुरानी थी, लेकिन शाम को अपने बंगले के बरामदे में कुरसी पर बैठा चेतन अतीत की याद में ऐसा खो गया कि उसे पता भी न चला कि कब शाम बीत गई और कब उस का सेवक आ कर बत्ती जला गया. उस के मन में आनंद हिलोरें ले रहा था. जीवन के रणक्षेत्र की इस विजय से उस का रोमरोम पुलकित हो रहा था. ●



छोटे नगर ऊंचे भवन

पत्थर के बल प...
वैभव बिखेरता कोट...



लेख ● बीना 'दीप'



रजवाड़ों के जमाने में कोटा शहर कोटा रियासत की राजधानी था. तब यह परकोटे में बसा हुआ था और इस की आबादी कुछ हजार ही थी. लेकिन अब यह परकोटे की सीमाओं को तोड़ कर दूरदूर तक फैल गया है और इस की आबादी भी लाखों में है.

आज लगभग 7 लाख की जनसंख्या वाले और 75 किलोमीटर में बसे कोटा नगर के मुख्य 2 भाग हैं– पुराना कोटा और नया कोटा. पुराने शहर में तंग बाजारों और संकरी अंधेरी गलियों के बीच लाखों लोग बरसों पुराने ढर्रे पर जीवन गुजार रहे हैं. इसी पुराने कोटा के महल्ले हैं– रामपुरा, बजाजखाना, पाटनपोल, केथूनीपोल, लाड़पुरा, उग्रसेन बाजार जहां ज्यादातर पुराने ढंग से बनी हुई दुकानों में लाखों का व्यवसाय होता है.

पुराने शहर में जगह की तंगी और आबादी में वृद्धि के कारण नया शहर बसा. पिछले 25-30 वर्षों में भीममंडी, नयापुरा, गुमानपुरा, शापिंग सेंटर, बल्लभ नगर, बल्लभबाड़ी आदि शहर की नई कालोनियां भी पुराने शहर जैसी भीड़भाड़ वाली हो चली हैं. शायद यही कारण है कि पिछले एक दशक में भवन निर्माण के क्षेत्र में कोटा ने बहुत तेजी से तरक्की की. और इसी तरक्की का नतीजा है– विज्ञान नगर, तलवंडी, महावीर नगर, शक्ति नगर, प्रताप नगर जैसी ढेर सारी कालोनियों का निर्माण. जब से कोटा स्टोन के व्यवसाय के कारण धनदौलत और नवधनाढ्यों में प्रतिस्पर्धा में बेशुमार वृद्धि हुई है. निर्माण की यह प्रक्रिया अब तेज हो गई है.



शक्तिनगर कालोनी में बने भव्य भवन इतने खूबसूरत हैं कि निगाह बरबस ही इन की ओर खिंच जाती है: आलीशान कोठी 'परमेश्वर' (ऊपर), धौलपुरी पत्थर से बनी सब से महंगी कोठी 'रामायण' (बाएं), 'मंगलम' भवन (बाएं नीचे).

शहर के विशाल और खूबसूरत उद्यान चंबल गार्डन के निकट बसी है शक्ति नगर कालोनी, जिस में बन रहे भव्य भवन हरेक निगाह को अपनी ओर खींच लेते हैं. इन्हीं कालोनियों में सब से महंगी और खूबसूरत कोठी है 'रामायण'. 11,000 वर्गफुट क्षेत्र में बनी इस कोठी के निर्माण में धौलपुरी पत्थर का इस्तेमाल किया गया है. कोठी में बड़ा सा खूबसूरत लान है. यह भवन इस प्रकार बनाया गया है कि जरूरत पड़ने पर इस में से 4 अलगअलग फ्लैट बनाए जा सकते हैं. इस की कुल लागत 60-70 लाख है. कुछ और कोठियां जैसे 'परमेश्वर', 'मंगलम' आदि भी बेहद खूबसूरत हैं.

शक्ति नगर, दादाबाड़ी के समीप ही स्थित है प्रताप नगर. हाल ही में विकसित इस कालोनी की खूबसूरत कोठियों में मुख्यतः धौलपुरी (करोली) पत्थर इस्तेमाल किया गया है. कुछ मकानों की छत की डिजाइन झोंपड़ीनुमा है और उन में गुजरात की कवेलू (जो देखने में गांव के मकानों की छत पर डाले गए खपरैल जैसी होती है) का इस्तेमाल किया गया है. इन में से कुछ में छत के बीचोबीच या चौक में पत्थर की पट्टियों या आर.सी.सी. की जगह मोटे कांच की प्लेटों का प्रयोग किया गया है, जिस से कमरों में पर्याप्त रोशनी रहती है और पानी से भी बचाव रहता है.

इस प्रकार के भव्य आलीशान रिहायशी भवन कोटा जैसे मध्यम श्रेणी के शहर में बेतरतीबी से फैले हुए हैं. कोटा कलक्टरी के

पास स्थित नवरंग होटल से प्रारंभ हो कर सिविल लाइन क्षेत्र नयापुरा, बल्लभ नगर कालोनी एवं गुमानपुरा नहर से छावनी चौराहा, कोटड़ी चौराहा एवं झालावाड़ रोड से एरोड्राम सर्किल तक इस प्रकार के कई भवन बन चुके हैं, और कुछ का निर्माण कार्य चल रहा है. इसी प्रकार तलवंडी सेक्टर-ए में तथा वाणिज्य महाविद्यालय से बाहेती नर्सिंग होम तक आधुनिक एवं भव्य भवनों के कुछ नमूने देखने को मिल जाते हैं.

इस प्रकार के महंगे आधुनिक भवनों में से एक भवन के मालिक ने बताया कि उन के भवन की कीमत एक करोड़ रुपए से अधिक है परंतु राज्य सरकार को भूमि एवं भवन के तौर पर एक पैसा भी नहीं दिया जाता जबकि कोटा में मात्र एक लाख रुपए या इस से अधिक कीमत वाले भवनों पर

इजाजत ही नहीं है. दूसरा बड़ा कारण यह है कि कोटा में अभी खाली जमीन की को[ई] कमी नहीं है इसलिए शहर का विस्तार जरूरत के मुताबिक तेजी से हो रहा है.

जब कोटा नगर निगम के प्रशासक गजेंद्र सिंह से इस बारे में जानना चाहा तो उन का कहना था कि बहुमंजिली इमारतों के लिए कोटा नगर का वातावरण एवं भूमि उपयुक्त नहीं है और न ही लोगों की इस में कोई विशेष दिलचस्पी ही है. उन की दृष्टि में शहर के बीचोबीच स्थित हवाई अड्डा भी ऊंचे भवनों के निर्माण में बाधक है. जब यह हवाई अड्डा अन्यत्र स्थानांतरित हो जाएगा तब बहुमंजिला भवनों का निर्माण हो सकेगा. फिलहाल कोटा शहर में काफी बड़ा भूभाग अभी खाली है, ऐसी दशा में अभी बहुमंजिला इमारतों की

पिछले एक दशक में भवन निर्माण के क्षेत्र में कोटा शहर ने बहुत तेजी से तरक्की की है. इस तरक्की की जड़ में एक विशेष प्रकार के पत्थर का खास महत्त्व है. यह पत्थर सिर्फ कोटा के ही नहीं अपितु पूरे देश के भवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. क्या आप नहीं जानना चाहेंगे इस पत्थर और कोटा शहर के बारे में?

संपत्ति कर देना होता है. एक अन्य खूबसूरत भवन के मालिक ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "हमें तो सोने से घड़ाई महंगी पड़ गई. जोशखरोश में भवन निर्माण तो हो गया किंतु इस के रखरखाव और देखभाल पर इतना अधिक खर्च होता है कि इस में रहने का मजा ही किरकिरा हो गया है." उन का कहना था कि यदि यह पैसा उन्होंने व्यापार या फार्म हाउस में लगा दिया होता तो अब तक करोड़ों का फायदा हो जाता.

इन सब से अलग एक बात और कि कोटा में 4 मंजिल से ऊंचा कोई भवन है ही नहीं, कारण यह नहीं कि यहां साधनसंपन्न लोगों की कमी है, बल्कि अब तक सरकार की ओर से बहुमंजिला भवन बनाने की

आवश्यकता नहीं है.

प्रशासक गजेंद्र सिंह ने बताया कि कोटा नगर के नए मास्टर प्लान में बहुमंजिला इमारतों और आधुनिक सुविधासंपन्न शापिंग कांप्लेक्स के बारे में प्रावधान होंगे. कोटा नगर पर दिल्ली की आबादी के विस्तार को रोकने का भी भार आया है और इसे 'काउंटर मैग्नेट सिटी' का दर्जा अभी हाल में ही मिला है. अब यहां नए सिरे से मास्टर प्लान तैयार करने के बाद दिल्ली की तर्ज पर विकास करना होगा.

अब तक कोटा में कोई संपूर्ण सुविधायुक्त शापिंग कांप्लेक्स तो नहीं है लेकिन इस से मिलतेजुलते बाजार अवश्य बनने लगे हैं. आधुनिक बाजारों के निर्माण का युग यहां वर्ष 1985 के बाद आया और



गुमानपुरा में स्थित 200 शोरूम वाला शापिंग कांप्लेक्स 'जनकदीप'.

ब तक 'जनकदीप', 'आनंद प्लाजा', ालीवाल मार्केट', 'पंजवानी मार्केट' जैसे जार बन चुके हैं. वास्तुकारों की नजर में बाजार योजनाबद्ध रूप से नहीं बनाए गए और यहां सामान्य बोलचाल की भाषा में हें 'कटला' (कटरा) कह कर इन का हत्त्व कम कर दिया गया है.

कोटा में बहुमंजिला शापिंग कांप्लेक्स ी शुरुआत 'कलावती पालीवाल मार्केट' से ई. शहर के हृदयस्थल गुमानपुरा में बना यह ांप्लेक्स 4 मंजिला है. इस में 200 से अधिक कानें हैं. इस की शुरू की 2 मंजिलें शोरूम लिए, तीसरी मंजिल निजी फर्मों के ार्यालयों के लिए और चौथी मंजिल आवास लिए है. इस कांप्लेक्स में बहुत सी कमियां गई हैं, जैसे लिफ्ट की व्यवस्था न होना, वा और रोशनी की कमी, पर्याप्त सुरक्षा वस्था का अभाव, पार्किंग स्थल का भाव एवं बेहद खतरनाक विद्युत संचरण ाली.

पालीवाल मार्केट में रह गई कमियों को न्य कांप्लेक्स निर्माताओं ने अपनी सामर्थ्य अनुसार दूर करने की कोशिश की है. ानपुरा में ही लगभग 200 शोरूम वाले नकदीप' शापिंग कांप्लेक्स के मालिक तपाल सिंह ने बताया कि उन के कांप्लेक्स लिफ्ट शीघ्र ही लगा दी जाएगी. इस प्लेक्स में सुरक्षा, रोशनी, हवा आदि का ुचित प्रबंध है. खरीदारों तथा दुकानदारों के लिए जनसुविधाएं भी यथासंभव की गई हैं. कांप्लेक्स में एक रेस्तरां भी है. किंतु पार्किंग सुविधा का अभाव यहां भी खटकता है. 'आनंद प्लाजा' और 'पंजवानी कांप्लेक्स' अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुए हैं. पंजवानी कांप्लेक्स के मालिक गिरधारी लाल पंजवानी ने बताया कि वे लोग पर्याप्त सुविधाएं विकसित करने का यत्न कर रहे हैं. फिलहाल 2 मंजिलें तैयार हुई हैं और इन्हीं पर 20 लाख रुपए खर्च हो गए. इन कांप्लेक्सों में शोरूम की बिक्री ही करीब 2 से 3 लाख के बीच होती है.

कोटा में 4 व्यापारियों ने मिल कर अब एक अत्याधुनिक बाजार के निर्माण का बीड़ा उठाया है. संपूर्ण सुविधाओं वाला यह प्रस्तावित बाजार आने वाले 3 सालों में बन कर तैयार हो जाएगा. इन्हीं में से एक व्यापारिक संगठन 'होलसेल क्लाथ मर्चेंट्स एसोसिएशन' के सचिव और शहर के खूबसूरत शोरूम 'सुमंगल' के मालिक गिरिराज न्याति बताते हैं, "यह बाजार साढ़े 6 करोड़ रुपए में खरीदी गई भूमि पर जनरल मर्चेंट्स एसोसिएशन, सर्राफ बोर्ड एसोसिएशन और स्वर्णकार संघ के समन्वित प्रयासों से बन रहा है. इस में अत्याधुनिक बाजारों की संकल्पना के अनुरूप बैंक, डाकघर, आईएसडी, एसटीडी टेलीफोन, कुरियर सर्विस, टेलेक्स, फोटो स्टेट और रेस्तरां आदि की भी सुविधाएं होंगी. बाजार का स्वयं का आंतरिक टेलीफोन एक्सचेंज होने के साथसाथ इस में विद्युत तथा जलापूर्ति की बेहतरीन व्यवस्था होगी. इस बाजार में लगभग 800 शोरूम होंगे तथा उच्च स्तर के वास्तुविद इस का निर्माण करवाएंगे."

वास्तुविद खान अब्दुल रहमान का कहना है, "कोटा अभी तक पर्याप्त रूप से विकसित शहर का रूप नहीं ले पाया है. यहां फैलाव के लिए पर्याप्त जमीन है और विस्तार इतना ज्यादा नहीं हुआ है कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में बहुत ज्यादा समय लगे, इन का मत है कि जब कोटा का विस्तार इतना अधिक हो जाएगा कि आवागमन में समय गंवाना नुकसानदेह लगने लगेगा, तब लोग बहुमंजिला इमारतों की जरूरत महसूस करेंगे. वास्तुविद एस. के लाहौरी और आर.के. व्यास भी इस बात पर सहमत हैं कि यहां उपभोक्ता संस्कृति अभी विकसित ही नहीं हुई है. यही कारण है कि महंगे दामों वाले चमकतेदमकते वातानुकूलित बाजार और शोरूम की आकर्षक साजसज्जा देख कर ही उपभोक्ता घबरा जाता है और शोरूम में प्रवेश की हिम्मत नहीं जुटा पाता.

कोटा में बहुमंजिली इमारतों अ
शापिंग कांप्लेक्स की संस्कृति विकसित
के लिए जरूरी शर्त यह है कि सरकार
पहल करे. जमीनें सही दरों पर मिलें, नि
का सरलीकरण हो. अनावश्यक पाबं
हटाई जाएं और बैंकों या अन्य वि
सहायताओं के माध्यम से बहुमंजिला इमा
तथा बाजारों के निर्माण के लिए पर्याप्त
उपलब्ध कराई जाए.

संभावनाओं के शहर के रूप में क
अपना स्थान बना चुका है, परंतु अभी
इस शहर को प्रतीक्षा है सुनियोजित वि
की एवं एक आधुनिक आकर्षक शहर
रूप में अट्टालिकाओं, वैभवपूर्ण भव
सुविधायुक्त विपणन केंद्रों एवं बहुमं
इमारतों वाले शहर के रूप में प्रतिष्ठित
की, जिस के लिए कोटा सतत प्रगति
ओर अग्रसर है.

अपनी प्रतिभा को व्यर्थ न जाने दें

लेख ● रेखा 'कौस्तुभ'

कुछ दिन पहले पति ने बताया कि मेरी सहेली सुधा के पति का तबादला इसी शहर में हो गया है तथा वे हमारे पास वाली कालोनी में ही रहने लगे हैं. यह जान कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई. हम ने रविवार को उन के यहां जाने का निश्चय किया. मैं कालिज के समय से ही सुधा के व्यक्तित्व एवं चहुंमुखी प्रतिभा से प्रभावित रही हूं. मुझे उस के यहां जाने में विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा था. मैं ने पति को उस की निपुणताओं के बारे में बहुत कुछ बता रखा था. उस की नृत्य, संगीत एवं गायन में रुचि थी. एम.ए. करने के बाद उस ने इंटीरियर डेकोरेटर



का कोर्स भी कर लिया था. उस के घर जाने पर मेरा भ्रम टूट गया. एक डेकोरेटर का घर पूर्णतः अव्यवस्थित था. यह स्थिति देख कर मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी कि मैं किस प्रकार पति को अपनी सहेली का पक्ष रख कर अपनी झेंप मिटाऊं.

पिछले ही सप्ताह मुझे एक शादी में सम्मिलित होना पड़ा. वहां दूर के रिश्ते की एक भाभीजी से भेंट हो गई. महिलाओं के गानेबजाने का कार्यक्रम चल रहा था. एकएक कर सभी महिलाएं कुछ न कुछ सुना रही थीं. भाभीजी की संगीत रुचि के बारे में सब को बताते हुए मैं ने उन से अच्छा सा गीत सुनाने की फरमाइश की. प्रारंभ में तो वह यह कह कर इनकार करती रहीं कि मेरा अभ्यास छूट गया है. घरगृहस्थी में कहां रियाज हो पाता है आदिआदि. फिर कहने लगीं कि तुम्हारे भाई साहब को गानाबजाना

प्रायः देखने में आता है कि महिलाओं की कला प्रतिभा विवाह के उपरांत उपेक्षित हो जाती है. इस के लिए या तो वे मन ही मन कुढ़ती हैं या ससुराल व घरगृहस्थी पर दोष मढ़ कर संतुष्ट हो जाती हैं, लेकिन उन का यह रवैया क्या अपनी कला के साथ ज्यादती नहीं है?

पसंद नहीं है. अतः मैं नहीं गा सकूंगी. अंत में सब के बाध्य करने पर उन्होंने जो सुनाया वह ऐसा था कि क्या बताऊं. न वे स्वर थे, न हारमोनियम का तारतम्य. कुल मिला कर एक अच्छी कलाकार की यह स्थिति देख कर मुझे घोर निराशा हुई.

परसों ही मैं अपनी नई पड़ोसिन शीला के घर गई थी. उस के सजेसंवरे ड्राइंगरूम में मनमोहक चित्र लगे हुए थे. मैं यह जान कर चौंक गई कि ये सब चित्र शादी से पूर्व स्वयं सविता ने ही बनाए थे. लेकिन यह अ भी आश्चर्य का विषय था कि वही सवि चित्र बनाना तो दूर रहा, अब वह उन बारे में सोच भी नहीं पाती. अब तो शाय उस को यह भी ज्ञात नहीं होगा कि इन दि किनकिन किस्मों के रंग और ब्रश अधि अच्छे आ रहे हैं? न जाने उस के कलर अ ब्रश कहां धूल में पड़े मातम मना रहे हैं.

जी हां, कला को निखारना भी ए कला है. प्रायः महिलाओं को यह शिकाय रहती है कि एक बार गृहस्थी के चक्रव में फंस जाने के बाद उन की कला प्रति कुंठित हो दम तोड़ने लगती है. यदि उन पूछा जाए कि इस का क्या कारण है शायद वे इस बात का कोई तर्कसंगत उ नहीं दे पाएंगी. अपनेआप को निर्दोष साबि करने के प्रयास में वे पति, बच्चों, साससस घरपरिवार आदि पर दोषारोपण कर अप पल्लू झाड़ने लगेंगी.

मैं उन की इस बात से तो सहमत कि विवाह पूर्व वे कला प्रतिभा की धनी और अब वे उस प्रतिभा को नहीं निखार रही हैं, मगर इस के लिए पूर्ण रूप ससुराल पक्ष ही दोषी है, इस बात से सह नहीं हूं, यह भी नहीं कि उन का उक्त आर निराधार ही हो किन्तु शतप्रतिशत सत्य नहीं है. मेरे विचार में यह तनिक भी आवश्य नहीं कि पत्नी, मां तथा बहू बनने या रहने के लिए कलाकार मन का गला घ दिया जाना आवश्यक ही हो. इस के लि सूझबूझ एवं सामंजस्य भी अनिवार्य है.

प्रायः विवाहोपरांत ऐसी वि परिस्थितियों से आमनासामना होता ही विवाह तय होते समय लड़की की शिक्षादी के साथसाथ उस की कला प्रतिभ अलंकारिक एवं प्रशंसनीय समझी जाती किंतु विवाह के बाद वे उपेक्षित हो कर जाती हैं. परिणामस्वरूप कलाकार महिल मन ही मन कुढ़ती रहती हैं. वे बिना कि सार्थक प्रयास के यह मान बैठती हैं विवाह पूर्व की उपलब्धियां अनुपयोगी निरर्थक हो चुकी हैं. वे स्वयं उन कला

विरक्त होने लगती हैं. गृहकार्य को श्रम
य एवं ऊबाऊ बना लेना अथवा उसे
णतापूर्वक चुटकियों में निपटा देना
णी की कुशलता पर निर्भर करता है.
त सी महिलाएं इस कुशलता के अभाव
रगृहस्थी के कार्यों में इतनी उलझ जाती
के चाह कर भी वे अपनी रुचियों की
ध्यान नहीं दे पातीं.

देखने में आया है कि सिलाईबुनाई में
ात महिलाएं कई बार बाजार से सिलाई
वाने लगती हैं, रेडीमेड स्वेटर खरीदने
ती हैं. यदि उन से इस का कारण पूछा



ज्जा में यदि आप कुशल हैं तो गृहस्थी
ामों से थोड़ा वक्त बचा कर अपने हाथों
र को संवार सकती हैं.

तो वे समय का रोना रोती मिलेंगी और
क मजबूरियां गिनाने लगेंगी. कई बार तो
के तर्क और भी विचित्र प्रतीत होते हैं
बाजार के स्वेटर सस्ते एवं अच्छे होते
ेडीमेड वस्त्रों की फिटिंग सही एवं
इन आकर्षक होते हैं आदिआदि. बहुत
हिलाएं गृहसज्जा में कुशल होते हुए भी
एवं बच्चों के सिर दोष मढ़ कर घर
यथास्थिति पर ही संतोष कर लेती हैं.

स्वयं बनाना जानते हुए भी बाजार से डेकोरेशन पीसेज, चित्र आदि खरीदने चल पड़ती हैं. क्या इस प्रकार वे अपनी कला प्रतिभा का गला नहीं घोट रही हैं तथा दोष ससुराल पक्ष एवं बच्चों के सिर नहीं मढ़ रही हैं. यों, धीरेधीरे उन का अभ्यास समाप्त होता चला जाता है.

सही माने में ऐसी महिलाएं अपने समय का समुचित उपयोग नहीं कर पातीं. वे कब अपने समय को निरर्थक खो देती हैं, यह स्वयं उन को भी ज्ञात नहीं हो पाता. कुछ महिलाएं समय निकाल कर अपनी कला को निखारने के स्थान पर गप्पें मारना, क्लबों, पार्टियों आदि में समय व्यतीत करना अधिक उपयोगी मानती हैं. वस्तुतः वे इसे ही समय का उपयोग समझती हैं. वे यह भूल जाती हैं कि प्रकृति ने उन को चौबीस घंटे का समय दिया है. यदि वे समय प्रबंधन की कला को भी साथसाथ सीख लें तो बहुत कुछ कर सकती हैं.

कुछ ऐसी महिलाओं से संपर्क कर उन की समस्याओं को जानने के बाद मैं ने निष्कर्ष निकाला है कि पति एवं ससुराल वालों को ही संपूर्ण रूप से दोषी ठहरा देना मात्र एकपक्षीय न्याय है. संभव है पति, परिवार एवं परिस्थितियां एक सीमा तक उत्तरदायी रही हों. किंतु ऐसा नहीं कि महिलाएं स्वयं उन स्थितियों के लिए दोष मुक्त हों. बहुत सी महिलाएं विवाहोपरांत भी अपने को केवल एक कलाकार ही माने रखने की भूल कर बैठती हैं. वे पत्नी और मातृत्व को झंझट समझती हैं. ऐसा कर के वे एक नए विग्रह को ही जन्म दे देती हैं, जिस के रहते हुए वे न पत्नी रह पाती हैं और न ही एक कलाकार. इसीलिए कला को जिंदा रखना निश्चय ही एक कला है. गृहिणी को यह नहीं भूलना चाहिए कि सर्वप्रथम वह एक पत्नी, मां एवं बहू है तत्पश्चात ही वह



एक कलाकार है. अतः अपने पारिवारिक दायित्वों को मुख्य समझ कर उन को पूर्ण करते हुए कला को निखारना अधिक व्यावहारिक सिद्ध होगा.

घरपरिवार में उपलब्ध वातावरण एवं परिस्थितियों में कलाकार महिला को कला प्रतिभाएं उत्तरोत्तर विकसित करने के लिए परिस्थितिजन्य सामंजस्य के साथ अतिरिक्त श्रम की भी सख्त आवश्यकता होती है. कला प्रतिभा को जिंदा रखना जितना आसान है, उतना कठिन भी है. आसान हम इसलिए कह सकते हैं कि जहां कला प्रतिभा को घर की चारदीवारी में सुगमता से विकसित किया जा सकता है, वहीं इस के लिए उन को कामकाजी महिलाओं की भांति नियमित रूप से भागदौड़ नहीं करनी पड़ती. दूसरी ओर कठिन कहना इसलिए संभव है कि जहां कामकाजी महिलाएं अर्थोपार्जन का स्त्रोत होती हैं, वहीं प्रतिभा विकास में आय के स्थान पर व्यय की संभावनाएं अधिक बनी रहती हैं. आमतौर पर महिलाएं आर्थिक संकट से ग्रसित होने के कारण भी अपनी इन कलाओं को विकसित नहीं कर पातीं. वे सोचती हैं, यह सब कौन सा जरूरी है? फालतू पैसे खर्च करने से क्या फायदा?

इस के विपरीत कुछ कला संपन्न महिलाएं यह अहंकार पाल लेती हैं कि वे कला साम्राज्ञी हैं. वे परिवारजनों से यह अपेक्षा करने लगती हैं कि वे लोग उसे पत्नी

यदि आप सिलाईकढ़ाई में निपुण हैं
प्रशिक्षण केंद्र आदि खोल कर उस
व्यावसायिक उपयोग भी कर सकती हैं.

या बहू के रूप में नहीं बल्कि एक क
के रूप में जानें. यदि किसी ऐसी म
कुछ पुरस्कार भी जीत रखे हों तो
अहंकार की सीमा ही नहीं रहती. बस
तो कहना ही क्या, 'करेला और नीम
यहीं से उन की कला प्रतिभा की उपेक्ष
प्रारंभ हो जाती है. परिवार के सदस्य
इस अहंकार के लिए टिप्पणी एवं
करने लगते हैं, जिस के कारण उ
अहंकाररूपी सर्प आहत हो कर पारि
दंश तक से नहीं चूकता. परिणामस्व
पारिवारिक विघटन का मूल कारण ब
हैं. समाज में उन की कला का सम्मा
के स्थान पर उस का उपहास होना प्रा
जाता है. ऐसी स्थिति में उन के पास
एक ही विकल्प शेष रहता है कि या
कलाकार मन का गला घोट दें
घरपरिवार की कुरबानी दे दें. ब
कलाकार महिलाओं के बिगड़े हुए घर
तथा परित्यक्ता जीवन के मूल में प्रा
कारण अधिक दृष्टिगत होता है.

मैं ने कुछ ऐसी बड़बोलियों
देखा है जो कलाविज्ञ हो कर अहं
वशीभूत हो परिवारजनों को नाराज क
हैं. यदि गायन कला में निपुण महिला

स के गायन को भोंडा और पुरातनपंथी
ह कर तिरस्कृत करे अथवा पति की स्वर
जना को पंचम स्वर में गर्दभ स्वर बताए
भला उस की गायन निपुणता को कौन
हेगा? लेखन कला में पारंगत पत्नी पति
लेखन में बतौर उपहास अशुद्धियां खोज
अपने विदुषी होने का बखान करे तो
ना उस का अहंकार पति और ससुराल
लों के स्वाभिमान पर कैसे चोट नहीं
गा? अतः ऐसी परिस्थितियों से बचे रहना
यंत आवश्यक है. उन को चाहिए कि वे
म्रता एवं कठोर परिश्रम द्वारा परिवार के
ा सामंजस्य बैठा कर कला साधना करें.

ने मुंह मियां मिट्ठू न बनें

विनम्रता से कला साधना में और भी
ार आता है. अपने मुंह मियां मिट्ठू होना
ा का सम्मान नहीं वरन उसे तिरस्कृत
ना ही है. तनिक सोचिए, जब महक
मान है तो स्वयं गुलाब को यह बताने
क्या आवश्यकता है कि वह गुलाब है?
कितनी बड़ी कलाकार हैं लोग स्वतः
जाएंगे. बस, आप तो बुद्धिमत्तापूर्वक
ा साधना जारी रखें. मेरा सुझाव है कि
कभी कोई परिवारजन आप की तारीफों
पुल बांधने भी लगे तो आप शालीनता-
क अपनी लघुता का ही परिचय दें.

कुछ परिवारों में निश्चय ही
भाशाली पत्नियों की कला प्रतिभा की
नहीं होती. वहां पत्नियों को निराश नहीं
चाहिए. अच्छे मूड के क्षणों में पति को
नी प्रतिभा से परिचित करवाएं तथा उन
न में कला के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने
प्रयास करें. उन्हें उस कला के प्रायोगिक
ोग की बात समझाएं. उन सफल
ाकारों के उदाहरण दें जिन्होंने विवाहोपरांत
कला को जिंदा रख कर ख्याति अर्जित
है. यह अवश्य ध्यान रखें कि अपने गुणों
बात करने से पूर्व पति के गुणों की प्रशंसा
ा कभी न भूलें. पति की स्वस्थ
रुचियों को प्रोत्साहन दें. उन की रुचियों
वयं भी रुचि लें. यदि कला और प्रतिभा
के प्रति पति के मन में उदार भाव उत्पन्न हो जाए तो समझिए कि परिवार के अन्य लोग भी आप की योग्यता को समझने लगेंगे. उपयोगिता का अर्थ आर्थिक लाभ से ही नहीं, वरन् मानसिक संतुष्टि से अधिक जुड़ा है. पति और परिवारजनों के सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण से प्रतिभाशाली पत्नी का आत्मविश्वास बढ़ जाएगा.

हां, उन स्त्रियों को कला साधना में अवश्य परेशानी होती है जो मातृत्व के दायित्वों में उलझी हुई होती हैं. यदि सम्मिलित परिवार है तो बच्चे को सास अथवा परिवारजनों के आश्रय में छोड़ कर यथोचित समय निकाला जा सकता है. आप को चाहिए कि आप अपनी कला से अपनी संतति को भी पुरस्कृत करें. इस से जहां आप का अभ्यास बना रहेगा, वहीं आप अपने घर में एक समर्थक एवं अनुगामी और पैदा कर लेंगी. आप चाहें तो अपनी कला का व्यावसायिक प्रयोग भी कर सकती हैं. दूसरों को सिखाने के लिए कोई इंस्टीट्यूट या कला केंद्र खोल कर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चला सकती हैं. इस से जहां आप पति एवं बच्चों को सहयोग दे सकेंगी, वहीं अपनी कला को भी अधिकाधिक निखार सकेंगी और साथ ही, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में भी सफल होंगी.

कई बार सुविधा और अवसर होने के बावजूद कुछ स्त्रियां विवाह के बाद गृहस्थी के चक्रव्यूह में फंसी होने के नाम पर अपने में निहित कला और प्रतिभा को कुंठित होने देती हैं. ऐसी महिलाओं को चाहिए कि वे अपने शौक नहीं छोड़ें. यह शौक कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, पेंटिंग्स, नृत्यकला, गायन, लेखन कुछ भी हो सकता है. बढ़ती उम्र के साथ ही बढ़ते हुए तनावों को हलका करने के साथसाथ बचपन के ये शौक आप के अकेलेपन को दूर करने के प्रिय साथी बन सकते हैं. पढ़ीलिखी प्रतिभाशाली पत्नियों को समझदारी और विवेक से काम लेना चाहिए. उन को अपनी समस्त जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए प्रतिभा के अवसरों को स्वतः ही प्राप्त कर लेना चाहिए. ●

आम एक स्वाद अनेक

आम के फ्रिट्र्स

सामग्री : 2 पके आम, 2 बड़े चम्मच मैदा, 1 अंडा, ¾ प्याला दूध, ¼ छोटा चम्मच पिसी काली मिर्च, ¼ छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच वैनिला सत, 1 प्याला पिसी चीनी, तलने के लिए तेल, गाढ़ी क्रीम, पुदीना पत्ती.

कितने व्यक्तियों हेतु : 2-4.

विधि : मैदा, नमक व काली मिर्च को एकसाथ छानें. अंडे को फोड़ कर खूब झागदार फेंट लें.

धीरेधीरे दूध डालें व फेंटते जाएं. अब धीरेधीरे मैदा मिश्रण डालते जाएं व फेंटते जाएं और बिना गांठों वाला घोल तैयार कर लें. वैनिला सत डाल कर मिलाएं. आमों का छिलका उतार कर उन के पतलेपतले कतले काट लें.

तेल को गरम करने के लिए रखें. कतले उठाउठा कर घोल में डालें व घोल में से कतले उठा कर गरम तेल में छोड़ें व सुनह... आने तक तलें.

पिसी चीनी को एक तश्तरी में फैला... सुनहरे तले कतले फैली चीनी पर डालते... चीनी में लपेटलपेट कर कतले परोसने... तश्तरी में रखते जाएं.

पुदीना लगा कर गाढ़ी क्रीम के साथ ...

कच्चे आम की जैली

सामग्री : 4 मध्यम ... के कच्चे आम, ½ प्याला ... 2¼ छोटे चम्मच जिलेटि... छोटा चम्मच पिसा ... नमक, ½ छोटा चम्मच ... पिसा जीरा, 1 प्याला ...

सजाने हेतु साम... खीरे के कतले, 1 ... टमाटर, 2-3 चे... काले अंगूर.

कितने व... हेतु: 3-4.



आम के फ्रिट्र्स ▲



कच्चे आम की जैली ▶

बनाने में लगने वाला समय : 20 मिनट.

विधि : कच्चे आम को उबाल कर उस का गूदा निकाल लें और उसे चीनी, नमक व जीरे के साथ मिक्सी में चला कर एकसार करें.

½ कटोरी पानी में जिलेटिन को डाल कर घोल लें व आंच पर कटोरी रख कर गुनगुना होने पर उतार लें. मिश्रण को लगातार चलाते रहें. गुनगुना मिश्रण आम मिश्रण में डाल कर मिलाएं.

अब एक जैली का सांचा (मौल्ड) ले कर उस को गीला करें और उस में यह मिश्रण भर कर फ्रीजर में रखें व जैली सेट होने दें.

ठंडीठंडी कच्चे आम की जैली को सांचे से बाहर निकालें व क्रीम के साथ परोसें.

साथ में टमाटर, खीरे, चेरी आदि से सजाएं.

–सुधा माथुर

मैंगो कैरेमल

सामग्री : 2 पके आम, 2 प्याले दूध, 2 बड़े चम्मच कस्टर्ड पाउडर, 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर, 2 बड़ा चम्मच चीनी व 2 बड़े चम्मच पानी कैरेमल बनाने के लिए, 15-20 बादाम या अखरोट.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4-5.

बनाने में लगने वाला समय: ½ घंटा.

विधि : आम छील कर एक आम का गूदा बना लें तथा एक आम के छोटे टुकड़े काट काट लें.

दूध गरम करें. कस्टर्ड पाउडर व कार्नफ्लोर पानी में घोल कर दूध में मिलाएं. चीनी डाल कर गाढ़ा होने तक पकाएं, थोड़ा ठंडा होने पर आम का गूदा व कटे आम मिलाएं.

एक बरतन में चीनी व पानी तब तक पकाएं जब तक भूरा (ब्राउन) हो जाए. इस में बादाम मिला दें. थोड़ा कैरेमल व बादाम कस्टर्ड में मिलाएं.

एक बरतन में बाकी का कैरेमल डाल कर कस्टर्ड डाल कर फ्रिज में 2-3 घंटे रखें. परोसते समय बरतन को सर्विंग डिश में उलट दें. आम के टुकड़ों से सजा कर पेश करें.

–विजय मेहरा

आम पकौड़ी का रायता

सामग्री : 2 मध्यम



▲ मैंगो कैरेमल



आम पकौड़ी का रायता ◄

आकार के कच्चे आम, 1 प्याला बेसन, 2 छोटे चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च, 2 हरी मिर्चों का पेस्ट, ½ छोटा चम्मच जीरा, ½ छोटा चम्मच काला नमक, 1 छोटा चम्मच सूखा पुदीना, 2 प्याले ताजा दही, तलने के लिए तेल, 1 छोटा चम्मच चीनी.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4-5.

बनाने में लगने वाला समय : 30 मिनट.

विधि : कच्चे आम धो कर छील लें. कद्दूकस कर लें. अब बेसन में नमक, मिर्च डाल कर कद्दूकस किए लच्छे डाल दें. तेल गरम कर के छोटीछोटी पकौड़ियां तल लें.

सूखा जीरा भून कर पीस लें. काला नमक, सादा नमक, लाल मिर्च, सूखा पुदीना मिक्सर में एकसार कर लें. दही फेंट कर उस में यह मसाला, हरी मिर्च का पेस्ट व चीनी मिला दें. अब पकौड़ियां डाल दें.

कटी पुदीना पत्ती से सजाएं.

–आशा माथुर

फैनी मैंगो कप

सामग्री : 1 कटोरी फैनी, 2 पके आम, 3 हरी पीसी इलायची, 1½ प्याला दूध, ¾ प्याला चीनी.

सजाने के लिए : कुटी बर्फ, गुलाब पत्ती.

कितने व्यक्तियों हेतु : 2.

बनाने में लगने वाला समय : 10 मिनट.

विधि : आम में चीनी व 1 प्याला दूध डाल कर मिक्सी में चला लें. दूध में फैनी डाल कर गरम करें. जब दूध में फैनी मिल जाए तो ठंडा कर लें. आम के मिश्रण में इसे मिला कर इलायची डाल लें व फ्रीजर में ठंडा होने रखें. परोसते समय, बर्फ कूट कर मिला लें.

प्यालियों में डालें, गुलाब पत्तियों से सजा कर परोसें.

काजू नारियल मैंगो शेक

सामग्री : 1 आम कटा, ¼ कच्चा नारियल, 10-15 काजू, 3 इलायची पीसी, ¼ प्याला चीनी, बर्फ कुटी हुई, 1 प्याला दूध.

कितने व्यक्तियों हेतु : 2-3.

बनाने में लगने वाला समय : 10 मिनट.



फैनी मैंगो कप ▲

काजू नारियल मैंगो शेक ▶

विधि : 1 प्याला पानी में काजूओं को 1 घंटे तक भीगने दें. अब मिक्सी के जार में भीगे काजू (पानी समेत), कच्चा नारियल, आम, चीनी, दूध, इलायची डाल कर चला लें. जब मिश्रण एकसार हो जाए तो कुटी हुई बर्फ डाल कर दोबारा चला लें.

ठंडाठंडा शेक गिलासों में भर कर पेश करें.

–रमा भमोरिया

आम सोरबेट

सामग्री : 4-6 पीले पके हुए आम, 3 नीबू का रस, 4 संतरे का रस, 1 प्याला चीनी, ¼ प्याला पानी, किसी भी प्रकार के 8-10 बिस्कुट या केक रस्क, ½ प्याला क्रीम, 7-8 चेरी, 7-8 अंगूर.

कितने व्यक्तियों हेतु : 4-5.

बनाने में लगने वाला समय : 1 घंटा.

विधि : आम का छिलका उतार कर मिक्सी में चलाएं. पानी में चीनी डाल कर चाशनी बना लें,संतरे का रस निकाल लें, उस में ¼ प्याला चाशनी डाल लें, नहीं तो रस कड़वा हो जाएगा. अब आम का गूदा भी चाशनी में डाल कर धीमी आंच होने पर पका लें. जब वह गाढ़ा हो जाए तो ठंडा होने पर उस में संतरे व नीबू का रस छान कर डालें. पूरे मिश्रण को किसी ढक्कनदार डब्बे में भर कर, ढक कर जमने के लिए रखें.

अच्छी तरह से जम जाने पर प्यालियों में परोसें. ऊपर से क्रीम व कटे फल डालें.

किसी भी प्रकार के बिस्कुटों अथवा केक रस्क पर लगा कर चेरी, अंगूर व क्रीम डाल कर भी परोसा जा सकता है.

मैंगो लीची पनीर शेक

सामग्री : 2 पके आम, 8-10 दाने लीची, 50 ग्राम पनीर, 1 प्याला दूध, 3-4 बड़े चम्मच चीनी.

कितने व्यक्तियों हेतु : 2.

बनाने में लगने वाला समय : 10 मिनट.

विधि : आम का छिलका उतार दें. चीनी, दूध, आधे से ज्यादा पनीर और लीची का गूदा सभी को मिक्सी में चलाएं. कुटी बर्फ डाल कर दोबारा चलाएं. बचा पनीर ऊपर से कस कर डालें. ठंडाठंडा पेश करें.

–अमिता दीक्षित ●



▲ आम सोरबेट



मैंगो लीची पनीर शेक ◄



नजमुज...
- पंकज गोस्वामी
इस शहर का विलक्षण तालाब है.. यह तालाब बहुत लोगों के सहयोग से बना है...
लोगोंनें श्रमदान करके इसकी खुदाई की थी.?
नहीं
दरअसल यहां शहर के सभी मोटे लोगों को इकक्ठा किया गया... और जमीनपर कुदवाया गया था

संतान वाली स्त्रियों का पुनर्विवाह:

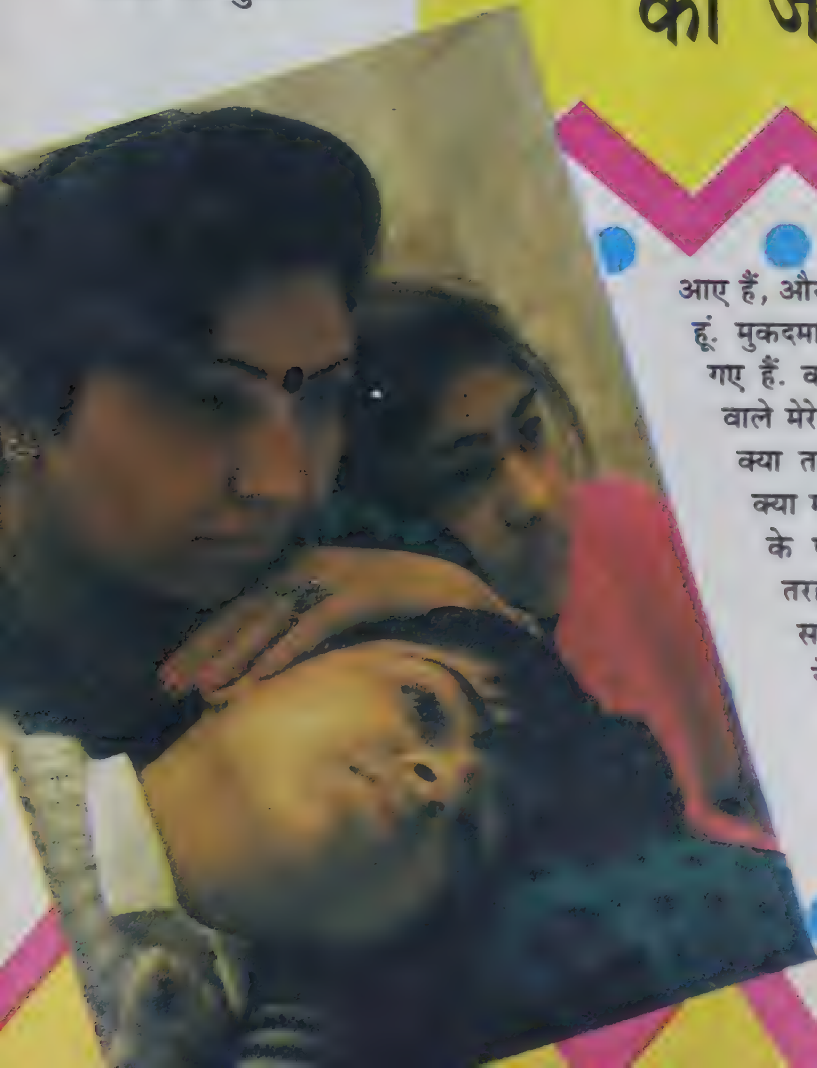
कुछ नई समस्याओं का जन्म

लेख ● कुमार

एक विधवा ने अपनी समस्या इन शब्दों में बताई:

"विवाह के 3 वर्ष बाद ही मेरे पति का देहांत हो गया. पति की मृत्यु के बाद ससुराल वालों ने पंचायत कर के बेटे के साथ मुझे मायके भिजवा दिया. कुछ दिनों बाद मायके वालों ने मेरी दूसरी शादी कर दी. बेटे को मैं अपने पति की मरजी से साथ ले गई, क्योंकि मेरा पति नपुंसक है, मैं नौकरी करती हूं तथा अपने बेटे को पढ़ा रही हूं.

"अब मेरे प्रथम ससुराल वालों ने वकील के माध्यम से नोटिस दिया है कि वे अपना 'पोता' चाहते हैं. इस मुकदमे के कारण मेरे वर्तमान पति ने भी मुझे मायके में छोड़ दिया है. अब न तो मेरे (दूसरे) पति लेने आए हैं, और न मैं जाना ही चाहती हूं. मुकदमा शुरू हुए 2 वर्ष हो गए हैं. क्या मेरे प्रथम ससुराल वाले मेरे बेटे को ले सकते हैं? क्या तलाक लेना जरूरी है? क्या मां के रहते बच्चा दादा के पास रहेगा? मैं किस तरह से बेटे को अपने साथ रख सकती हूं? मैं ने अपने बेटे की खातिर दूसरी शादी की थी."



आजकल यह एक नई समस्या उठ खड़ी हुई है. कल

तक पुनर्विवाह का न होना एक समस्या थी. अब बदली हुई परिस्थितियों में पुनर्विवाहों के मामले में संतान वाली स्त्रियों की नई समस्याएं गंभीर रूप में सामने आ रही हैं. सौतेली मां की समस्या से अलग हट कर यह सौतेले पिता की समस्या और दादेपोते की समस्या तथा भाईभतीजा के द्वंद्व में फंसी औरत का दयनीय पक्ष है.

संतान वाली स्त्रियों का पुनर्विवाह होना एक अच्छा कदम तो है. किंतु उन से सामाजिक, कानूनी और पारिवारिक समस्याओं का जो जाल बनता है उस की तरफ कम ही ध्यान दिया गया है. ऐसी संतान वाली स्त्री विधवा या तलाकशुदा हो सकती है. संयुक्त परिवारों में संतान वाली विधवा का घर में

आजकल जब पुनर्विवाह को समाज में स्वीकृति मिल गई है तो एक नई समस्या आड़े आने लगी है और वह है संतान वाली स्त्रियों की समस्या. उन्हें व उन के बच्चों को 'सौतेले' शब्द के 'अभिशाप' को झेलने के अलावा कई अन्य पेचीदगियों से दोचार होना पड़ता है तो क्या ऐसी स्त्रियां विवाह न करें?

रह पाना बहुत ही मुशकिल हो जाता है. सास, देवरानी, जेठानी उस का जीना हराम कर देती हैं. यदि माससुसर न हों तो स्थिति बहुत ही गंभीर हो उठती है.

यदि वह विधवा है और आर्थिक रूप से अपने पांवों पर नहीं खड़ी है, तो उसे नौकरानियों जैसा बरताव मिलता है. लड़भिड़ कर यदि वह अपने पति की संपत्ति ले कर अलग भी रहने लगे तो चाहे वह युवती हो या प्रौढ़ा, समाज की विकृत निगाहों का सामना उसे करना पड़ता है.

कई संतान वाली मांएं अपने बच्चों क
ले कर अपने मायके में भी रहने लगती
मायके में उन्हें सुरक्षा और प्यार तो मि
जाता है, मन भी लग जाता है. फिर
यदाकदा मांबाप, भाईभाभी से मिलने वा
तीखे व्यंग्यबाणों से वह बच नहीं पाती.

जिस हिसाब से आजकल घरों में विव
बढ़े हैं, तलाकों की संख्या भी बढ़ने ल
है. तलाक की प्रक्रिया जटिल अवश्य
लेकिन तलाक मिलना असंभव नहीं. तला
प्रायः पुरुषों की बराबरी करने का स्व
देखने वाली स्त्रियों में होता है. नारी रक्षा व
चौधरानियों के उत्तेजनापूर्ण भाषणों से त
मातापिता की गलत शिक्षा से प्रायः ऐसा
जाता है.

इन तीनों ही परिस्थितियों में सब
ज्यादा प्रताड़ना और मुसीबतें स्त्री को
उठानी पड़ती हैं. पुनर्विवाह कर लेने पर प
पति से संतान होने की स्थिति में कई प्रक
की समस्याएं सामने आती हैं.

इस के अलावा संपत्ति को ले क
कानूनी झगड़े खड़े हो जाते हैं. यदि दू
पति से भी संतान हो गई तो वह भी अप
पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी बन जा
है. बड़े होने पर सौतेले भाइयों में भी त
सकती है या फिर दूसरे पति की पहली पत
से हुई संतानें अपनी 'सौतेली' मां से 'दुख
हो सकते हैं.

कल्पना कीजिए, यदि संतान वाली स
दूसरा विवाह करने के बाद मर जाए तो उ
की संतान की क्या हालत होगी? वह कानू
तौर पर तो अपने 'सौतेले' पिता का बच
है ही, लेकिन सौतेला पिता उसे किस त
पाले? उस की मां जब मर गई तो फिर उ
का कोई रक्त संबंध नहीं रह जाता. ऐ
स्थिति में वह बच्चा बीच में लटका रह जा
है. कानून भी कोई खास संरक्षण नहीं
सकता. पारिवारिक और सामाजिक तौर
उस की दुर्गति ही होती है.

यदि दूसरा पति अपनी पूर्व पत्नी
बच्चों को छोड़ कर मर जाए और स्त्री विध
हो जाए, तो फिर अनेक झंझट खड़े हो ज

हैं. वह अपने पति की संपत्ति की हकदार कैसे हो और अपने सौतेले बच्चों को कैसे पाले?

एक स्थिति यह भी हो सकती है कि पतिपत्नी दोनों ही मर जाएं. फिर सौतेले बच्चे आपस में लड़ें, मरें. यदि दूसरे पति से भी कोई बच्चा हो गया है तो अपने मांबाप दोनों की मृत्यु के बाद वह तीसरे सौतेले के रूप में सामने आएगा. वह लड़ेगा कि संपत्ति का



संतान वाली स्त्रियों को पुनर्विवाह का निर्णय बहुत सोचसमझ कर लेना चाहिए कहीं ऐसा न हो कि अकेलापन मिटने की बजाय और बढ़ जाए.

असली वारिस तो मैं हूं. बाकी सब 'सौतेले' हैं. यहां कानून की बड़ी पेचीदगियां सामने आ जाएंगी.

संतान वाली स्त्रियां यदि दूसरा विवाह न करें तो उन के सामने ये समस्याएं उपस्थित नहीं होतीं. तो क्या संतान वाली स्त्रियों को दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए? करना चाहिए, मगर इसे ठीक से निभाने के लिए परंपरागत समाज व परिवार व्यवस्था में सुधारों की आवश्यकता है. विदेशों में भी इस तरह की समस्याएं आती हैं लेकिन संयुक्त परिवारों की परंपरा न होने के कारण तथा पुत्र को ही संपत्ति का उत्तराधिकारी जन्मतः न मानने के कारण वहां यह समस्या इतनी गंभीर नहीं है. लेकिन भारत में जब तक विवाह कानूनों में अपेक्षित परिवर्तन नहीं होता, पुनर्विवाह के बाद होने वाले सामान्य झगड़े और समस्याएं चलेंगी ही.

संतान वाली स्त्री को दूसरा विवाह करने का निर्णय बहुत सोचसमझ कर लेना चाहिए. दूसरा विवाह करने से पहले उसे भावी पति के बारे में जानकारी कर लेनी चाहिए. यह तो लगभग तय सा ही है कि संतान वाली स्त्री से कोई विधुर या ऐसा प्रौढ ही विवाह करेगा जिस के बिन मां के बच्चे हों. यदि विवाह करने वाली स्त्री केवल एक ही बच्चे की मां है तो उसे दूसरा विवाह कर लेना चाहिए. यदि बच्चा पुत्र है तो फिर उसे नए विवाह से संतान की तब तक रोकथाम करनी चाहिए, जब तक कि उस का नया पति उस के लिए पूरी तरह राजी न हो. यदि नए पति के भी पहले से बच्चे हैं तो उन्हें ही अपना मातृत्व देना चाहिए और नई संतान के बारे में नहीं सोचना चाहिए.

जब तक संयुक्त परिवारों में पुत्र को संपत्ति का कानूनी उत्तराधिकार मिलता रहेगा दादा या चाचा भी, अदालत में उस पर यह तर्क दे कर, दावा करते रहेंगे कि बच्चे का 'सौतेला' पिता होने के कारण उस की मां ठीक से उस की परवरिश नहीं कर सकती. वैसे भी सौतेले पिता, भाइयों के बीच अपनापन हो ही नहीं पाता. एक दूरी बनी ही रहती है.

विधवा हो जाने की स्थिति में कुछ समय पिता या भाई के यहां रहने के बाद ही संपत्ति की बात उठती है. हां, यदि संतान नहीं है, फिर यदि तलाक होता है या विधवा हो जाती है, तो दूसरा विवाह करने में कोई दिक्कत है ही नहीं. ●



फर्नीचर

लेख ● रेखा सक्सेना

आजकल फर्नीचर का प्रयोग काफी बढ़ गया है. यहां तक कि उच्च व मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए तो यह अनिवार्यता का प्रश्न बन चुका है. वैसे अन्य परिवारों में भी थोड़ाबहुत फर्नीचर तो प्रयोग में आता ही है.

फर्नीचर चाहे बेंत का बना हो, लकड़ी का अथवा लोहे का, है यह एक महंगा सामान. इसे पर्याप्त सावधानी से रखरखाव की आवश्यकता होती है, जिस के अभाव में वह शीघ्र अपनी रौनक खो देता है और उस का जीवन काल भी घट जाता है.

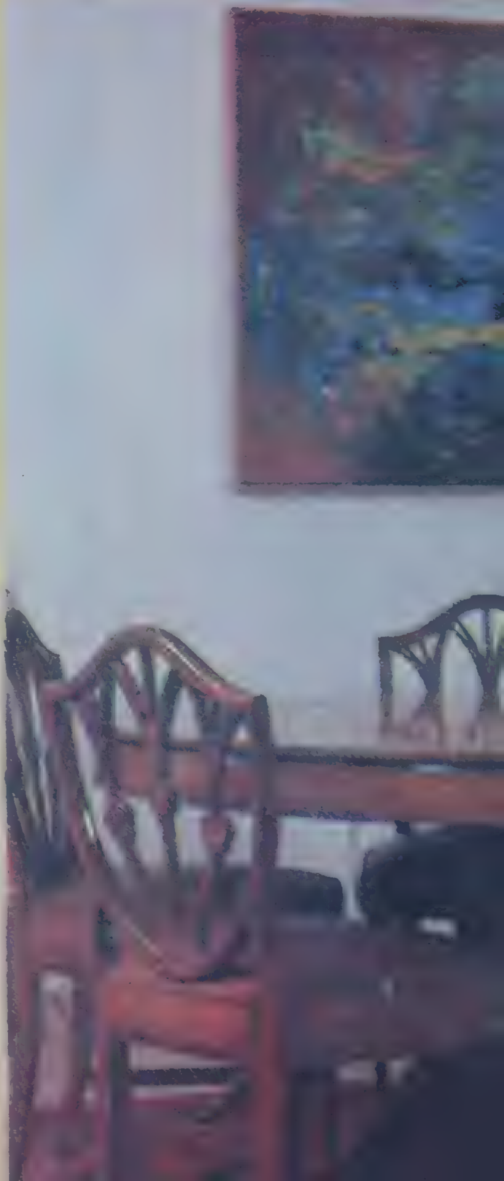
फर्नीचर का रखरखाव कोई ऐसा जटिल विषय नहीं जिस के लिए कोई विशेष शिक्षा आदि की आवश्यकता पड़ती हो. एक सामान्य व्यक्ति भी थोड़ीबहुत सूझबूझ से इसे दीर्घ जीवन प्रदान कर सकता है.

यहां फर्नीचर के रखरखाव के संबंध में कुछ उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिन्हें अमल में ला कर लाभ उठाया जा सकता है.

सामान्य सावधानियां

फर्नीचर को यथासंभव ऐसे स्थान पर रखें जहां पानी व सीलन पहुंचने की संभावना न हो. उदाहरण के लि उसे ऐसी खिड़की, रोशनदान दरवाजे के पास न रखें जहां वर्षा पानी आ सकता हो. फर्श आदि धो या पोंछते समय इस बात का विश ध्यान रहे कि पानी फर्नीचर प्रभावित न करे.

धूलमिट्टी व तेज धूप



फर्नीचर के लिए हानिकारक हैं. इन से भी बचाव करना श्रेयस्कर है.

बच्चों की शरारतों व प्रयोग के ढंग से फर्नीचर को काफी खतरा रहता है. इस ओर भी ध्यान रखें. बच्चों को सामान्यतः ड्राइंग रूम में अथवा कीमती फर्नीचर के निकट जाने से रोकें.

दागधब्बे फर्नीचर की शोभा बिगाड़ते हैं. अतः इन्हें यथाशीघ्र साफ कर दें अथवा वे अपना प्रभाव छोड़ देंगे.

फर्नीचर की नियमित रूप से सफाई करना आवश्यक है. अलगअलग किस्म का फर्नीचर भिन्नभिन्न ढंग से सफाई चाहता है. सफाई करते समय हर अंग का ध्यान रखें. सिर्फ ऊपरी सतह साफ कर के संतुष्ट होने की भूल न करें. उदाहरण के लिए डाइनिंग टेबल साफ करते समय उस के पाए पोंछना न भूलें. नक्काशीदार फर्नीचर विशेष देखभाल

का रखरखाव कैसे करें?



चाहता है. जैसे, इस की सफाई ब्रश से करें.

फर्नीचर आमतौर पर सूखे कपड़े या फिर गुनगुने पानी में भीगे (निचुड़े हुए) कपड़े से साफ हो जाता है परंतु यह आवश्यक होता है कि धूलमिट्टी या पानी का अंश उस पर रह न जाए. गीले कपड़े से पोंछने के उपरांत उसे सूखे कपड़े से साफ करना जरूरी होता है.

उपर्युक्त ढंग से सफाई करने पर यदि धब्बे पूरी तरह साफ न हो सके हों तो उन्हें हलके साबुन के गुनगुने घोल से साफ कर के बाद में गीले व फिर सूखे कपड़े से पोंछ दें. लेकिन सारा फर्नीचर भिगोने की आवश्यकता नहीं है.

सनमाइका की सतह वाले फर्नीचर पर खरोंच (स्क्रैच) आदि न पड़ें इस का ध्यान रखना होता है. वैसे सफाई की दृष्टि से यह सुविधाजनक होता है. प्रायः गीले कपड़े से ही यह साफ हो जाता है.

कुछ व्यक्ति तेल व पानी के मिश्रण से सभी प्रकार के फर्नीचर की सफाई करने लगते हैं. यह ठीक नहीं है. इस से अस्थायी चमक तो आ जाती है लेकिन तेल का अंश शीघ्र ही धूल कण पकड़ने में अधिक सक्षम होता है. अतः फर्नीचर शीघ्र धूल से पट जाता है और धीरेधीरे चमक खो बैठता है.

मोमबत्ती के प्रयोग के दौरान मोम की कुछ बूंदें फर्नीचर पर गिर जाया करती हैं. इन्हें चाकू या तेज धार वाली वस्तु से खुरच कर उतारने से निशान पड़ सकता है. इन्हें किसी सख्त गत्ते से साफ करें. फिर भी यदि कुछ मोम चिपका रह जाए तो गरम पानी में भीगे कपड़े को सिर्फ उसी भाग पर रखें और कुछ सेकंड बाद पोंछ डालें.

सफाई करते समय सभी ओर अच्छी तरह देख लें कि कहीं से कोई हिस्सा मरम्मत तो नहीं मांग रहा है. यदि कोई कील आदि ठोकने से काम बन सकता हो तो स्वयं कर लें अन्यथा जहां कार्य आप की कुशलता से परे का हो तो कुशल कारीगर से मरम्मत करवा लें. लापरवाही बरतने से नुकसान अधिक हो सकता है.

पुनः वहीं कस कर बांध दें तथा सिरे बारीक कील लगा कर रोक दें.

इसे धूप से बचाना अधिक जरूर अन्यथा यह आभाहीन व बेडौल हो जात नमी भी इसे हानि पहुंचाती है. समयसमय इसे पालिश की आवश्यकता पड़ती है.

नमक मिले गुनगुने पानी में मुल कपड़ा भिगो कर इसे सामान्यतः साफ जा सकता है. लेकिन इस से पूर्व धूल साफ करना आवश्यक है.

तेज गरम पानी में थोड़ा सा अ का तेल व उस की आधी मात्रा तारपीन तेल मिला कर मिश्रण तैयार कर लें. इ मुलायम कपड़ा भिगो कर गरम रहते पालिश करें. बाद में सूखे कपड़े से पोंछ

बेंत की कुरसी यदि ढीली हो जा

फर्नीचर चाहे कितना भी महंगा क्यों न हो, बिना रखरखाव शीघ्र ही उस की रौनक खत्म हो जाती है. परंतु आप चाहें तो उस की चमक बरकरार रख सकते हैं. बस जरा इ सुझावों पर अमल कर के देखिए...

जिन दिनों घर में रंगाईपुताई का काम चल रहा हो फर्नीचर को किसी मोटे कपड़े से ढकना न भूलें. फिर भी यदि कहीं कोई छींट गिर जाए तो तुरंत उचित विधि से साफ कर दें.

फर्नीचर को चढ़नेउतरने का माध्यम न बनाएं. इस के लिए किसी मजबूत स्टूल का प्रयोग करें या सीढ़ी अपनाएं.

बेंत का फर्नीचर

बेंत यानी केन से बने फर्नीचर का प्रचलन इधर कुछ समय से फिर बढ़ गया है. वजन में हलका होने के कारण व्यावहारिक रूप में इस की धरपटक अधिक होती है जिस के कारण यहांवहां गड़ी कीलें बाहर निकल आती हैं अथवा बंधन ढीले पड़ जाते हैं और यदि इन समस्याओं का तुरंत उपचार न किया जाए तो समस्या अधिक जटिल हो जाती है. अतः बाहर उभरी कील को तुरंत वहीं ठोंक दें तथा ढीले हो रहे बंधन को

वह भाग गरम पानी में नीबू मिला कर तथा कुछ समय धूप में रख कर सु ढीलापन कुछ हद तक दूर हो जा तत्पश्चात पालिश कर लें.

कुछ लोग बेंत के फर्नीचर पर पेंट लेते हैं. यदि आप की रुचि हो तो आप अपना लें विशेष कर तब जब इसे बगीचे में या बाहर खुले में रखना हो.

लकड़ी का फर्नीचर

अधिकतर फर्नीचर लकड़ी का होता है. इस का प्रयोग करते समय भी सावधानी नहीं बरती जाती, जितनी फर्नीचर की.

लकड़ी को धूप से बचाव की जरूरत होती है, अन्यथा वह बदरंग हो स है या फिर उस में दरारें पड़ जाती हैं. क कभी धूप से आकार भी बिगड़ जाता

सामान्य किस्म के फर्नीचर को पानी में थोड़ा सा तरल डिटरजेंट डाल



कपड़े की मदद से साफ किया जा सकता है लेकिन उस के तुरंत बाद गीले कपड़े से पोंछ कर साफ करना न भूलें. इस के उपरांत सूखे कपड़े से साफ कर दें. गुनगुने पानी में सिरका मिला कर भी सफाई की जा सकती है.

वार्निश युक्त फर्नीचर की सामान्य सफाई के लिए गरम पानी में थोड़ा पैराफीन मिला कर मुलायम कपड़े से साफ करें. सूखने पर सूखे कपड़े से रगड़ कर पोंछ डालें.

लकड़ी के फर्नीचर पर कभीकभी पालिश की जा सकती है. पालिश तैयार करने की विधि इस प्रकार है: 100 ग्राम अलसी के तेल मं 100 ग्राम तारपीन का तेल, 50 ग्राम मेथिलेटिड स्पिरिट तथा 50 ग्राम सिरका मिला कर घोल तैयार कर लें. इसे ब्रश या मुलायम कपड़े से प्रयोग में लाएं. इस से चमक आएगी तथा फर्नीचर सुरक्षित भी रहेगा. पालिश के बाद सूखे कपड़े से रगड़ना न भूलें.

एक अन्य घरेलू पालिश को इस तरह तैयार किया जा सकता है: आधा लीटर थिनर या तारपीन का तेल ले कर उस में 50 ग्राम लाख के दाने तथा 50 ग्राम चंद्रस डाल कर ढक दें. लगभग आधे घंटे में दाने गल कर घुल जाएंगे. अब किसी लकड़ी से चला कर पालिश करने के काम में लें. यह लगभग रंगहीन होती है लेकिन चाहें तो मनचाहा रंग

बेंत के फर्नीचर पर पेंट कर के उसे आकर्षक रूप दिया जा सकता है.

मिलाया जा सकता है. इसे ब्रश की मदद से प्रयोग करें तथा फर्नीचर को सूखने तक छेड़छाड़ न करें.

लकड़ी के फर्नीचर पर पड़े खरोंच आदि के निशान दूर करने के लिए जैतून के तेल में उतनी ही मेथिलेटिड स्पिरिट मिला कर कपड़े की मदद से प्रभावित स्थान पर रगड़ें.

दरारों को भरने के लिए यों तो बाजार में तैयार पदार्थ उपलब्ध हैं लेकिन छोटीमोटी जगह के लिए मोम भर कर पालिश कर देने से काम चल जाता है.

ऐसे फर्नीचर पर यदि पानी के दाग पड़ जाएं तो जैतून के तेल में थोड़ा सा नमक मिला कर रगड़ें.

स्याही के धब्बे नीबू के रस से हटाए जा सकते हैं.

लकड़ी से बनी अलमारियों अथवा मेजों की दराजों आदि में नमी के कारण दुर्गंध सी आने लगती है. बिना बुझे चूने के कुछ टुकड़ों को ऐसी जगह रख देने से चूना नमी सोख लेता है.

लकड़ी में यदि दीमक लगने के लक्षण दिखाई दें तो कीट नाशक दवा छिड़कें. न

होने पर तारपीन के तेल से भी काम चलाया जा सकता है.

लोहे का फर्नीचर

इस प्रकार के फर्नीचर को पानी व नमी से बचाना अति आवश्यक है अन्यथा जंग लगने का भय बना रहता है. जंग के कारण प्रभावित स्थान को मिट्टी के तेल से साफ कर के पोंछ दें फिर ग्रीस चुपड़ दें. जंग नहीं फैलेगी.



लकड़ी का फर्नीचर साफ करने के लिए गुनगुने पानी में सिरका मिला कर भी सफाई की जा सकती है.

लोहे के फर्नीचर को गरम पानी में अमोनिया मिला कर साफ किया जा सकता है. वैसे गुनगुने पानी में तरल डिटरजेंट मिला कर भी सफाई की जा सकती है.

भारी सामान को बारबार इधरउधर न सरकाएं वरना पैर कमजोर हो कर टूट सकते हैं और निशान भी पड़ जाने का भय रहता है.

चमड़े का फर्नीचर

ऐसे फर्नीचर की सफाई के लिए सैडल सोप (जूता बनाने वाले के पास उपलब्
की मदद लें. अतिरिक्त चमक हेतु अंडे
सफेदी रगड़ें.

चमड़े पर लगे दाग पेट्रोल की मदद
हटाए जा सकते हैं.

फर्नीचर पर चढ़े चमड़े को सूखने
बचाने के लिए कभीकभी अरंडी का ते
मलना चाहिए. वैसलीन भी काम निका
सकती है. अन्य तेल जैसे अलसी, किरासी
सरसों, तिल आदि से परहेज रखें.

रैक्सीन को तर
डिटरजेंट की मदद से सा
किया जा सकता है किंतु ब
में पानी से भली प्रकार सा
कर दें.

ऐसा फर्नीचर जिस
कपड़ा चढ़ा हो यथा सो
आदि, रखरखाव की दृष्टि
अधिक जटिल होता है. इ
में धूल आसानी से बैठ जा
है और यदि उचित विधि
तुरंत साफ न किया जाए
कपड़ा मैला हो जाता
बारबार धोना न तो संभ
होता है, साथ ही इस से कपड़े की चम
व रंग आदि पर कुप्रभाव पड़ता है. इस प्रक
के फर्नीचर के पसीने, चीकट तथा सिर
तेल आदि से भी प्रभावित होने की प्रब
संभावना रहती है.

अतः सोफे पर कोई आकर्षक क
सदैव चढ़ा कर रखें. ये सुगमता से तैय
मिल जाते हैं और सुरक्षा प्रदान करते हैं.

सफाई करने के लिए वैक्यूम क्ली
का प्रयोग सुविधाजनक व कारगर सिद्ध हो
है और सप्ताह में एक बार करना पर्या
रहता है.

यहांवहां उभर आए मैल आदि के धब
को हटाने के लिए परेशान होने
आवश्यकता नहीं है. कपड़े को हटाना

व्यावहारिक दृष्टि से संभव नहीं होता है अतः ऐसे ही सफाई करनी पड़ती है. विधि इस प्रकार है: एक मग पानी ले कर उस में थोड़ा सा लक्स-फ्लैवस (साबुन) मिला कर गरम करें. अब उस में थोड़ा सा अमोनिया अथवा सुहागा डाल कर मिश्रण को ठंडा होने दें. फिर एक कपड़े को इस में भिगो कर मैल वाले स्थान पर धीरेधीरे रगड़ें. मैल हट जाने पर तुरंत पानी में भीगे कपड़े से साफ करें. धीरेधीरे इस तरह सभी स्थानों पर सफाई कर लें. बाद में तेज पंखा चला कर सुखा लें किंतु धूप में न रखें.

प्लास्टिक का फर्नीचर

आजकल प्लास्टिक के फर्नीचर का भी प्रचलन है, जिसे साफ करना काफी सरल है. किसी अच्छे डिटरजेंट को एकमग गरम पानी में घोल कर कपड़े की सहायता से साफ करें. बाद में साफ पानी से धो डालें.

प्लास्टिक के फर्नीचर को भी धूप से बचाएं, नहीं तो वह बदरंग हो सकता है.

प्लास्टिक की केन से युक्त फर्नीचर हो तो उस की केन भी साबुन मिले पानी से साफ की जा सकती है.

अन्य प्रकार के फर्नीचर

- एल्यूमीनियम का क्रोमियम या अन्य पालिश युक्त फर्नीचर हलके साबुन के घोल से साफ कर के गीले कपड़े से पोंछ डालें.
- जिस फर्नीचर में पीतल का काम हो वहां नीबू, सिरका या इमली की सहयता से चमक लाई जा सकती है. वैसे ब्रासो पालिश बड़ी उपयोगी रहती है.
- शीशों को चूना मिले पानी या समुद्र झाग से साफ करें, चमक उठेंगे. ●

ये पत्नियां

शादी के बाद के दिनों में जब मुझे गुस्सा आता तो मेरे पति कहते, "अब हमारी अवस्था बच्चों की तरह लड़ने की नहीं रही."

पति के इस तरह कहने का सिलसिला दूसरे बच्चे के जन्म के समय तक भी जारी रहा. एक बार मेरे गुस्सा करने पर जब उन्होंने अपनी बात दोहराई तो मैं ने कहा, "हमारी तो कभी गुस्सा करने की अवस्था थी ही नहीं, हम तो पैदाइशी बुजुर्ग हैं."

–सुमन कोशल

*

मेरे पति को हर किसी चीज की प्रशंसा करने की आदत है.

एक बार हम उन के मित्र के घर गए तो उन्होंने मित्र की पत्नी के खाने की बहुत तारीफ की. बातोंबातों में मित्र की पत्नी ने एक टाई दिखाई जो वह अपने पति के लिए लाई थी. मेरे पति ने टाई की भी खूब प्रशंसा की. यह प्रशंसा सुन कर मित्र की पत्नी ने कहा, "मेरे पति को यह टाई पसंद नहीं आई. आप ले लीजिए, कीमत भी ज्यादा नहीं, सिर्फ 300 रुपए है."

–के. शामला आनंदरम

*

एक बार मेरी रिश्ते की मौसी अपने बच्चे को बांहों में ले कर झूले की तरह झुला रही थीं.

मौसाजी ने खुश हो कर कहा, "डार्लिंग, जो हाथ झूला झुलाते हैं वही संसार पर शासन करते हैं."

मौसीजी ने मौसाजी की बांहों में बच्चे को देते हुए कहा, "लीजिए आप भी थोड़ी देर के लिए शासन कर लें."

–सरिता पांडेय

*

हमारी प्यारी सी बेटी के जन्म पर हमारे पड़ोसी उसे देखने आए.

पड़ोसी ने मुसकराते हुए कहा, "एकदम बाप पर गई है."

मेरी हाजिरजवाब पत्नी ने कहा, "अरे भाई, इन की बच्ची है, अपने बाप पर नहीं जाएगी तो क्या पड़ोसी पर जाएगी?"

–विनोद चौधरी

*

मेरी पत्नी को छोटीबड़ी सभी बातों के लिए मुझ पर निर्भर रहने की आदत है.

एक बार उसे कहीं जाना था पर मैं समय पर नहीं पहुंच सका और वह नहीं जा सकी. वह लड़ने के लिए तैयार हो गई तो मैं ने कहा, "जब देखो तब मेरे पीछे पड़ी रहती हो?"

उस ने कहा, "खुद तो मैं जाने से रही, रही बात पीछे पड़ने की तो आप जिसे कहें उस के पीछे पड़ जाऊं."

–प्रेम प्रकाश अग्रवाल ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लड़कियां झूठ क्यों बोलती हैं?

लेख ● संगीता शर्मा

रमा एक पत्रकार है. जब भी वह वि
समाचारपत्र के दफ्तर कोई लेख
जाती है तो सब से यही कहती है
काफी लेखन कार्य कर रही हूं. कई वि
अखबारों एवं पत्रिकाओं में लिख रही
रेडियो पर भी वार्त्ताएं दे रही हूं.

कई लोग उस की इन बातों से क
प्रभावित भी हुए कि वह वास्तव में क
काम कर रही है. मगर एक बार एक संपा
ने उस से पूछ ही लिया कि वह बाहर
कौन-कौन से समाचारपत्रों व पत्रिकाओं
किनकिन विषयों पर लिख रही है व रे
पर क्या वार्त्ताएं दे रही है?

इस पर पहले तो वह सकपकाई ले
उस ने कुछ मशहूर विदेशी पत्रिकाओं के
याद कर रखे थे, अतः उन्हीं का नाम
हुई बोली, "मैं इनइन पत्रपत्रिकाओं में
रही हूं."

उस की बात सुन वे बोले, "मैं उ



से कई पत्रपत्रिकाओं का नियमित पाठक हूं और इन में से किसी में भी मैं ने आप का लेख कभी नहीं पढ़ा है, आप क्यों बेकार में झूठ बोल रही हैं?"

संपादक की बात सुन कर रमा का चेहरा उतर गया था. इस बात से नहीं कि उस की पोल खुल गई बल्कि इस बात से कि वह अपने झूठ को सच साबित नहीं कर सकी.

दरअसल, कई औरतों की बातबात में झूठ बोलने की आदत होती है और फिर किसी तरह उस झूठ को सही साबित करने की. आजकल झूठ और फरेब का सहारा ले कर अपनी छवि को दूसरों की नजर में उठाने वाली लड़कियों एवं औरतों का वर्ग फैलता जा रहा है. खुद को ऊंचा दिखाने की होड़ में बेमतलब झूठ बोलती हैं. ऐसी लड़कियां स्कूल, कालिज, दफ्तर, बाजार हर जगह देखने को मिल जाती हैं.



झूठ बोलने से लड़कियों की गरिमा कम हो जाती है. उन के व्यक्तित्व में छोटापन आ जाता है. उन के बारे में लोगों की गलत धारणा बन जाती है. वे यह मान लेते हैं कि यह लड़की जो भी कह रही है, झूठ कह रही है और फिर वह किसी की विश्वसनीय नहीं बन पाती है. कोई उस की बातों पर भरोसा नहीं करता है.

लड़कियों में झूठ बोलने की आदत का विकास बचपन से ही होता है. कई लड़कियां पढ़ाईलिखाई, खेलकूद में बिलकुल होशियार नहीं होती हैं. वे बहाने बना कर पढ़ाई से बचना चाहती हैं और बहाने बनाने की आदत से ही उन में झूठ बोलने की आदत पड़ती है. कई लड़कियां स्कूल का काम नहीं करतीं और बाद में अध्यापिका की पिटाई के डर से झूठ बोलने लगती हैं कि कापी घर छूट गई, कल हमारे यहां मेहमान आ गए थे इसलिए काम नहीं कर पाई या कल बिजली चली गई थी इसलिए होमवर्क नहीं किया आदि तमाम बहाने बना कर बचना चाहेंगी. इसी तरह कई लड़कियां घर में कामकाज करने के समय झूठ बोलेंगी कि मेरे सिर या पेट में दर्द हो रहा है. बारबार ऐसे किसी झूठ का सहारा ले कर वे काम से छुटकारा पाना चाहती हैं. उन के इन झूठों से कई बार उन्हें काम से तो छुट्टी मिल जाती है मगर धीरेधीरे झूठ उन की हर बात पर हावी होने लगता है.

कई बार लड़कियों को झूठ बोलने की ट्रेनिंग अपने मांबाप से ही मिल जाती है. जैसे कमलिका ने बचपन से देखा था कि उस की मां उस के चचेरे भाईबहनों से उसे दूर रखती थी. कमलिका अपने मांबाप की इकलौती बेटी थी इसलिए मां उसे लाड़ से कुछ ज्यादा ही खिलाती-पिलाती मगर हमेशा सिखाती, "कोई पूछे, नाश्ता किया? तो कहना नहीं, अभी करूंगी." उन्हें लगता कि हां कहने से उन की बेटी को नजर लग

जाएगी. इसी तरह उस के ताऊ और चाचा के बच्चे उस की मां से कुछ खाने को मांगते तो वह कह देती खत्म हो गया. कमलिका के पिता के अपने ससुराल वालों से संबंध अच्छे नहीं थे. वह किसी को भी कमलिका की नानी के यहां नहीं जाने देते थे. मगर कमलिका की मां छिपछिपा कर वहां जाती थी और कमलिका से कहती थी कि अगर पापा पूछें तो कहना मम्मी बाजार गई थी, नानी के घर की बात मत कहना. और फिर एक टाफी या चाकलेट के लालच में कमलिका यही दोहरा देती.

अतएव उस घर में झूठ बोलने का जो वातावरण था, उस का कमलिका पर पूरापूरा प्रभाव पड़ा. वह भी हर किसी से झूठ बोलने लगी. उस की आदत उस की शादी के बाद भी बरकरार रही.

एक बार उस का देवर कहीं बाहर गया हुआ था. वहां पैसे की सख्त जरूरत पड़ी. उस ने 3 बार अपने भाई को फोन किया. फोन कमलिका ने उठाया और तीनों बार कह दिया कि उस के पति घर में नहीं हैं, जबकि वह घर में ही थे. उधर जब उस के पति ने पूछा कि किस का फोन है तो भी वह झूठ बोली कि उस की सहेली का.

समय पर पैसा न पहुंच पाने के कारण कमलिका के देवर को बहुत घाटा हुआ. वह घर लौटा तो सारी बात पता चली कि कमलिका झूठ बोल रही थी. कमलिका की इस आदत के कारण उस के ससुराल के लोग तो उस से नाराज हुए ही साथ ही उस के पति ने उसे खूब तिरस्कृत किया.

दरअसल झूठ बोलने की आदत एक तरह की बीमारी है जिसे डाक्टर मिथोमैनिया कहते हैं. इस रोग से पीड़ित लड़कियां झूठ

लड़कियों में अपने को बढ़ाचढ़ा कर बताने की आदत होती है इस के लिए वे अकसर झूठ का सहारा लेती हैं. परंतु इस तरह झूठ बोल कर क्या वह दूसरों की नजर में अपनी गरिमा धूमिल कर उस में छोटापन नहीं ले आती हैं?

बिना किसी कारण के यों ही बोलती हैं सच बोल कर कभी भी परिस्थिति सामान्य बनाना नहीं चाहती हैं बल्कि बोल कर सामान्य परिस्थितियों को असामान्य बना देना चाहती हैं. जिस बात उन का कोई मतलब नहीं है, जिस बात उन का कोई नुकसान नहीं है, वहां भी बेमतलब झूठ बोलती हैं. अलगअलग औ और लड़कियों में इस रोग के लक्ष अलगअलग होते हैं. कई औरतें केवल अ अहम के कारण झूठ बोलती हैं तो अपनी बदचलनी और कामुक प्रवृत्ति छिपाने के लिए झूठ बोलती हैं.

मिथोमैनिया रोग से पीड़ित महिल साधारणतया अपने बारे में बढ़ाचढ़ा बताना पसंद करती हैं. किसी साधारण चीज को असाधारण बना कर पेश क उन की आदत हो जाती है. जो काम उन कभी नहीं किया होगा, उस काम के बारे वे ऐसे बोलेंगी मानो बहुत अनुभव हो.

झूठ बोलने वाली औरतें स्वभाव भले ही गंदी व लापरवाह हों मगर ऊपर बनठन कर रहेंगी. इस रोग से पीड़ित औ की यह आदत होती है कि वे जल्दी से भी किसी को विश्वास दिलाने योग्य कह गढ़ कर सुना देती हैं और लगातार अ झूठ को स्थापित करने में लगी रहती हैं. बोलने वाली लड़कियों और औरतों मित्रता भी उन्हीं से निभ सकती है जो झूठ बोलती हों. तब दोनों मिल कर एक बढ़ कर एक कहानियां गढ़ती हैं अपनीअपनी बात को सही साबित करने कोशिश करती हैं.

झूठ बोलने वाली औरतें यह सोचती हैं कि जब लोगों को सचाई



चलेगी तो उस का प्रभाव उन पर, उन के परिवार पर, उन के बच्चों पर क्या पड़ेगा. तब वे सब की नजरों में तो गिरेंगी ही साथ ही सब की घृणा की पात्र बनेंगी.

कांता ने प्रेम विवाह किया था. इस वजह से उस के संबंध अपने मातापिता व सासससुर आदि सब से टूट गए थे. यह बात वह अपने बच्चों को नहीं बता सकती थी, सो उस ने नहीं बताई. मगर यह बात छिपाने के लिए उस ने बच्चों से और भी इतने झूठ बोले कि जब बच्चों को सचाई पता चली तो वे कांता से नफरत करने लगे. कांता ने बच्चों से कहा था कि उस के मांबाप मर चुके हैं लेकिन जब बच्चों को पता चला कि उन के नानानानी जिंदा हैं तो उन्हें दुख हुआ.

यह सच है कि बहुत सी बातें बताने योग्य नहीं होतीं, उन्हें छिपाने के लिए झूठ बोलना ही पड़ता है. लेकिन कोशिश यह करनी चाहिए कि जब परिस्थितियां सामान्य हो जाएं तो सच बात बता देनी चाहिए. क्योंकि झूठ को बहुत कोशिश कर के भी सच नहीं बनाया जा सकता है.

मनश्चिकित्सक डाक्टर ओझा का कहना है कि ऐसी झूठ बोलने वाली लड़कियों और औरतों को सुधारने का एकमात्र तरीका यही है कि उन्हें प्यार से समझाया जाए और उन की मदद की जाए. उन्हें मिथ्या, कपट

झूठ बोल कर लड़की दूसरों की नजर में अपनी छवि तो खराब करती ही है साथ ही साथ अपनी विश्वसनीयता भी खत्म कर देती है.

व छल की प्रवृत्ति से मुक्त कराने के लिए उन के झूठ को पकड़ा जाए और उसे गलत साबित किया जाए.

ऐसी औरतों व लड़कियों के घरवालों का यह कर्तव्य बनता है कि वे झूठी बातों का विरोध करें. शुरूशुरू में उन्हें घर में टोकें फिर बाहर के लोगों के सामने उन की बात का विरोध करें. यदि फिर भी वे झूठ बोलें तो खुल्लमखुल्ला कहिए कि तुम्हारी तो हर बात सफेद झूठ होती है. घरवालों के इस तरह टोकने से उन्हें दुख अवश्य होगा मगर वह दुख उस तिरस्कार से कम होता है जो उन्हें बाहर के लोगों से मिलता है.

औरतों की झूठ बोलने की आदत को ले कर कई किताबें व लेख लिखे गए हैं व आलोचनाएं की गई हैं. फ्रांस के मनोविशेषज्ञ डाक्टर 'मार्शल' ने तो 'लाइ एंड ट्रुथ' नामक पुस्तक में इसी विषय को उठाया है.

मनश्चिकित्सक का कहना है कि कुंठित व हीन भावना से ग्रस्त महिलाएं ही झूठ बोलती हैं. उन की कुंठा को दूर करना चाहिए तभी इन की आदत को सुधारा जा सकता है. ●

यों तो हिंदी फिल्मों में मनोरंजन के नाम पर औरत की अस्मिता को एक बिकाऊ माल की तरह पेश करना अथवा यौन कुंठाओं से त्रस्त सिने दर्शक की जेबों से पैसा निकलवाने के लिए फिल्मों में नग्नता और बलात्कार के फूहड़ दृश्य जबरदस्ती घुसेड़ना कई फिल्मकारों की एक चिरपरिचित शैली रही है, पर उसे ले कर कभी विवादों के ऐसे बगूले नहीं उठे जैसे कि किसी जमाने में मशहूर डकैत रही फूलन देवी की आत्मकथा पर बनी फिल्म– 'बैंडिट क्वीन' को ले कर उठा है और फलस्वरूप उस के निर्माता व निर्देशक को विवादों से उलझना पड़ा है.

बैंडिट क्वीन के निर्माता एस.एस. बेदी और निर्देशक शेखर कपूर ने इस फिल्म को लंदन के बी.बी.सी. चैनल-4 टीवी के लिए बनाना शुरू किया था तो उस समय किसी को यह अनुमान भी नहीं था कि खुद फूलन देवी ही इस फिल्म के प्रदर्शन पर अपनी आपत्तियां उठा कर इसे विवादास्पद बना देगी और मामला अदालत तक जा पहुंचेगा.

फूलन ने अपनी आत्मकथा पर बनी इस फिल्म का प्रदर्शन रुकवाने के लिए दिल्ली हाईकोर्ट में अपनी याचिका दायर की जिस के 3 दिन बाद अदालत ने इस विवादास्पद फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगा दी. तब अखबारों में फिल्म से संबंधित खबरें

लेख ● जगदीश चावला

विवादों से



सुर्खियों में छपने लगीं और सेंसर बोर्ड के अधिकारियों ने भी इस फिल्म में कांटछांट के आदेश दे दिए.

सूत्रों के अनुसार बाद में फूलन देवी ने भी फिल्म के निर्माता से एक मोटी रकम ले कर समझौता कर लिया. तब जा कर कहीं इस फिल्म का प्रदर्शन संभव हो पाया.

फिल्म बैंडिट क्वीन बंबइया मसाला फिल्मों से कुछ हट कर बनी, तकनीकी दृष्टि से उत्तम है.

आखिर इस विवादास्पद फिल्म में ऐसा क्या है जिस से लोगों की इस फिल्म को देखने की तमन्ना दिनोंदिन बढ़ती चली गई. यह समझने के लिए इतना जानना जरूरी है कि फिल्म बैंडिट क्वीन फूलन देवी के जीवन की उस कहानी पर आधारित है जो दर्दनाक भी है और शर्मनाक भी.

इस फिल्म को विदेशों में काफी प्रशंसा मिली है. कांस फिल्म समारोह में तो इस फिल्म के निर्देशक शेखर कपूर को भी सत्यजित राय के मुकाबले का निर्देशक बताया गया और कहा गया कि शेखर कपूर ने फूलन देवी के जीवन से संबंधित छोटी से छोटी बात को भी बड़ी गहराई से समझा और फिल्माया है.



यह ठीक है कि यदि शेखर कपूर की जगह कोई दूसरा निर्देशक या निर्माता इस फिल्म को बनाता तो उस के लिए भी फूलन के जीवन की सचाइयों को अलग रख पाना कठिन होता, जबकि शेखर कपूर ने 'कहानी फूलन की' फिल्म से फूलन के

...घिरी बैंडिट क्वीन

जीवन के छूट गए हिस्से को माला सेन की किताब से कुछ तबदीलियों के साथ पूरा किया और फिल्म में नायिका को करीब 2 मिनट तक नग्न रूप में धीरेधीरे कुएं की तरफ जा कर पानी भरते दिखाया. कहते हैं कि फिल्म का यह दृश्य उस की जान है. फिल्म प्रमाणन अपील न्यायाधिकरण के अध्यक्ष न्यायमूर्ति बी. लारिन और 3 महिला सदस्यों ने भी यह फिल्म देख कर ही इसे प्रदर्शित करने की अनुमति दी थी जिस में उन महिला सदस्यों का भी यह मत था कि इस में ऐसा कुछ नहीं है जिस से महिलाओं को अपमानित होना पड़े.

अतः जिस फिल्म पर हर मामले में औरतों का पक्ष लेने वाले नारी संगठनों और दीगर सामाजिक संस्थाओं ने अपना कोई

इसलिए मजबूरन मुझे अदालत का सहार लेना पड़ा. मैं ने इस फिल्म के अश्लील व आपत्तिजनक दृश्यों को हटवाने की पूरी जद्दोजहद की, जिस पर निर्माता ने 4 सीन काटने का वादा भी किया. लेकिन वे नग्न और बलात्कार के दृश्य नहीं काटे गए. मेरे विरोध करने पर मेरे खिलाफ यह दुष्प्रचार भी किया गया कि मैं पैसा चाहती हूं."

फूलन देवी भले ही इस बात से अपना पक्ष मजबूत करती हो कि उस ने अपनी ये आपत्तियां पैसे लेने के लिए नहीं बल्कि इस फिल्म के कुछ गलत ढंग से फिल्माए दृश्यों के लिए ही उठाई थीं, पर दूसरे सूत्र बताते है कि माला सेन की किताब तो 1991 में ही बाजार में आ चुकी थी जिस पर वह कुछ नहीं बोली मगर फिल्म बनने की बात पर

फूलन देवी के जीवन पर बनी फिल्म 'बैंडिट क्वीन' को ले कर जितना विवाद उठा है उतना शायद ही कभी उठाया गया हो. यहां तक कि सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने के बाद इस पर 'कानूनी रोक' लगा दी गई. लेकिन इन सब विवादों के बावजूद क्या यह इस का सराहनीय पक्ष नहीं है कि यह दर्शकों को झंझोरने में कामयाब रही है?

एतराज नहीं जताया तो फूलन देवी ने अपनी किन आपत्तियों के तहत इस फिल्म के प्रदर्शन को रुकवाने के लिए अदालत का सहारा लिया– यह जानने के लिए जब इस प्रतिनिधि ने फूलन देवी से बातचीत की तो फूलन ने बताया, "बैंडिट क्वीन बनाने वाले चाहे कितना ही दावा करें कि यह एक सच्ची कहानी है पर इस में कई बातें गलत हैं. उन लोगों ने पहले मुझ से कहा कि यह फिल्म किताब पर नहीं बनी है बल्कि डाक्यूमेंटरी के तौर पर बनाई जा रही है और फिर बाद में कहा कि यह फिल्म किताब पर ही बनी है तो मैं पूछती हूं कि आखिर किसी को क्या हक है कि वह परदे पर मेरे साथ बलात्कार होता दिखाए.

"इस फिल्म में मेरे जीवन की कुछ घटनाओं को गलत ढंग से फिल्माया गया है

फूलन ने ग्वालियर जेल से निर्माता को जो कानूनी नोटिस भेजा वह बाद में वापस भी ले लिया गया था, क्योंकि तब तक अनुबंध के मुताबिक फूलन को 2 लाख रुपए का भुगतान हो चुका था. चैनल-4 टीवी के कमिशनिंग संपादक फारुख ढोंढी के अनुसार फूलन ने कागजात पर हस्ताक्षर कर अपनी डायरी के अधिकार सौंप दिए थे और फिल्म बनाने की इजाजत भी यह कह कर दी थी कि वह इस के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं करेगी.

इस तरह शेखर कपूर को भी यह एहसास कराया गया कि अधिकारों का मुद्दा शूटिंग शुरू करने से पहले सुलझ चुका है और फूलन ने जिस किताब में सहयोग किया था, वह उस का पैसा भी ले चुकी है.

खैर, शेखर कपूर ने जिस लगन से य



फिल्म बनाई और बाद में फूलन की याचिका पर अदालत ने इस के प्रदर्शन को रोक कर विवादास्पद बनाया, उस से फिल्म के निर्माता व निर्देशक दोनों ही असमंजस की स्थिति में रहे और परेशान भी हुए, और जब उन्हें लगा कि इस फिल्म का प्रदर्शन शायद ही कभी हो पाएगा तो उन्होंने फूलन को मनाने के प्रयास भी तेज कर दिए.

ऐसे में शेखर कपूर ने भी अपनी सफाई में यह कहना शुरू कर दिया कि मेरी 2 घंटे की इस फिल्म में बलात्कार के दृश्य 5 मिनट से कम के हैं और वे दृश्य दर्शकों को कुछ सोचने के लिए प्रेरित करते हैं. फिल्म में बलात्कार दिखाने का मेरा मकसद भी यही रहा कि अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए जो लोग अपने सब से आसान शिकार पिछड़ी जाति की औरतों व बच्चों से यह घृणित अपराध करते हैं वह तो गलत है ही, पर दूसरी तरफ इस कुकृत्य की शिकार महिला को शर्मिंदगी भी नहीं उठानी चाहिए.

लेकिन इसी दौरान जैसेतैसे फूलन को राजी कर लिया गया और सेंसर बोर्ड ने भी इस विवादास्पद फिल्म के कुछ दृश्य काट दिए, जिस पर इस फिल्म के निर्माता ने यह कहना शुरू कर दिया कि यह फिल्म कुछ कांटछांट के बाद भी अपना प्रभाव अवश्य

सीमा विश्वास : जीवंत अभिनय कर के सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री होने का राष्ट्रीय अवार्ड हासिल करने में कामयाब.

दिखलाएगी. लेकिन शेखर कपूर इस से सहमत नहीं थे और वह अंत तक यही कहते रहे कि कांटछांट के बाद तो फिल्म में जान ही नहीं रहेगी.

इस के बाद 16 फरवरी 1995 को इस फिल्म का वितरण अधिकार भी जब अमिताभ बच्चन कारपोरेशन लिमिटेड ने ले लिया तो फिल्म और भी चर्चित हो गई. अमिताभ बच्चन की इस कंपनी ने अपने प्रचार का जो ढंग तैयार किया उस में यह नारा दर्शकों की उत्सुकता बढ़ाने के लिए काफी था कि 'सीने में आग बंदूक में गोली, उस ने खेली खून की होली.' जाहिर है, अमिताभ बच्चन को फिल्म 'बांबे' की तरह पहले से विवादास्पद हुई इस फिल्म का लाभ भी मिलना ही था क्योंकि हमारे यहां के सिने दर्शक प्रतिबंधित हुई चीजों की तरफ ज्यादा दौड़ते हैं.

बैंडिट क्वीन को राष्ट्रीय स्तर पर 26 जनवरी 1996 को रिलीज किया जाना था मगर उस से पहले जब इस का एक शो दिल्ली के सीरी फोर्ट सभागार में रखा गया तो वहां शेखर कपूर ने अपने साथ फूलन

देवी को भी मंच पर पेश किया जहां फूलन ने बताया कि "मैं ने तो पैसा लेने के लिए इस फिल्म के प्रदर्शन पर आपत्ति नहीं की बल्कि जब मुझे यह फिल्म नहीं दिखाई गई तो मुझे अदालत में जाना पड़ा. अब फिल्म देख कर मैं कह सकती हूं कि सेंसर ने इस के 7 सीन काटे हैं जब कि मेरे हिसाब से सिर्फ 2 ही सीन काटने की जरूरत थी."

खैर, जैसेतैसे यह फिल्म जब 26 जनवरी को देश के 120 सिनमाघरों में दिखाई जाने लगी और विवादास्पद न रह कर लोगों की रिकार्ड भीड़ खींचने लगी थी.

इसी दौरान फूलन ने तो नहीं, पर ओम प्रकाश सिंह हूण ने दिल्ली हाई कोर्ट में अपनी याचिका दायर कर इस फिल्म पर रोक लगाने की गुजारिश की और तर्क दिया कि इस फिल्म के कुछ दृश्यों से गूजर समाज की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है. इस तरह सिनेमाघरों में अच्छीखासी चल रही बैंडिट क्वीन फिर से विवादास्पद बन गई और दिल्ली हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल देव सिंह ने न केवल इस फिल्म के प्रर्दशन पर रोक लगा दी बल्कि इस फिल्म का प्रमाणपत्र भी रद्द कर दिया.

बाद में फिल्म की मुख्य वितरक कंपनी अमिताभ बच्चन कारपोरेशन लिमिटेड और दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के वितरक बाबी आर्ट्स इंटरनेशनल ने रोक के इस फैसले के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपील की. केंद्र सरकार और सी.बी.एफ.सी. की तरफ से वरिष्ठ वकील ई.एक्स. जोसफ ने मुख्य न्यायाधीश एम.जी. राव की अध्यक्षता वाली खंडपीठ से कहा कि फिल्म प्रमाणन अपील न्यायाधिकरण ने विस्तृत और गंभीर विचार के बाद ही फिल्म को मंजूरी दी थी. फिल्म के प्रमाणन में यदि सी.बी.एफ.सी. ने कोई भयंकर गलती की है तो भी सिनेमाटोग्राफी कानून के तहत जनहित के संरक्षण की व्यवस्था है तथा फिल्म प्रमाणन के बारे में 1991 में केन्द्र सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों को भी इन्हीं व्यापक उद्देश्यों के आलोक में देखा जाना चाहिए कि यह फिल्म स्वच्छ मनोरंजन तथा लोगों की संवेदनशीलता को सघन करने में सक्षम है या नहीं.

इस के बाद तो यह मामला उच्चत
न्यायालय तक जा पहुंचा जहां मुख्य न्यायाधी
ए.एम. अहमदी की अध्यक्षता वाली खंडपी
ने न केवल फिल्म पर लगी रोक को हटा
का निर्देश दिया बल्कि इस फिल्म का '
प्रमाणपत्र निरस्त करने के लिए दिल्ली हा
कोर्ट के फैसले को भी खारिज कर दिय
संबंधित अदालत ने यह भी कहा कि इ
फिल्म के थीम से हिंसा और महिलाओं
प्रति अत्याचार के दृश्यों से दर्शकों को को
प्रोत्साहन नहीं मिलता बल्कि उन के इस कृत
से बलात्कार की शिकार महिला के प्र
सहानुभूति ही उपजती है. अदालत ने यह
कहा कि दिल्ली हाई कोर्ट को ओम प्रका
हूण की याचिका पर सुनवाई नहीं कर
चाहिए थी और न ही रोक लगानी चाहि
थी. दिल्ली हाई कोर्ट ने इस फिल्म की विष
वस्तु पर ध्यान नहीं दिया और यह नहीं देख
कि यह फिल्म औरतों के प्रति हिंसा, बलात्क
और उन की तौहीन पर केंद्रित न हो कर इ
विचार से बनी है कि एक बालिका अपने
हुए अत्याचारों से मजबूर हो कर ही बदल
लेने वाली डकैत बनती है.

इस तरह विगत 1 मई को उच्चत
न्यायालय ने इस विवादास्पद फिल्म पर ल
प्रतिबंध हटा दिया और इसे 9 मई के ब
ही प्रदर्शित करने का आदेश जारी किय
क्योंकि उस समय फूलन देवी मिर्जापुर
लोकसभा चुनाव क्षेत्र के समाजवादी पा
की उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रही
जहां 7 मई को मतदान होना था.

इस फिल्म के दिखाने या न दिखाने
बलात्कारों का सिलसिला रुकेगा नहीं लेवि
इतना जरूर है कि बालीवुड के दू
फिल्मकार भी अब इस विषय पर बनी अप
फिल्मों में शेखर कपूर की तकनीक
नजरअंदाज नहीं कर पाएंगे और उन्हें
देखना होगा कि यदि मनोरंजन के पैमाने
उन के बलात्कार दृश्य स्वीकार्य भी
जाएं तो समाज पर उन का असर
पड़ेगा.

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ मासूम

निर्माता: संजय बाली, लोकेश बाली
निर्देशक: महेश कोठारे
संगीत: आनंदराज आनंद
मुख्य कलाकार: इंद्रकुमार, आयशा जुल्का, मोहन जोशी, रेणुका शहाणे, टीनू आनंद, सुरेश ओबराय, अरुण बख्शी व मास्टर ओंकार कपूर.

कई वर्ष पहले भी 'मासूम' फिल्म आई थी. उस फिल्म में काम करने वाला बाल कलाकार जुगल हंसराज वाकई मासूम लगा था परंतु इस 'मासूम' का बाल कलाकार मास्टर ओंकार कपूर मासूम कम, शरारती ज्यादा लगा है. उस की खुराफातें देख कर शायद बच्चों को कुछ मजा जरूर आए परंतु बड़े लोग जब उसे असंभव से कार्य करते हुए देखेंगे तो उन्हें जरा अजीब सा लगेगा.

पूरी फिल्म किशन (मास्टर ओंकार कपूर) के इर्दगिर्द घूमती है. वह न सिर्फ नाचतागाता है, खूंखार आतंकवादियों के भी छक्के छुड़ा देता है.

निर्देशक महेश कोठारे ने, जिस ने इस फिल्म की कहानी भी लिखी है, अपनी इस फिल्म की पृष्ठभूमि आतंकवाद की ही रखी है. इसी बहाने उस ने फिल्म में तमाम मसाले भर दिए हैं. गोलीबारी, खूनखराबा तो है ही, कुछ नाचगाने भी डाल दिए गए हैं. यह सब घिसापिटा लगता है.

हिंदी फिल्मों में संयोगों का सहारा अकसर लिया जाता है. इस फिल्म की पटकथा भी संयोगों के सहारे आगे बढ़ती है. किशन के फौजी पिता को आतंकवादी बारूद (मोहन जोशी) ने मार डाला था. संयोग से अदालत के बाहर किशन बारूद के हाथ आ जाता है. वह उसे उठा ले जाता है. इसी बारूद ने एक पत्रकार आकाश (इंद्रकुमार) के मांबाप को भी मार डाला था. आकाश की मुलाकात चंदा (आयशा जुल्का) से होती है. दोनों एकदूसरे से प्रेम करने लगते हैं. संयोग से ही आकाश को भी पता चलता है कि बारूद ही उस के मांबाप का हत्यारा है. उधर किशन बारूद के चंगुल से बच निकलता है, इधर आकाश बारूद के पीछे पड़ जाता है. अंत में बारूद मारा जाता है.

फिल्म में सब कुछ डाल देने की चाह में निर्देशन कहींकहीं गड़बड़ा गया है. बाल कलाकार की हरकतों ने ही फिल्म को संभाले रखा है, अन्यथा नया नायक इंद्रकुमार व पुरानी नायिका आयशा जुल्का कुछ कर कर सके हैं.

फिल्म का गीतसंगीत पक्ष अच्छा है. समूह नृत्य अच्छे बन पड़े है. गीतों को फिल्माने में मेहनत तो बहुत की गई है परंतु गीत कहानी का हिस्सा नहीं बन पाए हैं. 'छोटा बच्चा जान के...' गीत लोकप्रिय हो चुका है. यह गीत गायक उदित नारायण के बेटे आदित्य नारायण ने गाया है. इस के अलावा 'ये जो तेरी पायलों की छनछन है', 'काले लिबास में गोरा बदन' गीत भी अच्छे बन पड़े हैं. सभी गीत संगीतकार आनंद राज ने स्वयं ही लिखे हैं. अपने पहले ही प्रयास में वह सफल रहे हैं.

इंद्रकुमार की यह पहली फिल्म है. उस ने हवा में लहराते हुए टांगें उठा कर खूब मारधाड़ की है. आजकल की फिल्मों के लिए यह जरूरी भी है लेकिन साथसाथ अभिनय आना भी जरूरी है, यह सभी उसे सीखना पड़ेगा. आयशा जुल्का काफी समय बाद परदे पर आई है परंतु उस में कोई बदलाव नजर नहीं आया. सुरेश ओबराय को जल्दी ही मरवा दिया गया तो अभिनय क्या दिखाता. रेणुका शहाणे नाटकीय लगी. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म का छायांकन अच्छा है.

★ लोफर

निर्माता : बोनी कपूर
निर्देशक : डेविड धवन
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : अनिल कपूर, जूही चावला, गुलशन ग्रोवर, मुकेश ऋषि, कुलभूषण खरबंदा, फरीदा जलाल, उपासना सिंह, प्रमोद माउथो और शक्ति कपूर.

दिमाग को एक तरफ रख कर अगर इस फिल्म को देखा जाए तो थोड़ाबहुत मजा आ सकता है. इस फिल्म में छेड़छाड़ है, चुलबुलापन है, रोमांस है और सब से बड़ी चीज है राजनीतिक हस्तक्षेप व भ्रष्टाचार, जो आजकल हर दूसरी फिल्म में नजर आ जाता है.

हाल ही में प्रदर्शित अनिल कपूर की फिल्म 'राजकुमार' बुरी तरह फ्लाप हुई थी. इस से पहले उस के बड़े भाई बोनी कपूर द्वारा बनाई गई 'रूप की रानी चोरों का राजा' भी फ्लाप हो गई थी. अनिल कपूर को दोबारा से चमकाने के लिए एक सफल फिल्म की जरूरत थी. लिहाजा बोनी कपूर ने उसे ले कर 'लोफर' बनाई और सफलता का सारा जिम्मा निर्देशक डेविड धवन पर डाला.

डेविड धवन चालू किस्म की मसाला फिल्में बनाने में माहिर हैं. 'कुली नं. 1' और 'साजन चले ससुराल' इस की मिसाल है. उन्होंने 'लोफर' में भी मसाले भरने की हरसंभव कोशिश की है.

मध्यांतर से पहले फिल्म में छेड़छाड़ और चुलबुलापन छाया हुआ है तो मध्यांतर के बाद नायक द्वारा भ्रष्ट राजनीतिबाज और गुंडों का सफाया करना.

रवि (अनिल कपूर) एक बेकार नौजवान है. इस कारण उस का पिता उस से दुखी है. उस की मुलाकात किरण (जूही चावला) से होती है, दोनों में प्यार हो जाता है. गांव में बादशाह (मुकेश ऋषि) का आतंक है, जिसे विधायक कृपाशंकर (गुलशन ग्रोवर) की शह है. एक दिन रवि बादशाह के खिलाफ आवाज उठाता है और गुंडों की पिटाई करता है. उसे जेल हो जाती है. जेल से वह चुनाव लड़ता है और जीत जाता है. वह निर्दोष साबित हो कर जेल से बाहर आता है और बादशाह के साथसाथ कृपाशंकर को भी मार देता है.

फिल्म की गति काफी तेज है. पूरी फिल्म में अनिल कपूर छाया हुआ है. निर्देशक ने इस मसालेदार फिल्म में यह संदेश देने की कोशि[श] भी की है कि नेताओं के लिए कुरसी कमाई [का] जरिया नहीं है.

फिल्म के गीत समीर और नितिन ने लि[खे] हैं. 'तेरी तिरछी नजर में है जादू' तथा 'आओ चल[ो] हम करें' गीत कर्णप्रिय हैं. गीतों का फिल्मांक[न] खूबसूरती के साथ किया गया है. प्राकृतिक दृश्[यों] का छायांकन करने में छायाकार ने काफी मेहन[त] की है.

○ माफिया

निर्माता : विजय मेहता
निर्देशक : अजीत साजवाल
मुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, आदित्य पंचोली, ज[य] मेहता, सोमी अली, गुलशन ग्रोवर, रजा मुरा[द,] मोहन जोशी और चरणजीत.

आज लगभग हर फिल्म में समानां[तर] सरकार चलाने वाले माफिया संगठन को दिखा[या] जाता है, जिस से जनसाधारण ही नहीं, सरका[र] तक डरती है. जो काम प्रशासन नहीं क[र] सकता, वह माफिया गिरोह चुटकी बजाते क[र] लेता है.

'माफिया' अपने नाम के अनुरूप इ[सी] प्रकार की फिल्म है. फिल्म का कोई खास उद्दे[श्य] नहीं, बस मारधाड़ दिखाना ही है. इस माफि[या] का सरगना है गावड़ा (चरणजीत) उसे एक मं[त्री] प्रजापति (प्रमोद माउथो) का संरक्षण प्राप्त [है.] एक कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अफसर भगत सिं[ह] (आदित्य पंचोली) इस माफिया को खत्म कर[ने] का बीड़ा उठाता है. इस काम में अन्ना (गुलश[न] ग्रोवर) उस की मदद करता है. जय सिंह (ज[य] मेहता) और अजीत सिंह (धर्मेंद्र) भगत सिंह [के] भाई हैं. एक दिन जब भगत सिंह गावड़ा [को] पकड़ने पहुंचता है तो वह भगत सिंह की ह[त्या] कर देता है. भगत सिंह की इस निर्मम हत्या [को] उस का बड़ा भाई अजीत सिंह देख लेता है. भग[त] सिंह की हत्या से जय सिंह का भी खून खौ[ल] उठता है. दोनों मिल कर अपने भाई के हत्या[रों] को मौत के घाट उतार देते हैं.

फिल्म की कहानी पूरी तरह बद[ला] प्रधान है. कहीं कुछ नवीनता नहीं है. निर्देश[न,] संपादन साधारण स्तर का है. कोई कलाक[ार] प्रभावित नहीं करता. धर्मेंद्र अब बूढ़ा हो चला [है,] अतः उस की उपस्थिति भी फिल्म को नहीं ब[चा] सकी है.

टी.वी. दर्शन

नरम गरम मसाला

निरुपमा सेवती की लघु कहानियों पर मुंबई में बनाया जा रहा है धारावाहिक 'तालियां'. धारावाहिक का शीर्षक निहायत खूबसूरत है.

मेट्रो के लिए तैयार हो रहा यह धारावाहिक दर्शकों के सामने लाएगा कल तक के फिल्मी परदे के मास्टर राजू–अब राजू श्रेष्ठ–को एक नई अदा में. मास्टर राजू ने अपने अभिनय से दर्शकों को खूब प्रभावित किया था. आशा है कि अपने वयस्क रूप में वह अच्छा काम कर दिखाएगा. 'तालियां' दिल्ली के निर्मातानिर्देशक आलोकनाथ दीक्षित की प्रस्तुति है. टेलीवेव के बैनर तले बने इस धारावाहिक में सभी कलाकार मुंबई के हैं–रामेश्वरी, ऋषभ शुक्ला, दिलीप धवन, सुलभा देशपांडे, निशिगंधा, गजेंद्र चौहान आदि. संगीत जय विजय का है और गीत गाया है आशा भोंसले ने.

*

इन दिनों धारावाहिक निर्माण कंपनी 'सिनेविस्टा' और 'ट्रा सिनेमा' के बीच जंग छिड़ी हुई है. सिनेविष्टा वालों का दावा है कि अब तक प्रसारित धारावाहिकों में उन के धारावाहिक 'जुनून' ने एक लंबा धारावाहिक होने का रिकार्ड कायम किया है, जबकि ट्रा सिनेमा वालों का दावा है कि सिनेविस्टा का दावा गलत है. 'जुनून' ने अभी तक अपने प्रसारण के 3 साल पूरे नहीं किए हैं. जबकि उन के धारावाहिक 'तारा' के प्रसारण के 3 साल पूरे हो चुके हैं. इसलिए सब से लंबा धारावाहिक 'तारा' है.





दूरदर्शन-I के लिए बनी टेलीफिल्म 'विश्रांति' एक सामाजिक टेलीफिल्म है. राजीव श्रीवास्तव के निर्देशन में बनी 'विश्रांति' एक विधवा स्त्री की कहानी है जिसे अपने पति की मृत्यु के बाद अचानक लाखों की जायदाद मिल जाती है. इस जायदाद को पाने पर उस का सफर कितना कठिन हो जाता है यही बताना इस टेली



फिल्म का उद्देश्य है. अंत में वह इस पैसे से अपने पति की याद में एक 'विश्रांति' आश्रम खोलती है जिस में महिलाएं आ कर आश्रय पा सकें, शांति पा सकें. टेली फिल्म में काम कर रहे हैं—उमा बागले, राजश्री, डा. रजनी बाला, महेश और मनीषा.

*

दर्शकों में हास्य धारावाहिकों की बढ़ती मांग को देख कर दूरदर्शन ने आखिरकार समझदारी दिखाई और हास्य धारावाहिक आमंत्रित करने शुरू कर दिए हैं. फलस्वरूप, हास्य धारावाहिक धड़ाधड़ बन रहे हैं. इन में रमेश बोड़ा का लिखा 'इंद्रलोक' उच्च श्रेणी का धारावाहिक माना जाता है. इस की लेखन शैली मंजी हुई है. हर संवाद पर हंसी के फुहारे छूटते हैं.

कहानी एक नेपाली लड़की की है जो अपनी ऐंग्लोइंडियन मालकिन को नएनए कारोबार करने की सलाह देती है. धारावाहिक की पहली 10 कड़ियों में ये दोनों (उमा बागले, सीमा बर्मन) यह तय करती हैं कि आज के जमाने में सुंदरता का कारोबार सब से ज्यादा कमाई वाला है. लिहाजा दोनों 'इंद्रलोक' नाम का ब्यूटी पार्लर खोल तो लेती हैं पर उसे चलाना इन्हें सिखाता है एक नेपाली नौकर. नेपाली नौकर अपनी मेमसाहब को देख कर इन्हें सलाह देता है, कभी चेहरे पर मुलतानी मिट्टी लगाने की तो कभी कुछ न मिलने पर सादी मिट्टी लगाने की. हर महिला सुंदर लगने के लिए इस पार्लर में आती है और अप्सरा बनने के ख्वाब देखती है. महिलाओं के साथ आए उन के पति भी लगे हाथों अपनी खूबसूरती बढ़ाने में 'इंद्रलोक' की सेवाएं लेते है मालकिन और नौकरानी क नोकझोंक, आने वाली ग्राहक महिलाओं की अजीबोगरी इच्छाएं हास्य उत्पन्न करती हैं.

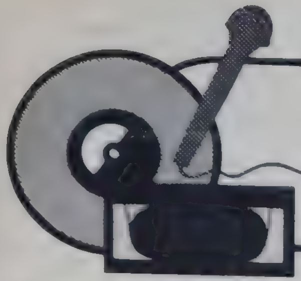
युवा निर्देशक संजय चड्ढ का कहना है कि 10 एपिसोड वे बाद यह धारावाहिक एक नय मोड़ ले लेगा जब 'इंद्रलोक' मदद के लिए ऐंग्लोइंडिय मालकिन अपने विदेशी रिश्तेदार से मदद मांगेगी. फिलहाल त 'इंद्रलोक' ब्यूटी पार्लर गिरतेपड़ शुरू हो कर अचानक कामया होता दिखाया जाएगा.

इंद्रलोक ब्यूटी पार्लर आज की महिला प अच्छाखासा व्यंग्य है जो सुंदर लगने के लिए चेह



पर कुछ भी लगाने को तैयार है—मिट्टी, सब्जी बासी रोटी, ब्रेड के टुकड़े, केले. धारावाहिक दिल्ली व मुंबई के हास्य कलाकार हैं. एक ओ जहां जानामाना माइम कलाकार बनवारी झोल है वहीं स्टेज के जानेमाने कलाकार कीमती आनं मदन शर्मा भी हैं. खूबसूरत अभिनेत्री माधवी तथ 'दिल वाले दुलहनिया ले जाएंगे' की दमयंती पु भी हैं.

संजय चड्ढा कहते हैं, "बजट तो हमें क मिला लेकिन कामेडी में कहीं कमी नहीं रख हमारा धारावाहिक 'देख भई देख' से कहीं बेहत है."



गाने कैसेकैसे

गर्मी के मौसम के बाद जैसे ही पानी की पहली बौछार पड़ती है तो वातावरण में मिट्टी की सौंधी खुशबू फैल जाती है और सावन दरवाजे पर दस्तक देता सा लगता है. ऐसे में ऐसा हो ही नहीं सकता कि संगीत की समझ रखने वाले को कजरी, सावन और झूले की याद न आए. तभी बंबइया संगीत में कुछ इसी तरह की रचनाएं सुनने को मिल जाएं तो बस क्या कहने!

आजकल फिल्म 'बैंडिट क्वीन' की एक कजरी बहुत लोकप्रिय हो रही है 'सावन आया रिमझिम सांवरे, आए बादल कारेकारे मतवारे... मोरे सैया तो हैं परेदस...' यह प्रसिद्ध पाकिस्तानी गायक उस्ताद नुसरत फतेह अली खां और कोरस ने गायी है. यह फतेह अली के जबरदस्त और मनमोहक आलाप के साथ शुरू होती है उस के बाद महिला स्वर के कोरस में चार पंक्तियां हैं. इस कोरस की जो धुन है, वह आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में सावन में झूलों पर बैठ कर महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गानों जैसी है. यह इस के आधे प्राण हैं- जैसे फतेह अली साहब की आवाज सावन में घुमड़ते बादल हैं और महिला स्वर का कोरस भीनीभीनी पानी की फुहार. कजरी श्रोता को इतना आनंदित करती है कि बारबार सुनी जाने पर भी दिल नहीं भरता. इस का मुख्य आकर्षण हर अंतरे के शुरू होने के पहले फतेह अली द्वारा लिए जाने वाले आलाप हैं. उन के आलापों से ऐसा भान होता है जैसे बादल घुमड़घुमड़ कर आ रहे हों. रियाजुर रहमान के शब्दों का सुंदर संगम है. कुल मिलाकर यह शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत का मिलाजुला मजा देने वाली कजरी है.

*

सावन के ही मौसम का एक अन्य गाना फिल्म 'सजा-ए-कालापानी' में है, 'बागों की बहारें, तुझ को पुकारे, अब तो आ जा बलम...यह दक्षिण भारतीय गायिका चित्रा ने गाया है. धीमीधीमी रफ्तार का यह गाना चित्रा की मीठी आवाज के कारण बहुत आकर्षित करता है और ठंडीठंडी हवा का एहसास करवाता है. इस में दक्षिण भारत के नंबर एक संगीतकार इलैया राजा का अनुभवी संगीत है. लेकिन गाना जब मात्र चित्रा की आवाज में आनंद के चरम पर ले जा रहा होता है तभी एक अंतरे में अचानक एक पुरुष स्वर लगभग बेसुरा सा प्रकट हो जाता है. यह गाने का कमजोर हिस्सा है. शब्दों के हिसाबकिताब में गीतकार पी. के. मिश्र ने एक पंक्ति जोड़ी है, 'आजा साजन तुझ को गाजर का हलवा खिलाऊं...' वैसे यहां वे 'आलू का परांठा' भी खिलवा सकते थे.

बहरहाल एकदो छोटी गलतियों को छोड़ दें तो यह गाना मधुर है.

*

फिल्म 'मुकद्दर' का एक कर्णप्रिय गाना है 'चल कही चलें सजना...' इसे सुरेश वाडेकर के साथ साधना सरगम ने गाया है. गाने में सुरेश वाडेकर की मीठी आवाज को सुन कर उन की 'राम तेरी गंगा मैली' की सुपरहिट पारी याद आती है. आनंद गिमलिंद द्वारा इस के बैक ग्राउंड में कोरस का तारतम्य बहुत अच्छा है. कोरस द्वारा बीचबीच में आहाआहा बहुत मधुर है. बीट का चलना फिर रुकना श्रोता के लिए जादू से कम नहीं है. हालांकि गाने की बीट को सुन कर अनु मलिक के संगीत का भान होता है. महिला स्वर में साधना की आवाज अच्छी लगती है. वैसे भी गाने में पूरा 'इम्पैक्ट' सुरेश वाडेकर की आवाज ने पैदा किया है इसलिए महिला स्वर किसी का भी होता यह बात ज्यादा मायने नहीं रखती. निश्चित ही गाना अपनी पहचान बनाने में सफल होगा.

*

संगीतकार दिलीप सेन समीर सेन के गानों को सुन कर ऐसा लगता है जैसे वे अनु मलिक के बहुत प्रशंसक हैं. सही तो यह है कि वे अनु मलिक का एक बिगड़ा हुआ रूप हैं. उन की हर फिल्म में एकाध ही गाना सुनने लायक होता है.

-आरती जैन ●



खेलों की खिलाड़ियों की

● जसदेव सिंह

इंतजार की घड़ियां समाप्त हो चली हैं. 19 जुलाई 1996 का दिन बस अब आ ही पहुंचा है. उस दिन अमेरिका के अटलांटा नगर में ओलंपिक ज्योति प्रज्वलित की जाएगी. इस पावन ज्योति की साक्षी में विश्व के 160 से भी अधिक देशों के स्त्रीपुरुष खिलाड़ी विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में एकदूसरे से जूझेंगे. उद्घाटन समारोह के दौरान बड़े ही आदर और सम्मान के साथ वह ज्योति रौशन की जाएगी और 4 अगस्त को समापन समारोह तक उसी प्रकार प्रज्वलित रहेगी.

आधुनिक ओलंपिक खेल सब से पहले 1896 में यूनान की राजधानी एथेंस में आयोजित किए गए थे, लेकिन ओलंपिक ज्योति प्रज्वलन की परंपरा शुरू हुई थी 1936 के बर्लिन ओलंपिक खेलों से. यह वह समय था, जब जरमनी पर नाजी तानाशाह एडोल्फ हिटलर का राज था और परंपरा के अनुसार राष्ट्राध्यक्ष के रूप में उसी ने बर्लिन खेलों के उद्घाटन की घोषणा की थी. यों तो आधुनिक ओलंपिक खेलों के जन्मदाता पिएर दा बूबरते ने 1896 में जब इन खेलों को शुरू किया, तो अपने भाषण में कहा था, "खेलों की इस पवित्र ज्योति को सदा रौशन रखना है." पर तब यह ज्योति अपने सही रूप में वहां मौजूद नहीं थी.

आधुनिक खेलों में ज्योति प्रकाशित करने का विचार 1936 के बर्लिन ओलंपिक के आयोजन सचिव डाक्टर कार्ल डाईम के दिमाग की उपज थी. तब पहली बार ओलंपिक खेलों की जन्मस्थली ओलंपिया में सूर्य की किरणों से ओलंपिक ज्योति प्रज्वलित की गई. उस समय कोई 3 हजार धावक 12 दिन में 5,768 किलोमीटर की दूरी दौड़ कर इसे बर्लिन लाए थे. तब से यह परंपरा बराबर जारी है. इस बार भी यह ज्योति उसी ओलंपिया की घाटी में जहां कभी जूस का मंदिर हुआ करता था, सूर्य किरणों से रौशन की गई.

हेरा (जूस की पत्नी) के मंदिर की मुख्य पुजारिन का वेश धारण कर कोई जानीमानी यूनानी फिल्म तारिका आतशी शीशे द्वारा सूर्य की किरणों से यह मशाल जलाती है. उस के बाद उसे आदर और सम्मान के साथ रिले दल के पहले धावक को सौंप दिया जाता है. इस बार भी ऐसा ही हुआ है. एथेंस से अनेक यूरोपीय नगरों में होती हुई यह मशाल अमेरिका पहुंच चुकी है. वहां भी अटलांटा पहुंचाने से पहले इस पवित्र ज्योति को अमेरिका के विभिन्न नगरों में घुमाया जा रहा है.

इस वर्ष 16 अप्रैल को जब यह मशाल 60 वर्ष के अंतराल के बाद बर्लिन पहुंची, तो इसे हवाई अड्डे से बर्लिन के ओलंपिक स्टेडियम तक ले जाने का सम्मान मिला 89 वर्षीय फ्रिज स्किलगन को जो 1936 के बर्लिन ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले 3,075 पुरुष खिलाड़ियों में से एकमात्र जीवित खिलाड़ी हैं. इसी धावक ने उस बार भी यह जिम्मेदारी निभाई थी. इसीलिए उस ने कहा यह मेरे जीवन का एक यादगार क्षण है क्योंकि मुझे इतने वर्षों बाद ओलंपिक मशाल को फिर छूने का अवसर और सम्मान मिला है.

यों तो यह ज्योति एथेंस से आमतौर पर हवाई जहाज द्वारा ओलंपिक नगर तक ले जाई जाती है, पर रास्ते में जिसजिस शहर में हो कर- यूरोप और मेजबान देश, दोनों जगह वहां के धावकधाविकाएं इसे दौड़ते हुए रिले रेस की तरह अपने शहर के उस स्टेडियम या स्थान तक ले जाते हैं, जहां इसे रात्रि विश्राम के लिए रखा जाता है.

इस बार इसे जिस हवाई जहाज में एथेंस से 11,265 किलोमीटर की यात्रा करा कर लास एंजलिस (अमेरिका) पहुंचाया गया, उसे बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था. 14 इंद्रधनुषी रंगों ने उस हवाई जहाज को एक अनूठी छवि प्रदान की थी. 1984 के लास एंजलिस खेलों के 12 वर्ष बाद गत 28 अप्रैल को यह फिर उसी नगर में पहुंची, जहां से इस बार के ओलंपिक खेलों के लिए उस ने अपनी क्रासकंट्री यात्रा आरंभ की. इस अवसर पर आयोजित समारोह के लिए अपने संदेश में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कहा, "यह वह ज्योति है, जो हमें सर्वोत्तम प्रतिभा जागृत करने के लिए प्रेरित करती है."

1 मई को जब यह मशाल अमेरिका के एरीजोना रेगिस्तान से हो कर गुजरी तो यह इस के इतिहास में दूसरा अवसर था, जब मशाल किसी धावक द्वारा नहीं, बल्कि रेलगाड़ी से ले जाई गई. कोई 24 हजार किलोमीटर सफर के अंतिम चरण में रेलगाड़ी से अमेरिका के 42 शहरों से होती हुई 3 जून को यह शिकागो पहुंची. इस से पहले भी एक बार 1952 में हेलसिंकी (फिनलैंड) खेलों के लिए ले जाते समय ओलंपिक मशाल को नार्वे से थोड़ी दूर तक रेलगाड़ी में ले जाया गया था.

एशिया में ओलंपिक मशाल 2 बार आई है– 1964 में टोकियो खेलों के लिए, तब दिल्ली आगमन पर इस ज्योति का बहुत ही सम्मान और उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया गया था और दूसरी बार तब जब इसे सियोल ओलंपिक के लिए लाया गया था. पर तब यह दूसरे मार्ग से सीधे दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल पहुंचाई गई थी.

1976 के मांट्रियल ओलंपिक खेलों के लिए इस ज्योति को एथेंस से सीधे लेसर किरणों द्वारा कनाडा की राजधानी ओटावा में प्रज्वलित किया गया था. वहां से रिले धावक इसे मांट्रियल ले गए थे.



जबजब भी मुझे ओलंपिक ज्योति को देखने बल्कि निहारने का अवसर मिला है मुझे एक अजीब सा एहसास, एक अद्‌भुत अनुभूति हुई है. लगता है खेलों की इस पवित्र अग्निशिखा में कुछ अपनी ही अनोखी चमक है. इस ज्योति शिखा में कुछ ऐसा है जो अन्य में महसूस नहीं होता. शायद यह आभास इसलिए होता हो कि ओलंपिक ज्योति का प्रकाश इन खेलों की भावना का प्रसार करता है. कहा जाता है प्राचीन ओलंपिक खेलों में जब तक खेल चलते थे, यह ज्योति जलती रहती थी. उन दिनों 'धर्म विश्रांति' घोषित कर दी जाती थी, और यदि युद्ध हो रहे होते थे तो उन दिनों के लिए उन्हें स्थगित कर दिया जाता था.

ओलंपिक ज्योति प्राचीन खेलों में क्यों और कब शुरू हुई इस की भी कहानी है. यूनानी किंवदंती के अनुसार सम्राट प्रमथ्यु ने पहली बार मनुष्यों को अग्नि प्रदान की. ओलंपस पर्वत पर रहने वाले देवता मनुष्यों को नापसंद करते थे. इसी कारण महान जूस ने उन्हें अग्नि देने से इनकार कर दिया था. पर शक्तिशाली प्रमथ्यु देवताओं की परवाह न करते हुए अग्नि के एक छोटे से अंश को छिपा कर धरती पर ले आया. मनुष्यों को तो अग्नि मिल गई, पर जूस ने प्रमथ्यु को नहीं बख्शा. उस के हाथपांवों में कीलें ठोंक कर उसे काकेसस पर्वत पर डाल दिया, जहां हर दिन एक चील आती और उस के कलेजे को नोच जाती. पर रात के समय उस का वह अंग फिर बढ़ जाता.

प्रमथ्यु के कष्ट का अंत किया स्वयं जूस के बेटे हरक्यूलीस ने, उसे उस बंधन से छुड़ा कर. चूंकि धरती पर पहली बार अग्नि ओलंपस पर्वत से आई, इसी कारण हर ओलंपिक से पहले एक रस्म में ओलंपिक ज्योति जगाई जाती है और यह सब होता है जूस के मंदिर के खंडहरों में और संपन्न करती है हेरा के मंदिर की मुख्य पुजारिन का रूप धारण कर के कोई न कोई यूनानी फिल्म तारिका.

*

III. जवाब नहीं है इस खेल का, जिसे कहते हैं क्रिकेट. कोई जमाना था, जब इसे कहते थे 'जेंटलमैंस गेम' यानी भद्रजनों का खेल. पर लगता है लद गए वे दिन. जब से आया इस में पैसा और प्रचार, शान और शौकत, ठाटबाट, खेल की गरिमा ही जैसे खत्म हो गई हो. और ऐसा हमारे ही देश में हो रहा हो, ऐसा भी नहीं है. इंगलैंड हो या वेस्टइंडीज, पाकिस्तान हो या आस्ट्रेलिया या श्रीलंका, सर्वत्र कुछ न कुछ ऐसा होने के समाचार

मिलते ही रहते हैं, जिन से लगता है कि इस खेल को अपना कर दुनियाभर में नाम और पैसा कमाने वाले इन खिलाड़ियों में खेल भावना लुप्त होती जा रही है.

अपने ही देश की बात को लें. मोहिंदर अमरनाथ ने चयनकर्ताओं को मजबूरी में जो नाम दिया था, आज वैसा ही कुछ मनोज प्रभाकर को कहना पड़ा. फारुक इंजीनियर, बिशन बेदी, कपिल देव आदि सभी के साथ कुछ न कुछ ऐसा व्यवहार हुआ, जिस ने इस खेल की अच्छाइयों पर प्रश्नचिह्न लगा दिया.

अब ताजा किस्सा हो गया है नवजोत सिंह सिद्धू का. उसे साफे (पगड़ी) की ओर इशारा करते हुए कहना पड़ा कि देश के लिए खेलूंगा, इस का सम्मान रख कर. इंगलैंड के दौरे में मैनचेस में सिद्धू ने अचानक यह एलान कर के सब हैरत में डाल दिया कि वह घर वापस लौट रहा और आगे कम से कम इस दौरे में तो नहीं खेलेग सभी जानते हैं कि सिद्धू के बल्ले की धार अ भी उतनी ही तेज है, जिस के बल पर उसे टी में चुना जाता रहा है. यदि एकाध मैच में वह ज्या रन नहीं बना सका तो क्या उसी की वजह से उ इंगलैंड के विरुद्ध तीसरे एकदिवसीय मैच के लि टीम में नहीं लिया गया. ऐसा किस खिलाड़ी साथ नहीं होता. किसकिस का नाम लें. वर्तमान ही बात करें तो सचिन, मांजरेकर, कांबली, जडे सभी कई बार कम स्कोर पर आउट हुए हैं. इस अर्थ यह तो नहीं कि उन्हें आज टीम में न रखें, क फिर रख लें. फिर हटा दें. यह आंखमिचौली सि के साथ ही क्यों?

पर कारण यह नहीं लगता. कारण कुछ अ ही है. क्योंकि सिद्धू उन खिलाड़ियों में से नहीं जो टीम की जरूरत को न समझे. यदि कारण होता तो वह इस से पहले ही यह कदम उठा चु होता. खुद सिद्धू ने कहा है, "यह पहला अवसर न है कि मैं अपने को अपमानित महसूस कर रहा हू

कप्तान अजहरुद्दीन ने जो वक्तव्य दिया, उ से भी कुछ यही आभास होता है कि भारत खिलाड़ियों में टीम भावना नहीं है. इस का प्रमु कारण एक ही हो सकता है– नेतृत्व में कमजो जब क्रिकेट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष माधव राव सिंधि और कपिल देव जैसे खिलाड़ी नवजोत के लि कहें कि उस जैसा विनम्र, शांतचित्त और धैर्यव खिलाड़ी बगैर किसी विशेष वजह के ऐसा क नहीं उठा सकता, तो बाकी रहता ही क्या है? जै प्रदर्शन इंगलैंड के विरुद्ध हमारे खिलाड़ी कर हैं, वह यही दर्शाता है कि टीम में कुछ न कुछ ऐ हो रहा है, जो उन के खेल को प्रभावित कर र है.

नवजोत सिंह सिद्धू ने निर्णय बोर्ड के अध्य आई.एस. बिंद्रा पर छोड़ कर खेल भावना अ अनुशासन को सम्मान ही दिया है, जो सदा उस गुण रहे हैं. देश के हर क्रिकेट प्रेमी को फैसले इंतजार है, जो इस राज पर से परदा भी उठाए पर एक बात पक्की लगती है कि अब अजहर कप्तानी के दिन अधिक नहीं रहेंगे. यों भी भारत टीम में परिवर्तन और नवीकरण की आवश्यक दिखाई दे रही है. सभी चाहते हैं कि देश क्रिकेट खेल ही रहे, कुछ और नहीं.

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्रव्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है.

पत्र निम्न पते पर भेजें :
सरिता, ई-3, दिल्ली प्रेस,
झंडेवालान एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

साहू, 28, 5'3", गेहुआं रंग, एल.टी. अध्यापिका, उ. प्र. राजकीय विद्यालय में सेवारत कन्या हेतु सजातीय, केंद्रीय, राजकीय सेवारत वर चाहिए. वि. नं. 9124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रस्तोगी (बिहार), 22, 152, एम.ए., रंग साफ, सुंदर, गृहकार्यदक्षार्थ आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 9125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 27, 5'3", बी.एससी., बी.एड., रेवाड़ी (हरियाणा) स्थित प्राइवेट लिमिटेड में सेवारत, 5,000/- मासिक, प्रतिष्ठित परिवार, गृहकार्यदक्ष, सुंदर कन्यार्थ रेवाड़ी या दिल्ली में सेवारत/व्यवसायी, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 9126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23½, 5'2", एम.बी.बी.एस., डी.ओ.एम.एस., अध्ययनरत, गोरी कन्या हेतु सुंदर, सजातीय, एम.डी./एम.एस. डाक्टर वर चाहिए. पूर्ण विवरण के साथ संपर्क करें. वि. नं. 9127, सरिता नई दिल्ली- 110055.

धीवर (बाथम), 23/155, एम.ए. प्रथम वर्ष अध्ययनरत, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, संभ्रांत, सुसंपन्न पारिवारीय कन्या हेतु सेवारत/व्यवसायी वर चाहिए. उत्तम शादी वास्ते लिखें. वि. नं. 9128 सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी शाक्यवार, 5'5", 27, 24, एम.ए., बी.एड., स्नातक, गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य अधिकारी, व्यवसायी वर चाहिए. जाति, प्रांत बंधन नहीं. वि. नं. 9129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (धीवर), पश्चिम उत्तरप्रदेशीय निवासी, 24½, 160, 7,000/-, बी.ई., इलेक्ट्रोनिक्स एवं 23/158/5,000/-, बी.ई., इलेक्ट्रिकल, सुंदर, गेहुआं रंग, परिवारीय, बहनों के लिए सुयोग्य वर चाहिए. पिता वरिष्ठ अधिकारी, सजातीय को प्राथमिकता. वि. नं. 9130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य शौंडिक (सुड़ी), 26/5'4", एम.बी.बी.एस., बिहार में पी.जी. कर रही गोरी, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 9131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लखनऊवासी, साहू, 24, 157, एम.ए., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ वर चाहिए. पिता स्टेट बैंक मैनेजर. वि. नं. 9134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, सिख (कुम्हार/प्रजापति), 25, 163, ग्रेजुएट, सुंदर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्यार्थ नौकरीशुदा/व्यवसायी/सिख/मोना वर चाहिए. वि. नं. 9144, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 5'5", 10वीं पास, गोरी, अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, इकलौती, निर्दोष तलाकशुदा (कारण लड़का सेक्स असमर्थ) हेतु सिविल इंजीनियर, डिप्लोमा/डिग्री, सजातीय वर चाहिए. पिता एक बड़े बिल्डर्स, दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबादवासी को वरीयता, बायोडाटा पूर्ण विवरण के साथ लिखें. व. नं. 9145, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, बी.एच.एस.सी., लंबाई 5', गेहुआं वर्ण, जाट कन्या हेतु सजातीय या अंतर्जातीय वर चाहिए. वि. नं. 9153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (तेली), 21, 5'4", गौरवर्ण, एम.एससी., होम साइंस, पिता प्रथम श्रेणी इंजीनियर, भाई दोनों इंजीनियर, म.प्र. वासी, गृहकार्य में दक्ष, सुंदर, सुशील, स्लिम, ब्यूटिशियन, टेलरिंग डिप्लोमाधारी, कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. वि. नं. 9154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, विश्वकर्मा, बढ़ई, 23/165, बी.ए., कन्यार्थ सेवारत/व्यवसायरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें. वि. नं. 9155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 5'1", एम.ए. हिंदी, रंग गोरा, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर, पूर्ण विवरण लिखें, शीघ्र उत्तम विवाह. वि. नं. 9263. सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, बी.एससी. (दिल्ली विश्वविद्यालय), 23/153, गोरी, सुंदर, एक टांग में हलका पतलापन, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 9264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई (व्यवसाय नहीं), 21, 163, बी.ए. डिप्लोमा सेक्रेट्रियल कोर्स दो वर्षीय, अति सुंदर कन्या, शीघ्र उत्तम विवाह, प्रतिष्ठित परिवार, उपयुक्त वर. वि. नं. 9265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली राजपूत, कन्या 25, 5'4", 45, एम.सी.ए., लेक्चरर, पिता उच्च प्रथम श्रेणी अधिकारी, के लिए उपयुक्त वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश) निवासी, कुर्मी क्षत्रिय, 31 वर्षीया, 5'2", पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टरेट हेतु शोधरत, प्राइवेट कालिज में लेक्चरर, सुंदर, साफ गेहुआं रंग, गृहकार्य में दक्ष, संपन्न मध्यवर्गीय परिवार, हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. चार भाइयों की एकमात्र बहन. तीन भाई व्यवसाय में. एक भाई राज्य शासन में राजपत्रित अधिकारी. वि. नं. 9267, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया बहनें, 24, 5'2", एम.ए., बी.एड., साफ रंग, एवं 22, 5'3", एम.ए. (इंगलिश), बी.एड., गृहकार्य निपुण, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्याओं हेतु सुयोग्य वर. इंजीनियर, प्रोफेसर, सुस्थापित, व्यवसायी, सेवारत को वरीयता, शीघ्र व उत्तम विवाह. वि. नं. 9268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत 25, 5'5", एम.ए., अति सुंदर कन्यार्थ सजातीय, कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि. नं. 9269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार (कुरील), 28, 150, स्नातक, गोरी, स्लिम, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सेवारत वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं, प्रथम बार पूर्ण सविवरण लिखें. वि. नं. 9270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया (अनु. जाति), सेवारत, सुंदर, सुशील, स्लिम, कन्या हेतु सरकारी विभाग, बैंक/बीमा कंपनी/अन्य सरकारी उपक्रम में सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तरी भारत के ऐसे युवक को प्राथमिकता जो अन्य पारिवारिक दायित्वों से मुक्त हो और एक स्थान पर स्थायी रूप से रह सके. पूर्ण विवरणों सहित लिखें. वि. नं. 9271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 24, 155, 5,000/-, एम.सी.एस., लेक्चरर, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. वि. नं. 9272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ श्रीवास्तव, 25, 5'1", सुंदर, एम.ए., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु जूनियर इंजीनियर, बैंक आफीसर, लेक्चरर या अन्य समकक्ष, सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 9273, सरिता नई दिल्ली-110055.

जाटव, 30 वर्षीया, 150 सें.मी., मिडिल पास कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए. शीघ्र विवाह, स्वयं संपर्क करने वालों को प्राथमिकता. वि. नं. 9274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, 27/5'2"/ 4,500/-, एम.ए., एम.लिब., दिल्ली प्रशासन स्कूल में कार्यरत एवं 24/5'3", बी.ए., सुंदर कन्याओं हेतु वर चाहिए. संपूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें. वि. नं. 9275, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

कोरी (कोली), 26/151 सें.मी./7,500/- एम.बी.बीं.एस., यू.पी.एस.सी. द्वारा केंद्रीय मेडिकल सेवा में चयनित, सुंदर, गोरी, सुशील, स्लिम कन्या हेतु सुयोग्य, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता, शीघ्र विवाह. पूर्ण पारिवारिक विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9276, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

माथुर कायस्थ, 21, 5'2", स्नातक अंतिम वर्ष, रंग गेहुआं, आकर्षक, सुशील, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए. पूर्ण पारिवारिक विवरण सहित लिखें. वि नं. 9277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव कन्या, 25, 156, बी. काम., कंप्यूटर डिप्लोमा उत्तीर्ण, के लिए सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 9278, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

कुशवाहा, 23, 157, एम.ए. अंतिम वर्ष, सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. वि. नं. 9279, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

प्रतिष्ठित वैश्य, 30, 155, कानपुर निवासी, गोरी, अत्यंत आकर्षक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, ग्रेजुएट, कंप्यूटर डिप्लोमा, पैर में आंशिक दोष, कन्यार्थ प्रतिष्ठित, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण सविवरण लिखें. वि. नं. 9280, सरिता, नई दिल्ली- 110055,

कुर्मी क्षत्रिय, 28, 158, एम.ए., बी.एड., सेवारत (दिल्ली), सुंदर, गृहकार्य निपुण, मृदुभाषी कन्यार्थ सुयोग्य वर, पिता राजपत्रित अधिकारी. वि. नं. 9281, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

22 वर्षीय, मुजफ्फर नगर जनपद निवासी, जाट, बी.ए., बी.एड., ऊंचाई 5'4", गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या के लिए, सजातीय वर की आवश्यकता है. राजपत्रि अधिकारी/व्यवसायी को प्राथमिकता, पिता रेलवे में कार्यर विवाह लखनऊ में ताऊ द्वारा. संपर्क करें. वि. नं. 928 सरिता, नई दिल्ली- 110055.

32 वर्षीया, गढ़वाली, शाह राजपूत, स्नातक ऊंचाई 5', गोरी, गृहकार्यदक्ष, लखनऊ में राजकीय से में कार्यरत कन्या के लिए सजातीय वर की आवश्यक है. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9283, सरिता, न दिल्ली- 110055.

मलयाली, 30, 156 सें.मी., कन्या आर.एम.पी पिता डाक्टर, निजी क्लीनिक हेतु वर चाहिए. जाति, दहे बंधन नहीं. दिल्लीवासी मेडिकल लाइन अथवा सरका कर्मचारी को प्राथमिकता. वि. नं. 9284, सरिता, न दिल्ली- 110055.

जायसवाल (इलाहाबाद), 20, 153, बी.ए डिप्लोमा (फैशन डिजाइनिंग), गोरी, सुंदर, गृहका निपुण, शिक्षित, संपन्न परिवारीय कन्यार्थ सुयोग्य व वि. नं. 9285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 164, एम.ए., सुंदर, मंगली (कहार) कन हेतु केवल मंगली वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 928 सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, विधवा, 42 वर्ष, उच्च शिक्षि गृहकार्यदक्ष, समायोज्य स्वभाव, दो बच्चे 19 व 13 व संभ्रांत परिवार, हेतु उपयुक्त वर की आवश्यकता है. वि नं. 9287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26, 152 सें.मी., स्लिम, स्वच्छ, गौरव प्रथम श्रेणी, एम.एससी. रसायन, बी.एड., मैनेजमे (अध्ययनरत), तकनीकी एवं गृहकार्यों में दक्ष कन्या हे सजातीय, इंजीनियरिंग, स्वस्थ, प्रशासनिक, सेवारत, स्लि स्वच्छ वर्ण, सज्जन परिवार का वर चाहिए. वि. नं. 928 सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 45, 160, 7,000/-, स्नातकोत्त तलाकशुदा, उत्तरप्रदेशीय, राजपत्रित अधिकारी महिला सुस्थापित पुरुषों से प्रस्ताव आमंत्रित. वि. नं. 9289, सरित नई दिल्ली-110055.

पासी, 26, 150, एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप क रही, सुंदर, गोरी कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, आई. एस., पी.सी.एस., सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. वि. 9290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, रंग साफ, स्लिम, 19, 155 सें.म रेलवे सेवारत, उच्च माध्यमिक पास, गृहकार्यदक्ष क हेतु सजातीय, सुनियोजित वर चाहिए. वि. नं. 929 सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, सुंदर, ग्रेजुएट, धनाढ्य परिवारीय, पोलियोग्र स्वनिर्णायिका, घरदामादेच्छुक, विधुर, तलाकशु अनाथालय में पला, गरीब विकलांग, विचारों का ध विवरण सहित स्वनिर्णायक युवक, हिंदी में संपर्क क वि. नं. 9292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मंगलीक, पंजाबी अरोड़ा, सुंदर, लड़की 2 ग्रेजुएट, के लिए मंगलीक लड़का चाहिए. अच्छी शा कुंडली भेजें. वि. नं. 9293, सरिता, नई दिल्ली-1100

चमार, 25, 152, मेडिको (अध्यय[illegible] गोरी कन्यार्थ स्मार्ट, सुशील, दहेज विरोधी, आई.ए.एस. या डाक्टर (पोस्ट ग्रेजुएट को प्राथमिकता), सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 9294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड ब्राह्मण, 24, 152, सुशील, हायर सेकेंडरी, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि. नं. 9295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, निम्न मध्यम परिवार, इंटर, 23/5'3", अंगरेजी का थोड़ा ज्ञान, गृहकार्यदक्ष, हलका सांवला, सेवारत, व्यवसायरत, संभ्रांत परिवार, विधुर, तलाकशुदा भी पूर्ण विवरण लिखें. वि. नं. 9296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अंसारी, 26, 5'4", बहुत सुंदर, वास्तविक गोरी, स्लिम, एम.ए., भूगोल (प्रथम श्रेणी), अच्छे परिवार की कन्या हेतु 30-32 वर्ष का, कुंआरा, अच्छे खानदान एवं नौकरी, बिजनेस, दहेज विरोधी, शरीयत का पाबंद वर चाहिए. निकाह सुन्नत तरीके से, खानदान की रिश्तेदारी पांच प्रांतों में. वि. नं. 9297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण कन्याएं, 22/23, ब्यूटीशियंस, गृहकार्यदक्ष, गोरी, सुंदर हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर वर चाहिए. प्रथम बार संपूर्ण विवरण जन्मपत्री के साथ. वि. नं. 9298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 28, 5'2", स्मार्ट, सुंदर, गोरी, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, बहुराष्ट्रीय कंपनी कार्यरत, 5,000/-, कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय स्वर्णकार, 33 वर्षीया, अविवाहित, पी. एच.डी., उ. प्र. के राजकीय महाविद्यालय में लेक्चरर, कन्या हेतु योग्य एवं उच्च शिक्षित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, 30, 5'5", मैट्रिक, गेहुआं, स्लिम, 28, 5'5", एम.ए. (अंगरेजी), पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा (पर्सनल मैनेजमेंट), स्लिम, साफ रंग, दोनों मृदुभाषी, गृहकार्य निपुण बहनों हेतु सुयोग्य वर, शीघ्र विवाह. वि. नं. 9301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, प्रतिष्ठित परिवार, सैनी/श्रीमाली, 31½, 164, एम.ए., बी.एड., तलाकशुदा, दहेज पीड़ित, कुमारी, आकर्षक, निसंतान कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. निसंतान विधुर/तलाकशुदा मान्य, जातिबंधन नहीं, जन्मकुंडली विवरण सहित भेजें. वि. नं. 9302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, श्रीवास्तव, कन्या एम.एससी., बी. एड., लेक्चरर, तथा 30 वर्षीया, एम.ए., एम. लिब, श्रीवास्तव, सेवारत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि. नं. 9303, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, 30, 150, 6,500/-, एम.ए., डिप्लोमा फार्मेसी, राष्ट्रीयकृत बैंक (दिल्ली) सेवारत, सुंदर, स्लिम, एक पैर कमजोर, कन्या हेतु सुयोग्य वर विधुर (बच्चे नहीं) स्वीकार्य, कोई बंधन नहीं. वि. नं.

[illegible] बी., गोरी [illegible], सुशील, मृदुभाषी, गृहकार्यदक्ष (पिता गजटेड आफिसर) हेतु वर चाहिए. उत्तम विवाह, जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9305, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीया, 170 सें.मी., गौरवर्णीय, एम.ए., बी.एड., प्रतिष्ठित परिवार की एकमात्र कन्या हेतु उच्च शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि. नं. 9306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी ब्राह्मण कन्या 24, 5'3", सुंदर, शिक्षित, मधुरभाषी, मिलनसार, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत या व्यवसायी वर चाहिए. वि. नं. 9307, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 5'4", सुशील, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, डाक्टर (एम.डी. पॉथ) कन्यार्थ सुंदर, उपयुक्त वर चाहिए. जातिबंधन नहीं, डाक्टर, आई.ए.एस. को वरीयता लिखें. वि. नं. 9308, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धुरिया (कश्यप) कहार, 24, 150, एम. ए., गेहुआं रंग, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य, सरकारी सेवारत वर चाहिए. वि. नं. 9309, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हाल ही में विधवा, 24 वर्षीया, 5 फीट, सुंदर, गोरी, ग्रेजुएट, एक वर्ष की बच्ची भी है, के लिए सजातीय (अग्रवाल), विधुर वर चाहिए. वि. नं. 9310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, 36, 5'2", बी.एससी., बैंक कर्मचारी, स्वावलंबी, शाकाहारी, सुंदर, रंग गेहुआं, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु निर्व्यसनी, शाकाहारी, अच्छे सरकारी पद पर कार्यरत वर चाहिए. व्यवसायी भी स्वीकार्य, जाति/धर्म बंधन नहीं. वि. नं. 9311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरासिया, 27, 156, बी. एससी., बी.एड., अध्यापिका कानवेंट स्कूल, गौरवर्ण, स्मार्ट, स्लिम कन्या हेतु सरकारी सेवारत, इंजीनियर, डाक्टर, सजातीय, ब्राह्मण वर चाहिए. वि. नं. 9312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, क्षत्रिय, माली, 22 वर्षीया, 5'2", एम. काम. फाइनल, आई.सी. डब्ल्यू. ए., कानवेंट शिक्षित, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, म.प्र. निवासी कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9313, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (पेशा नहीं), 25½, 5'4", 3,500/-, लिमिटेड कंपनी में कार्यरत, पोस्ट ग्रेजुएट, गोरी, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर, बंधन नहीं. वि. नं. 9314, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाना (कंसारी) परिवारीय कन्या, 20 वर्षीया, 5'2", इंटर पास, रंग गेहुआं, आकर्षक, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 9315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय क्षत्रिय, 25, 150, होम साइंस, ग्रेजुएट, एम.ए., अंगरेजी, डिप्लोमा फैशन डिजाइन, ईस्ट नई

30 वर्षीया (अनु. जाति), सेवारत, सुंदर, सुशील, स्लिम, कन्या हेतु सरकारी विभाग, बैंक/बीमा कंपनी/अन्य वि. नं. 9316, सरिता, [illegible]

जाटव, 25½, 152, बी.ए., एम.ए. अध्ययनरत, प्रतिष्ठित परिवारीय, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, सरकारी, अर्धसरकारी सेवारत, अथवा व्यवसायरत, प्रतिष्ठित परिवारीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9317, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप कहार, 27, 150, एम. एससी. (रसायन विज्ञान), पीएच.डी. अंतिम वर्ष, गौरवर्णीय कन्यार्थ योग्य, कार्यरत वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9318, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25, 5'1", गेहुआं साफ रंग, आकर्षक, कृषि परास्नातक, कृषि विकास अधिकारी, शासकीय सेवारत कन्यार्थ उच्चस्तरीय, डाक्टर, इंजीनियर, उच्चाधिकारी वर्गीय वर. वि. नं. 9319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21/150, गोंड (अ.ज.जा.), अति सुंदर, स्नातक, गृहकार्यदक्ष, सुशील, मित्तभाषी, पाकशास्त्र निपुण कन्या हेतु सेवारत, योग्य, स्मार्ट, सुंदर, डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक पदा, बैंक अधिकारी युवक को प्राथमिकता दी जाएगी, पिता प्रथम श्रेणी सरकारी अधिकारी. वि. नं. 9320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी मेघ (कबीर पंथी), 25, 158, बी.काम. (पास), दिखने में 20, प्रतिष्ठित, सुंदर, पतली, गृहकार्यदक्ष, दो वर्षीय कंप्यूटर डिप्लोमा, लिमिटेड कंपनी सेवारत कन्यार्थ सुयोग्य, सरकारी, अर्धसरकारी अथवा व्यवसायरत, प्रतिष्ठित परिवारीय वर चाहिए. जातिबंधन नहीं, दिल्लीवासी अथवा आसपास वाले को प्राथमिकता, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 155, 24, एम.ए., अर्थशास्त्र, बी. एड., गोरी, सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष हेतु सरकारी सेवारत वर चाहिए. वि. नं. 9322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महेश्वरी, 27 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., बी.एड., गेहुआं रंग, हेतु योग्य वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित लिखें. वि. नं. 9323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32/153, एम.ए., दैनिक अखबार में उपसंपादक, सुंदर, घरेलू, मिलनसार, अध्ययनप्रिय कन्यार्थ प्रगतिशील मानसिकता वाले, दहेजबंधन से मुक्त, शिक्षित, उदारचित्त, वर संपर्क करें. विवाह कोर्ट मैरिज द्वारा ही, वामपंथी विचार वाले व ओशो के अनुयायी प्रेमी भी मान्य. वि. नं. 9324, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर, 23/160, कानवेंटेड, बी.एससी., स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवार (पिता सीनियर सरकारी अफसर) हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य गुप्ता, कानवेंट शिक्षित, कन्या, बी.काम. एलएल.बी. कंपनी सेक्रेटरी, 28 (जन्म मई 1968), 52, 160, 9,000/-, स्मार्ट, सुशील, गृहकार्यदक्ष, अहमदाबाद स्थित उत्तर प्रदेशीय परिवार, भाई इंजीनियर, कन्या के लिए अधिकारी. वि. नं. 9326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, 27 वर्षीया, 153 सें.मी., बी.काम., सेक्रेटरी कोर्स पास, कंप्यूटर ट्रेनिंग जारी, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कलकत्ता की प्रतिष्ठित कंपनी में सर्विस, निजी मकान, हेतु सुस्थापित, आत्मनिर्भर, सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आंशिक मंगली, 24, 5'1½", 49 कि.ग्रा., प्रथम श्रेणी बी.काम. (तीन वर्ष), साफ रंग, कौशल गोत्रीय, उत्तर भारतीय कशमीरी निकास भट्ट ब्राह्मण, पिता एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, इंगलिश/हिंदी/पंजाबी में पूर्ण ज्ञान वाली, सूक्ष्म बंगाली बोलने/समझने का ज्ञान रखने वाले एवं गृहकार्यदक्ष, सुंदर कन्यार्थ गौड़, सनाढ्य, भट्ट अन्य उच्च कुलीन ब्राह्मण एवं मूलतः मंगली वर चाहिए. हिमाचल/पंजाब/ कशमीर के उच्च ब्राह्मणों को वरीयता, मंगली वर की वित्तीय स्थिति/व्यवसाय/पद ही मुख्य पहलू होंगे, वर की पूर्ण कुंडली एवं केवल हस्तलिखित बायोडाटा ही भेजें. वि. नं. 9328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 25/150, बी.एससी., एम.ए., बी.एड., सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, शाकाहारी, गुजरात में स्थित हेतु सजातीय, सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित संपर्क. वि. नं. 9329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत ब्राह्मण, 25, 4'9", फिजियोथेरेपी में डिप्लोमा, अपोलो मद्रास में कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता का मद्रास में स्टील का व्यवसाय, उपजाति बंधन नहीं. वि. नं. 9330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख नितनैमी, विधवा (लड़की 2½ वर्षीया), 28, 5'2", ग्रेजुएट, अध्यापिका नर्सरी पब्लिक स्कूल (दिल्ली) में सेवारत हेतु सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए. विधुर (एक बच्चा) भी विचारणीय. वि. नं. 9331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), 29, 158, 6,500/-, प्रतिष्ठित प्रेस में पत्रकार, कन्यार्थ उच्च शिक्षित, प्रोफेसर, पत्रकार, प्रथम श्रेणी अधिकारी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि. नं. 9332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 156 सें.मी., प्लस टू, रंग साफ, सिलाई, गृहकार्यदक्ष में दक्ष कन्या हेतु व्यवसायी , सेवारत वर चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि. नं. 9333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, मारवाड़ी गर्ग, 20 वर्षीया, 5'4", 10+2 पास छात्रा, अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु उच्च आय सहित सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. उत्तम विवाह. हमारा बजट तीन लाख, पूर्ण पारिवारिक विवरण सहित लिखें, अति संपन्न विधुर, मोटा, सांवला, काला, कम पढ़ा वर भी विचारणीय, पंडित दलाल भी संपर्क करें. वि. नं. 9334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, बिहार निवासी, 29 वर्षीया, एम.

ए. हिंदी, 150 सें.मी., सुशील, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, परिवार, कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत/व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 9335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, जैन, श्वेतांबर, बीसा ओसवाल, 5'3", सुंदर, गौरवर्ण, बी.ए. विश्वविद्यालय से ब्यूटी कल्चर में डिप्लोमा, प्रतिष्ठित परिवार की तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य, सुसंस्कारिक वर चाहिए. वि. नं. 9336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तोमर क्षत्रिय, 24, कद 5'4", एम.ए., गृहकार्य में कुशल, 65, बधिर कन्या के लिए वर चाहिए. आंशिक रूप से विकलांग राजपूत युवक भी स्वीकार्य (सविवरण लिखें), कुलीन खानदान, पिता वरिष्ठ राज्य प्रशासनिक अधिकारी (कन्या श्रवणयंत्र से स्पष्ट सुन लेती है), कृपया संपर्क करें. वि. नं. 9337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 25, 5'2", एम.ए., बी.लिब., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, ग्वालियर निवासी, कन्या हेतु शिक्षित, सुयोग्य कार्यरत वर चाहिए. वि. नं. 9338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 22, 165, बी.ए., बी.एड., गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ कार्यरत वर चाहिए. वि. नं. 9339, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (हिंदू), 23, 155, एम.ए., बी.एड., गोरी, इकहरी, सुंदर (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) कन्या हेतु सेवारत, अथवा उच्च व्यवसायी वर चाहिए. वि. नं. 9340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

48, 152, 36, अविवाहिता, ग्रेजुएट, दुबलीपतली, शाकाहारी, घरेलू, गेहुआं, हेतु सरकारी कार्यरत, लिखें. वि. नं. 9417, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रस्तोगी, वैश्य, 23/143, बी.एससी. (प्रथम श्रेणी), टेक्सटाइल फैशन, डिजाइनिंग 1 वर्षीय डिप्लोमा, गोरी, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार, गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट, मंगली कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. वि. नं. 9418, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू मांगलिक, 22, 5'3", एम.ए., लगातार प्रथम श्रेणी, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कानपुर निवासी कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत, व्यवसायी वर चाहिए. जन्मचक्र सहित लिखें. वि.न. 9419, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

वधू चाहिए

माहेश्वरी, 24 वर्षीय, 5'7", सुंदर, स्मार्ट, इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर एवं एम.बी.ए. अध्ययनरत, निजी व्यवसायी युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. पलोड़ एवं लढ़ा छोड़ कर प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण जन्मपत्री इत्यादि सहित शीघ्र लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 9157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश निवासी, जायसवाल, 27, 5'4", 10,000/-, इंजीनियर (बी.ई.) प्राइवेट संस्थान में कार्यरत, प्रतिष्ठित समृद्ध परिवार, हेतु सुंदर, गोरी,

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 170, एम.बी.बी.एस., एम.डी., लखनऊ अध्ययनरत, आकर्षक व्यक्तित्व, हेतु सजातीय सुंदर, गोरी, लंबी, स्लिम, सुशिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 9199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंजीनियर, नौएडा में कार्यरत, 28, 162, 5,500/-,बी.ई. अध्ययनरत, कुर्मी युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू. वि.नं. 9200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27, 5'6", पीएच.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. एम.एससी. को प्राथमिकता. वि.नं. 9201, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 28/173/स्नातक, इंजीनियर, असिस्टेंट कमिश्नर इनकमटैक्स, केंद्रीय सेवारत हेतु सुंदर, सुयोग्य, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 9202, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, आगरावासी, 28, 180, ग्रेजुएट, स्मार्ट, रैग्जीनफोम ट्रेडर्स, हेतु सुयोग्य, 165+ वधू. वि.नं. 9203, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 27, 168, पोस्ट ग्रेजुएट, जिला खाद्य निरीक्षक, सरकारी सेवारत, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 9204, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 28, 180, मैट्रिक, संपन्न, संस्कारी परिवार, अविवाहित, पारिवारिक, लिमिटेड कंपनी में कार्यरत हेतु गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, सजातीय, अग्रवाल, जैन कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 9205, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 26, 174, बी.ई. (आनर्स), उ.प्र. सरकारी सेवारत (डिप्टी मैनेजर), 9,000/-रुपए मासिक, हेतु लंबी, सुंदर, शिक्षित, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. वि.नं. 9206, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन श्वेतांबर, ओसवाल, कार्यरत, 25 वर्षीय, 180 सें.मी., युवक के लिए सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 9207, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, माहेश्वरी, 165 सें.मी., बी.काम., ग्रेटर कैलाश दिल्ली निवासी, बहुत संपन्न, निजी व्यापार, सुंदर युवक हेतु अत्यंत सुंदर, सुशील, घरेलू परिवार की अनतवाल कन्या भी मान्य, महानगर निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9208, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 165, प्रतिष्ठित, सिंहल गोत्रीय, 9,000/-प्रतिमाह, ग्रेजुएट हेतु सुंदर, गौरवर्ण कन्या चाहिए. वि.नं. 9209, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, 170, परित्यक्त, अकेला, स्मार्ट हेतु जीवनसाथी, घरेलू, तलाकशुदा, मामूली विकलांग, कम पढ़ीलिखी, विधवा, पिछड़ा वर्ग प्राथमिकता. वि.नं. 9210, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया (अनु. जाति), सेवारत, सुंदर, सुशील, इंजीनियर, कन्या हेतु सरकारी विभाग, बैंक/बीमा कंपनी/अन्य संस्कारिक परिवारीय, पोस्ट ग्रेजुएट, स्वच्छ अतीतवान, 28 वर्ष से कम, 5'2" ज्यादा कन्या से वैवाहिक आमंत्रण, कोई दहेज, धर्म/जातिबंधन नहीं, अंगरेजी में पत्रव्यवहार करें. फैक्स स्वर 4082552903 P.O. BOX 1657, CUPERTINO. CA 95015 USA.

39 वर्षीय, तलाक की कार्यवाही जारी, व्यापारी, दो दुकानों का मासिक कपड़ा व्यापार, 7 आदमियों को रोजगार पोर्ट लुईस में, भारतीय मुद्रा 75,000/-मासिक, हेतु उदारचित, सुंदर, स्लिम, तलाकशुदा, निसंतान महिला (25-32), मारीशस में स्थापित होने की इच्छुक कृपया वापसी योग्य फुल साइज फोटो सहित लिखें. C.P.O BOX 587. PORT LOUIS, MAURITIUS.

दांगी (क्षत्रिय), 25, 176 सें.मी., डिप्टी कलक्टर, (बिहार प्रशासनिक सेवा) हेतु सुयोग्य, सुंदर कन्या चाहिए. उच्च शिक्षा प्राप्त, टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त या कार्यरत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. परंतु प्राथमिकता दांगी (क्षत्रिय) कन्या को दी जाएगी. वि.नं. 9211, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्येशिया वैश्य, 28, 169, 5,000/-,बी.ई., केंद्रीय सरकार सेवारत, आकर्षक युवक हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वधू, विस्तृत विवरणी लिखें. वि.नं. 9212, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.डी. डाक्टर, 36 वर्षीय, स्मार्ट, अविवाहित, हेतु शांत स्वभाव की, कुंआरी, विधवा, तलाकशुदा मेडिको वधू. उम्र 25-45 वर्ष, नान मेडिको भी विचारणीय. जातिबंधन मुक्त. वि.नं. 9213, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, पंजाबी लड़का, 43 वर्षीय, शिक्षित, डबल एम.ए., एलएल.बी. (एडवोकेट), अपना व्यवसाय भी, साउथ दिल्ली एवं हरियाणा में संपत्ति, हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. लड़का 11 वर्ष, नार्वे (यूरोप) में रह चुका, लेकिन अब भारत में दोबारा स्थापित होने का इच्छुक, लड़का नार्वेजियन (यूरोपियन) लड़की से तलाकशुदा, एक 9 वर्षीय पुत्र भारत में पिता के साथ रहेगा. लड़की से बच्चे को प्यार चाहिए. कोई बंधन नहीं, कृपया लिखें. वि.नं. 9214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, बी.काम., कद 5'10", रंग एकदम गोरा, स्मार्ट, वजन 65, ओसवाल जैन, सुधारवादी, व्यवसायी, संपन्न परिवार, उच्च आय वर्ग हेतु संपूर्ण शाकाहारी एवं व्यवसायी परिवार की अति सुंदर, बी.काम. कन्या चाहिए. अच्छे चुनाव की अभिलाषा से राजस्थानी को प्राथमिकता. संपूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 9215, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, 160, 5,000/-, 52, बिलकुल अकेला, शरीफ, न्यूजपेपर कर्मचारी, तलाकशुदा, दो लड़के बड़ा लड़का 15 साल, होस्टल में पढ़ता है. छोटा लड़का 13 साल, साथ में रहता है, हेतु जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 9341, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (बढ़ई), 22½, 5'10½", इलेक्ट्रानिक कन्याएं, अमेरिका में कंप्यूटर नेटवर्किंग अध्ययनरत, (पिता रक्षा मंत्रालय वैज्ञानिक) हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, आकर्षक, गोरी, लंबी, डाक्टरी, इलेक्ट्रानिक अथवा कंप्यूटर इंजीनियरिंग अध्ययनरत कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9342, सरिता, नई दिल्ली-110055.

त्यागी (ब्राह्मण), 28, 173, बी.ई., (सिविल), स्मार्ट, गौरवर्ण, प्राइवेट स्टील प्लांट में कार्यरत, छोटा मधुर परिवार, हेतु सुयोग्य, सुंदर, सुशील, मृदुभाषी, स्लिम, गौरवर्ण, स्नातक या अधिक, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें. (उत्तम चुनाव हेतु विज्ञापन). वि.नं. 9343, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 31, 167, कंप्यूटर डिप्लोमा, गौरवर्ण, खूबसूरत, केंद्रीय सरकार सेवारत (रेलवे), टेलीकाम इंस्पेक्टर हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. प्रथम बार ही संपूर्ण विवरण सहित भेजें. वि.नं. 9344, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27, 5'6", 6,000/-, ए.ई. (पी.डब्लू.डी.), बी.ई., एम. टेक, भाई वरिष्ठ प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सजातीय (कनौजिया विचारणीय) कन्या चाहिए. वि.नं. 9345, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान निवासी, राजपूत, 35, 5'4", फैक्ट्री श्रमिक, 2,500/-, अविवाहित, शिक्षा छठी, ससंतान माफी, जातिबंधन नहीं, वधू चाहिए. आश्रम वाली मान्य. वि.नं. 9346, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 28½, 5'4", 7,600/-, सांवले, आकर्षक, सिविल इंजीनियर, प्राइवेट कंपनी में कार्यरत हेतु अति सुंदर, गोरी, सुयोग्य वधू. जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 9347, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी, कपकोटी राजपूत, 28, 5'6", 4,000/-, दिल्ली सेवारत, सुंदर युवक हेतु सजातीय, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 9348, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू (तेली) वैश्य, 30 वर्ष, 5'11", मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिप्लोमा, साधारण बीमा निगम में सर्वेयर व लास एसेसर पदस्थ, मासिक आय 6,000/-, हेतु लंबी, गोरी कन्या चाहिए. प्राथमिकता नौकरीशुदा, दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9349, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, सम्मानित परिवारीय, 27, 24, 5'6", बंबई में सेवारत, 2 निजी फ्लैट, हेतु खूबसूरत, शिक्षित, घरेलू वधुएं, उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 9350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई ब्राह्मण (सविता), 29, 171, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, सुशिक्षित परिवारीय युवक हेतु डाक्टर, लेक्चरर, एम.बी.ए. वधू चाहिए. वि.नं. 9351, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बनारस निवासी, 36, तलाकशुदा, प्रतिष्ठित परिवारीय, कंपनी मालिक, एक लड़का (4 वर्ष), हेतु सुशिक्षित, गोरी, सुंदर, 30 वर्ष तक की वधू चाहिए दहेज, जातिबंधन नहीं. गरीब, बेसहारा, परित्यक्ता भी

विचारणीय, शीघ्र विवाह. वि.नं. 9352, सरिता, दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25 वर्ष, 5'6", 23 वर्ष, 5'8", दो भाई स्नातक, रक्षा मंत्रालय में कार्यरत, मार्केटिंग मैनेजर, गारमेंटस एक्सपोर्ट वर हेतु सुंदर, गोरी, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 9353, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैनेजर, बी.ई. धोबी, 28½, 5'4", हेतु सुंदर, संभ्रांत परिवारीय, सुशिक्षित, वधू चाहिए. पिता अधिकारी, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9354, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 5'11", इंजीनियर, आई.आई.टी., एम.बी.ए., वार्षिक आय सवा तीन लाख, सेवारत, गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, समकक्ष कन्या चाहिए. वि.नं. 9355, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, बिहारवासी, 34, 5'2", डी. फार्मा, दवा विक्रेता तथा 32/5'2", एलएल.बी., पिता पूर्व सांसद एवं स्वतंत्रता सेनानी, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुयोग्य, सुशील, सुशिक्षित, घरेलू वधू चाहिए. वि.नं. 9356, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, इंजीनियर, 29, 5'8", अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. वि.नं. 9357, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (राघव), 27, 165, एम.एससी., (बाटनी) प्रथम श्रेणी, बिजनेस मैनेजमेंट डिप्लोमा, पीएच.डी. अध्ययनरत, गौरवर्ण, स्मार्ट, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय युवक हेतु पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 9358, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई (वैश्य), 32, 162, एम.ए., एलएल.बी., व्यवसायरत युवक हेतु वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 9359, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय, संपन्न, पंजाबी अरोड़ा, 35, विधुर, 5'6", स्वस्थ, गेहुआं, निर्व्यसनी, बी.एससी., व्यवसायरत, दो बच्चे, युवक हेतु निसंतान, घरेलू, सुशील, वधू. वि.नं. 9360, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन युवक, 28½, 165, एम.काम., सर्विस तथा व्यवसाय, हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं, प्रत्येक प्रस्ताव विचारणीय. वि.नं. 9361, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 28, 5'6", सेवारत, स्नातक, संपन्न परिवारीय, युवकार्थ सुशील वधू. वि.नं. 9362, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन श्वेतांबर, स्टेट बैंक में कार्यरत, 30, 5'7", स्नातक, कंप्यूटर डिप्लोमा, स्मार्ट युवक हेतु, सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या की आवश्यकता है. प्रस्ताव आमंत्रित समस्त जैन परिवार. वि.नं. 9363, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (मालपानी) सम्मिलित परिवार के 25/5'8", बी.काम., गेहुआं, इकहरा शरीर, व्यवसायरत, हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, शांत स्वभाव वधू चाहिए. गट्टानी, मालपानी छोड़ कर, कुंडली मिलान

जाटव, पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी, केंद्र सरकार विभाग में असिस्टेंट स्टेशन इंजीनियर (क्लास - 1, राजपत्रित अधिकारी), 29, 165, 6,500/-, आई.ई.एस., हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, आकर्षक वधू चाहिए. कृपया संपूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. वि.नं. 9365, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली, जायसवाल (वैश्य), 27, 5'6", एम.बी.बी.एस., मेडिकल आफिसर कोल इंडिया, गोरा युवक हेतु एम.बी.बी.एस., सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 9366, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, विधुर, 55, 6,150/-, हरियाणा सरकार कर्मचारी, स्वस्थ, दायित्वमुक्त, अकेला, सरकारी फ्लैट, हेतु निसंतान, विधवा, तलाकशुदा, जीवनसंगिनी, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9367, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 29, 158, 10,000/-, एम.ए., कालीन व्यवसायी, एकलौता, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार युवकार्थ सुंदर, स्लिम शिक्षित वधू. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9368, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 31, 5'7", 7,500/- सरकारी प्रतिष्ठान में वरिष्ठ इंजीनियर, स्मार्ट युवक हेतु, सुंदर, गोरी, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 9369, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंगाल निवासी, चंद्रवंशीय/कहार, 34, 5'2", इंटर, रेलवे, 2,600/-, के लिए सुंदर, शिक्षित, 26 से ऊपर की वधू आवश्यकता है. वि.नं. 9370, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रजक, 28, 165, 5,000/-, अति सुंदर, गौरवर्ण, स्मार्ट, जूनियर इंजीनियर युवक हेतु कानवेंटेड, सुंदर गौरवर्ण, स्मार्ट कन्या चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9371, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, विधुर, पंजाबी अरोड़ा, स्वव्यवसायी, जिम्मेदारी मुक्त, हेतु विधवा, तलाकशुदा 45-46 वर्षीया वधू चाहिए. एक संतान भी स्वीकार्य, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9372, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 29, 165, चार्टर्ड एकाउंटेंट, बिंदल गोत्र, बंबई में फाइनेंसियल कंट्रोलर, 21,000/-, युवक हेतु, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 9373, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, 28, 5'7", सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुशील, सुंदर, कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें, शीघ्र विवाह, दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9374, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कालड़ा (पंजाबी), 32, 165, 7,000/- तलाकशुदा, दो लड़कियां 5-2, अपनी फैक्ट्री, युवक हेतु विधवा, तलाकशुदा, कुंआरी, वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9375, सरिता, नई

30 वर्षीया (अनु. जाति), सेवारत, सुंदर, सुशील, ...लम, कन्या हेतु सरकारी विभाग, बैंक/बीमा कंपनी/उड़ा), राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी हेतु सजातीय, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 9376, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, महावर, 26, 5'8", बी.ई. इलेक्ट्रोनिक्स, आई.ई.एस., रेलवे इंजीनियर, सांवला, स्मार्ट, इकलौते पुत्र हेतु सुंदर, शिक्षित कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 9377, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 175, मैनेजर, मल्टीनेशनल, पिता रिटायर्ड गवर्नमेंट एक्जीक्यूटिव, भाई इंजीनियर, दोनों जीजा डाक्टर, हेतु खूबसूरत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9378, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (नाई), सुंदर, 26/170, बी.ई., इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर, सरकारी नौकरी, प्रतिष्ठित परिवार के लड़के हेतु सुंदर, गोरी, लंबी प्रोफेशनल, क्वालिफाइड वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं., 9379, सरिता नई दिल्ली-1155.

श्रीवास्तव कायस्थ, 32/167, एम.एससी., एलएल.बी., एडवोकेट, आय चार अंकों में, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 9380, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गर्ग), 22/163, निजी, प्रतिष्ठित व्यवसायरत, धनाढ्य परिवार, निजी कोठी, हाई स्कूल, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु गोरी, अति उत्तम, सुंदर, सजातीय जन्मांक बायोडाटा सहित वधू चाहिए. वि.नं. 9381, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल, 27/173, बी.एससी. (आनर्स), बिहारवासी, निजी मकान, उत्पादित वस्तु के थोक विक्रेता, आय पांच अंकों में, सुंदर, युवक हेतु, गोरी, लंबी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 9382, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, झांसी निवासी, युवा कल्याण अधिकारी के पद पर कार्यरत, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु ग्रेजुएट वधू चाहिए. पिता स्वास्थ्य विभाग उ.प्र. में मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत, लिखें: वि.नं. 9383, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी अरोड़ा, पीएच.डी. तलाकशुदा, सुंदर कोचीन निवासी, 60/168, मासिक आय 70,000/-, चरित्रवान, कुशल गृहिणी, विधवा, तलाकशुदा, निसंतान वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 9384, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तोमर राजपूत, 27, 5'6", 5,000/-, निजी संस्था में कार्यरत, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व, सुसंस्कृत, संपन्न, इकलौते युवक हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, संभ्रांत परिवारीय, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 9385, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा/काछी, पोस्ट ग्रेजुएट, स्वव्यवसायरत, वार्षिक आय उच्च छः अंकों में, संपन्न परिवारीय, 24 वर्षीय, लंबे, गोरे युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 9386, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कन्या... शर्मा बढ़ई, 26, 163, एम.एससी., कंप्यूटर डिप्लोमा, गोरा, सुंदर, स्वस्थ, कार्यरत, पी.सी.एस. संभावना, हेतु सुंदर, सुशील ग्रेजुएट कन्या चाहिए. वि.नं. 9387, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरासिया, 30, 178, 4,000, एम.ए.बी.एड., अध्यापक हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय, नववधू चाहिए. वि.नं. 9388, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू खत्री, 30, 5'7", बी.एससी., सेवारत, स्वव्यवसाय, निजी मकान, आयकर दाता हेतु सुंदर, गरीब मान्य, जातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 9389, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली राजपूत, 26, 5'4", 4,200/-, स्नातक, सरकारी नौकरी, अपना फ्लैट, युवक हेतु आकर्षक, पतली, 22 साल तक कन्या चाहिए, अध्यापिका, सरकारी नौकरी वरीयता. वि.नं. 9390, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (कोइरी), 30, 5'8", मेरीन इंजीनियर, उच्च आय हेतु सुंदर, गोरी, लंबी, उच्च शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. मेडिको, विशेष तकनीकी योग्यता प्राथमिकता, उत्तम विवाह, प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 9391, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 5'10½", बी.काम., आई.सी.डब्लू.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, निजी व्यवसायरत, पांच अंकीय मासिक आय, प्रतिष्ठित परिवारीय, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 9392, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खटिक (सोनकर), 28, 175, एम.ए. (अर्थशास्त्र), एलएल.बी., प्रैक्टिसरत, तथा स्वयं का व्यापार एवं अचल संपत्ति भी, छोटा परिवार, बड़ा भाई उच्च पदस्थ अधिकारी, उ.प्र. निवासी हेतु कम से कम स्नातक, सुशील, व्यावहारिक, उपजातिबंधन रहित, दहेजमुक्त, अतिशीघ्र विवाह हेतु वधू चाहिए. उत्तम तथा योग्य चयन हेतु विज्ञापन, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 9393, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, चार्टर्ड एकाउंटेंट, 27, 177, इंटरनेशनल कंसलटंसी कंपनी में कार्यरत, मासिक आय 20,000/-, युवक हेतु कानवेंटेड, सुंदर, गोरी, सुशिक्षित वधू. वि.नं. 9394, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, प्रजापति, 26/172, बी.एससी., एन.आई.आई.टी. कंप्यूटर डिप्लोमा, हेतु सजातीय, सुंदर, लंबी, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या, जन्मपत्री सहित पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 9395, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 5'6", ग्रेजुएट, अध्यापक, आय पांच अंकीय, कुशवाहा हेतु सुशिशित, कार्यरत, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 9396, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (तेली), उत्तर प्रदेश निवासी, 28, 165, 3,500/-, स्नातक निजी क्षेत्र में कार्यरत, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9397, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी 40/ 6,000/-, राजकीय प्रबंधक (लेखा), विधुर, 2 बच्चे, हेतु वधू, वि.नं. 9398, सरिता, नई